॥ श्रीकृष्णः ॥

अनुक्रमणिका

अभिनवनिघंटु द्वितीय भाग

530.01,2
19791A

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विज्ञापन

१ बृहद् रसराजसुन्दर–संस्कृत मूल और भाषाटीकासंयुक्त। यह अनेक अद्भुत रस (वसंततिलक, वसंतकुसमाकर) और रसायन (चंद्रोदय, मृगांक, रूपरस, ताम्रेश्वर, वंग आदि) बनानेका सबसे बड़ा भारी ग्रंथ है। आजपर्यंत इतना बड़ा रसग्रंथ कहीं न छपा और न अब छपेगा। अबकीवार पंचमावृत्तिमें बहुतसा विषय बढ़ायागयाहै जोकि देखनेहीसे मालूम होगा। क़ी० ३।) रु. डा. म० ।)॥ आना

२ चरकसंहिता–संस्कृत मूल और सरल हिन्दी भाषाटीका सहित। यद्यपि यह ग्रंथ बंबई और मथुरामें छपचुका है परंतु हमने इसका मूल और टीका बहुतही दुरस्त कियाहै जोकि देखने हीसे मालूम होगा तथा बंबईके प्रसिद्ध निर्णयसागर छापेखानेकी छपाईभी देखनेही योग्य है। की० ६) डा० म० ।=)

३ अभिनवनिघंटु (प्रथमभाग) भाषाटीका सहित। यह निघंटु हालके समयमें सब निघंटुओंसे उत्तम है। इसमें एक एक ओषधिके नाम संस्कृत, हिन्दी, राजपूतानी, बंगाली, उड़िया, मरहठी, तामिल, कोंकणी, कान्हड़ी, देशी, गुजराती, पंजाबी, नैपाली, अरबी, फ़ारसी, इंग्रेज़ी और लाटिन आदिमें यथाप्राप्त दीनेगएहैं, और अनेक ओषधियोंके चित्रभी दियेहैं। फिर अनेक ओषधियों पर अनेक हकीम और डाक्टरोंकी सम्मति लिखीहै, तथा अनेक ओषधियांजो अन्य निघंटुओंमें नहीं मिलतीं जैसे सालसा, सालवमिश्री, सनाय, कालादाना, चाह, तमाकू आदि सब इसमें मौजूद हैं। द्विरावृत्ति छपाहै। क़ी० २॥) रु० डा० म० ३ आने

४ नूतन चिकित्साचक्रवर्ती–यह अकबर पादशाहनिर्मित मुजर्रबातअकबरीका हिंदी तर्जुमा है। यह ग्रंथ दोदफ़े दो दो हज़ार छपा सो हाथोंहाथ बिकगया। अब तीसरे फिर उत्तम सुधारके साथ छपा है इसमें भी फ़क़ीरी लटके सैंकड़ों भरे हैं। क़ी० १) रु० डा० म० २ आने

५ चिकित्साचन्द्रोदय–हिन्दीभाषा। यह ग्रंथ हालमें क़राबादीनज़ुकाईका हिन्दी अक्षरोंमें तर्जुमा करके छापा है। इसमें शर्बत, अर्क़, सफ़ूफ़, तिला, मरहम आदि ऐसी कौनसी वस्तु है जो इसमें नहीं लिखी और ऐसी बीमारीही कौनसी है कि जिनका मालजा इस ग्रंथमें न कहा हो। यह ७०० सौ सफ़ेके और अंदाज़न अढ़ाई तीन हज़ार चित्रविचित्र नुसख़ोंसे लबालब भराहुआ दवाइयोंका खज़ाना है, बस इसीसे इसकी उत्तमताको आप जानगए होंगे। क़ी० २।) डा० म० ४ आने

६ भावप्रकाश–हिन्दीभाषाटीका सहित। इसमें पांचहज़ार श्लोकात्मक पाठ अधिक हैं, सर्वत्र छपेहुए भावप्रकाशोंसे कहीं चढ़बढ़कर है। यह वैद्यमात्रको अवश्य लेने योग्य है। मुंबईमें द्विरावृत्ति छपरहा है। सुनहरी जिल्द बंधेहुएकी क़ीमत ८) रु० डा० म० १० आना

७ नपुंसकसंजीवन–प्रथम भाग संस्कृत मूल और भाषाटीका सहित इसका परिचय इसका नामही देरहाहै। क़ीमत ६ आना डा० म० १॥ आना

८ नपुंसकसंजीवन– दूसराभाग हकीमीमतसे रचागयाहै। क़ीमत ६ आना डा० म० १॥ आना

९ पथ्यापथ्य–भाषाटीका सह। रोगमात्रकी पथ्य और कुपथ्य तथा छः ऋतुओंके पथ्यापथ्यको बताताहै, क़ीमत १० आना. डा० म० २ आना

११ सुश्रुतसंहिता–संस्कृत मूल और सरल हिंदी भाषबानुाद साहित। प्रियवर वृद्धत्रयीमें सुश्रुत ग्रन्थकी गणना है यह धन्वन्तरिके अवतार काशीनरेश दिवोदासजीका बनाया बहुत प्राचीन ग्रन्थ है इसकी उत्तमता सर्वत्र प्रसिद्ध है। लेथोका छपा। क़ीमत ४)रु० डा० म० १३ आने

१२ अर्घदीपक–संस्कृतमूल और भाषाटीका सहित। तेजीमन्दीके चुटकले इसमें लिखे हैं। ज्योतिषी पंडितोंको लेने योग्य है। क़ी० =) आना डा० म०)॥ आना

सब प्रकारकी पुस्तक मिलनेका पता

पंडित दत्तराम नारायणदत्त चौबे

मानिकचौक मथुरा

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri
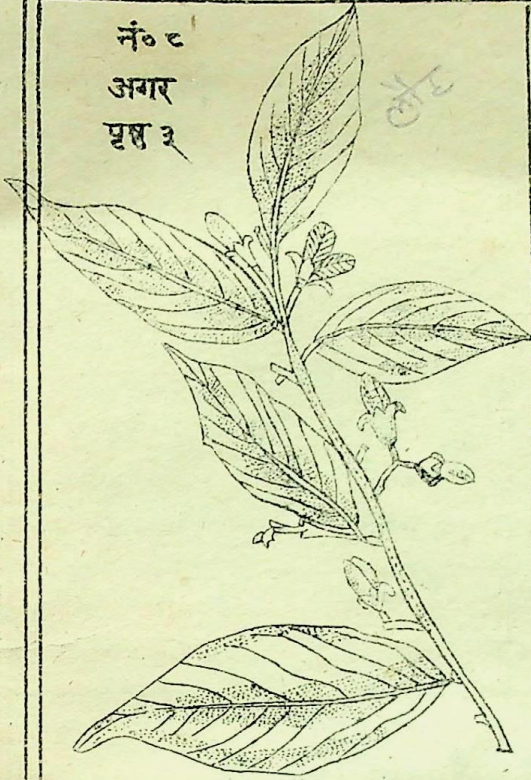
नं० ८
अगर
पृष्ठ ३
नं० २०३
खिजूर
पृष्ठ ५९
नं० १२
अंजीर
पृष्ठ ४
नं० १६
अजमायन
पृष्ठ ५

नं० ४३
अरंड
पृष्ठ १३

२२०५
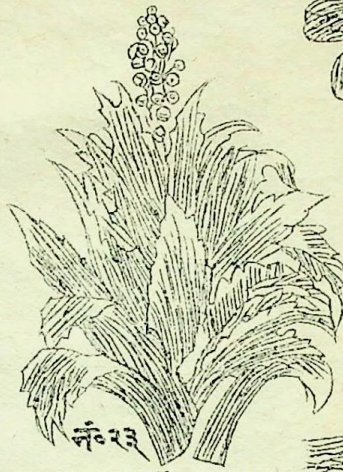
नं० २३
अनन्नास
पृष्ठ ७

नं० ८०६
लोबिया
पृष्ठ २२८

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri
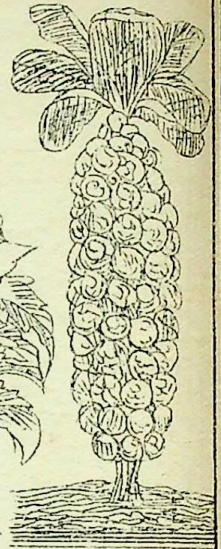
नं० ५९४
बनौला (कपास)
पृष्ठ १६९

नं० ४९२
धनियां
पृष्ठ १४०
नं० ५७६
फ़ालसा
पृष्ठ १६४
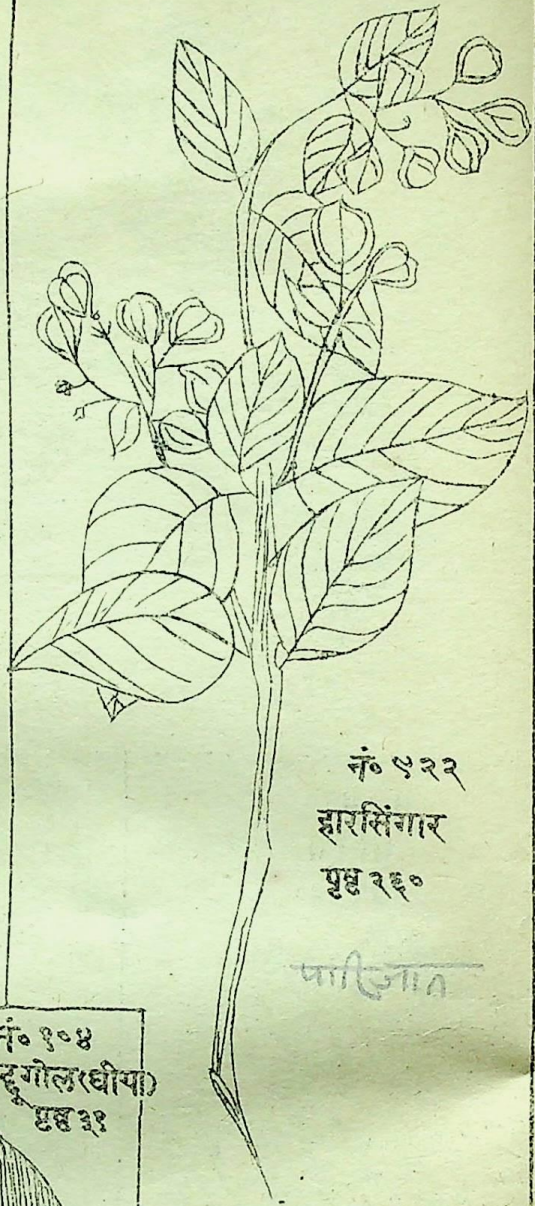
CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri
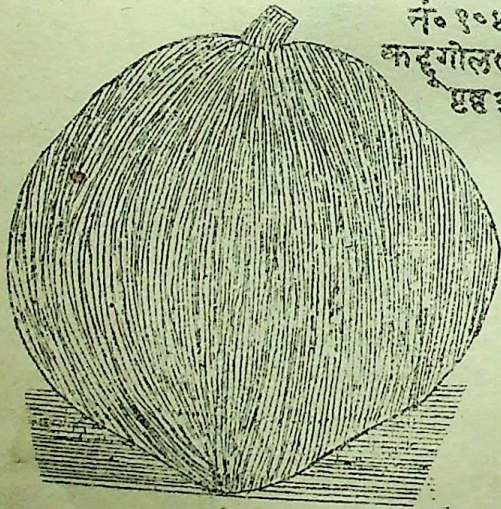
नं० ६४८
बोल गंधरस
पृष्ठ १८४

नं० ६२०
बादाम
पृष्ठ २७४

नं० ५९८
बबूल
पृष्ठ १७०

नं० १३५
केवड़ा
पृष्ठ ५१

नं० ८४७
लालसरसों
पृष्ठ २३९

नं० ८८४
सोंठ
पृष्ठ २५०

नं० ८४७
सरसों
पृष्ठ २३९

नं० ७१८
मूली
पृष्ठ २०३

नं० ८१९
शलगमदूसरीजातिकी
पृष्ठ २३२

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नं० २०५
खीरा
पृष्ठ ६०
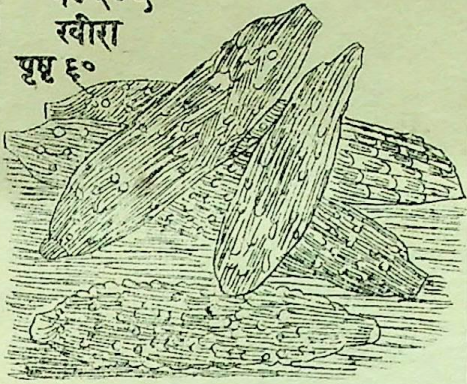
नं० १३२
कसूम
पृष्ठ ३९

नं० १९७
खरबूज़ा
पृष्ठ ५७
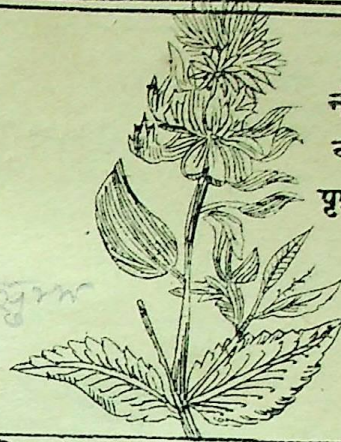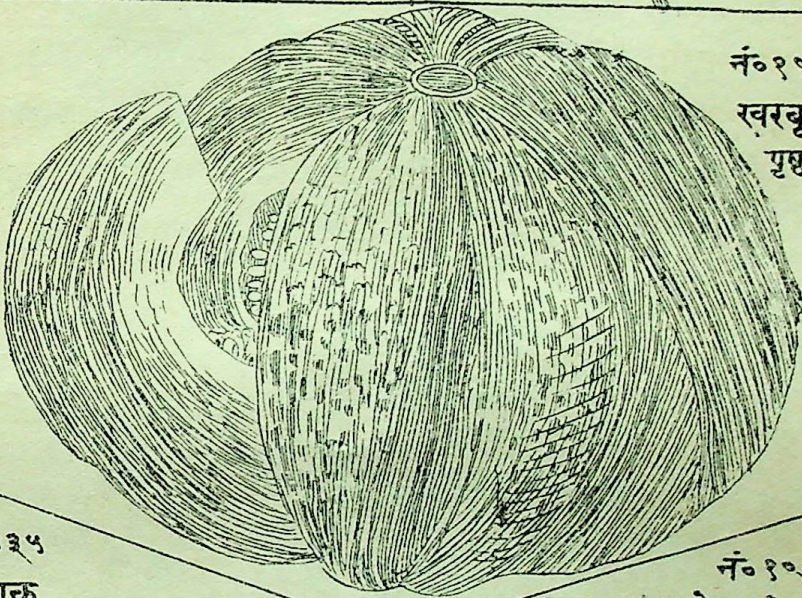
नं० ४३५
तमाकू
पृष्ठ २३१
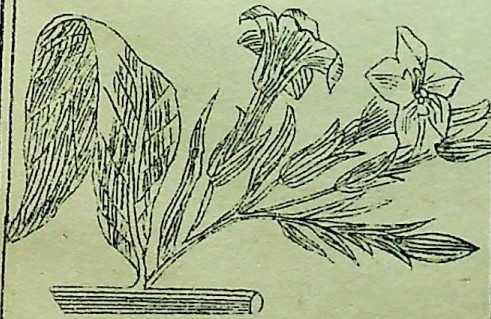
नं० १०७
कनेर सफ़ेद
पृष्ठ ३२

नं० ५१
असगंध
पृष्ठ १५

अश्वगन्धा
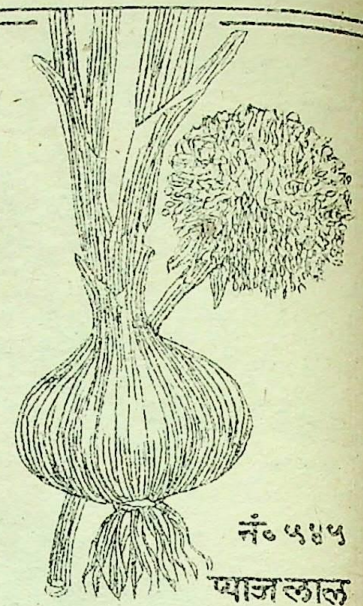
नं० ५४५
प्याज लाल
पृष्ठ १५६

पलाण्डु

नं० ५४५
प्याज
पृष्ठ १५६

नं० ४४५
सहतूत
पृष्ठ १२९

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri
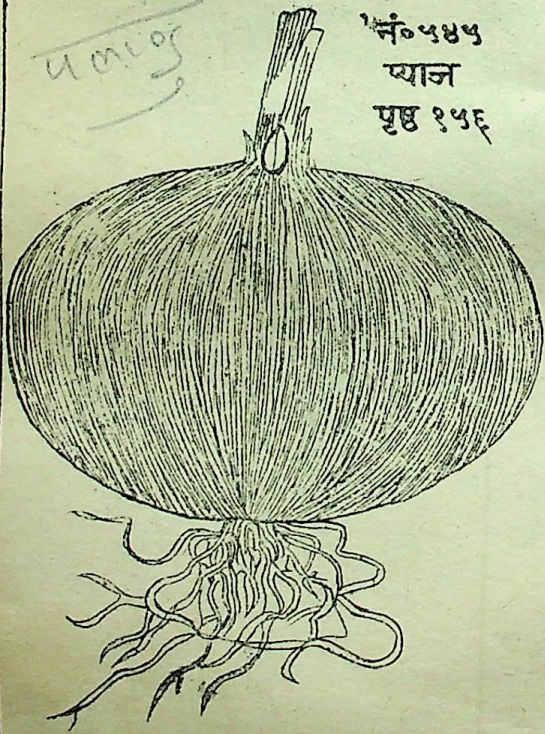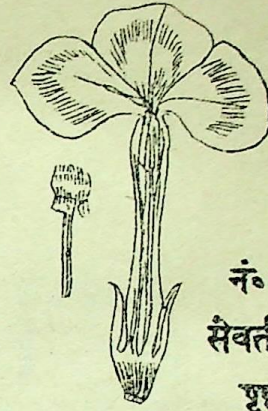
नं० ८८३
सेवतीगुलाब
पृष्ठ २५०
नं० ५७४
पोई
पृष्ठ १६५
नं० ६२०
बालछड़
पृष्ठ १७७
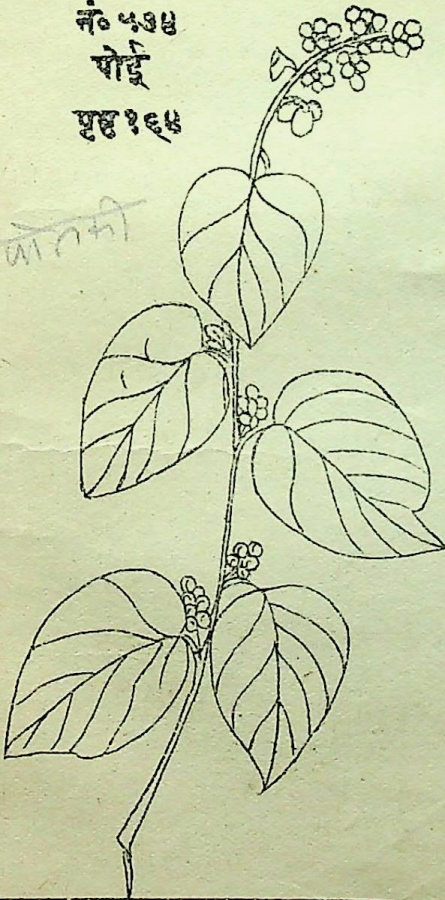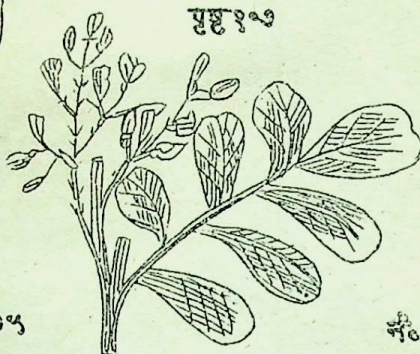
Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri
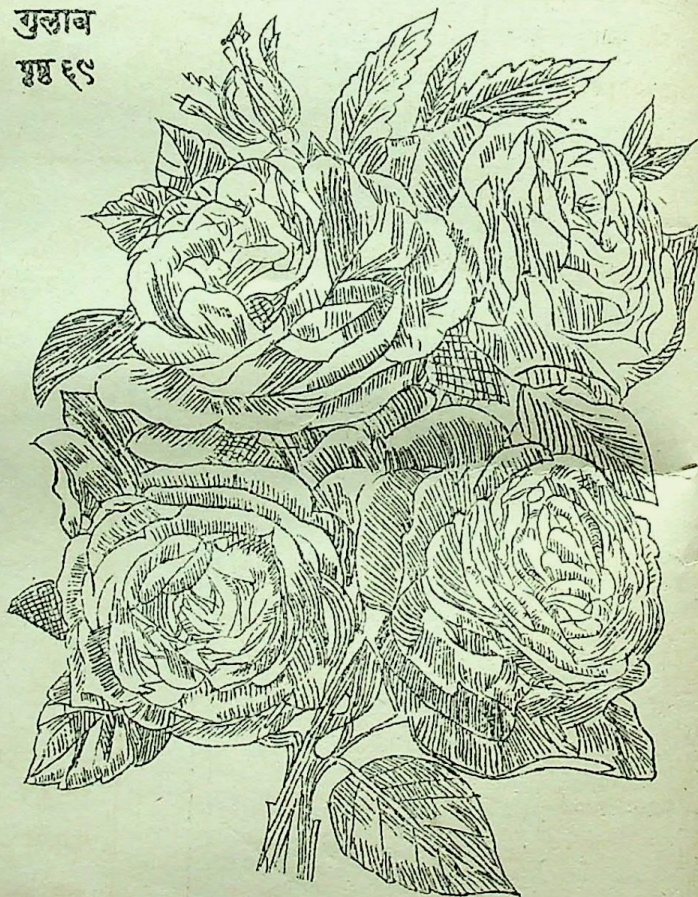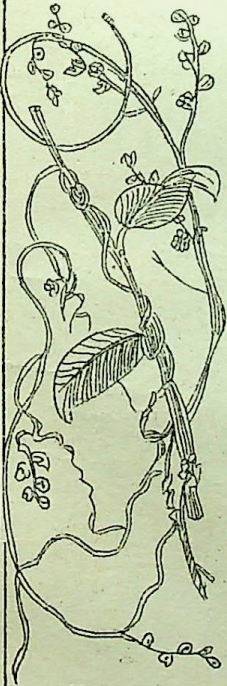
नं० ६३
आलूबुखारा
पृष्ठ १९
नं० ५४
आक
पृष्ठ १६
नं० ३
आकाशबेल
पृष्ठ २
नं० ७१
इलायचीबड़ी
पृष्ठ २२
नं० ६९
इमली
पृष्ठ २१

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri
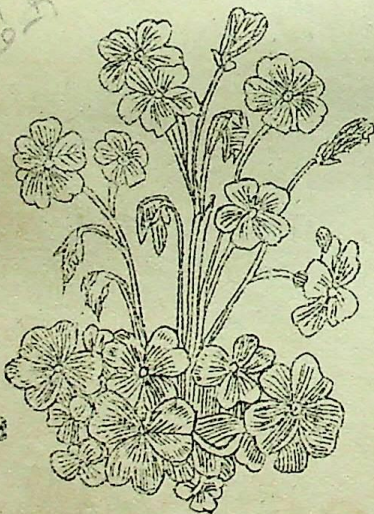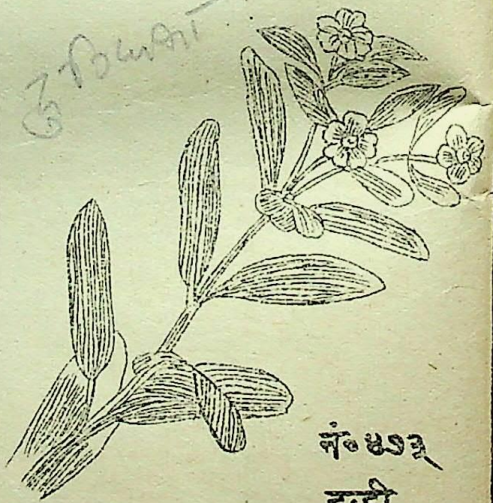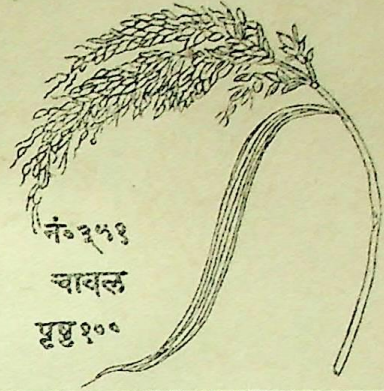
नं०१७२
केतकी
पृष्ठ५०
नं०३५१
चावल
पृष्ठ१००
नं० ३७५
चंदन
पृष्ठ१०७
नं०३९८
लीमू(नीबू)
पृष्ठ२२५
नं०४३१
पलास
पृष्ठ२१८
नं०५५२
पालक
पृष्ठ१५८
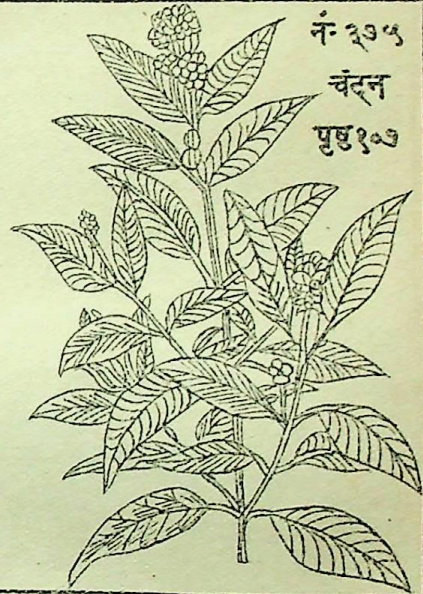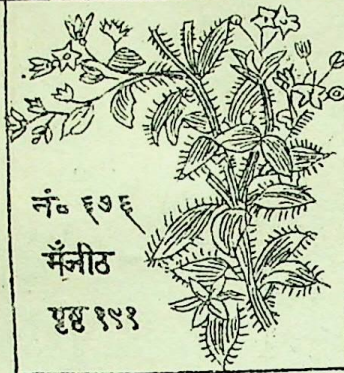
CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नं० १८८
कंघई (कंघी)
पृष्ठ ५५
नं० ३७९
चमेली
पृष्ठ १०८

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri
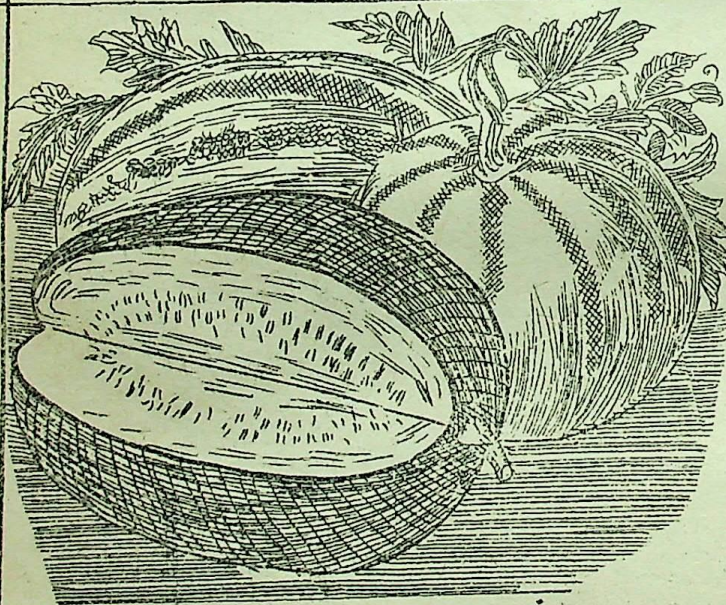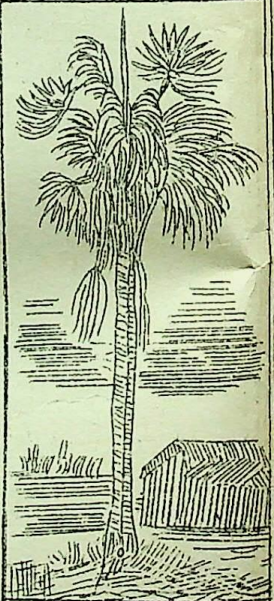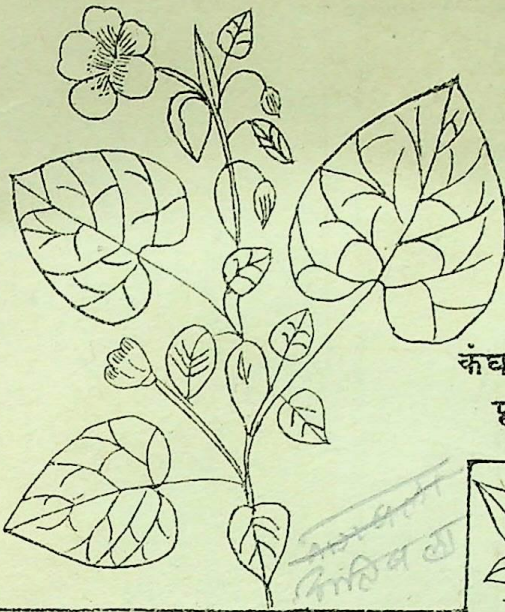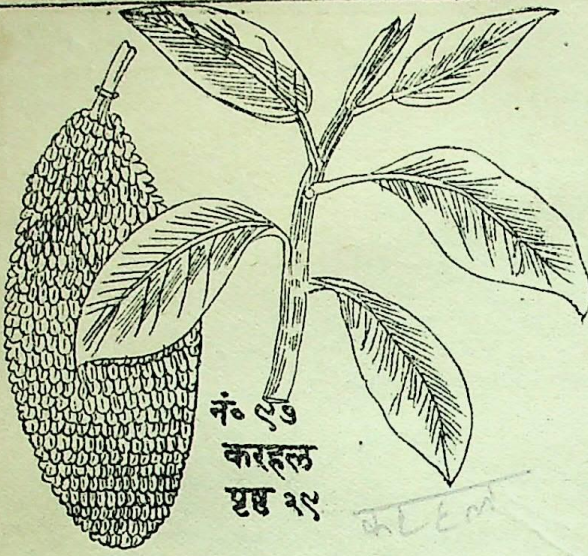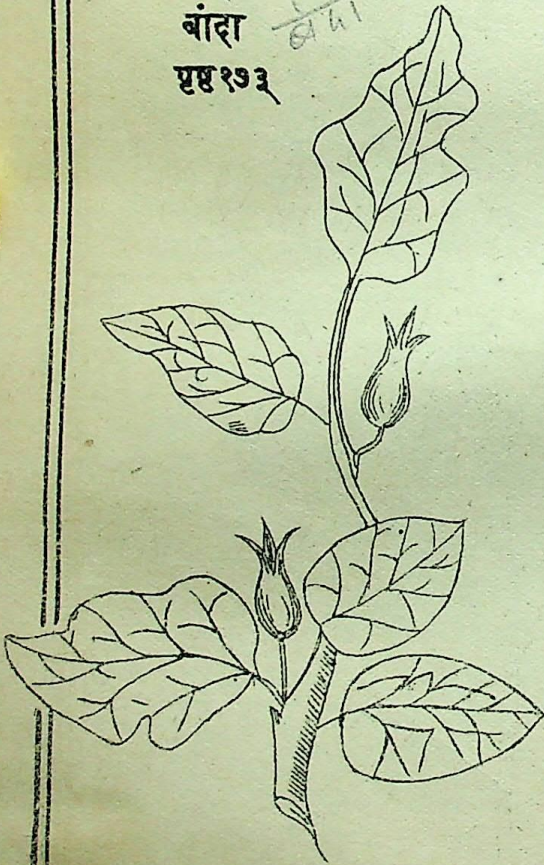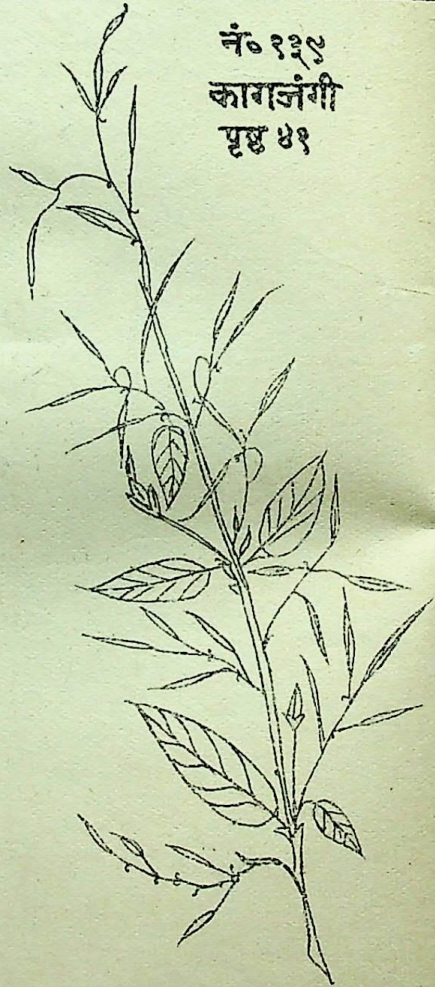
नं० ६५८
लालमिर्च
पृष्ठ १९८
नं० ८८९
सोया
पृष्ठ २५१
नं० ७१२
सूंगा
पृष्ठ २०२

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नं० ५२०
नासपाती
पृष्ठ १४८
नं० ४८९
दौनामरुआ
पृष्ठ १३९
नं० ७२३
मेथी
पृष्ठ २०४

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri
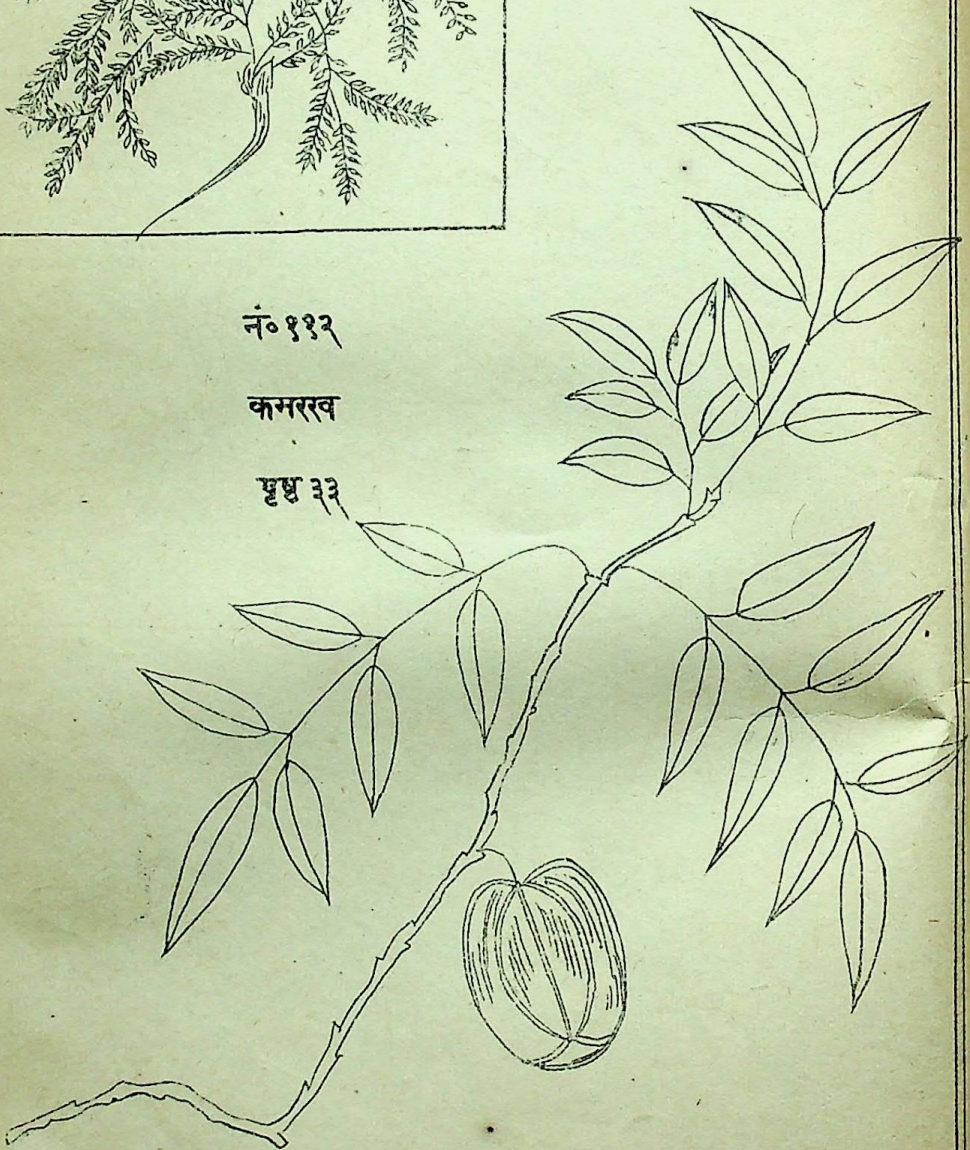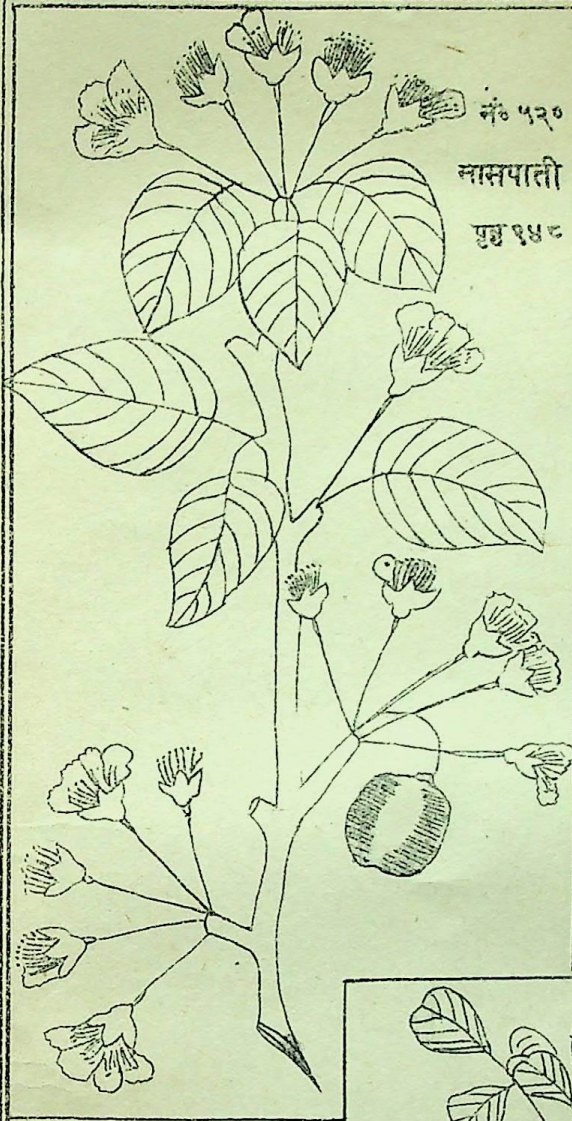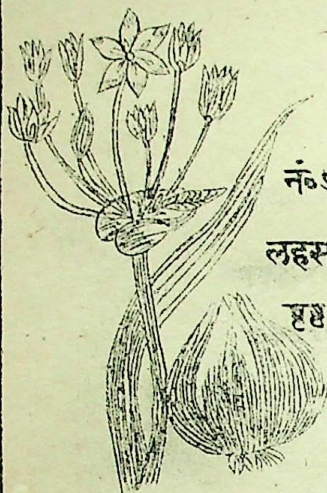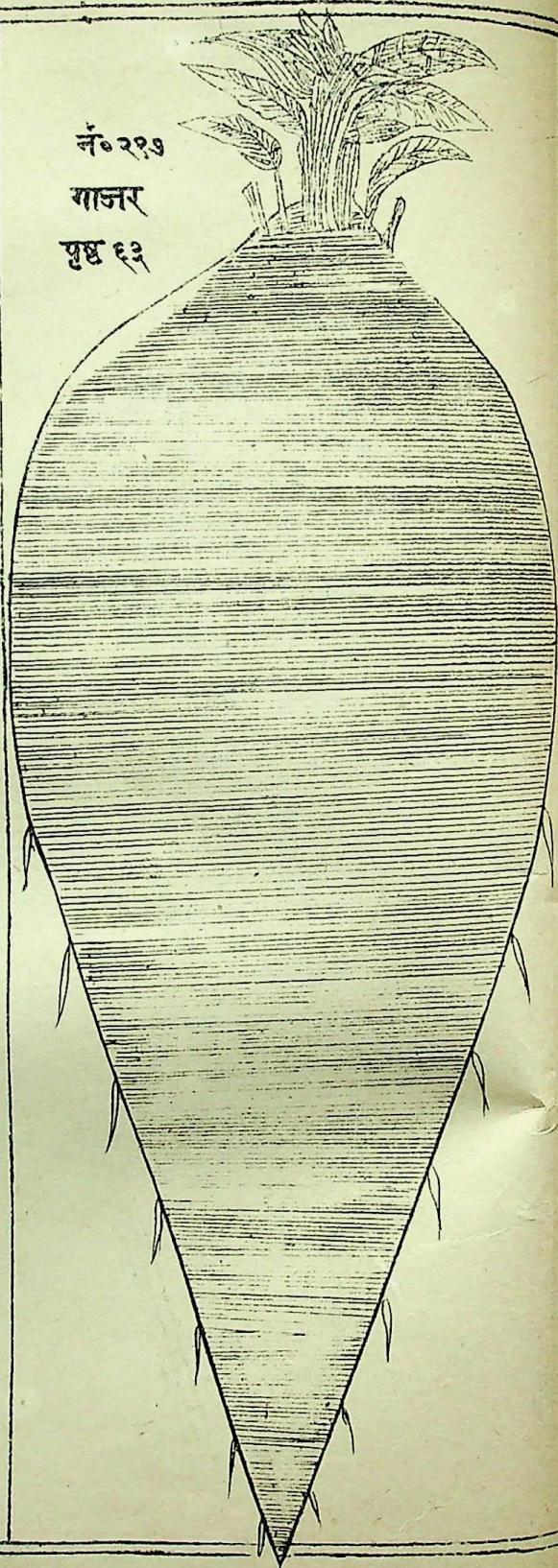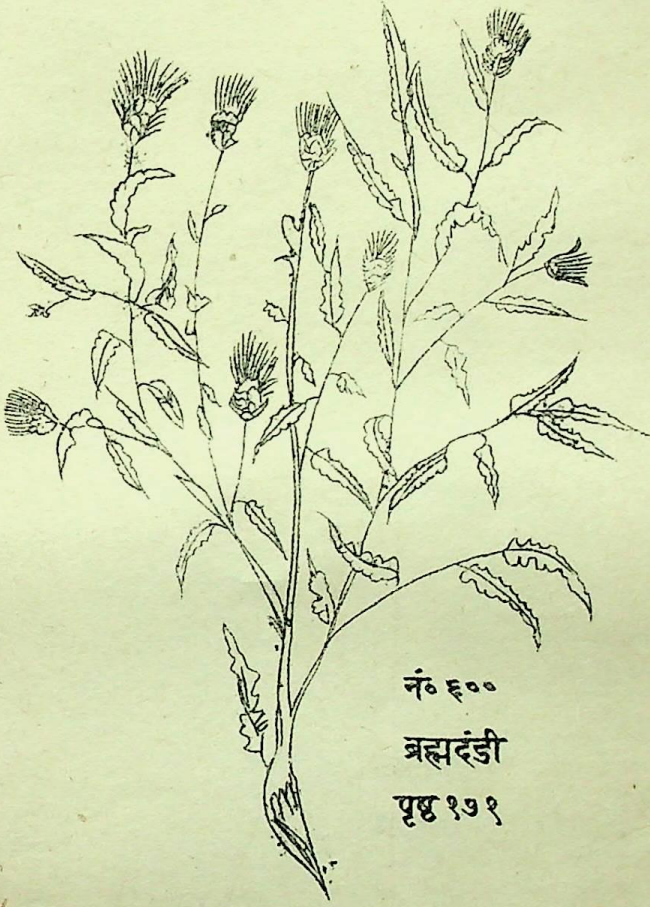
नं० ६००

ब्रह्मदंडी

पृष्ठ १७१

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

7 JUL 1983

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मक्का

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
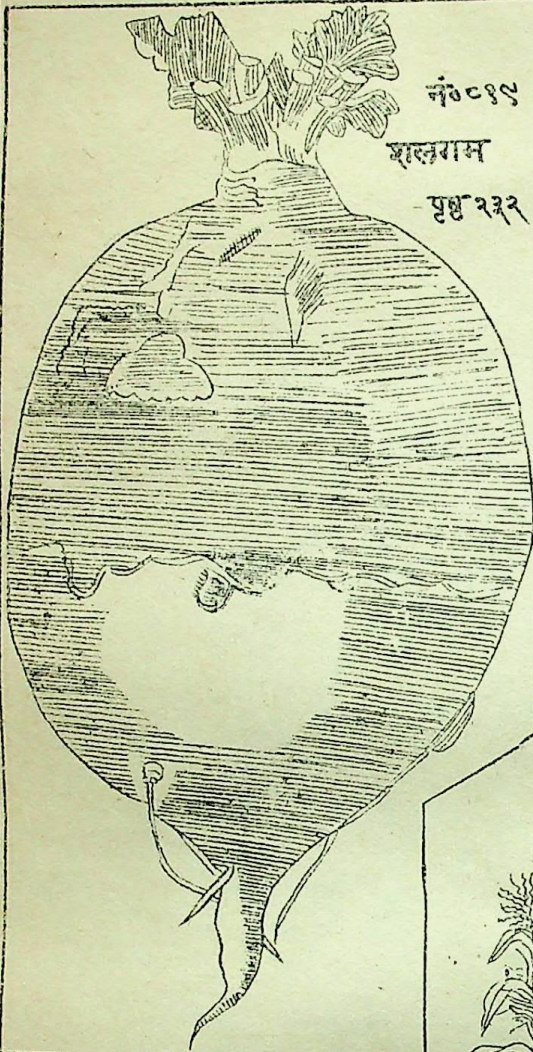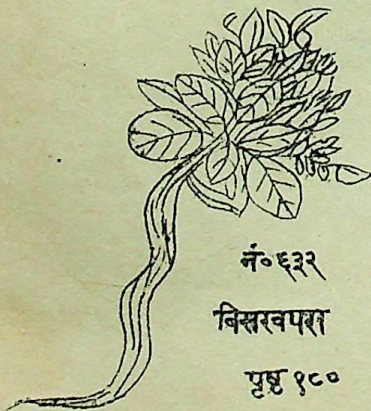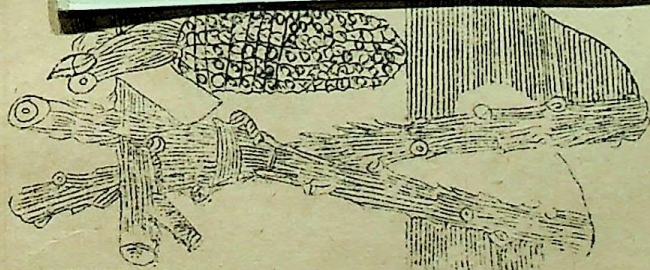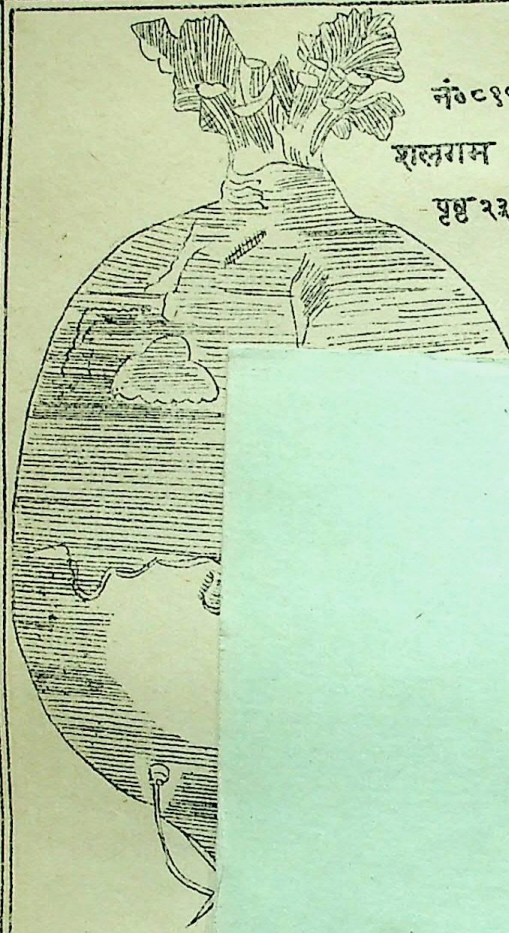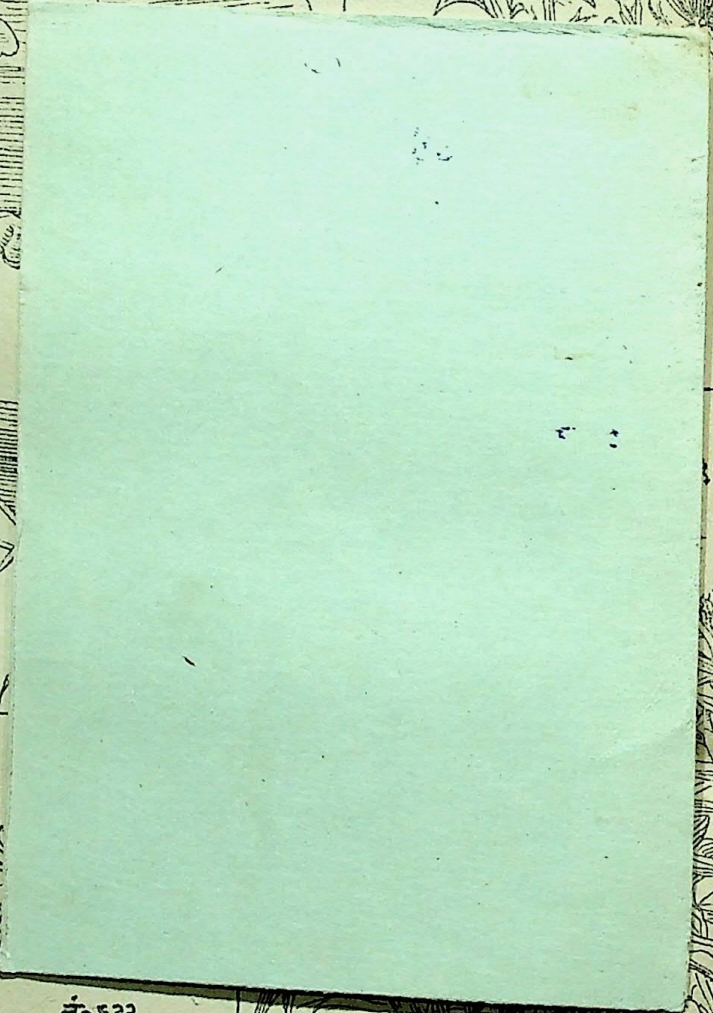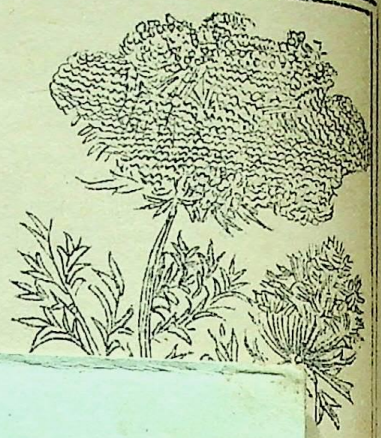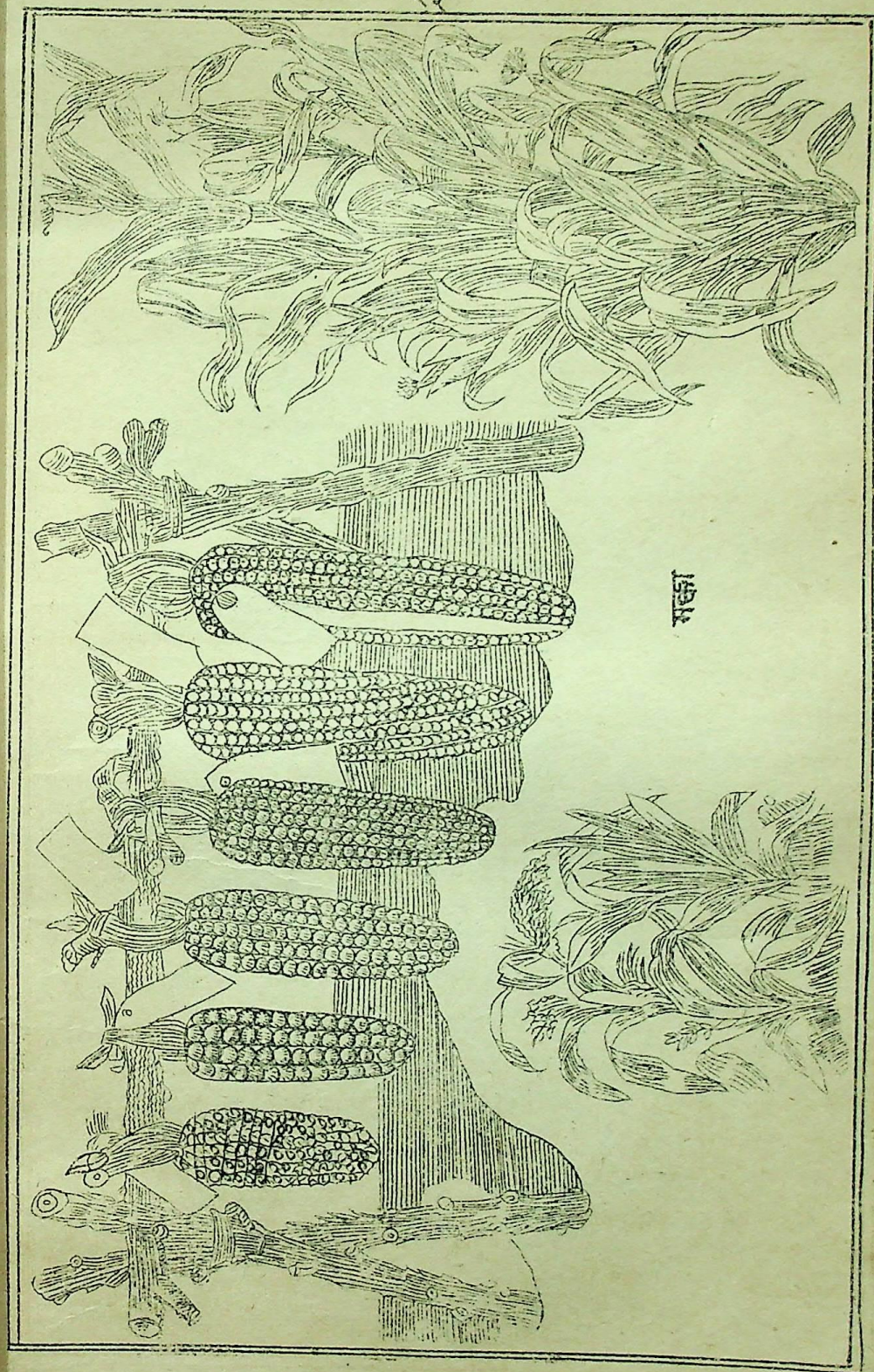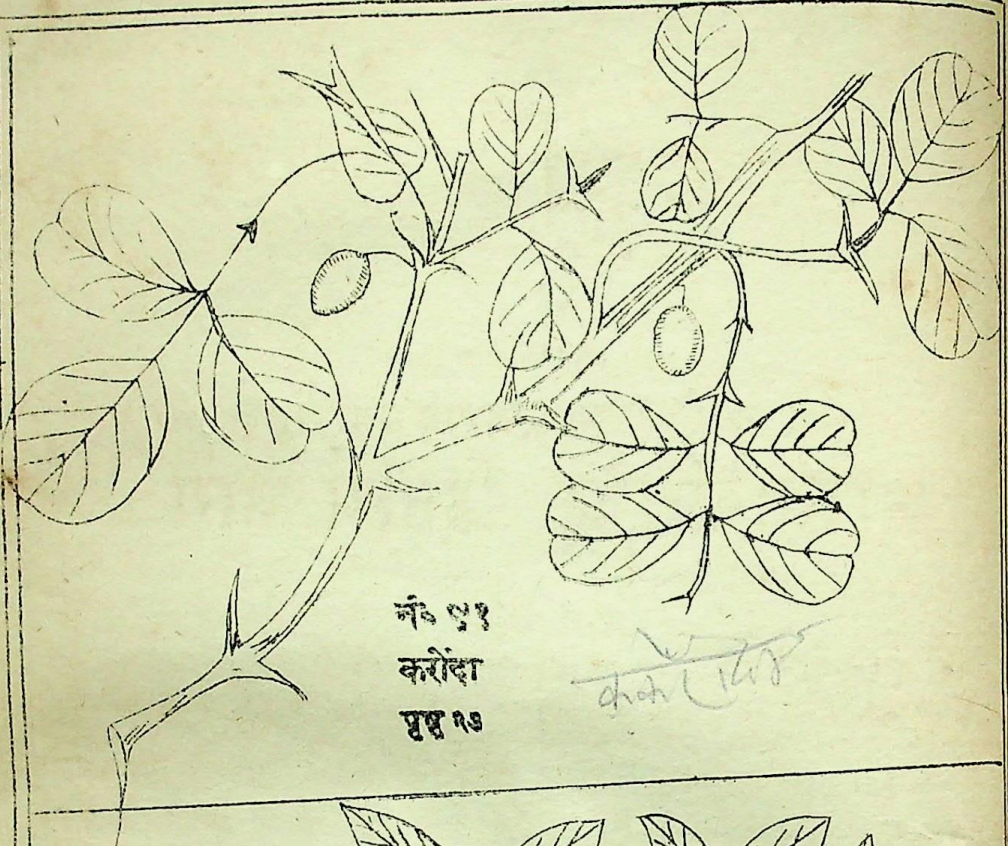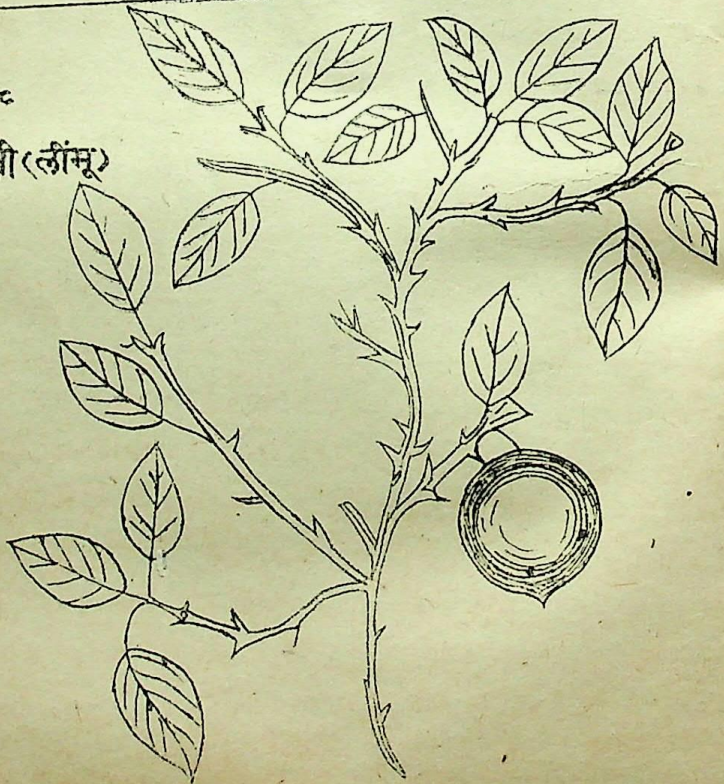
॥ श्रीकृष्णः ॥

॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

अभिनवनिघंटु द्वितीय भाग

मंगलाचरण

गवां दोहने दृष्टराधामुखाब्जन्तदानीं च तन्मेलनव्यग्रचित्तम् ।
समुत्पन्नतन्मानसैकान्तभावं भजे नंदसूनुं सदा बालकृष्णम् ॥ १ ॥

(१) अक़रक़रा

संस्कृत में, आकारकरभ और अरबी में, आक़रक़रहा, कहतेहैं स्वरूप, काला स्वाद, तीखा और चरपरा तीक्ष्ण गन्धियुक्त है पहिचान, एक प्रकारकी जड़है प्रकृति* दूसरे दर्जामें रूक्ष और गरमहै हानिकर्ता, फुप्फुस को दर्पनाशक, मुनक्का और कतीराहै प्रतिनिधि, सौंठ, पीपल, और शहद है मात्रा ३माशा गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रोध उद्घाटक (२) मस्तिष्क सम्बन्धी मलकी नाशक, (३) सब प्रकारके कफ़ को छांटनेवाली (४) अर्दित, पक्षवध, स्तम्भ, कम्प, कुजाज (गर्दन का खिचना) वक्षस्थल की पीड़ा, चूतड़केजोड़ से पांवतक जो पीड़ा उठतीहै इनको गुणकर्ता है (५) संन्यास के लिये भी गुणकर्ता है, (६) शीत प्रकृति के ओज को बलप्रद, (७) आर्त्तव प्रवर्त्तक (८) जो पीस के बालकों की जिह्वामें मलें तो हकलापन और जिह्वा की दुर्गंधि नाशक, (९) इसके क्वाथ से कुल्ली करना दांतोंको दृढ़ कर्ता है (निर्विषैल)

(२) अक़ाक़िया

अरबी, अक़ाक़िया स्वरूप, काला और ललोंई लिये हैं स्वाद, कड़ुआ और सुगन्धियुक्त पहिचान, कीकड़ के वृक्ष को गोदकर उसका स्वरस निकालते हैं प्रकृति, ३ कक्षा में अशुद्ध ठण्डा और रूक्ष है तथा शुद्ध किया दूसरी कक्षामें ठण्डा और रूक्ष है हानिकर्त्ता, रोध उत्पन्न करे है दर्पनाशक, बादाम रोग़न प्रतिनिधि, चन्दन और रसोत मात्रा, ३॥ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रूक्षताप्रद, (२) मलको दुःखित अवयव से रोके, (३) बद्धक (४) मुख से रुधिर आने का रुद्धक (५) अमाशय और यकृत्

* यूनानीमतमें हरएक द्रव्यकी ४ कक्षा मानी हैं वह उस द्रव्य के प्रभावसे जानी जाती हैं।

को बलप्रद (६) गुदभ्रंश (कांच निकलना) को इसका खाना और लेप करना गुणदायक है (७) नेत्रों को बल प्रद (८) नेत्रों के दूखने को गुणकर्ता (९) रुधिर स्राव को गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(३) आकाश बेल

संस्कृत, आकाश बल्ली **फ़ारसी,** दरख़्त पेचां **अरबी,** अफ्तीमून **स्वरूप,** पीली **स्वाद,** कड़वी और सुगंधियुक्त है **पहिचान,** बिना पत्ते और फल के एक जाति की बेल है बहुधा वृक्षों पर फैलती है और उनको सुखा देती है **प्रकृति,** ३ कक्षा में गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता,** व्याकुलता को बढ़ाती है मूर्छा और तृषाप्रद है एवं फुप्फुस को हानि कर्ता है **दर्पनाशक,** कतीरा, केसर, बादामरोग़न और बबूलका गोंद है **प्रतिनिधि,** लाजवर्द, निसोथ और पित्तपापड़ा है **मात्रा,** ६ माशेसे १ तोले तकहै **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) शोथ को लयकर्त्ता (२) रोध को खोलनेवाली (३) बातज, और कफजमलको दस्तके द्वारा निकालने वाली (४) उन्माद, मानियां, (हृदय संबंधी परदेकी सूजन) विग्गी बंधना और प्रायः मस्तिष्क संबंधी रोगों को गुणकर्त्ता (५) रक्त की शोधक (६) बहुधा त्वचा के रोगों को लाभ कर्त्ता (७) प्लीह और शोथ में इसका लेप गुणकारक है (निर्विषैल)

(४) अक़ीक

संस्कृत, वज्र **फ़ारसी,** अक़ीक **अरबी,** अक़ीक **इंग्रेजी,** डाएमंड **स्वरूप,** सफ़ेद और गहरा लाल नीला और पीला **स्वाद,** फीका **पहिचान,** एक रंग और चमकीला प्रसिद्ध पत्थरहै **प्रकृति,** दूसरे दरजे में ठंडा और रूक्ष है **हानिकर्त्ता,** गुरदा और गले को **दर्पनाशक,** कतीरा और कद्दूके बीज हैं **प्रतिनिधि** मूंगा और कहेरुब्बा **मात्रा** १॥। माशे **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) हृदयको बलप्रद (२) होलदिल को गुण कर्त्ता (३) मुखसे रुधिरआनेको गुणकर्ता (४) रुधिर स्रावको गुणकर्ता (५) विशेषतः आर्त्तव का रुद्धकहै (६) दृष्टि को बलप्रद (७) इसको अपने पास रखना क्रोध की गरमी को शांति कर्त्ता है (८) होलदिल के दुःख का नाशक है

(५) अंकोल

संस्कृत, अंकोट **इंग्रेजी,** एलेनूजीएम्लेमारकीआर **स्वरूप,** हरा और भूरा **स्वाद,** मीठा **पहिचान,** एक वृक्ष है उसके पत्ते शिफ्तालूके समान होतेहैं, फल मीठा और भिंगी अत्यन्ततर होतीहै **प्रकृति,** पहिली कक्षा में गरमतर **हानिकर्त्ता,** कफ अधिक उत्पन्नकर्त्ताहै **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) हृदयको बलप्रद (२) कफ और वायु के विकारों को हरणकर्ता (३) शोथ नाशक (४) उदरकी पीड़ाको हरणकर्त्ता (५) उदरके कृमियोंका नाशक (६) इसकी जड़की छालका चूर्ण एक माशा काली मिरचके साथ बवासीरको बहुत गुणकारक है (निर्विषैल)

(६) अखरोट

संस्कृत, अक्षोट **फ़ारसी,** चारमग़्ज़,

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गिर्दगां, **अरबी**, जोज़ुलहिंद, **इंग्रेजी**, नट **स्वरूप**, भूरा **स्वाद**, फीका और स्निग्ध **पहिचान**, एक विलायती मेवा है इसकी मिंगी बादामकी मिंगीके समान स्वादिष्ट है, **प्रकृति**, १ कक्षा में गरम २ कक्षा में रूक्ष है, **हानिकर्त्ता**, उष्ण प्रकृतिको **दर्प नाशक**, अनार का स्वरस है, **प्रतिनिधि**, चिरोंजी और चिलगोजा है **मात्रा**, १ तोले से २ तोले तकहै **गुण, कर्म, प्रयोग**(१)अत्यंतमृदु है (२) प्रकृतिको मृदु कर्त्ता (३) व्यर्थमलको लय कर्त्ता (४) ओज प्रद (५) अजीर्ण नाशक (६) मस्तिष्क, हृदय, यकृत् और आंतरिक इन्द्रियों को बलप्रद (७) इसकी भुनीहुई मिंगी शीतजन्य कास को गुण कारक है (सम, निर्विषैल)

(७) अंगदां

अरबी, अंजदाविलायती, व, रूमी, **स्वरूप**, काला, व, हरा **स्वाद**, तीक्ष्ण और गन्धियुक्त **पहिचान**, हींग जिसवृक्षका गोंदहै एक विलायती बूटीहै और दो जातिकी है **प्रकृति**, दूसरी कक्षा में गरम और रूक्ष है **हानिकर्त्ता**, यकृत् और वस्ति तथा आंत और उष्ण प्रकृति को **दर्पनाशक**, जरश्क और कतीरा **प्रतिनिधि**, राई **मात्रा**, दो माशे **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) शोथ को लय कर्ता(२) स्वच्छता प्रद (३)मल को शोधक, (४) मूत्र और आर्तव प्रवर्तक, (५) रोध उद्घाटक (६) पक्काशय और ओजको बलप्रद, (७) आंतरिक पीड़ा को शमन कर्ता, (८) जो स्त्री ऋतु धर्म के पीछे तत्काल ४॥ माशे इसको एक सप्ताह तक खावै तो गर्भवती न होवै (निर्विषैल)

(८) अगर

संस्कृत, अगुरु **अरबी**, ऊदग़र्की **इंग्रेजी**, ईगल वुड **स्वरूप**, काला और भूरा **स्वाद** कडुआ और कुछ तीक्ष्ण सुगन्धि लिये **पहिचान**, जो जलाने से सुगन्धि देती है एक वृक्षकी लकड़ीहै जो जलमें डूब जावे वह उत्तम है **प्रकृति**, २ कक्षा में गरम और तीसरी कक्षा में रूक्ष है **हानिकर्त्ता**, उष्ण प्रकृति को **दर्पघ्न**, कपूर और गुलाबहै **प्रतिनिधि**, दालचीनी, लौंग और केशर है मात्रा २ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) प्राणवायुको स्वच्छताप्रद, (२)रोध उद्घाटक, (३)हृदय को प्रसन्नकर्ता, (४)स्नायुओं को बलप्रद, (५)इन्द्रिय, मस्तिष्क सम्बन्धी सन्धि, यकृत् पक्काशय और अन्त्रि को बलप्रद, (६)वायुको लयकारक, (७) गर्भाशयकी शीतता को लाभकर्ता (८) ओजप्रद और हृदयकी व्याकुलताका नाशक है, (निर्विषैल)

(९) अंगूर (हिन्दी दाख)

संस्कृत, द्राक्षा **फारसी**, अंगूरश्याह, दोशावह और रज **अरबी**, अनब, व, हसरम **इंग्रेजी**, ग्रेपरोफ्रिस **स्वरूप**, पीला और काला **स्वाद**, मीठा और चासनी युक्त **पहिचान**, प्रसिद्धहै **प्रकृति**, दूसरी कक्षा में गरमतर, तथा कच्चा, १ कक्षा में ठंडा है और दूसरी कक्षा में रूक्ष है **हानिकर्ता**, स्निग्धआमाशय और प्लीह को तथा वायुजनक है **दर्पघ्न**, सौंफ और गुलकन्द

है प्रतिनिधि, मुनक्काके बीज गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शीघ्रपाकी, (२) पक्काशय की थैली में शीघ्र उतरे, और अत्याहार है (३) उत्तम रुधिर उत्पन्न कर्ता, (४) शरीरको बृंहण कर्ता, (५) रक्त शोधक, (६) वातजमलको हरणकर्ता, (७) स्वच्छ कर्ता, (८) मलको पक्ककर्ता, (९) जो इसको खतमी के संग पक्व करके शोथपर लगावें तो शोथको शीघ्रही लयकरे, छिद्रोद्घाटक है (१०) मनको प्रसन्नकर्ता (निर्विषैल)

(१०) अगया

स्वरूप, हरा स्वाद, कडुआ और तीखा पहिचान, प्रसिद्ध बूंटीहै रसायनी लोग इस के ढूंढने में बहुत रहते हैं प्रकृति, तीसरी कक्षा में गरम और दूसरी कक्षामें रूक्ष है हानिकर्ता, त्वचा को और खुजली उत्पन्न कर्ता है दर्पनाशक, मुर्दासंग और गायका घीहै मात्रा, दो रत्ती गुण, कर्म, प्रयोग, (१) जो इसके स्वरस (अरक) में चालीस दिन गन्धक भिगो कर धूप में रक्खें फिर उस गन्धक को २ रत्ती पानमें रखके खावें तो अत्यन्त क्षुधा लगतीहै (२) अति कामोद्दीपन कर्ता, (३) जो वंग को इसके स्वरस में भस्म करें तो श्वास, कासको अत्यन्त गुण करती है और किसी प्रकार का अपगुण नहीं करती (निर्विषैल)

(११) अगस्त

संस्कृत, अगस्त्य अरबी, आंडोंफ्लोरा स्वरूप, इसका फूल सफेदी लिये गुलाबी होता है स्वाद, फीका पहिचान, एक वृक्ष है प्रकृति, २ कक्षा में ठंडा और रूक्ष है हानिकर्ता, उदरमें अधिक वायुउत्पन्न कर्ता गुण, कर्म, प्रयोग, (१) उष्ण, (२) पित्तको हरण कर्ता, (३) इसका पुष्प पित्तका नाशकहै. (४)इसकी गन्धि शक्तिको बलप्रद और नक्तांध्य को नाशक है (निर्विषैल)

(१२) अंजीर

संस्कृत, मंजुल फारसी, अंजीर अरबी, तीन स्वरूप, लाल और काला स्वाद, मीठा पहिचान, हिन्दी और विलायती वृक्ष की मेवाहै प्रकृति १ कक्षामें गरम और दूसरी कक्षा में तर है हानिकर्त्ता, यकृत और आमाशय को दर्पनाशक, बादाम और सातिर है प्रतिनिधि, चिलगोजा और मुनक्का है मात्रा, पांच दाने और सात दाने गुण, कर्म, प्रयोग (१) सद्यका (ताजा) मृदुकर्त्ता (२) वायुको लयकर्ता, (३) कान्तिकर्ता (४) अपस्मार (मिरगी) पक्षवध और बहुधा कफके रोगों को लाभ कर्त्ता (५) प्रकृति को मृदुकर्त्ता, (६) क्रम क्रम से रेचन कर्त्ता, (७) रोध, प्लीह, शोथ, बहुमूत्रता और वृक्ककी कृशताको हरण कर्ता, (८) इसका शरबत कासको गुण कर्त्ताहै (९) शुष्क सर्वकर्मोंमें हीन है (निर्विषैल)

(१३) अंजन

संस्कृत, अंजन फारसी, सुरमा अरबी, असमद इंग्रेजी, आंटोमली स्वरूप, काला और सफ़ेद स्वाद, बेस्वाद पहिचान, प्राकृत जला हूआ एक मृदु पाषाण (पत्थर) है प्रकृति, २ कक्षा मे ठंडा और रूक्ष, हा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नि कर्त्ता, वक्षस्थलके अवयवको दर्प-नाशक, कतीरा और खांड प्रतिनिधि, अनार मात्रा, (खाते नहीं हैं) गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) रूक्षता प्रद, (३) नेत्रकी स्वस्थताका रक्षक, (४) दृष्टि को बल प्रद, (५) नेत्रकी सरदी, गरमी, और कीचडों को हरणकर्त्ता, (६) व्रण पूरक, (७) नक्सीर, शुक्रमेह और आर्त्तवका रुद्धक, (८) इसकी पिचुक्रिया अर्थात् भिगोयाहुआ कपड़ा रखना गुदभ्रंश (कांच निकलने) को गुण कर्त्ता है और गर्भाशय की कठोरता को मृदु कर्ता है (निर्विषैल)

(१४) अंजुबार

फारसी, अंगबार अरबी, अंजुबार स्वरूप, ललाई लिये स्वाद, फीका पहिचान, आदमीके कद समान कालाज़मीनमें एक वृक्ष होताहै इसकी जड वर्ताव में आतीहै प्रकृति, ३ कक्षामें ठंडा और रूक्षहै हानिकर्त्ता, शीत प्रकृतिको दर्पनाशक, सोंठ प्रतिनिधि, जरश्क और गिलेअरमनी मात्रा, ४ माशेसे ६ माशे तक गुण, कर्म, प्रयोग, (१) सम्पूर्ण अवयवोंके रुधिर का रुद्धक, फेंफडा और विशेष करके वक्षस्थलके रुधिरका रुद्धकहै (२) पित्त और रुधिरके दाहको शमन कर्ता, (३) ववासीरका रुधिर, मरोड़ा, वमन और जीर्णातीसार (पुरानेदस्त) का बद्धक और नज़लाओं का रुद्धक है (निर्विषैल)

(१५) अजमोद के बीज

संस्कृत, अजमोदा फारसी, तुख्मकरफ्स अरबी, बजरुलकरफ्स इंग्रेज़ी, एप्यंग्रेवियोलेंस स्वरूप, काला स्वाद, तीखा और चरपरा पहिचान, अनीसूनके समान एक बीजहै प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है हानिकर्ता, व्यर्थ भाप (परिमाणु) उत्पन्न कर्ता, सिरगीको प्रकटकर्ता है इसकी जड फेंफडे को अवगुण करती है दर्पनाशक, अनीसून और मस्तगीहै प्रतिनिधि, खुरासानी अजमायन मात्रा, ६ माशेसे ९ माशे तक गुण, कर्म, प्रयोग, (१) श्वास, रूक्षकास, और आंतरिक अवयवके शोत को गुण कर्ता, (२) वायु और अफराको लय कर्ता, (३) यकृत् और प्लीहके रोधको खंडन कर्ता, अत्यंत मूत्र प्रवर्तक, (४) अश्मरी (पथरी) को खंडन कर्ता, क्षुधा और ओज को चालन कर्ता, (५) इसकी जड़ संपूर्ण कफज रोगोंको लाभकर्ता, तथा आहार पाचकहै और जलोदरको गुण कर्ता है अपने प्रभाव में अपने बीज से बलवान् है (बीज और जड, दोनों निर्विषैल है)

(१६) अजमायन देशी

संस्कृत, यवानिका फारसी, नानख्वाह अरबी, कमूनमुलूकी इंग्रेजी, ओमम्ह्लन् स्वरूप, भूरा अनीसूनके समान कालापन लिये स्वाद, कडुवास लिये तीखा और तीक्ष्ण गंधयुक्त है पहिचान, अनीसूनके समान एक जातिका बीजहै प्रकृति ३ कक्षा में गरम और रूक्षहै हानिकर्ता, उष्ण प्रकृति को, शिरः पीड़ाप्रद और स्तनोंके दुग्ध कोह्रास कर्ता दर्पनाशक, उन्नाब, धनियां।

और खांड है **प्रतिनिधि**, कलोंजी और काला जीरा है **मात्रा**, ६ माशे से १ तोले तक **गुण. कर्म, प्रयोग.** (१) आहार पाचक क्षुधावर्द्धक, (२) कफविकार, वायु, उभार और जलोदरको हरण कर्ता, (३) रोध उद्घाटक, (४) यकृतकी कठोरता को लाभ कर्ता, (५) मूत्र, और आर्तव प्रवर्तक, (६) कोई विषकी दर्पनाशक कहते हैं (७) विशेषतः अश्मरीको खंडन कर्ता है (निर्विषैल, परंतु अति मात्रा विषैल है)

(१७) अजमायन खुरासानी

संस्कृत, पारसीकयवानी **फारसी**, तुख्म बिनग **अरबी**, बजरुलबिनज **स्वरूप**, काली सफेद और लाल, तीन जातिकी होती है **स्वाद**, तीखी और कड़वी **पहिचान**, मेथी के समान एक जाति का बीज है **प्रकृति**, २ कक्षामें सफेद ठंडी और रूक्षहै और ३ कक्षा में काली ठंडी और रूक्ष है **हानिकर्ता**, सफेद कण्ठमाला जनक और काली जातिकी घातकहै **दर्पनाशक**, अफीम और पोस्त है **मात्रा**, तीन माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) सब नजलाओं को लाभ कर्ता, (२) स्निग्धतायुक्तस्रावको हरण कर्ता (३) सम्पूर्ण प्रकारकी कर्णपीड़ाको शांतिप्रद, (४) क्रफज कासको गुणकर्ता, (५) खकार में रुधिर आने की नाशक, (६) अधिक रूक्षता कर्ता. (७) अवयवोंमें शैथिल्यता कर्ता, निद्राप्रद, विशेषतः आर्तव इत्यादि की बद्धक, व रुद्धक, है (काली, घातक बिष है और सफेद, निर्विषैल)

(१८) अण्डा मुर्गी का

संस्कृत, कुक्कुटगर्भ **फारसी**, बेजये माकियां **अरबी**, बेजुल्दीक **स्वरूप**, सफेद **स्वाद**, फीका और कुछ खारी **पहिचान**, प्रसिद्ध **प्रकृति**, उसके भीतरकी पिलाई (जर्दी) उष्णतायुक्त होकर स्नायुको जोड़ने वाली और इसकी सफेदी ३ कक्षामें ठंडी और तरहै **हानिकर्ता**, आमाशयको. पथरी और गुल्म, उत्पन्न कर्ता **प्रतिनिधि**, गरम मसाला और नमक हैं **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अधभुना रसको सम्यक् पक्ककर्ता, अत्याहार, सूक्ष्ममलोत्पादक, (२) हृदय, मस्तिष्क, शरीर, और ओजको बलप्रद, (३) ऊष्णप्रतिश्याय (गरम नजलादि) को वक्षस्थलसे रोकने वाला, (४) वक्षस्थलकी खुरखुराहट और पक्वाशयके मुखसे रुधिर आनेका नाशक, (५) अधभुना बालक के लिये दुग्ध का प्रतिनिधि है, (६) पिलाई की चिकनाई ओजको बलप्रद, (७) शीघ्र केश (बाल) उत्पन्न कर्ता, (८) विधि पूर्वक इसके जले हुए छीलका प्रायः बक्षस्थलके रोग और ओज को गुणकर्ता हैं (निर्विषैल)

(१९) अतीस

संस्कृत बिषा **इंग्रेजी** एकोनाईटमूहैट रोफाइलम् **स्वरूप**, भूरी **स्वाद**, कुछ कसेली **पहिचान**, अंगुल समान एक घास की जड़ है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता**, बद्धक है **मात्रा**, आध माशेकी है **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) ओजको दृढ कर्ता, (२) आहार पाचक, (३) अतीसारबद्धक, (४)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कफ नाशक, (५) वायुको लय कर्ता, (६) अर्श और जलोदरको लाभकर्ताहै (निर्विषैल)

(२०) अदरख

संस्कृत. आर्द्रक **फारसी.** जंगबीलतर **अरबी.** जंजबीलुलूरतब **इंग्रेजी**, जिंजर **स्वरूप** भूरी है **स्वाद**, तीखी और तीक्ष्ण गन्धियुक्त **पहिचान**, पृथ्वी के नीचे एक जड़ होती है **प्रकृति** २ कक्षा में गरम और १ कक्षा में रूक्ष है **हानिकर्ता**, उष्ण प्रकृति को **दर्पनाशक**, बादाम रोगन है **प्रतिनिधि**, काली मिरच **मात्रा** १ तोलेकीहै **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पाचक, (२) उदरके आध्मान और वायुकी नाशक, (३) क्षुधा उत्पन्न कर्ता, (४) पक्काशयके कफ और स्निग्धताको हरण कर्ता, (५) पक्काशय और यकृत् तथा पाचक शक्तिको बलकर्ता, (६) इसका मुरब्बा कफज और शीतप्रकृति को अत्यन्त गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(२१) अँधेरा के बीज

फारसी, तुरुम मोरिद **अरबी**, हब्बुल्लास **स्वरूप**, काले **स्वाद**, कड़वे और कसेले **पहिचान**, एक वृक्षके फलके बीज हैं **प्रकृति**, स्नायुको जोड़नेवाले **हानिकर्ता**, शिरः पीड़ा उत्पन्न कर्ता और प्रतिश्यायप्रद **दर्पनाशक**, गुलबनफ्सा **प्रतिनिधि**, अकाकिया और मेंहदीका फूलहै **मात्रा** ६ माशेसे ९ माशे तककी है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उष्ण कास को गुण कर्ता, (२) कसैलेपनके कारण अतिसारके बद्धक (३) तिक्तता के कारण मूत्रल, (४) वृक्क (गुर्दा) और वास्तिकी अश्मरी (पथरी) को खंडन कर्ता, (५) मरोड़ा को लाभ कर्ता, (६) हृदय को बलप्रद, (७) इसका तैल निद्रा नाश और भ्रमको अति गुण करता है (निर्विषैल)

(२२) अँधेरा की जड़

फारसी, बेख मोरिद **अरबी**, असलुल्लास **स्वरूप**, कालापन लिये भूरी **स्वाद**, कड़वी और कसेली **पहिचान**, प्रसिद्ध **प्रकृति**, स्नायुको जोड़ने वाली **हानिकर्ता**, शिरः पीड़ा उत्पन्न कर्ता **दर्पनाशक**, गुलबनफ्सा और बबूलका गोंद है **प्रतिनिधि**, अकाकिया और मेंहदी का फूल है **मात्रा** ९ माशे की है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सुगंधिताके कारण बलकर्ता, हृदय और प्राण के अनुकूल, (२) पक्काशयको बलप्रद, (३) रक्तप्रदर और रक्तातिसारके रुधिरकी रुद्धक, (४) मूत्रको अत्यंत प्रवर्तक, (५) शोथको लय कर्ता (६) नेत्र विकार और कर्ण पीड़ा (कानकादर्द) को गुण कर्ता है (निर्विषैल)

(२३) अनंनास

संस्कृत, अनंनाश **फारसी**, अनंनास **स्वरूप**, बाहर लाल और भीतर पीला होताहै **स्वाद**, चासनी युक्त **पहिचान**, प्रायः हिंदमें एक फल होता है **प्रकृति**, २ कक्षा में ठंडा और तर है और किसी के मत में १ कक्षा में ठंडा और दूसरी कक्षा में तर है **हानिकर्ता**, कंठके नल और स्वासिक अवयवको **दर्पनाशक**, खांड़ और सोंफ-

का मुरब्बाहै प्रतिनिधि, सेब गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मनको प्रसन्नकर्ता, (२) हृदय, यकृत्, मस्तिष्क और पक्वाशयको बलकर्ता, (३) हृदयकी व्याकुलताको हरण कर्ता, (४) पित्तकी ऊष्माको शमन कर्ता, (५) कृश और शीत प्रकृतिको बलप्रद, (६) इसके मुरब्बा और शरबत उत्तम और स्वच्छ होते हैं और यह दोनों प्रभाव में बल कारक हैं, (७) इसके मीठे चांवल भी पकते हैं (निर्विषैल)

(२४) अनार मीठा

संस्कृत, स्वादुदाडिम फारसी, अनार शीरीं अरबी, रुम्माहल्व इंग्रेजी, पोंग्रानेट स्वरूप, लाल और हरा दाना सफेद और लाल स्वाद, मीठा पहिचान, १ प्रसिद्ध मेवा है प्रकृति, २ कक्षा में ठंडा और रूक्ष है और कोई मातदिल भी कहते हैं हानिकर्ता, आमाशय और ज्वर वालेको दर्पनाशक, खट्टाअनार, और ठंडे मिजाज वालेको सोंठका मुरब्बा, प्रतिनिधि, खट्टा अनार गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रुधिर उत्पन्न कर्ता, (२) अल्पाहार, रसको संपक्वकर्ता (३) आध्मान और अफरा करनेवाला, (४) स्वच्छता प्रद, (५) उदरको मृदुकर्ता, (६) मूत्र प्रवर्तक, यकृत्को बलप्रद, (७) तृषा शांति प्रद, (८) ओजप्रद (९) संपूर्ण उत्तमांग (एजायरईसा) को बलप्रद, (१०) छीलका सहित इसका रस अतीसारका बद्धकहै, सर्व कर्मोंमें हिन्दुस्तानीसे विलायती उत्तम है, इसका जला हुआ छीलका कासको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२५) अनार खट्टा

संस्कृत, अम्लदाडिम फारसी, अनार तुर्श अरबी, रुम्मान हामिज़ इंग्रेजी, पोंग्रानेट स्वरूप, लाल दाना सफेद और लाल, स्वाद खट्टा पहिचान प्रसिद्ध प्रकृति, ठण्डा और तर कब्जियत लिये हुएहै हानिकर्ता, शीत प्रकृतिको और यकृत् तथा ओजकी कर्षकशक्ति को दर्पनाशक, मीठा अनार है प्रतिनिधि, मीठा अनार है गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वक्षस्थलका दाह, तथा पक्वाशय और यकृत्की उष्णताको शमन कर्ता, (२) रुधिर प्रकोप और आपके उठने (परिमाणुके चढने) को हरण कर्ता, (३) पित्तके कारण जो वमन और अतीसार हो उसको गुण कर्ता, (४) पांडु (पीलिया) रूक्ष कंडू (सूखी खुजली) को लाभकर्ता, (५) मद, (नशा) और हृदयकी व्याकुलताको गुण कर्ताहै (निर्विषैल)

(२६) अनार रुब्ज

अरबी, रुम्मान मैखुश स्वरूप, लाल स्वाद, चाशनी युक्त पहिचान, प्रसिद्ध प्रकृति, १ कक्षा में ठण्डा और तर है हानिकर्ता, ठण्डी प्रकृति वालेको दर्पनाशक, सोंठका मुरब्बा प्रतिनिधि, कच्चेअंगूर गुण कर्म, प्रयोग, (१) इसके सम्पूर्ण स्वभाव मीठे अनार जैसे हैं किंतु मीठे से प्रभाव में बलवान् है (२) जो छीलका सहित इसका रस निचोड़ा जावै और उसमें खांड मिलाकर पीवैं तो पैत्तिक वमन, अतीसार, खाज और पीलिया को लाभ कर्ता है (३) पक्वाशय को बलप्रद. (४) हिक्का (हुचकी) का नाशकहै (निर्विषैल)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(२७) अनार के बीज

संस्कृत, दाडिम बीज **फारसी**, तुख्म अनार **अरबी**, हब्बुलरुम्मान **स्वरूप**, सफेद **स्वाद**, फीका **पहिचान**, प्रसिद्धहै **प्रकृति**, १ कक्षा में ठंडा और रूक्षहै **हानिकर्ता**, ठंडे मिजाजवालेको **दर्पनाशक**, जीरा **प्रतिनिधि**, समाक **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशे तक **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) पाचक (३) क्षुधाप्रद, (४) पक्वाशय को बलप्रद, (५) पैतिकवमन, अतीसार और दोनों प्रकार की खुजली (सूखी और तर) को लाभ कारक है, (निर्विषैल)

(२८) अनार का छिलका

संस्कृत, दाडिमफलत्वक् **फारसी**, पोस्त अनार **अरबी**, कशरुलरुम्मान **स्वरूप**, ललाँई युक्त पीला **स्वाद**, कसेला **पहिचान**, प्रसिद्धहै **प्रकृति**, १ कक्षामें मीठेका ठंडा तर और खट्टेका ठंडा और रूक्षहै **मात्रा**, २ तोले **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उष्णशोथको लाभकर्ता, (२) दन्तमूल (मसूढ़ा) को बलप्रद, (३) चांवल और जौके साथ इसके हिमकी वास्ति मरोड़ा और अतीसार की बद्धक है (४) इसके हिमसे शौच लेना (सोंचना) अर्शके रुधिरका रुद्धक है (५) इसके शुष्क (सूखेहुए) चूर्णकी बुरकी गुदभ्रंश (कांच निकलने) को लाभ कारकहै (निर्विषैल)

(२९) अस्पगोल (ईसब गोल)

फारसी, अस्पगल **अरबी**, बजरकतूना **स्वरूप**, सफेदी युक्त लाल और काला भी होताहै **स्वाद**, फीका **पहिचान**, १ बीजहै **प्रकृति**, ३ कक्षा में ठंडा और २ कक्षामें तर है **हानिकर्ता**, पीठको निर्बलकर्ता और क्षुधाको हरणकर्ता है **दर्पनाशक**, शहद **प्रतिनिधि**, बिहीदाना और कनूचा है **मात्रा**, ६ माशेसे १ तोले तकहै **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उष्णता, तृषा, गरमीका ज्वर, और रक्त प्रकोपको शमनकर्ता, (२) प्रकृति को मृदुकर्ता, (३) आन्त्रि (अंतडी) में फिसलन उत्पन्नकर्ता, (४) कंठ, वक्षस्थल और जिह्वा की खरखराहटको हरणकर्ता, (५) अन्त्रिव्रण मरोड़ा और अन्त्रिको लाभकर्ता, (६) भुना हूआ बद्धकहै (७) इसकी कुल्ली मुख पाक और मुखके दानोंको गुण कारक है, (८) सिरकामें पीसकर इसका लेपकरना उष्णशोथ और शिरः पीड़ाको गुण कारक है (सर्वांग निर्विषैल और कुटाहूआ विषैल है)

(३०) अफीम

संस्कृत, आफूक **फारसी**, अफयून **अरबी**, लुबनुल्खशखाश **अंग्रेजी**, ओपियम् **स्वरूप**, काली और तत्कालकी प्रकटहुई सफेद होती है **स्वाद**, कड़वी **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें पोस्तोंमें सुई चुभाकर दूध निकालतेहैं और वह दूध जम जाताहै **प्रकृति**, ४ कक्षामें ठंडा और रूक्षहै **हानिकर्ता**, बाहच और आंतरिक स्नायुओंको (मोटी नसोंको) **दर्पनाशक**, केशर और दालचीनी है **प्रतिनिधि**, खुरासानीअजवायन **मात्रा**, १ रत्ती **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शिथिलता कारक (२) बद्धक, (३) रुद्धक, (४) निद्रा उत्पन्न

कर्ता, (५)शोथकोलय कारक, (६ संपूर्ण पीड़ाओंको शान्तिप्रद, (७)वीर्यकेशीघ्र स्खलितहोनेको लाभ कारक (८)नजला, कफ, कास, कर्ण-पीड़ा, और नेत्रके सब रोगोंको खाने अथवा लगानेसे गुण करती है (९) अस्पगोलके लुआब (लस) में घोलकर केशों के स्थानमें लगावे तो बाल नहीं निकलते (घातकविष है)

(३१) अब्बासी का फूल

फ़ारसी, गुलेअब्बासी **स्वरूप**, लाल, पीला, और सफ़ेद **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ **पहिचान**, जिसका गजभर का पेड़ और पत्ते चौड़े होतेहैं एक घासका पुष्प है **प्रकृति**, फूल गरम रूक्ष और बीज ठंडा तर तथा जड़ गरम तरहै **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) इसके पत्र (पत्ता) फोड़ा, फुन्सीको पक्वकर्ता (पकाने वाले) हैं (२)नमक के साथ दद्रु (दाद)को गुणकारकहै (३)बीज बद्धक है (४)पुष्प ओजप्रदहै (५)इसकी जड़ वीर्यको सांद्र करती है, (६) वीर्यको चालानकर्ता, (७)रक्त शोधक, (८)कटि पीड़ा को लाभ कर्ता (निर्विषैल)

(३२) अम्बर

संस्कृत अम्बर **अरबी**, अम्बरअशहब **स्वरूप**, काला और चिकना **स्वाद**, कुछ कडुआ अत्यन्त सुगन्धियुक्तहै **पहिचान**, किसीके मतमें एक वृक्षका मोम है और किसीके मतमें एक सामुद्री जीवका गोबर है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्षहै हानिकर्ता, आंतको और पित्ती उछालताहै दर्पनाशक, बबूलका गोंद और कपूरहै प्रतिनिधि, कस्तूरी और केसरहै **मात्रा** ३ रत्तीकी है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१)प्राणों का रक्षक, (२)तीनों शक्तियों को दृढ कारकहै* (३)प्रकृतिको प्रसन्नताप्रद, (४)वास्तविक उष्णता और बाह्य आभ्यंतरिक इन्द्रियोंको पुष्ट कारकहै, (५)वृद्धको अत्यन्त अनुकूलहै (६)मस्तिस्क सम्बन्धी रोगोंको गुणकारकहै (७)हृदय रोगको गुणकारक है (८)यकृत् रोगको अत्यन्त गुण कारक है (९)हृदय की व्याकुलता और महामारीको हरणकर्ता, (१०)रोध उद्घाटक, (११)ओजप्रद, (१२)लिंगेन्द्रियपर इसका लेप करना अधिक विषयशक्ति और बाजीकरण कारक है (निर्विषैल)

(३३) अबरक

संस्कृत अभ्रक **फारसी**, सितारयेज़मीन **अरबी**, तलक **स्वरूप**, स्वच्छ और चमकीला **स्वाद**, फीका **पहिचान**, एक खानिज पत्थर की जाति है और पुरत पुरतसी होती है **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्षहै हानिकर्ता, तिल्ली और गुर्देको दर्पनाशक, कतीरा, शहद और घी है प्रतिनिधि, अंजीर और कैमूलिया **मात्रा**, एक माशेकी है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१)उचित औषधि के साथ इसका सेवन करना रक्तातीसार और यकृत् सम्बन्धी अतीसार तथा मुख के रुधिर स्रावको गुणकारक है, (२)वृक्क

* नोट–तीन शक्ति यह हैं. १ हैवानी, २ नफ्सानी, ३ तबई, हैवानी से जीवन है, और नफ्सानी से क्रिया करता है तथा तबई से भोजनादि द्वारा वृद्धि होती है ।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और वस्तिकी अश्मरी (पथरी) को खण्डन कर्ता (३) इसका तिला (तैल लेपन) वक्षस्थल के व्रण और स्तनके शोथ को लाभ कारकहै परन्तु केवलही इसका सेवन करना निर्भय नहींहै. (उपबिष)

(३४) अम्बरबेद

फारसी, अम्बरबेद **अरबी,** जादह **स्वरूप,** काली, पत्ती हरी और सफेद तथा फूल पीला होता है **स्वाद,** कडुआ और तीव्र गन्धियुक्त **पहिचान,** जिसकी डालीसे बाल जैसी बारीक जटा लटकतीहैं प्रायःनदियोंके तटपर एक प्रकारकी घास होतीहै **हानिकर्ता,** शिर पीड़ाप्रद और आमाशयको विकृतकर्ता **दर्पनाशक,** धनियां **प्रतिनिधि,** पहाड़ी पोदीना **मात्रा,** ४ माशेकीहै **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) विष के दर्पकानाशक, (२) रेचक, (३) संपूर्ण अवयवोंके रोधका उद्घाटकहै, (४) दोषोंको मृदुकर्ता, (५) मूत्रल, (६) उदरकृमि नाशक, (७) वायुको लयकर्ता, (८) रक्त शोधक, (९) बुद्धिको बलप्रद, (१०) बिच्छू के बिषका नाशक है (निर्विषैल)

(३५) अमरलता के बीज

संस्कृत, अमरलताके बीज **फारसी,** तुख्मबरिश **अरबी,** बजरुल्कसूस **स्वरूप,** ललौंई लिये **स्वाद,** फीका **पहिचान,** मूलीके बीजसे छोटा एक बीज है **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता,** तिल्ली और फेफड़ेको **दर्पनाशक,** सिकंजबीन, शहद और कासनीके बीज **प्रतिनिधि,** आफ्तिमूं और बादरूजहै **मात्रा,** ७ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मलको स्वच्छ कर्ता, (२) पक्वाशय और आंतोंको उद्घाटक, (३) दोषज्वरको गुणकारक, (४) अत्यन्त मूत्रल, (५) प्रस्वेद, और आर्तव प्रवर्तक, (६) स्तनोंमें दुग्ध अधिक उत्पन्न कर्ता (७) प्रकृतिको मृदु कर्तातथा मलको हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(३६) अमरा

स्वरूप, हरा **स्वाद,** खट्टा, कुछ कडुआ **पहिचान,** आम जैसा एक फलहै **प्रकृति,** २ कक्षा में ठंडा और १ कक्षामें रूक्ष है, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पैत्तिकरोग, पित्तातीसार और उष्ण प्रकृतिको लाभ कर्ता, (२) इसके वृक्षकी छालको पीसकर यदि बकरीके सद्य (ताजी) दुग्धके साथ पीवे तो नाक के रोगों को गुणकारक है, (३) इसकी गुठलीकी मिंगी आर्तवको रोकनेमें उपयोगी है (निर्विषैल)

(३७) अमरूद

संस्कृत, जामफल **फारसी,** अमरूद **अरबी,** कमसरी **स्वरूप,** सफेदी लिये पीला **स्वाद,** मीठा और कुछ खट्टा **पहिचान,** एक प्रसिद्ध मेवा है **प्रकृति,** १ कक्षा में ठण्डा, तर और २ कक्षामें उष्ण है इस को ताजा और तरही सेवन करतेहैं **हानिकर्ता,** ठण्डी प्रकृति को और निर्बल आमाशयको तथा अफरा करता है **दर्पनाशक,** सोंठ का मुरब्बा और सौंफ है **प्रतिनिधि,** बिही है **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मन को प्रसन्नकर्ता, (२) बलप्रद, (३) बर्द्धक,

और मृदु होनेपर भी स्वच्छताप्रद है, (४) हृदय, पक्वाशय और पाचन शक्तिको बलप्रद, (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६) हृदयकी व्याकुलताका नाशक, (७) क्षुधा वर्द्धक, (८) मस्तिष्कको स्निग्ध (तर) रखता है, (९) इसकी कलिका (कली) मनको प्रसन्न कर्ता और बलकर्ताहै (१०) मुखसे रुधिर आनेका नाशक (११) इसके पत्ता अतीसार और व्रणको अत्यंत लाभकर्ता हैं (१२) फिटकरीके साथ इसका क्वाथ दन्तपीड़ाको गुणकारकहै, इसके जले हुए पत्ते तुत्थ (तूतिया) के प्रतिनिधि हैं (निर्विषैल)

(३८) अमलबेद

संस्कृत, अम्लवेतस् **स्वरूप**, ललौंई लिये पीला **पहिचान**, एक जातिका नींबूहै यदि इसमें सूईको चुभादेवे तो गल जातीहै **प्रकृति**, ठंडा और तर **हानिकर्ता**, कफ उत्पन्न कर्ता **दर्पनाशक**, लौंग, और काली मिरच **मात्रा**, एकदाना **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्राय हृदयके रोगोंको गुणकर्ता, (२) पित्तनाशक, (३) पाचक, (४) पक्वाशयको मृदुकर्ता, (५) क्षुधाप्रद, (६) रक्तप्रकोपको शान्ति प्रद, (७) वातज गुल्मकी वायुको लाभ कर्ता, (८) उदर पीड़ाको गुणकर्ता, (९) यदि खुरासानी अजमायनको नमकके साथ इसके रसमें सातवार भिगोकर सुखालेवे तो बादी और उदरके अनेक रोगोंको गुण दायकहै, (१०) चूर्णमें इसका योग अत्यंत गुण कारकहै (निर्विषैल)

(३९) अमलतास

संस्कृत, आरग्वध **फारसी**, खियारशंबर **अरबी**, फल्लूसखियारशंबर **इंग्रेजी**, काथरटोकर्पसापिसूचुला **स्वरूप**, काला **स्वाद**, कडुआ और गंधियुक्त **पहिचान**, एक वृक्षकी लंबी फली है इसका गूदा व्यवहारमें आताहै **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम तर और कोई मातदिलभी कहतेहैं **हानिकर्ता**, आमाशयको, मूर्छाप्रद और मरोड़ा तथा अन्त्रि लेखनता प्रदहै **दर्पनाशक**, मस्तगी, बादाम रोग़न, कद्दू और इमलीका फाड़है **प्रतिनिधि**, त्रिगुण नीबू और मुनक्का हैं **मात्रा**, २ तोले ५ तोले और ७ तोले **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) रक्तप्रकोप को शांतिप्रद, (४) उष्ण शोथको लयकर्ता, (५) अतीसार द्वारा मलको सुगमतासे निकालतीहै यहांतक कि गर्भिणी और बालकको देना उचितहै (६) धँनियेके साथ इसके क्वाथकी कुल्ली कण्ठ रोगको गुणकारकहै, (७) इसके पत्ते सम्पूर्ण शोथोंको लयकारक हैं, (८) ओटाने से अमलतासका प्रभाव मिथ्या होजाताहै (निर्विषैल)

(४०) अडूसा

संस्कृत, वासक **स्वरूप**, फूल सफ़ेद और पत्ते हरे **स्वाद**, फीका और कुछ मीठा **पहिचान**, हिन्दमें मनुष्यके कदके बराबर एक वृक्षहै **प्रकृति**, गरम और रूक्ष तथा फूल १ कक्षामें ठंडाहै **मात्रा**, ६ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका फूल राज-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यक्ष्मा और पित्तको लाभकारकहै(२) रुधिरकी उष्णता और मूत्रके दाहको शांतिप्रद, (३) मूत्रकी अरुणता (लाली) को हरणकर्ता, (४) इसकी जड़ श्वास, कास, धांस, कफ ज्वर, शुक्रमेह, पांडु (पीलिया) जी मिच लाना, कुष्ठ और प्रमेहको लाभकारकहै, (५) इसके पत्तोंके काथसे कुल्ली करना दन्तपीड़ाको लाभकारकहै (निर्विषैल)

(४१) अर्त्तगां

फारसी, अर्त्तगां **स्वरूप,** लाल और पीला **स्वाद,** फीका **पहिचान,** एक जातिका पत्थरहै **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष है **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) व्रणपूरक, (२) अवयवोंके बाह्य शोथको हरणकर्ता, (३) व्रणको स्वच्छ कर्ता, (४) प्रवर्तक द्रव्यके साथ इसका सेवन करना वृक्क, बस्तिकी अश्मरी (पथरी) और शर्करा को हरण कर्ताहै

(४२) अर्जुन

संस्कृत, ककुभ **इंग्रेजी,** स्टर्क्यूलिया **स्वरूप,** भूरा **स्वाद,** कसेला **पहिचान,** इसकी छाल व्यवहारमें आतीहै हिन्दमें एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध वृक्षहै **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता,** गरम मिजाज को और अफरा करताहै **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) कफके विकारोंको हरणकर्ता, (२) पित्तको लाभकारक, (३) इसका पिलाना तथा लगाना चोटको गुणकारकहै, (४) इसकी छालका चूर्ण ओजप्रदहै, (५) शुक्रमेहको लाभप्रदहै (उपविष)

(४३) अरंड (अंडी)

संस्कृत, अरंड **फारसी,** बेदंजीर **अरबी,** खुरूअ **इंग्रेजी,** कैस्ट्रायल **स्वरूप,** भूरा, हरा और कालाहै **स्वाद,** कड़ुआ और बदजायका **पहिचान,** इसका फल कांटेयुक्त और मिंगी सफ़ेद चिकनाई लिये होतीहै एक वृक्षहै **प्रकृति,** १ कक्षामें समानता लिये गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता,** आमाशयको स्तब्धकर्ता और विकलता तथा हृल्लास (उबाकी) और वमन कारक है **दर्पनाशक,** कतीरा और मस्तगीहै **प्रतिनिधि,** जमालगोटा **मात्रा,** ५ नग **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) व्यर्थ मलको लयकर्ता, (२) उदरको मृदुकर्ता, (३) शीतके दोषको बलवान् रेचकहै, (४) पक्षबध, अर्दित, वेपथु, गुल्म, जलोदर और आमवातको गुण कर्ता, (५) संपूर्ण कर्मोंमें इसका तैल बलवान्है, (६) वातको लय कारक, और गुल्ममें बलवान् रेचकहै, (७) इसका रस आगके जले हुए को अत्यंत गुण कारक है (निर्विषैल)

(४४) अरिया

स्वरूप, हरा **स्वाद,** कड़ुआ **पहिचान,** एक बूटीहै बर्षाकालमें होतीहै इसका फल चिनारके समानहै **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडा और तर है तथा विसंसजज्वरपैदा करने वालाहै **दर्पनाशक,** सिरकाहै **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) कफ और वायु उत्पन्न कर्ता, (२) गुर्वी (बोझल) है हिन्दू लोग इसका अचार डालतेहैं (निर्विषैल)

(४५) अर्गवां

फारसी, अरगवां अरबी, अरजवां स्वरूप, इसका पुष्प अत्यंत लाल होताहै स्वाद, कडुआ और कुछ कसेला पहिचान, एक वृक्षहै प्रकृति, समानता लिये हुए गरम और रूक्षहै हानिकर्ता, इसकी जड़ वमन प्रदहै दर्पनाशक, उन्नावके पत्तेहैं प्रतिनिधि, चंदन और गुलाब के फूलहैं गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पिच्छल मलको हरणकर्ता, (२) पक्वाशयकी शीतताको हरणकर्ता, (३) वृक्कको लाभ कारक, (४) श्वासिक यन्त्रको स्वच्छ कर्ता, (५) इसकी भस्म का सेवन करना मुख से रुधिर आनेको गुणकारक है (६) इसका बीज नेत्रकी ओषधियोंमें चाकसूकी प्रतिनिधि है (७) पैत्तिक अक्षिपाक का नाशकहै (निर्विषैल)

(४६) अर्वी

संस्कृत, आलुकी अरबी, कलकलाश स्वरूप, भूरा स्वाद, फीका और कंठमें लेखनता (खरास) उत्पन्न कर्ताहै पहिचान, हिन्दमें एक जातिका कन्द है जो पृथ्वी के नीचे उत्पन्न होता है प्रकृति, पहिली कक्षामें गरम और दूसरी कक्षामें तरहै और कोई ठंडीभी कहतेहैं हानिकर्ता, दीर्घपाकीहै दर्पनाशक, दालचीनी, लौंग और खटाईहै प्रतिनिधि, भिंडीहै गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) ओजको चालन कर्ता, (३) वक्षस्थलकी रूक्षता, कास, नरखरा (गले के खरखरानेको और अतिसारको गुणकारक है (४) वीर्य को सांद्रकर्ता, इसी कारणसे इसको कोई सालबहिन्दी कहते हैं (निर्विषैल और आहारहै)

(४७) अरहर व तूअर

संस्कृत, आढकी फारसी, शाखुल अरबी, शाखुलशाज इंग्रेजी, पीजी अनपी स्वरूप, पीली और लाल स्वाद, फीकी और सोंधी पहिचान, हिन्द में १ जातिका अनाज होता है प्रकृति, १ कक्षा में गरम और रूक्षहै और किसीके मतमें ठंडी और रूक्षहै हानिकर्ता, दीर्घपाकी और अध्मान कारकहै तथा भाफ़ (परिमाणु) उत्पन्न कर्ता और निद्रानाशकहै दर्पनाशक, खटाई और गायका घीहै प्रतिनिधि, मसूरहै गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पैत्तिक, अतीसार, कफविकार, रुधिरविकार और विषको लाभ प्रद, (२) अल्पाहारहै, (३) इसके क्वाथसे कुल्ली करना दन्त पीड़ाको लाभप्रद है (निर्विषैल एक अनाजहै)

(४८) अलसी

संस्कृत, अतसी फारसी, बजुरग अरबी, बजरुल्कता इंग्रेजी, कामन्फ्लेक्स-सीडम् स्वरूप, लाल स्वाद, फीका पहिचान, एक फलीके बीजहैं और अन्नके समान पैदा होतेहैं प्रकृति, १ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्षहै और ३ कक्षामें गरम और रूक्ष कहतेहैं हानिकर्ता, दृष्टि और पाचकशक्ति तथा वृषणको दर्पनाशक, धनियां, सिकंजिबीन् और शहदहै प्रति-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निधि, मेथीहै **मात्रा**, १० माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका अवलेह कफज कासको हरणकर्ता, (२) स्निग्धतासे वक्षस्थलको स्वच्छ कर्ता, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (४) हृदयको स्वच्छ कर्ता, (५) शोथको लयकारक, (६) वृक्क, और वस्तिके वृणकी पूरक, (७) अत्यंत मूत्रल, (८) अधिक ओजप्रद, (९) वीर्यको सान्द्रकर्ता, (१०) वस्ति, वृक्क और अश्मरी (पथरी) को खंडन कर्ताहै (निर्विषैल)

(४९) अश्कपेचा (इश्कपेचा)

फारसी, आशिकुलशजर **अरबी**, लैलाव **स्वरूप**, पत्ते हरे और फूल लाल होतेहैं **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, वृक्षोंपर चढनेवाली १ प्रकारकी घासकी बेलहै फूल तथा पत्ती बारीक होतीहैं **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता**, पक्वाशय और वस्तिको **दर्पनाशक**, खांड़ और इमलीहै **प्रतिनिधि**, पित्तपापड़ा, खतमी और खुब्बाजीहै **मात्रा** ३ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध उद्घाटक, (२) प्रकृति और शोथको मृदुकर्ता, (३) वायुको लयकर्ता, (४) अतीसार द्वारा पित्तका रेचक, (५) इसका लेप शोथको लय कर्ता, (६) पीड़ाको शांतिप्रद, (७) शहदके साथ इसका सूंघना (नस्य) शिरः पीड़ाको लाभप्रदहै (८) इसका लेप तैललेपनके समानहै (निर्विषैल)

(५०) अश्नान

फारसी, ग़ासूल **अरबी**, अश्नान **स्वरूप**, हरा **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, एक जातिकी घासहै **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और दूसरी कक्षामें रूक्षहै **हानिकर्ता**, वस्तिको **दर्पनाशक**, शहद **प्रतिनिधि**, साबुन **मात्रा**, १॥ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छ कर्ता, (२) मलको स्वच्छकर्ता, (३) मूत्र प्रवर्तक, (४) सांद्रमलको लयकर्ता, (५) जलोदरको लाभप्रद, (६) ११ माशेकी मात्रा गर्भको पातकारकहै (७) व्रणके अधिक मांस को छेदन कर्ता और स्वच्छकर्ताहै (८) ३॥ माशेकी मात्रा रुद्धआर्तवको प्रवृत्त (जारी) करनेमें अत्यंत प्रभावीहै, (९) इसका मंजन दांतोंको स्वच्छताप्रदहै, (१०) अरबवासी इससे साबुनकी तरह वस्त्र धोते हैं, रंगीन रेशमी वस्त्र इससे स्वच्छ होसकते हैं (निर्विषैल, परंतु अधिक मात्रा उपविषहै)

(५१) असगंध

संस्कृत, अश्वगंधा **फारसी**, वेहमनबररी **स्वरूप**, पिलोईलिये हुए भीतरसे सफेद होतीहै **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ **पहिचान**, हिंदुस्तानमें १ जड़ होतीहै **प्रकृति**, पैच्छिल्य युक्त स्निग्धताके साथ ३ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिको **दर्पनाशक**, कतीरा **प्रतिनिधि**, कूठ और बालछड़है **मात्रा** ५ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कास और श्वास तथा अवयवोंके शोथको गुणकर्ता, (२) कटि (कमर) शरीर, ओज और गर्भाशयको बलप्रद, (३) कफज विकारको हरणकर्ता, (४) आमबात

(गठिया) के लिये कड़ुए बालछड़ की प्रतिनिधिहै(निर्विषैल)

(५२) अस्बंद

फारसी, अस्पंद **अरबी**, हुर्मल **स्वरूप**, काली **स्वाद**, गान्धियुक्त अत्यंत कड़ुवा **पहिचान**, १ फलका बीजहै **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्षहै **हानिकर्ता**, शिरः पीड़ाप्रद और उष्ण प्रकृतिको विकारकर्ता **दर्पनाशक**, सिकंजवीन और अमरूद इत्यादिके स्वरसहै **प्रतिनिधि**, ततिली, अजवायन और मूली के बीजहैं **मात्रा** ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अन्त्रि (अंतडी) की वायुको लयकर्ता, (२) जलोदर, पांडु (पीलिया) श्वास, गुल्म, अपस्मार (मिरगी) और संपूर्ण शीतरोगोंको गुणकर्ता, (३) आर्तव प्रवर्तक, (४) रक्त शोधक, (५) ओजप्रद, (६) आमवातको लाभकर्ता, (निर्विषैल)

(५३) आकाहूली

स्वरूप, ललोंई लिये हरा **स्वाद**, कड़ुआ **पहिचान**, हिन्दमें १ जातिकी बूंटी है **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षा में रूक्षहै **हानिकर्ता**, स्नायु और संधियों को **दर्पनाशक**, शहद **प्रतिनिधि**, कुलफाका शाक **मात्रा** २ तोले. **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इससे उदर इत्यादिके कृमि (कीड़े) दूर होतेहैं (२) कफ, और पित्त विकारको हरणकर्ता (३) शुक्रमेहको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(५४) आक व मदार

संस्कृत, अलर्क **फारसी**, खुरग **अरबी**, उशर **इंग्रेजी**, कैलोट्रोपीसजाइगाटिया **स्वरूप**, सफेदी लिये हरा **स्वाद**, कड़ुआ **पहिचान**, १ जातिका छोटा प्रसिद्ध वृक्ष है **प्रकृति**, इसका दूध ३ कक्षामें गरम और रूक्षहै और पुष्पादि २ कक्षामें गरम और रूक्षहैं **हानिकर्ता**, यकृत् और फेफड़ेको **दर्पनाशक**, घी **प्रतिनिधि**, शबरम **मात्रा** ३ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका दुग्ध मांस भक्षकहै, (२) त्वचा में व्रण करनेवालाहै, (३) इसके पत्ते शीतशोथके लय कारक हैं, (४) शीतकी पीड़ाको शांति प्रदहै, (५) उदर कृमि नाशक, (६) इसका पुष्प अत्यंत आहार पाचकहै और पक्काशयके रोगों को गुणकारकहै (इसका दुग्ध उपविषहै)

(५५) आडू

फारसी, शिफ्तालू **अरबी**, ख़ौख़ **स्वरूप**, कुछ ललोंई लिये हुए होताहै **स्वाद**, मीठा और चाशिनी युक्त **पहिचान**, १ वृक्षका फलहै **प्रकृति** २ कक्षा में ठंडा और तर है **हानिकर्ता**, कफ प्रकृतिको विकारकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद और अदरखका मुरब्बाहै **प्रतिनिधि**, किशमिश **मात्रा**, १० दाने **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मलको मृदुकर्ता, (२) तृषा, रक्त प्रकोप, उष्ण और रूक्ष परिमाणु (भाप) को स्थिति कर्ता, (३) पित्त और केवल पैत्तिकरुधिरजज्वरको गुणकर्ता, [४] क्षुधा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और ओजका बर्द्धक, (५) इसके २ माशे पुष्प गर्भपातकेलिये पूर्ण मात्राहैं (६)इसके बीजोंका तैल कर्णपीड़ा और बधिरता को गुण-कर्ता है (७) इसके पत्तोंके पीने और लगाने से उदरके कृमि नाश होतेहैं (निर्विषैल)

(५६) अफ़िस्तीं (मरुआ)

अरबी, ख़तरक **स्वरूप**, धूलियाकाला **स्वाद**, कड़ुआ और तीक्ष्ण गंधियुक्त **पहिचान**, जिसका फूल बाबूनाके फूलके समान है १ जातिकी घासहै **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता**, आमाशय और मस्तिष्क को निर्बल करनेवाला और शिरःपीड़ा प्रदहै **दर्पनाशक**, अनीसून और मस्तगी तथा नीलोफरहै **प्रतिनिधि**, असारून और जादहहै **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोम कूपोंका उद्घाटक, (२) त्वचाको मृदुकर्ता, (३) आर्तव प्रवर्तक, (४) वातज और पैत्तिक-मलको अतीसार द्वारा रेचक, (५) वायुको लय कर्ता, (६) कफज रोगोंको लाभकर्ता, (७) इसका क्वाथ दोषज और संनिपातज ज्वरोंको गुण कर्ताहै, (८) उदरके कृमि नाशक, (९) इसके पत्ते पक्वाशयको बलप्रद हैं, (निर्विषैल)

(५७) आबनूस (तेंदू)

फारसी, आवनूस **अरबी**, आवनूस **स्वरूप**, काला **स्वाद**, फीका और कडुआ **पहिचान**, अत्यन्त ऊंचा १ जातिका वृक्षहै **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता**, आमाशयको **दर्पनाशक**, बबूल का गोंद और शहदहै **प्रतिनिधि**, बेलकी लकड़ी है **मात्रा**, १० माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताका बर्द्धक, (२) कांतिप्रद, (३) अत्यंत मूत्रप्रवर्तक, (४) वृक्क और वस्तिकी अश्मरीको खंडनकर्ता, (५) प्लीहके रोधका उद्घाटक, (६) रक्त प्रकोपको शमन कर्ता और शोधन कर्ता, (७) कंडू (खाज) और पामा को लाभ प्रद, (८) इसका बुरादा (चूर्ण) रुधिर स्राव और वीर्य स्रावका रुद्धकहै, (९) व्रण पूरक (१०) सौंफके रसमें इसका नेत्रांजन (सुरमा) नक्तांध्य (रतोंधी) और जालेको अत्यंत गुण कारकहै (निर्विषैल)

(५८) आंबाहलदी

संस्कृत, कर्चूर **फारसी**, दारचोवह **अरबी**, दारहल्द **स्वरूप**, ललाँई लिये पीली **स्वाद**, कड़वी व वेस्वाद और कुछ तीखी **पहिचान**, पृथ्वीके भीतर १ वृक्षकी जड़ होतीहै **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता**, हृदयको **दर्पनाशक**, नारंगी **प्रतिनिधि**, बावची **मात्रा**, ४ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायुको लय कर्ता, (२) पीडित अवयवोंके ऊपर मल के गिरनेको रोकनेवाली, (३) शीघ्र ही परिपाक होतीहै (४) अश्मरीको खंडन कर्ता, (५) मूत्ररोध, कंडू, पामा और गिरने पड़ने की चोट अथवा मारपीटकी चोटको पिलाने और लेप करनेसे पूर्ण लाभ करतीहै (६) इसका

मंजन करना मुखके स्वादको ठीक रखताहै (निर्विषैल)

(५९) आंवला

संस्कृत, आमलकी **फारसी**, आमलह **अरबी**, आमलज **अंग्रेजी**, फाइलेन्थस **स्वरूप**, पिलौंई लिये भूरा और सूखा हूआ काला होताहै **स्वाद**, कसेला और कडुआ **पहिचान**, एक वृक्षका प्रसिद्ध फलहै **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्षहै **हानिकर्ता**, तिल्लीको और गुल्म उत्पन्न कर्ता है **दर्पनाशक**, शहद और बादाम रोगनहै, **प्रतिनिधि**, काबुली हरड़ **मात्रा**, १० मारोकीहै **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धकहै (२) पक्काशय तथा आमाशय और अन्त्रिमें ऊपरी मलको नहीं गिरने देता (३) दोषोंको अशुद्ध नहीं होने देता (४) वातज मलका शोधकहै, (५) हृदयको प्रसन्नताप्रद और बलप्रद है(६)नेत्र, मस्तिष्क तथा स्नायुओं को बलप्रद है, (७) विशेषतः ओजको चालन कर्ता, (८) इसका मुरब्बा हृदय, मस्तिष्क संबंधी अवयव और आमाशयको बलप्रदहै, (९) ज्वरमें विरेचनके पीछे इसका सेवन करना चाहिये (१०) इसका सांद्र (गाढा) लेप नक्सीरका रुद्धकहै (निर्विषैल)

(६०) आम

संस्कृत, आम्र **फारसी**, अम्बह **अरबी**, अम्बज **इंग्रेजी**, मंगोट्री **स्वरूप**, हरा लाल और पीला **स्वाद**, मीठा और खट्टा, चाशनीयुक्त **पहिचान**, सद्य (ताजा) ही खाने योग्य एक प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी मेवाहै **प्रकृति**, कच्चा १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष है और पक्का हूआ गरम और रूक्ष है तथा फूल १ कक्षा में ठंडा और रूक्ष है **हानिकर्ता**, खालीपेट में आध्मान कर्ता और गरम मिजाजको हानिकारक है **दर्पनाशक**, जामन, सिकंजवीन और ठंडा जल है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्नायु, प्राण, ओज, वृक्क, वास्ति, पक्काशय और अन्त्रिको बलप्रद है परन्तु कलमी जातिका गष्ठ और दीर्घ पाकी है, (२) कच्चा आम अर्थात् कैरी अग्निमें भुलभुलाई हुई लूह और महामारी पवन से व्याकुल मनुष्यको लाभप्रद है, (३) इसके पुष्प अर्थात् बौरका सफूफ (चूर्ण) शुक्र मेह, रक्त और कफ विकारको गुणकारक है, तथा स्तम्भन कर्ता है, (४) इसके बीजकी मिंगी वीर्यको सांद्र कर्ता और अतिसार की बद्धकहै, (५) आमका चेप दाने उत्पन्न कर्ता और व्रण कर्ता है हलदीके साथ इसकी पत्ती ओजके शैथिल्य की नाशकहै (निर्विषैल)

(६१) आल

फारसी, बुक्म **अरबी**, बुक्म **स्वरूप**, लाल **स्वाद**, कुछ कडुआ **पहिचान**, एक ऊंचे वृक्षकी जड़ है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और ४ कक्षामें रूक्ष है **हानिकर्ता**, खानेसे सम्पूर्ण अवयवोंको हानिकारक और घातक है **दर्पनाशक**, वमन करना और घृतपान करना है **प्रतिनिधि**, मजीठ **मात्रा**, १ तोलाकी है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

व्रणमें इसकी वर्ति (बत्ती) व्रण पूरक है, (२) रक्तस्रावका रुद्धक (३) व्रणके मल का शोषक (४) इसके हिमसे मुंहको धोना मुखके रूपको बढाता है (५) इसके क्वाथसे स्नान करना संधिके बन्धनोंको दृढ़ कारक है (घातक विष है)

(६२) आलू

संस्कृत, आरु **स्वरूप**, लाल और भूरा **स्वाद**, फीका **पहिचान**, एक गोलकंद है जो कि हिन्दमें बहुत होता है, **प्रकृति**, १ कक्षा में ठंडा और रूक्ष है **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी (देरमें पचता है) और आमाशयको दुष्ट कर्ता है **दर्पनाशक**, मांस और गरम मसाला है **प्रतिनिधि**, अरबी **मात्रा** २० तोलेकी है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वीर्य्य वर्द्धक, (२) वीर्यको सांद्रकर्ता, (३) आध्मान उत्पन्न करनेके कारण ओजको चालन कर्ता (४) वस्तिको बलप्रद, (५) इसका नेत्रांजन (सुरमा) नेत्रोंको बलप्रद है और जालेको काटता है (निर्विषैल)

(६३) आलू बुखारा

फारसी, आलूबुखारह, आलूचह, **अरबी**, अजास **स्वरूप**, लाल **स्वाद**, खट्टा और चाशनीयुक्त, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फल है **प्रकृति**, १ कक्षा में ठंडा और २ कक्षा में तर है **हानिकर्ता**, मस्तिष्क, आमाशय और स्नायु को **दर्पनाशक**, उन्नाव, मस्तगी और गुलकन्द है **प्रतिनिधि**, इमली **मात्रा**, ५ दाने और परमावधि २० दाने हैं **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृति को मृदुकर्ता, (२) आन्त्रियों में पैच्छिल्य (फिसलन) उत्पन्न कर्ता, (३) पित्तज और रक्तज ज्वरको अत्यन्त लाभप्रद है, (४) रक्तप्रकोपको शमन कर्ता, (५) पित्त नाशक, (६) हृल्लास को हरणकर्ता, (७) कंडू (खाज) के मलका शोधक, (८) सम्पूर्ण मलोंको पक्व कर्ता, (९) तृषा को हरण कर्ता, (१०) अम्ल होने पर भी इमलीके समान खांसी को नुकसान नहीं करता, (चित्त प्रसन्न कर्ता, निर्विषैल)

(६४) आलूबालू

अरबी, करासिया **स्वरूप**, लाल **स्वाद**, खट्टा और चाशनीयुक्त **पहिचान**, गोल और छोटा एक फल है **प्रकृति**, पका हुआ १ कक्षा में गरम, तर और कच्चा ठंडा और रूक्ष है **हानिकर्ता**, अजीर्णकर्ता, (बदहजमी करता है) **दर्पनाशक**, शिकंजवीन **प्रतिनिधि**, आलू बुखारा **मात्रा**, ९ अदद **गुण, कर्म प्रयोग**, (१) पक्वाशय से यकृत् में शीघ्र उतरता है, (२) कण्ठ तथा फेंफड़े की रूक्षता और खरखराहट को लाभकारक, (३) रेचक, (४) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (५) उष्णता, दाह, रक्तप्रकोप और पित्तप्रकोपको शांति प्रद है (६) हृल्लास और तृषाको अति लाभप्रद है (७) पक्वाशयको बलप्रद, (निर्विषैल)

(६५) इंचार

स्वरूप, काला **स्वाद**, चाशनीयुक्त

पहिचान, दक्खिनी एक पहाड़ी फल है जिसकी मिंगी चिरोंजी है **प्रकृति**, ठंडा और तर और किसी के मतमें २ कक्षामें गरम, तर है **हानिकर्ता**, तृषाप्रद, और नेत्रविकार कर्ता, **दर्पनाशक**, खांड़ और लवण है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृल्लास और उत्क्लेदका नाशक, (२) रेचक, (३) पित्त और वातज मलका शोधक, (४) यकृत्‌को बलप्रद, (५) इसका शर्बत चित्तको प्रसन्नताप्रद है (निर्विषैल)

(६६) इंद्रजौ

संस्कृत, कुटजबीज **फारसी**, जवान कुंजिश्क **अरबी**, लिसानुल्असाफीर **इंग्रेजी**, राइटचांडिसेंटेरिका **स्वरूप**, ललौंई लिये **स्वाद**, फीका और कडुआ तथा तीखा है **पहिचान**, १ बीज है जो कि एक फली में बहुत से होते हैं **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता** शिरःपीड़ा प्रद और उष्ण प्रकृति को अनहित है **दर्पनाशक**, धँनिया **प्रतिनिधि**, तोदरी, जायफल और बेहमन सुर्ख है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कुपित वायु-को शमन कर्ता, (२) पार्श्व और मुकबिही (गले की एक हड्डी) की पीड़ा को गुणंकर्ता, (३) कटिपीड़ा और गर्भाशय को लाभप्रद (४) जीर्णकास, श्वास, हृदय की व्याकुलता और मरोड़ा को लाभकर्ता, (५) अश्मरी (पथरी) को खंडन कर्ता, (६) ओजको उभारता है, (७) मेढ्र इन्द्रिय को बलप्रद, (८) शहद और केशर के साथ इसके स्वरसमें वस्त्रको भिगोकर ऋतुस्नानके पीछे यदि स्त्री अपनी योनिमें रक्खे तो गर्भवती होवे (निर्विषैल)

(६७) इन्द्रायनका फल (फरफेंदू)

संस्कृत, ऐन्द्रवारुण **फारसी**, खरपुजेहतल्ख़ **अरबी**, हंजल **इंग्रेजी**, कोलोसिंथिस् **स्वरूप**, लाल और सफेद, **स्वाद**, अत्यन्त कडुआ, **पहिचान**, नारंगीसे कुछ छोटा १ फल है जिसका गूदा काममें आता है **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष हैं **हानिकर्ता**, व्याकुलताप्रद (बेकली करने वाला) **दर्पनाशक**, बबूल का गोंद और कतीरा तथा निशास्ता है **प्रतिनिधि**, नीलका बीज और महमूदा है **मात्रा**, १ माशे से ३ माशे तक **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायु को लय कर्त्ता, (२) सांद्र जातिके कफ और वात को अतीसार द्वारा रेचक, (३) आंतरिक अवयवोंसे दोषोंका आकर्षक, (४) शीतरोग जैसे अपस्मार (मिरगी) कम्प, अर्दित और जलोदर को गुणकर्ता (५) मस्तिष्कके मल (फोक) का शोधक, (६) उदर के कैंचुए और कद्दू दाने (कृमिभेद) को हरणकर्ता, (७) कफज और वातज गुल्म, यकृत् तथा आमाशय एवं अंत्रि के रोगोंको गुणकारक है (उपविष और अधिकतर घातक है)

(६८) इब्रेशम

फारसी, इब्रेशम **अरबी**, कज **स्वरूप**,

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

५३०/५०(ख) ५३०.०१/2 १५६५१

पीला और सफ़ेद **स्वाद**, फीका और बे-स्वाद **पहिचान**, १ जाति का कीड़ा वाजे वृक्षोंपर होता है वह अपने लवाब (लार) से अपने ऊपर घर बनाता है **प्रकृति**, कक्षा १ कक्षा में गरम, रूक्ष और कोई मात-दिल कहते हैं, **दर्पनाशक**, मोती की भस्म **मात्रा**, ३ माशे से ९ माशे तक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उत्तमांग (एजायरईसा) को बलप्रद (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) ओजको बलकर्ता, (४) रोधउद्घाटक, (५) प्राणों को प्रसन्नताप्रद, (६) मुख के रूप का शोधक, (७) प्रकृति में मृदुताका वर्द्धक (८) स्निग्धता का आकर्षक, (९) नेत्ररोग, हृदयकी व्याकुलता और आमा-शय की कठोरता को हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(६९) इमली (अमली)

संस्कृत, अम्लिका **फारसी**, तमिरहिंदी **अरबी**, हवारा **इंग्रेजी**, टमेरिंड **स्वरूप**, लाल तथा पुरानी काली होती है **स्वाद**, खट्टी **पहिचान**, १ बिलस्त के बराबर १ फली होती है और इसके वृक्ष की पत्ती भी खट्टी हैं, और पुष्प भी खट्टा होता है, **प्रकृति**, १ कक्षा में ठण्डी और २ कक्षा में रूक्ष है और कोई समान भी कहते हैं **हानिकर्त्ता**, स्वर तथा खांसी और नजला को नुकसान करती है एवं रोधप्रद है **दर्प-नाशक**, उन्नाव और वनफ्सा है **प्रतिनिधि** खारा **मात्रा**, ४ तोले व ६ तोले व ८ तोले **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) आलूबु-खारा से अधिक मृदु है, (२) हृदय और आमाशय को बलप्रद (३) हृल्लास को शमन कर्ता, प्रकृति को मृदुकर्त्ता, (४) पित्त और दग्ध दोषों को अतीसार द्वारा-रेचनकर्ता, (५) रक्त प्रकोप को लाभप्रद (६) हृदय की व्याकुलता नाशक, (७) शिरके चक्कर को गुणकर्ता, (८) महामा-री पवनके विषको हरणकर्ता, (९) इसके पुष्प बद्धक हैं और पीड़ाको शमन-कर्ता तथा प्रकृति को मृदु कर्ता हैं (१०) इसके बीज बद्धक और वीर्य स्तम्भनकर्ता हैं (११) इसके पत्तोंके क्काथ का गंडूष कण्ठ रोग को गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(७०) इलायची छोटी

संस्कृत, सूक्ष्मैला **फारसी**, हीलबुवा और खीरबुवा **अरबी**, क़ाक़लहसिगार, **इंग्रेजी**, इलेटिरिया **स्वरूप**, सफेद और दाने काले होते हैं **स्वाद**, शीतल और स्वच्छ **पहिचान**, एक पर्वती प्रसिद्ध फल है जो कि उसी जगह से उबाली हुई आती है **प्रकृति**, २ कक्षा में गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, छाती, फेफड़ा और दांत को **दर्पनाशक**, कतीरा और वंशलोचन है, **प्रतिनिधि**, कबाब चीनी और बड़ी इलायची और लोंग हैं **मात्रा**, ३ माशे, ४ माशे **गुण कर्म प्रयोग**, (१) प्राणों को सन्तुष्ट और स्वच्छ कर्ता, (२) व्रण शोधक, (३) वायुको लयकर्त्ता, (४) वक्षस्थल, कंठ और पक्काशय की स्निग्धता की आकर्षक, (५) शोषक, (६) पक्वाशय और हृदयको बलप्रद, (७) व्याकुलता, वमन और उत्क्लेद

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

तथा हृल्लास को लाभकर्ता, (८) मुखकी दुर्गन्धि और पवन को सुगन्धितकर्त्ता (९) वृक्क और वस्ति के अश्मरी को बहिष्कर्ता है (निर्विषैल)

(७१) इलायची बड़ी

संस्कृत, स्थूल एला **फारसी,** हील-कलां **अरबी,** काकलहकिबार **इंग्रेजी,** अंमोमम् **स्वरूप,** काली और बीजभी काले होते हैं **स्वाद,** अत्यन्त रूक्ष और सुगन्धियुक्त **पहिचान,** यहभी एक प्रसिद्ध पर्वती फल है उवाला हुआ आता है **प्रकृति,** १ कक्षा में गरम और २ कक्षा में रूक्ष है, **हानिकर्ता,** आंत और फेफड़ेको **दर्पनाशक,** कतीरा और कदज है **प्रतिनिधि** कबाबचीनी और छोटी इलायची **मात्रा,** ९ माशे की है, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्राणोंको सन्तुष्ट कर्ता, (२) पक्काशय को बलप्रद, (३) पाचक (४) क्षुधा को उद्घाटक, (५) अतीसार बद्धक (६) हृल्लास और अपानवायुको हरणकर्त्ता, (७) इसके बीज दन्तमूलों (मसूढों) को दृढ कर्ता हैं और दांतों की जड़ को खोलते हैं (८) इसके छिलकोंका लेप गरमी की शिरःपीड़ा को गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(७२) ईंगुर

संस्कृत, हिंगुलू **फारसी,** शिंगरफ **अरबी,** जंजफर **स्वरूप,** लाल **स्वाद,** बेस्वाद **पहिचान,** गन्धक जैसी एक खानिज वस्तु है **प्रकृति,** २ कक्षा में गरम और ३ कक्षा में रूक्ष है **हानिकर्ता,** बिनाशोधन के विकार प्रद है **दर्पनाशक,** गायका घी और दूध **प्रतिनिधि,** मुर्दासंग **मात्रा,** खाया नहीं जाता **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) बद्धक, (२) रुधिर उत्पन्न कर्त्ता, (३) स्निग्धता का आकर्षक,(४) पीड़ित अवयव पर मल नहीं गिरनेदेता, (५) गरमी के शोथको लयकर्त्ता, (६) रूक्ष और स्निग्ध कण्डू (खुजली) कुष्ठ और अग्निके जले हुए को लाभप्रद है, (७) त्वचा रोग और उपदंश इत्यादि में इसका खाना योग्य है हिन्दुस्थानी वैद्य इसकी निरुत्थ भस्म को प्रायः कफज रोग तथा कास और श्वास इत्यादि में देते हैं एवं ओज सम्बन्धी रोगोंमें भी देते हैं (उपविष)

(७३) ईंट

फारसी, खिश्त **अरबी,** आजर **स्वरूप,** लाल और काली **स्वाद,** मिट्टीजैसा **पहिचान,** प्रसिद्ध **प्रकृति,** १ कक्षा में गरम और ४ कक्षा में रूक्ष है **हानिकर्ता,** आमाशय और वृक्कको **दर्पनाशक,** सिर्का और कतीरा **प्रतिनिधि,** ठींकरी और सीप हैं **मात्रा,** ६ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अत्यन्त रूक्षता प्रद, (२) घी और खांड के साथ सेवन की जावै तो रक्तप्रदर की रुद्धक है (३) इस को सिरके के साथ पीसकर गरम करके सेके तो पथरी को बिठादेती है (४) यदि जलके पान करते ही मूत्र आवे तो उसको कूआ की पुरानी ईंट अनुभूत औषधि है (५) वीर्यकी द्रवताको हरणकर्त्ता है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(७४) ईलशीरीं

फारसी, ईलशीरीं **अरबी**, तरासीस और रब्बुलअर्ज़ **स्वरूप**, लाल और सफेद दो जाति की होती है **स्वाद**, लाल मीठी और सफेद कड़वी होती है **पहिचान**, पृथ्वी से संलग्न (चिपटी) चने के खेतमें एक बूटी होती है **प्रकृति**, २ कक्षा में ठण्डी और रूक्ष है **हानिकर्ता**, फेफड़े को **दर्पनाशक**, कतीरा और खांड है **प्रतिनिधि**, बबूलका गोंद, माजू और जलाहुआ मुर्गी के अण्डे का छीलका है **मात्रा**, ३ माशे की है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) रक्तके दाह को लाभप्रद (३) रक्त और प्रस्वेद का रुद्धक (४) आमाशय को बलप्रद (५) यकृत् को बलप्रद (६] गरम मलको पीड़ित अवयवोंपर नहीं गिरने देता (निर्विषैल)

(७५) उटंगन के बीज

संस्कृत, उच्चटा **फारसी**, तुख्मअंजाह **अरबी**, बजरुल्करीस **स्वरूप**, कालापन लिये नीले रंगके **स्वाद**, फीके और बेस्वाद **पहिचान**, अलसी के बीज के समान एक बीज है **प्रकृति**, २ कक्षा में गरम और रूक्ष हैं **हानिकर्त्ता**, वृक्क (गुर्दा) और आंत को **दर्पनाशक**, बबूल का गोंद और कतीरा है **प्रतिनिधि**, करोमाना और गंदनाके बीज हैं **मात्रा**, ६ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्ष और स्निग्ध कास तथा श्वासिक यंत्र और जलोदर को गुण कर्ता (२) प्लीह के शोथको क्षयकर्त्ता, (३) वृक्क रोग को लाभकर्ता (४) ओजको बलप्रद, (५) कफ को अतीसार द्वारा रेचक (६) वक्षस्थल और फेफड़ा को वृथा मल से शोधन करते हैं (निर्विषैल)

(७६) उन्नाव

फारसी, जेलान और सेलान **अरबी**, उन्नाव **स्वरूप**, लाल **स्वाद**, मीठा **पहिचान**, झड़बेरी के समान एक फल होता है **प्रकृति**, १ कक्षामें ठण्डा **हानिकर्त्ता**, शिरको और आमाशय को तथा आध्मान (अफरा) उत्पन्नकर्ता है और ओज को निर्बल कर्ताहै **दर्पनाशक**, खांड और मुनका हैं **प्रतिनिधि**, लिहसोड़े और मुनका हैं **मात्रा** १० नग से १५ नग तक **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सांद्र दोष को मृदु और सम्पक कर्त्ता (२) वक्षस्थल और प्रकृति को मृदुकर्ता, (३) विरेचन द्वारा सम्पूर्ण दोषों का शोधक है, (४) छाती तथा कण्ठ के खरखराने को और आवाज के भरभराने को हरणकर्त्ता है, (५) रक्तशोधक (६) दाह और तृषा को शमन कर्ता (७) रक्त को स्वच्छ कर्ता, (८) रुधिर को मृदुकर्ता, (९) रूक्ष कास और धांस को लाभकर्ता, (१०) यकृत् और वक्षस्थल एवं कटि पीड़ा को गुण कर्ताहै (निर्विषैल)

(७७) उरद

संस्कृत, माष **फारसी**, माश **अरबी**, माश **इंग्रेजी**, किड्नीबीन **स्वरूप**, कालापन लिये हरा **स्वाद**, फीका **पहिचान**,

हिन्द मे १ जातिका नाज उत्पन्न होता है **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तरहै तथा मलमें स्निग्धताको अधिक पैदा करता है **हानिकर्ता**, आध्मान कर्ता और दीर्घ पाकी है **दर्पनाशक**, अदरख और मिरच तथा हींग है **प्रतिनिधि**, लोबिया है **गुण,कर्म,प्रयोग**, (१) ओजका बद्धक, (२) दुग्ध और वीर्य उत्पन्न कर्ता, (३) सम्पूर्ण अवयवों को बलप्रद, (४) अन्त्रि (आंत) में पैच्छिलय (फिसलन) उत्पन्न कर्ता, (५) सद्य (ताजा) को पीसकर श्वेत कुष्ठ पर लगावे तो अत्यंत गुण दायक है, (६) यदि इसके आटे को सांद्र करके शिर पर रक्खे तो नक्सीर का रुद्धक है, (७) इसकी पकीहुई दालको बालों के स्थानमें मले तो उत्तम और सघन केश उत्पन्नहों (निर्विषैल और आहारहै)

(७८) उशवा

अरबी, उहवहमग़राबियह **स्वरूप**, ऊपर लाल और भीतर सफ़ेद होताहै **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, १ पश्चिमीघास की सुगंधियुक्त डालीहै **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम तथा ३ कक्षामें रूक्षहै **हानिकर्ता**, तरुण (जवान) को और गरम मिजाजको **दर्पनाशक**, बादाम रोग़न **प्रतिनिधि**, चोबचीनी है **मात्रा**, ६ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२)वीर्यके अंतर्मलको द्रवकर्ता, (३)प्रकृति को मृदुकर्ता, (४) प्रस्वेद और मूत्र प्रवर्तक, (५) प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी शीत और स्निग्ध रोग तथा वक्षस्थल, पक्काशय, यकृत्रोग, वृक्क, वस्ति और गर्भाशय के रोगों को गुणकर्ता है, (६) हरएक दोषको विरेचन द्वारा शोधक है, (७) त्वचा के रोग और कुष्ठ को लाभ प्रद है आमवात (गठिया) को अत्यन्त गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(७९) उसारह रेवन

अरबी, उसरये रेवन **स्वरूप**, पीला **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, रावन्द की जड़ का सुखाया हुआ फाण्ट होता है, **प्रकृति**, २ कक्षा में गरम और रूक्ष है **हानिकर्त्ता**, आंत और गुर्दा को **दर्पनाशक**, बादामरोगन और गुलरोगन है **मात्रा**, १ माशे तथा १॥ माशे और २ माशे है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सम्पूर्ण दोषों को को विरेचन द्वारा शोधक, (२) रोध उद्घाटक, (३) उदर से कृमि निकालता है तथा मूत्र प्रवर्तक है (४) अर्दित और पक्षबध, स्तम्भ, कफज आक्षेप, श्वास, कफकी खांसी और उन्माद को गुणकर्ता है यदि किसी विरेचन से विरेचन न होवे तो एक माशेभर की मात्रासे दुग्ध में मिलायके देदेवे तो तत्क्षण विरेचन होवै (निर्विषैल)

(८०) उसारये मेहक (मुलहटी का सत्व)

फारसी, उसारये मेहक **अरबी** रुब्बुस्सूस **स्वरूप**, काला **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, मुलहटी का सुखाया हुआ स्वरस अर्थात उबालाहुआ चुआव(टपका) है **प्रकृति**

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२ कक्षा में गरम और रूक्ष है हानिकर्ता, गुरदाको दर्पनाशक, कतीरा प्रतिनिधि, सोसन मात्रा, २ माशे गुण कर्म प्रयोग, (१) श्वास और कण्ठ की खरखराहट, वक्षस्थल की रूक्षता और खरखराहट तथा पक्वाशय का दाह, तृषा, रूक्षधांस, कास और मुख के रुधिर स्राव को गुणकर्ता है (२) अत्यन्त रेचक और लेखन द्रव्यके दर्प का नाशक है (निर्विषैल)

(८१) उस्तखुद्दूस (हिन्दी दौना, धारो)

संस्कृत, दमनक **अरबी,** उस्तखुद्दूस **इंग्रेजी,** वर्मवुड् **स्वरूप,** कालापनलिये हरा **स्वाद,** कुछ कड़ुआ और तीव्र गंधियुक्त **पहिचान,** १ घासहै इसका पत्ता सातरके पत्तेके समानहै और बीज खण्ड २ जैसा होताहै **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है **हानिकर्ता,** फैफड़ेको और गरम प्रकृति को विकार कर्ता है **दर्पनाशक,** कतीरा **प्रतिनिधि,** आकाशबेल **मात्रा** ७ माशे. **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) वृथा मलको लयकर्ता, (२) कांतिप्रद, (३) मृदुकर्ता, (४) रोध उद्घाटक, (५) शरीर, हृदय, मस्तिष्क और उदरके आंतरिक अवयवोंको बलप्रद, (६) प्राण वायु शोधक, संतुष्टकर्ता, (७) वक्षस्थल और मस्तिष्क के रोगोंको लाभप्रद, (८) वातज और कफज मलको अतीसार द्वारा शोधक और आम वात (गठिया) को हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(८२) ऊख, (गन्ना, पौड़ा)

संस्कृत, इक्षु **फारसी,** नैशकर **अरबी** कुसबुल्सकर **अंग्रेजी,** श्युगरकेन **स्वरूप,** सफ़ेद और लाल **स्वाद,** अत्यंत मीठा **पहिचान,** प्रसिद्ध है **प्रकृति,** १ कक्षा में गरम और २ कक्षामें तर है **हानिकर्ता,** अध्मानकर्ता तथा फेंफड़े को बिगाड़ता है **दर्पनाशक,** अनीसून **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) रुधिरको स्वच्छकर्ता. (२) रुद्धक. (३) रोध उद्घाटक. (४) वक्षस्थल, फुप्फुस और कासके खरखरानेको लाभप्रद. (५) स्निग्धताको स्वच्छ कर्ता, (६) शरीरको बृंहणकर्ता, (७) पाचक, (८) मूत्रल, (९) वस्ति शोधक, (१०) उदरको मृदुकर्ता. (११) ओज को चालन कर्ता. (१२) पक्वाशयके दाहको हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(८३) ऊंट कटेरा

संस्कृत, वार्ताकी **फारसी,** अश्तरखार **अरबी,** शोकतुल् जमल् **इंग्रेजी,** सोलानम्-इंटीकम् **स्वरूप,** कांटेयुक्त, पीला और सफ़ेद **स्वाद,** कड़ुआ **पहिचान,** बादावुर्दकी आकृति की १ बूटी है **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्षहै **हानिकर्ता,** मस्तिष्क और वृक्कको **दर्पघ्न,** सिर्का और शरवत ग़ोरह हैं **प्रतिनिधि** अंजदां **मात्रा,** ३ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,**

(१) रोध उद्घाटक, (२) पक्वाशय में उष्णता उत्पन्न कर्ता, (३) क्षुधा प्रद, (४) आहार पाचक, (५) मूत्र प्रवर्तक, (६) पांडु (पीलिया) को हरणकर्ता

(७) आम वात (गठिया) का नाशक, (८) शीतवीर्य और विषका दर्पनाशक है (९) इस की जड़ ओज प्रद है और इसका रस वृक्क और प्लीह के रोगों को लाभ प्रद है (निर्विषैल)

८४ ऊदसलीब (फावानिया)

अरबी, ऊदसलीब, फावानिया, **स्वरूप**, बाहर लाल और भीतर ऊदी रंग का होता है **स्वाद**, कड़ुआ और कसेला **पहिचान**, बादामके छिलकाके समान १ छिलका है और इसमें बड़ा मत भेद है **प्रकृति**, २ कक्षा मे गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, आमशयको **दर्पनाशक**, कतीरा **प्रतिनिधि**, ग़ारीकून और आफ़िस्ती **मात्रा**, ३ माशे. **गुण, कर्म, प्रयोग**,

(१) पैर की अंगुली की पीड़ा, पक्वाशय, वृक्क और वस्तिकी पीड़ा को गुण कर्ता है, (२) गर्भाशय की पीड़ा, पांडु, अपस्मार (मिरगी) और निद्रा में घिग्घी बंधने को लाभ प्रद है (३) अश्मरी को खंडन कर्त्ता और बद्धक है, (४) रूक्षता प्रद, (५) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक (६) हृदय को बल प्रद (७) रक्त स्राव का रुद्धक है

८५ एला

स्वरूप, भूरा **स्वाद**, मीठा और खट्टा **पहिचान**, जिसके पत्ते लंबे और फल इमली जैसा होता है १ वृक्ष है **प्रकृति**, १ कक्षा में मीठा **गरम** और खट्टा ठंडा होता है **हानिकर्त्ता**, गरम प्रकृति को **मात्रा**, ३ मासे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृति को मृदुकर्ता, (२) प्रायः अवयवों को बल प्रद, (३) वायु और पित्त विकारको हरणकर्त्ता, (४) हिन्दुओं के व्यवहार में अधिक आता है (निर्विषैल)

(८६) एलुआ, (मुसब्बर)

संस्कृत, एलावालुक, **फारसी**, सिब्र **अरबी**, सिब्र सकूतरी, **स्वरूप**, काला **स्वाद**, अत्यन्त कड़ुआ, **पहिचान**, १ स्वरस है जो कि घीगुआरको निचोड़ कर रसोत की विधि से बनाया जाता है, **प्रकृति**, २ कक्षामें स्नायु यौगिक, गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, आंत और आमाशय को शिथिल करता है, **दर्पनाशक**, कतीरा, गुलाब के फूल और मस्तगी है, **प्रतिनिधि**, विरेचन कर्म में निसोथ और शोथ में रसोत हैं, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध उद्घाटक, (२) वायुको लयकर्ता, (३) हर एक दोषके लिये बलवान् रेचक है, (४) पक्वाशय और दुष्ट दोषों का शोधक, (५) दृष्टिबलको बलप्रद, (६) अति प्राचीन व्रणका पूरक (७) नेत्रके रोगोंको गुण कर्ता, (८) यदि अस्क, रसोत, अफीम और अकाकिया के साथ सिर्का में पीस के लेप करे तो प्लीहके शोथ को अनभूत गुण कर्ताहै, (निर्विषैल)

(८७) एलपालक

स्वरूप, हरा **स्वाद**, वेस्वाद और तीखा **पहिचान**, एक बूटी है **प्रकृति**, ठण्डी **मात्रा**,

६ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कण्डु (खुजली) और कुष्ठ की नाशक(२) उदरके कृमियों की नाशक. (३) तृषाको हरणकर्ता (४) वमन को हरणकर्ता, (५) कफ, पित्त और रुधिरके तथा ओजके विकारोंको गुण कर्ता और मूत्रल है (निर्विषैल)

(८८) ककोड़ा

स्वरूप, हरा स्वाद, कडुआ पहिचान, जिसके फल करेला जैसे किन्तु इससे कुछ छोटे होतेहैं प्रकृति, ठंडे और किसी की सम्मति में गरम हैं गुण, कर्म, प्रयोग, (१) फोड़ा फुन्सियों को गुण कारक (२) शोथ को लयकर्ता है (निर्विषैल)

(८९) ककड़ी

संस्कृत, एर्वारु फारसी, खयारजह, खयारदराज अरबी, किशाय स्वरूप, हरा और सफेद स्वाद, फीका पहिचान, गजभर तकका लंबा एक प्रसिद्ध फल है प्रकृति, ठंडी और तर हानिकर्ता, अफराकरे देरमें पचे और ठंडे मिजाज को हानिकर्ता है दर्पनाशक, नमक और अजमायन है प्रतिनिधि, खीरा है गुण, कर्म, प्रयोग, (१) स्वच्छकर्ता, (२) तृषा, पित्तकी उष्णता और तीक्ष्णता, दाह, रुधिर की उष्णता और यकृत् को शांतिप्रद है, (३) अत्यंतमूत्रल, (४) जीर्ण ज्वरों को प्रकट (उभार) करने वाली, (५) वायु और गुल्म को उत्पन्नकर्ता, (६) त्रिक और कटि पीड़ा को हरण कर्ता है (निर्विषैल)

(९०) ककड़ी के बीज

संस्कृत, एर्वारु बीज फारसी, तुख्म खयार दराज अरबी, बजरुल्कसाय स्वरूप, सफेद स्वाद, मीठा पहिचान, प्रसिद्ध हैं प्रकृति, ठंडे और तर हानिकर्त्ता, ठहरे हुए मल को उतारते हैं दर्पनाशक, सिकंजवीन प्रतिनिधि, खीरा के बीज, मात्रा, ६ माशे की है गुण, कर्म प्रयोग,

(१) मूत्रल, (२) रोध उद्घाटक, (३) कांतिप्रद, (४) पिच्छल मल से शिराओं को शोधनकर्ता, (५) उष्णज्वरोंकी उष्णता और रुधिर का दाह तथा तृषाको शमनकर्ता, (६) इसका लेप मुखके रूपका शोधक और प्रकृतिको प्रसन्न कर्ता है, (निर्विषैल)

(९१) करोंदा

संस्कृत, करमर्द, अरबी, कमाफेतूस, स्वरूप, हरा, स्वाद, खट्टा और तीखा, पहिचान, जिसके पत्ते कासनीके पत्तेके समान होतेहैं एक क्षुपहैं प्रकृति, २ कक्षामें गरम, रूक्ष, हानिकर्ता, फेफड़ेको दर्पनाशक, अनीसून प्रतिनिधि, सीसालूस है गुण, कर्म, प्रयोग,

(१) रोध उद्घाटक, (२) शोथ को लयकर्ता, (३) वृक्कशूल, अर्श (ववासीर) और जलोदरको लाभ करता है (४) इसका लेप मलका शोधकहै, (५) कांति प्रद और मूत्रलहै, (६)इसके पत्तोंका स्वरस उदरके कृमियोंका नाशकहै, (निर्विषैल)

(९२) कचरी

संस्कृत, गोरत्तकर्कटी, **फारसी**, दस्तम्बोयह **अरबी**, शाम, **स्वरूप**, भूरी **स्वाद**, कड़वी, तीखी और सुगंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम, रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिजाजको, और शिरपीड़ाप्रद है **दर्पनाशक**, धनियां **प्रतिनिधि**, अंजीर, **मात्रा**, ४ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उदरके नलको बल प्रद, (२) स्नायु की कठो--रताको लयकर्ता, (३) पक्षबध, अर्दित, कफजरोग और अर्श (बबासीर) को लाभ कर्ता, (४) वायुको लय कर्ता, (५) बाह्य और वृथा स्निग्धताकी कर्षक, (६) बद्धक और ओज बर्द्धक है (निर्विषैल)

(९३) कचूर

संस्कृत, कर्चूर, **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, तीखा, कड़ुआ और सुगंधियुक्त **पहिचान**, पुरुष, स्त्री, और षंढ इस तरह से तीन जातिका होताहै षंढको कपूर कचरी कहते हैं यह अदरख और सोंठ जैसी एक घासकी जड़है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम, रूक्ष **हा-निकर्ता**, मस्तिष्कको, और फेफड़ेको तथा शिरः पीड़ा प्रद है, **दर्पनाशक**, धनियां **प्रतिनिधि**, अजीर और अदरख है, **मात्रा** २ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**,

(१) अत्यन्त भोजन कराने वाला, (२) क्षुधा वर्द्धक, (३) कुष्ठकों गुण कर्ता, (४) अर्श (बबासीर) फोड़ा, फुन्सी, व्रण, श्वास, वायुगोला और दुर्गन्धित अपान वायुको गुणकर्ता है (५) वायु और कफके विकारोंको हरणकर्ताहै (६) उदरके कृमियोंका नाशक. (७) रेचक है (निर्विषैल)

(९४) कचनाल

संस्कृत, कांचनार **इंग्रेजी**, बोहीना-आवेर्येगेटा **स्वरूप**, हरी और लाल **स्वाद**, कसेली **पहिचान**, जिसकी कली तर्कारी आदि में ली जातीहै एक प्रसिद्ध वृक्ष है **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष **हानिकर्ता**, अफरा करतीहै **दर्पनाशक**, मांस, नमक और गरम मसाला है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी, अतृप्तिकर, बद्धक, रूक्ष-ता कर्ता, पक्काशय और आन्त्रियों को बलप्रद, विष्टंभी, अतीसार का रुद्धक, उदर कृमि नाशक, और रुधिर विकार को हरणकर्ता है, (२) इसके पुष्प मुखसे रुधिर आ-ने को और अत्यंत आर्त्तवके स्रावको रुद्धक हैं, (३) आंतरिक व्रण और गुदाके व्रणको गुणकर्ता, (४) इसकी त्वचा (छाल) का चूर्ण शुक्र प्रमेह को गुणकर्ता है, और कुल्ली करना मुख पाक और मुख रोग को लाभकर्ता है (निर्विषैल)

(९५) कटाई

संस्कृत, विकंकत **इंग्रेजी**, सिलमद्रस-मोटेना **स्वरूप**, लाल फूल वाली **स्वाद**, कड़वी **प्रकृति**, गरम और रूक्ष **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कृमि और महामारी पवनके विकार की नाशक, (२) ज्वर, पार्श्वशूल और मूत्रकृच्छ्रको गुणकर्ता, (३) दुर्गंधि आनेको लाभकर्ता, (४) उदर कृमि-

नाशक (५) हृदय रोगको लाभकर्ता, (६) शोथको लयकर्ता है (निर्विषैल)

(९६) कटीला

स्वरूप, हरी पत्ती और ऊदा फूल होताहै स्वाद, कड़वी पहिचान, कांटे युक्त एक घासहै इसके फलमें भी कांटे होते हैं इसकी जड़ काममें आतीहै प्रकृति, गरम और रूक्ष हानिकर्ता, गरम मिजाज़ को दर्पनाशक, धनियां और कपूर, प्रतिनिधि, अंजीर, मात्रा, २ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कृमि और वायुनाशक (२) ज्वर, पार्श्वशूल और मूत्रकृच्छ्रको लाभकर्ता, (३) गंधज्ञान शक्तिके मिथ्या-होजानेको गुणकर्ता, (४) हृदयरोगको गुणकर्ता, (५) विशेषतः स्वभावको मृदुकर्ता, (६) क्षुधाकर्ता और पाचकहै (७) कास और श्वासको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(९७) कटहल

संस्कृत, पनश, फारसी, चकी, इंग्रेजी, आर्टोकार्पस इंटेग्रिफोलिया, स्वरूप, बाहर हरा और भीतर पीला, स्वाद, मीठा और चाशनी युक्त, पहिचान, तरबूजके बराबर एक हिन्दुस्तानी फल है जिसके ऊपर कांटे और तर दाने होते हैं प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें मलकी श्लक्ष्णता युक्त रूक्ष है हानिकर्ता, आध्मा कर्ता और वातजरोग उत्पन्न कर्ता है दर्पनाशक, नमक और इसीके बीजोंको भून कर खाना है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अत्यन्त ओजशक्ति वर्द्धक (२) स्तम्भनकर्ता, (३) रुधिरको दुष्ट और विकारीकर्ता है, (४) आध्मानकर्ता, (५) वातल और सांद्र रुधिर उत्पन्न कर्ता, (६) दीर्घपाकी, (७) इसके बीज अधिक ओजवर्द्धक हैं, (८) शुक्रल, (९) कच्चे कटहलको पक्व करके खाना क्षुधाधिक्यको लाभ कर्ता है (निर्विषैल)

(९८) कठूमर

संस्कृत, काकोदुम्बरिका, फारसी, अंजीरदश्ती अरबी, तीनबर्री स्वरूप, ऊदा, स्वाद, कसेला और खट्टा पहिचान, अंजीरके समान एक वृक्षका फल है प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका लेप करना सफेद और कालेदाग़, अकोता और दादको गुण कर्ता है, (२). इसकी जड़का लेप सम्पूर्ण कर्मोंमें बलवान् माना गया है, (निर्विषैल)

(९९) कडं

संस्कृत, वरटा, फारसी, खसकदाना, अरबी, हब्व कर्तम, हब्वुलमास्फर स्वरूप, सफेद स्वाद, कुछ कड़ुआ पहिचान, कुसुंभ (कसूम) के प्रसिद्ध बीज हैं प्रकृति, रेचक शक्तिके साथ २ कक्षामें गरम और १ कक्षा में रूक्ष हैं, हानिकर्ता, आमाशयको दर्प-नाशक, अनीसून, और मठास प्रतिनिधि, ततुल खिज़रा, मात्रा, ६ माशेसे ९ तक गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कफको हरणकर्ता (२) विरचन द्वारा कफका शोधक, (३) वायुको लयकर्ता, (४) वक्षस्थल शोधक

(५) स्वर शोधक, (६) प्रतिश्यायको अच्छी तरह पक करने वाला, (७) ओज और दृष्टिको बलप्रद (८) शुक्ल, (९) जलोदर, मालीखोलिया, विश्वास, (रोग विशेष) खुजली, कुष्ठ, गुल्म और पामा (खाज) को गुण कर्ता है (निर्विषैल)

(१००) कतीरा

फारसी, गोंद **अरबी**, कतीरा, **स्वरूप**, सफेद और पीला **स्वाद**, फीका और कुछ खट्टा **पहिचान**, एक कांटे युक्त वृक्षका प्रसिद्ध गोंद है, **प्रकृति**, सम (मातदिल) **दर्पनाशक**, ईसबगोल और अनीसून, **प्रतिनिधि**, बबूलका गोंद और मीठे कद्दूके बीज हैं, **मात्रा**, ४ माशे है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग** (१) प्रायः नसोंके मुखमें चिपक कर रोध करने वाला, (२) रुधिरको सांद्र कर्ता, (३) कठोरताको मृदुकर्ता, (४) दोषोंकी लेखनता और तीक्ष्णताको शान्तिप्रद, (५) अन्त्रिको बलप्रद, (६) अन्तारिक अवयवोंके रक्तस्रावका रुद्धक, (७) कास, वक्षस्थलकी खरखराहट और फेफड़ेके क्षत (व्रण) को गुणकर्ता (८) प्रायः विषैल ओषधियोंके विषका नाशक है (निर्विषैल)

(१०१) कत्था सफ़ेद

संस्कृत, खदिर **अरबी**, कात **स्वरूप**, ललाई लिये भूरा **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, एक वृक्षकी छालके काढेको जमाते हैं जो कि हिन्दमें होताहै **प्रकृति**, २ कक्षा में ठंडा और रूक्ष है **हानिकर्ता**, इसकी अधिकता वस्तिमें पथरी उत्पन्न करतीहै और ओजको बिगाड़ती है **दर्पनाशक**, कस्तूरी और अम्बर **प्रतिनिधि**, गेरू **मात्रा**, ३ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वद्धक, (२) रूक्षता प्रद, (३) अतीसार बद्धक (४) शोथके मलको पक्कर्त्ता, (५) दन्त और दन्तमूल (मसूड़े) को दृढ़कर्त्ता, (६) इसकी बुर्की मुखपाकको गुणकर्ता है, (७) शुक्रमेह और स्वप्नदोषकी अधिकताको लाभकर्त्ता, (८) अन्त्रिकी लेखनता, ज्वर, मरोड़ा और अन्त्रिके व्रणको गुणकर्त्ता, (९) पांडुको गुणकर्त्ता है (निर्विषैल)

(१०२) कदम

संस्कृत, कदम्ब **अरबी**, क़दम **स्वरूप**, पीला और सफेद **स्वाद** खट्टा और फीका **पहिचान** जिसके पत्ते अखरोटके पत्ते जैसे और फल धतूरेके फल जैसे होते हैं एक वृक्ष है **प्रकृति**, ठंडा **हानिकर्त्ता**, अफरा और कफ करताहै **दर्पनाशक**, मांस और गरम मसाला है **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ, पित्त व पित्तविकार को हरण कर्त्ता (२) रुधिरको सांद्रकर्त्ता (३) विशेषतः स्त्रियोंके स्तनोंको पुष्टिकर्त्ता और वर्द्धक है (४) इसका पाक मांसके साथ स्वादिष्ट होताहै, (निर्विषैल)

(१०३) कद्दू गोल

फारसी, कद्दूयशीरीं **अरबी**, दिवार, यकतीन हल्व **स्वरूप**, हरा और पीला **स्वाद**, मीठा **पहिचान**, तरकारीकी जातिका एक प्रसिद्ध फल है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम

और तर है हानिकर्त्ता, अफरा करताहै दर्पनाशक, खटाई और मांस प्रतिनिधि, लोकी गुण,कर्म,प्रयोग, (१) अल्पाहार है, (२) सांद्रदोषोंको उत्पन्नकर्त्ता, (३) उदरको मृदुकर्त्ता, (४) दीर्घकालमें पचानेवाला, (५) इसका पाक मांसके साथ स्वादिष्ट होताहै, (६) इसका हलुआ स्वादिष्ट होताहै और ओज तथा बलप्रद है, (निर्विषैल)

(१०४) कद्दू लाबा (लौकी, रामतुरिया, घीया)

संस्कृत, अलाबु फारसी, कद्दूयदराज अरबी, क़रअयकत्तीन स्वरूप, बाहर हरा और भीतर सफेद होताहै स्वाद, फीका पहिचान, तरकारीकी जातिमें आधगज तथा गजभर तकका लम्बा एक लताका प्रसिद्ध फलहै प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और तर हानिकर्त्ता, ठंडे मिजाज और आमाशय को दर्पनाशक, मांस और गरम मसाला है प्रतिनिधि, पालक और कुलफाहै गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शुद्ध दोषोंको उत्पन्नकर्त्ता, (२) अल्पहार है, (३) उदरको मृदुकर्त्ता, (४) अत्यंत मूत्रल, (५) अवयवोंको शीतता, और स्निग्धता प्रद, (६) अवरोध उद्घाटक, (७) गरमीके ज्वरोंको गुणकर्ता (८) पैत्तिक तथा उष्ण प्रकृतिकेलिये हित है, (९) राजयक्ष्माको इससे उत्तम और कोई आहार नहीं है (१०) भुलभुलाके इसका निचोड़ा हुआ स्वरस हृदय, यकृत् और पक्वाशयकी ऊष्मा तथा ज्वरको अद्वितीय शमनकर्ताहै, (निर्विषैल)

(१०५) कद्दू लम्बेके बीज

संस्कृत, अलाबुबीज फारसी, तुख्म-कद्दूयदराज अरबी, बजरुलकरअ स्वरूप, सफेद और चिकना स्वाद, मीठा पहिचान, प्रसिद्ध है प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें तरहै हानिकर्ता, शीत प्रकृति और वस्तिको दर्पनाशक, सौंफ प्रतिनिधि, खरबूजाके बीज और कतीरा मात्रा, ६ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) मूत्रल (३) वक्षस्थलके खुरखुरानेको और मुखसे रुधिरआनेको तथा उष्णकासको गुणकर्ता है, (४) तृषाको शांतिप्रद, (५) मूत्रपीड़ा (चिनग) और वस्तिके दाह को लाभकर्ता है, (६) गरमीका ज्वर और अनिद्राको गुणकर्ता है, (७) मस्तिष्क और हृदयको बलप्रद, (८) विदग्ध कफको पक और शमन कर्ता है, (निर्विषैल)

(१०६) कनूचा

फारसी, मर्दक अरबी, मरद स्वरूप, काला स्वाद, फीका पहिचान, प्रसिद्ध है हानिकर्ता, शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता दर्पनाशक, गुलेनार और सुर्ख गुलाब है प्रतिनिधि, ईसबगोल और बजुरकता है मात्रा, ६ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) स्वच्छताप्रद, (२) कफ और वायुको लयकर्ता, (३) आध्मानको हरणकर्ता,

(४) रोधउद्‌घाटक, (५) पक्वाशय और अन्त्रियोंको बलप्रद, (६) जलोदर नाशक, (७) मूत्र और प्रस्वेद प्रवर्तक, (८) इसके भुनेहुए बीज वर्द्धक हैं (९) मरोड़ा और अन्त्रकी लेखनता को यदि बादाम रोगनके साथ देवे तो लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(१०७) कनेर

संस्कृत, कर्णिकार **फारसी**, खरजोहरह **अरबी**, दफलीसम्मुलूहिमार **इंग्रेजी**, अलियंडर **पहिचान**, इसका फूल लाल और सफेद होता है **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा **पहिचान**, दोगजका लम्बा एक प्रसिद्ध वृक्ष है इसको गधा कभी नहीं छूता **प्रकृति**, गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको **दर्पनाशक**, शहद, और घी **प्रतिनिधि**, बाबूना और मुनक्का **मात्रा**, २ माशे परंतु इसका खाना उचित नहीं है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कठोर शोथोंको लयकर्ता, (२) रूक्षताकर्ता, (३) कांतिप्रद है, (४) पीठकी पुरानी पीड़ाको शांतिप्रद है, (५) अर्कुल्‌निसा (चूतड़से लेकर पांवकी अंगुली पर्यंत जो दर्द होता है) को गुणकर्ता, (६) ओजको बलप्रद, (७) इसका लेप खुजली और झांई को गुणकर्ता है, (८) इसके सूखे पत्तों की बुर्की व्रणको पुरानेवाली है और इसका सेवन भक्ष्य रीतिसे निषिद्ध है (उपविष है)

(१०८) कपूर

संस्कृत, कर्पूर **फारसी**, कापूर **अरबी** काफूर **इंग्रेजी**, केम्फर **स्वरूप**, सफेद **स्वाद**, कड़ुआ और रूक्ष **पहिचान**, जिसकी लकड़ी अत्यंत नरम होती है एक वृक्षका गोंद बतातेहैं और कोई जमीहुई ओस और कोई खानिजही कहते हैं **प्रकृति**, उष्णता शक्तिके साथ २ कक्षा में ठंडा और रूक्ष है **हानिकर्ता**, गुर्दा, वस्ति और ओजको **दर्पनाशक**, एलुआ, कस्तूरी और केसर है **प्रतिनिधि**, सफेद चंदन और बंसलोचन है **मात्रा**, ३॥ रत्ती **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नता प्रद, (२) मस्तिष्क और हृदयको बलप्रद, (३) ज्वर, राजयक्ष्मा, पार्श्वशूल और फेंफड़ेके क्षतको लाभकर्ता, (४) तृषा और यकृत्‌के दाहका नाशक, (५) निद्रा प्रद, (६) इसका सूंघना निद्राका नाशक है (उप विष है, स्त्रियोंको विशेषतः उप विष है)

(१०९) कपूरकचरी

संस्कृत, कर्चूर **अरबी** जर्निया, अर्कुलकाफूर **इंग्रेजी**, लांगज़ेडोरी **स्वरूप**, बाहर भूरी और भीतर सफेद **स्वाद**, कड़वी, तीखी और सुगंधियुक्त **पहिचान**, सोंठ जैसी एक जड़ है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, हृदयको और शिरः पीड़ा उत्पन्न कर्ता **दर्पनाशक**, बनफ्सा, चंदन और पोदीना है **प्रतिनिधि**, वोजीदां और दरूंज है **मात्रा**, ४ माशे. **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध उद्‌घाटक (२) प्रसन्नताप्रद, (३) हृदय और

मस्तिष्क तथा पक्काशयको बलप्रद, (४) ओजप्रद, (५) अतीसार और वमनका रुद्धक, (६) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (७) वातजमलको अतीसारद्वारा रेचक, (८) शीतकी कासको लाभकर्ता, (९) बालकोंके मरोड़ाको गुणकर्ता, (१०) अत्यंत अधोवायु निस्सारक, (११) पाचक (१२) ओजप्रद, (१३) इसके शुष्क चूर्णको मलना शोथको लयकर्ताहै, (१४) पीड़ाको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(११०) कबाब चीनी, (सीतल चीनी)

संस्कृत, सुरप्रिय **अरबी**, कबावह, हब्बुलउरूस **स्वरूप**, बाहर पीली और भीतर सफ़ेद **स्वाद**, तीखी और रूक्ष **पहिचान**, हब्बबिलसां जैसा कालीमिरच से कुछ छोटा एक दाना है **प्रकृति**, गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, वस्ति (मसाने) को **दर्पनाशक**, मस्तगी और चंदन **प्रतिनिधि**, दालचीनी **मात्रा**, ४ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्राणवायुको स्वच्छ कर्ता, (२) रोध उद्घाटक, (३) रोम कूपोंका उद्घाटक, (४) पक्वाशय और दन्तमूलको बलप्रद, (५) उदरके नल-को बलप्रद, (६) वायुको लयकर्ता, (७) मूत्रल, (८) वृक्क और प्लीहरोगको गुणकर्ता, (९) इसका चबाना मुखपाक-को लाभकर्ता है, (१०) मुखकी गंधि-को हरणकर्ता, (११) इसको चबाकर लिंगेन्द्रिय पर लगाना बाजीकरण करता है, (निर्विषैल)

(१११) कबाबहखन्दां, (फ़ागरह)

अरबी, फागरह **स्वरूप**, भूरा और भीतर सफ़ेद **स्वाद**, तीखी और तीक्ष्ण गंधियुक्त **पहिचान**, मुख फटाहुआ और कालीमिरच जैसा एक बीज होताहै **प्रकृति**, ३ कक्षा में गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाजको और शिरः पीड़ा उत्पन्न कर्ता, **दर्पनाशक**, नीलोफर और गुलाबहै **प्रतिनिधि**, इलायची और दालचीनी है **मात्रा** ५ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पक्वाशय और पाचनशक्ति तथा शीतलता-युक्त यकृत्को बलप्रद, (२) रोध उद्घाटक, (३) कफज और वातज दोषोंका शोधक, (४) मस्तिष्कसम्बंधी शीतके रोगोंको गुणकर्ता, (५) प्रचन्ड वायु और शीतसे जो अतीसार हो उसको गुणकर्ता, (६) रक्तको शोधन कर्ता है,

(११२) कमरख

संस्कृत, कर्मरंग **इंग्रेजी**, करबोला **स्वरूप**, पीली और हरी **स्वाद**, खट्टी और मीठी **पहिचान**, छः फांकवाला कुछ लंबा एक वृक्षका फल है **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और तर **हानिकर्ता**, शीत-प्रकृतिको **दर्पनाशक**, चूना, नमक और गरम ओषधि हैं **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) पित्तकी तीक्षणता और तृषाधिक्य तथा पित्तातिसार एवं वमनको शांतिप्रद है और बद्धक है, (३) मुखके स्वादको सम्हारने वाली, (४) सम्पूर्ण

कर्म और प्रभावमें रेवास (द्रव्यविशेष) के समान है, (निर्विषैल)

(११३) कमाज़रेवस

स्वरूप, हरी और काली **स्वाद,** कड़वी तीखी और तीक्ष्ण गंधि युक्त **पहिचान,** जिस की पत्ती बलूत की पत्तीके बराबर और बीज टुकड़े टुकड़े जैसे होतेहैं विलश्त भरकी एक घास है **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम है **हानिकर्ता,** आंत और गुर्देको **दर्पनाशक,** कतीरा **प्रतिनिधि,** सीसाल्यूस **मात्रा** ३ माशेसे ६ माशे तक **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) रोध और रोम कूपोंका उद्घाटक, (२) सांद्र दोषों को शोधनकर्ता, (३) प्राणवायुको स्वच्छ कर्ता, (४) शरीर-को उष्ण कर्ता, (५) मूत्र और आर्तव प्रवर्तक, (६) प्लीहरोग और कास को गुणकर्ता है,

(११४) कमीला

संस्कृत, कांपिल्ल **फारसी,** कमीलह **अरबी,** कम्बील **स्वरूप,** लाल **स्वाद,** कड़ुआ **पहिचान,** रेत जैसी एक लाल वस्तु है इसकी परीक्षामें मतभेद है किसी की सम्मतिमें किसी देशकी ओस है और किसीके मतमें किसी फलका बुरादह (बुरकस) है **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता,** आमाशय और आंतको **दर्पनाशक,** कतीरा और मस्तगी **प्रतिनिधि,** वायविड़ंग और टरमस है **मात्रा,** ३ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पक्काशय और अन्त्रिसे सब जातिके कृमियोंको निकालता है, (२) पिच्छल स्निग्धताको अतीसार द्वारा निकालता है, (३) दुष्ट दोषोंको भी अतीसार द्वारा निकालता है, (४) नेहरुआके रोग को लाभकर्ता (५) इसकी बुर्की व्रणस्रावकी स्निग्धता-की शोषक है, (६) गुलरोगन के साथ दाद, खुजली और व्रणको गुणकर्ता है, (७) धोये हुए घीमें इसका लेप सिरके गंजापनको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(११५) करोमाना

अरबी, करोमाना **स्वरूप,** ऊदा और फूल सफ़ेद तथा बीज भूरा होता है **स्वाद,** कड़ुआ और तीखा **पहिचान,** जिसका जीरे और काले जीरे जैसा बीज होता है यह बाबूना जैसी एक घास है **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता,** तिल्लीको **दर्पनाशक,** अनीसून और चन्दन **प्रतिनिधि,** राई और मिश्कतरामशीअ **मात्रा,** २ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) रोध और रोमकूपों का उद्घाटक, (२) स्वच्छताप्रद, (३) मूत्रल, (४) अश्मरी-को खण्डनकर्ता (५) शीतके रोगोंको गुणकर्ता, (६) उदरके कृमियोंका नाशक (७) वक्षस्थल शोधक, (८) गुल्म और वायुकानाशक, (९) हिक्का (हिचकी) कास और घांसको लाभकर्ता, (१०) अकुलनिसा और पक्षवधको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(११६) करमकला

फारसी कर्नब, कलमगिर्द **अरबी,**

बुक्लतुलइन्सार **स्वरूप**, हरा और सफ़ेद **स्वाद**, फीका और कसेला **पहिचान**, गोभी जैसी एक जातिकी तर्कारी है **प्रकृति**, सम है तथा कोई गरम और कोई ठंडी कहते हैं **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको **दर्पनाशक**, घी और नमक है, **प्रतिनिधि**, गोभी है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उदरको मृदुकर्त्ता, (२) बद्धक, (३) आध्मानकर्ता (४) वृथामलको पक और शमनकर्ता, (५) ओजको बलकर्ता, (६) अतृप्ति कर (७) वातिक सांद्र रुधिर उत्पन्नकर्त्ता है, (निर्विषैल)

(११७) करमरी

स्वरूप, काला **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, जिसको नमक और मिरच के साथ खाते हैं मकोइयाके बरावर एक जंगली फल है, **प्रकृति**, ठंडी **हानिकर्ता**, बद्धक और गरिष्ठ है, **दर्पनाशक**, नमक और मिरच, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वीर्यको सांद्रकर्त्ता, (२) ओजप्रद, (३) ओजके बलको चालन कर्ता, (४) बद्धक, (५) हृल्लास और वमनकी नाशक, (६) तृषा को शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(११८) करील, (सेंत)

संस्कृत, करीर **स्वरूप**, काला और हरा **स्वाद**, खट्टा और मीठा **पहिचान**, जिसके वृक्षमें पत्ते नहीं होते और जिसके फल करोंदाके बराबर होतेहैं **प्रकृति**, सम है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नताप्रद, (२) आनन्द प्रद, (३) हृदयको बलप्रद, (४) विशेषतः चित्तभ्रम और उन्माद नाशक है, (५) इन्द्रिय और बुद्धिको दृढ कर्त्ता, (६) ओजको बलप्रद, (७) इसकी राख मीठे तैलके साथ नासूरको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(११९) करेला

संस्कृत, कारवेल्ल **अरवी**, कसायुलहिमार, **इंग्रेजी**, हेरीमोडिका **स्वरुप**, हरा और लाल **स्वाद**, कडुआ **पहिचान** तर्कारीकी जातिसे पृथक् कांटेयुक्त जैसा खीराके बराबर एक बेलका प्रसिद्ध फल है **प्रकृति**, २ कक्षा में गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, गरम मिजाजको और मरोड़ा करताहै, **दर्पनाशक** ,प्याज का तेल और इमलीके फूल हैं, **गुण,कर्म, प्रयोग**, (१) मूत्र प्रवर्त्तक, (२) स्वच्छताप्रद, (३) कांतिप्रद, (४) वृथामलसे मस्तिष्कका शोधक,(५) पित्त और कफको अतीसार द्वारा निकालता है (६) शीतप्रकृतिके पकाशयको बलप्रद, (७) उदरकृमि नाशक (८) पक्षवध, अर्दित, स्तम्भ, आमवात, जलोदर और पांडुको लाभकर्ता, (९) अश्मरीका नाशक, (१०) स्नायु और ओजको बलप्रद, (११) शुक्रमेह को लाभकर्ता है, (विर्विषैल)

(१२०) करोंदा

संस्कृत, करमर्द **इंग्रेजी**, कोरेसा, कोरंदास **स्वरुप**, सफ़ेद, काला, लाल और हरा, **स्वाद**, खट्टा और चाशनीयुक्त, **पहिचान**, जिसके पत्ते नीबू के पत्ते जैसे

और झड़बेरी के बराबर एक कांटेवाले वृक्ष के फल हैं, **प्रकृति**, ठंडे और रूक्ष **हानिकर्ता**, फेफड़ेको **दर्पनाशक**, नमक और खटाई है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यन्त क्षुधाप्रद, (२) पित्त शोधक (३) तृषाको शांतिप्रद, (४) अतीसार बद्धक, (५) विशेषतः पैत्तिक अतीसारको अत्यन्त गुणकर्ता है, (६) अपक्व (कच्चा) करोंदा गरिष्ठ और आध्मान कर्ता है, (७) उदर को विष्टम्भकारी, (८) इसका अचार पाचक है, (९) अत्यन्त क्षुधाप्रद है परन्तु ओजको हानिकर्ता है, (निर्विषैल)

(१२१) करंड

फारसी, सनवादह **अरबी**, सनवाफिज **स्वरूप**, लाल, सफेद और काला **स्वरूप**, फीका **पहिचान**, एक जातिका पत्थरहै जोकि देखनेसे एसा मालूम होताहै कि मानों जमीहुई कोमल रेती ही है **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष है **हानिकर्त्ता** स्नायुको **दर्पनाशक**, केशर **मात्रा**, खाते नहीं हैं **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दन्तमूलोंको बलप्रद, (२) दन्तमूलकी ऐंठनका नाशक, (३) इसका मंजन दन्तोंको स्वच्छ और कांतिप्रद है, (४) इसका लेप करना शोथको लयकर्ता है, (५) दाहको शमन कर्ता, (६) अण्डेकी सफेदीके साथ इसका लेप आगके जलेहुए को लाभकर्त्ता है (७) मोमके साथ बवासीरको गुणकर्त्ता है (८) यह जलाहुआ रक्तस्रावका रुद्धक है (९) प्राचीन क्षत और व्रण को गुणकर्त्ता है (निर्विषैल अधिक मात्रा उपविष है)

(१२२) करंजुआ (कंजा)

संस्कृत, करंज **फारसी**, खायहइबलीस, **अरबी**, अल्तमक्त **इंग्रेजी**, पोनगेम्याग्लेवशी **स्वरूप**, आस्मानी **स्वाद**, कडुआ और कसेला **पहिचान**, एक कांटेवाले वृक्षका प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्त्ता**, वक्षस्थल और कण्ठको **दर्पनाशक**, नमक और घी है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) रक्तस्राव का रुद्धक, (३) महामारी पवनका शोधक (४) जीर्णज्वरको लाभप्रद (५) बालकको जेर (गर्भाशय में १ झिल्ली है कि जिसमें बालक रहता है) में स्थापनकर्त्ता और रक्षक है (६) मलको पक्वकर्त्ता, (७) गुल्मनाशकहै (निर्विषैल)

(१२३) करनपात

अरबी, अजफारुल्जिन **स्वरूप**, कालापन लिये भूरा **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, विनापत्ते और फल के कटे नाखून जैसी एक घास है **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्त्ता**, मस्तिष्कको **दर्पनाशक**, उन्नाव **प्रतिनिधि**, इन्द्रजौ, गूगल और सुपारी है **मात्रा**, ६ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हलीमकको लाभप्रद, (२) रूक्ष कासको गुणकर्त्ता, (३) विशेषतः अनिद्रा का नाशक, (४) इसका तैल तरखुजली और वृषणकी शोथको गुणकर्त्ता है, (५) सिर्कामें पकाकर इसका लेप करना शोथको लयकर्त्ता है (निर्विषैल)

(१२४) करफस पहाड़ी

फारसी, करफसकोही **अरबी**, फितरासालियून **स्वरूप**, काला **स्वाद**, कुछ कडुआ, तीखा और सुगंधियुक्त **पहिचान**, नानख्वाहके समान लम्बे और कालेबीज होतेहैं **प्रकृति**, ३ कक्षा में गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, गरम मिजाज़को **दर्पनाशक**, धनियां **प्रतिनिधि**, करफसके बीज और शाहबलूतहै **मात्रा**, ३ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रोध और रोमकूपोंका उद्घाटक, (२) अत्यंत मूत्रल और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (३) पिच्छिलस्निग्धताको लेखनकर्त्ता, (४) आध्मानको लयकर्त्ता, (५) पार्श्वशूल और वायुके मरोड़ाको गुणकर्त्ता (६) इसके स्वरसकी वत्ती बालकको जेर सहित गिरा देतीहै (७) ओजप्रद है (निर्विषैल)

(१२५) कलौंजी

संस्कृत, कालाजाजी **फारसी** शोनीज और स्याहदाना **अरबी**, हब्बुलसोदाय **इंग्रेजी**, कम्मिनन्सीड **स्वरूप**, काला **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ **पहिचान**, सौंफके बराबर तीन कोनेवाला एक प्रसिद्ध काला बीज है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, गलरोग और शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्त्ता **दर्पनाशक**, कतीरा और सिर्का है **प्रतिनिधि**, अनीसून **मात्रा**, ९ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उष्णता कर्त्ता, (२) रूक्षता प्रद, (३) स्निग्धताका शोषक, (४) मलको पक्क और शमनकर्त्ता (५) दोषोंका शोधक और स्वच्छकर्त्ता, (६) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक, (७) शीत कास और वक्षस्थलकी पीड़ा तथा जलोदर एवं वातिकगुल्मको गुणकर्त्ता है, (८) इसका क्वाथ मृत गर्भको पातकर्त्ता है (निर्विषैल)

१२६ कलगा

फारसी, ताजखुस, बुस्तानअफरोज **अरबी**, हमाहम, हय्युलआलम और हवकबुस्तानी **स्वरूप**, लाल **स्वाद**, कुछ मीठा और खारी **पहिचान**, जिसके पत्ते हरे और लाल तथा फूल खूबसूरत और लाल होताहै एक जातिकी घास है **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष है **हानिकर्ता**, वस्तिको **दर्पनाशक**, गेरू **प्रतिनिधि**, सकोय, **मात्रा**, ६ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मलको पक्क और लयकर्त्ता है, (२) मस्तिष्कके रोधका उद्घाटक और हारक है, (३) प्रतिश्याय और पक्काशय तथा यकृत्‌की उष्णताको गुणकर्त्ता है, (४) इसके बीज हृदयको बलप्रद हैं, (५) गुलरोग़नके साथ इसका लेप करना जीर्णातीसार का वर्द्धक और लाभकर्त्ता है, (६) आग के जले हुएको गुणकर्त्ता है (निर्विषैल)

(१२७) कवांच (किवांच) कौंच

संस्कृत, कपिकच्छू **इंग्रेजी** कौहेज **स्वरूप**, हरा **स्वाद**, कडुवा और तीखा **पहिचान**, गज़भर लम्बी एक घास है और उसकी फलीमें बीज होतेहैं **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्त्ता**, बवासीरको **दर्पनाशक**, गुलरोग़न **प्रतिनिधि**, उटंगनके

बीज हैं मात्रा, ६ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शोथको लयकर्त्ता, (२) शुक्रवर्द्धक (३) वीर्यको सांद्रकर्त्ता (४) स्तम्भनकर्ता, (५) ओजको बलप्रद, (६) इसके बीज ओजप्रद हैं, (७) वीर्यकी द्रवता (पतलेपन) को गुणकर्ता (८) काली मिरचके साथ इसके पत्ते उदरके कृमि नाशक हैं, (९) इसके पत्तों का स्वरस उपदंश (आतिशक) के लिये गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(१२८) कसीस

संस्कृत, काशीश फारसी, ज़ाकज़र्द अरबी, ज़ाज़अस्फ़र, इंग्रेजी सल्फेट ऑफ़्-आयर्न स्वरूप, पीला और काला स्वाद, कडुवा, कसेला और गुंधियुक्त पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष है हानिकर्त्ता, घातक है दर्पनाशक, ताजा दुग्ध और वमन कराना है मात्रा, खाया नहीं जाता गुण, कर्म, प्रयोग, (१) उदरके कृमियोंका नाशक, (२) शोथ और प्लीहकी कठोरताको हरणकर्ता, (३) इसका नेत्रांजन दृष्टिको बलप्रद है (४) इसका लेप जले हुए को गुणकर्ता है (घातक विष है)

(१२९) कसेरू

संस्कृत, कसेरू इंग्रेजी स्क्रिपेस्कैसूर स्वरूप, बाहर काला और भीतर सफ़ेद होताहै स्वाद, फीका और कुछ मीठा पहिचान, जल में होने वाली एक घास होती है उसकी गोल अंडाकार जड़ है प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और तर हानिकर्त्ता, गरिष्ठ है और कफ उत्पन्नकर्ता है, दर्पनाशक, खांड और इसीका छीलका है प्रतिनिधि, कमलगट्टा गुण, कर्म, प्रयोग, (१) हृदयको बलप्रद, (२) हृदयकी व्याकुलताका नाशक, (३) पित्तज्वर और वातजरक्तातीसारको लाभकर्ता और वर्द्धक है, (४) तृषाको शांति प्रद है, (५) उदरकी उष्णता और दाहको लाभकर्ता है, (६) उष्णवीर्य विषोंका दर्पनाशक है, (७) प्रायः वस्तुओंके विषत्वका नाशक है, (८) प्रमेह नाशक है, (निर्विषैल)

(१३०) कसोंजी

संस्कृत, कासमर्द, स्वरूप, हरी स्वाद, कड़वी और तीखी, पहिचान, जिसके पत्ते पक्की सनायके समान होते हैं एक जाति की घास है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) जो कोई विषैल द्रव्य पान किया होवे तो उसके विषत्वका नाशक है, (२) विषमदोषोंको समानकर्ता, (३) कास और जलोदरको लाभकर्ता, (४) शोथको लयकर्ता (५) इसकी जड़का लेप दद्रु (दाद) और व्यंग (झांई) को गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(१३१) कस्तूरी

संस्कृत, मृगमद, फारसी, मुश्क, अरबी, मिस्क, इंग्रेजी, मस्क, स्वरूप,

काला, सुगंधि युक्त **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है जो कि खुतन देशमें हिरन की नाभिमें रुधिर जम जाता है और ईश्वर की इच्छासे अत्यंत प्रभावशाली और सुगंधिप्रद होताहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिजाज़को और शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, वंशलोचन, गुलाब और कपूर है, **प्रतिनिधि**, हिन्दी साज़िज और जन्दवेदस्तर है **मात्रा**, १॥ रत्ती **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छता प्रद, (२) सांद्रदोषोंको लयकर्ता, (३) विशेषतः मनः प्रसन्न कर्ता है, (४) हृदय और मस्तिष्क तथा सम्पूर्ण उत्तमांग (एजाय रईसा) और वास्तविक उष्णताको बलप्रद है, (५) बाह्य और अभ्यान्तर इंद्रियों को स्वच्छकर्ता और शोधक है, (६) ओज की चालनकर्ता, (७) वीर्यके शीघ्र स्खलित होनेको हरण कर्ता, (८) पक्ष वध, अर्दित, कम्प और विस्मृतिको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(१३२) कसूम

संस्कृत, कुसुम्भ **फारसी**, गुलमास्फर और गुलकाफशा, **अरबी**, एहरीज़ **इंग्रेजी** आॅफिसिनलकार्थेमस, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, कडुआ. **पहिचान**, जिसका वृक्ष कांटेयुक्त और एक गज लंबा होताहै, एक प्रसिद्ध फूल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, आमाशय और तिल्लीको विगाड़नेवाला **दर्पनाशक**, शहद, **मात्रा**, ४ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (२) बद्धक शक्तिवाला होतेभी मल और शोथको लयकर्ता, (३) निद्राप्रद, (४) यकृत्को बलप्रद, (५) जमे हुए रुधिरको द्रवितकर्ता, (६) शहदके साथ इसका लेप करना बवासीर, दाद, खुजली, और सफेद दागको गुणकर्ता है, (७) इसमें रंगे हुए वस्त्रकी सुगंधि ओज वर्द्धक है, (८) ओजको चालनकर्ता (९) शरीरके रूपका शोधक और अरुणताकर्ता है, (निर्विषैल)

(१३३) कसरगाजरूनी

फारसी, कसरगाजरूनी, **अरबी**, खर्नूबशामी **स्वरूप**, फूल पीला और फल भूरा होताहै, **स्वाद**, मिंगी मीठी और फल कड़वा होताहै, **पहिचान**, जिस की फली एक बिलस्त बड़ी बाकला जैसी होतीहै यह अखरोटके बराबर और तत्सदृश एक बड़ा वृक्ष है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्षहै, **हानिकर्ता**, दुष्टदोषोंको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद **प्रतिनिधि**, शाहबिलूत **मात्रा**, ६॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताकर्ता, (२) बद्धक, (३) पक्वाशयको बलप्रद, (४) मूत्रल, (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) फोड़ोंको और मसूड़ों को गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(१३४) काई

संस्कृत, जलकुम्भी, **फारसी**, चश्मदुज़ग़ और अजासयेज़ाब, **अरबी**, तहलब

स्वरूप, अत्यन्त हरी, स्वाद, कछ कड़वी, पहिचान, बंधेहुए जलमें एक जातिकी हरियाली उत्पन्न होतीहै जोकि जलको विगाड़ देतीहै, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडी और तर, हानिकर्ता, शीतप्रकृतिको दर्पनाशक, शाहसफरम, प्रतिनिधि, कलम्रा गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका लेप रुधिरका रुद्धक है, (२) कठोर शोथ और वातरक्तको लयकर्ता, (३) सूखी काईका पीना पित्तके हरे दस्तोंका बद्धक है, (निर्विषैल)

(१३५) काकड़ासिंगी

संस्कृत, कर्कटशृंगी स्वरूप, कालापन लिये लाल स्वाद, कड़वी और कसेली, पहिचान, इसका वृक्ष केलाके वृक्षके समान होताहै और इसका फल बाहरसे शृंग (सींघ) जैसा खोल (खोंतर) युक्त होता है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, यकृत् (कलेजा) और गुर्देको दर्पनाशक, कतीरा और सिकंजबीन है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शीतकास और श्वास तथा स्निग्धकासको गुणकारक है, (२) विशेषतः बालकों की कासको लाभ कर्ताहै (३) हिका (हिचकी) वमन और रक्तातीसारको गुणकर्ता, (४) तृषाको हरणकर्ता (५) कफविकार नाशक (६) अत्यन्त क्षुधाप्रद (७) इसका लेप काले दागोंको गुणकर्ता है, (अधिक होतो विष है)

(१३६) काकन

फारसी, किसमखुर्दअर्ज़न, अरबी, दुखन स्वरूप, पिलोंई लिये भूरी स्वाद, फीका, पहिचान, एक जातिके नाजका बहुत छोटा और प्रसिद्ध बीज है, प्रकृति, १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, फेंफड़ेको और गुर्देमें पथरी उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, शहद और मस्तगी है, प्रतिनिधि, चांवल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अल्पाहार है, (२) बद्धक, (३) रूक्षताकर्ता, (४) मूत्रल है और पैत्तिक अतीसारका बद्धकहै, (५) ताजे घृतके साथ सेवन करनेसे वक्षस्थलको मृदुकर्ता (६) शुक्र जनक, (७) पीड़ाके स्थान पर इसको गरम करके टंकोरना (सेक करना) लाभप्रद है, (निर्विषैल)

१३७ काकना (उरूसकपसमुर्दह)

अरबी, काकंज स्वरूप, लाल, काली और पीली स्वाद, कुछ मीठी, पहिचान, मकोय जैसी होती है इसके फल और बीज काममें आते हैं. प्रकृति, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, हानिकर्ता, अवयवोंको अत्यंत शिथिलकर्ता और निद्राप्रद है दर्पनाशक, गुलाबके फूल और गुलकन्द है, प्रतिनिधि, मकोय, मात्रा, ६ नगसे ७ नग तक गुण, कर्म, प्रयोग, (१) धांस और श्वासके रोधको गुणकर्ता, (२) वृक्क और वस्तिके रोग तथा पांडु और कासको लाभकर्ता, (३) तृषाधिक्यको गुणकर्ता (४) मूत्रल (५) उदरके कृमियोंका नाशक है. (निर्विषैल)

(१३८) कागज़

फारसी, कागज़ **अरबी,** किर्तास **स्वरूप,** सब तरहका होताहै परन्तु फिर भी सफ़ेद ही है **स्वाद,** फीका और रंगोंके कारण कडुआ होताहै **पहिचान,** प्रसिद्ध है यहां कागज़ कहनेसे बांसका कागज लेना चाहिये. **प्रकृति,** ठंडा और रूक्ष तथा जलाहुआ २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता,** गुर्देको **दर्पनाशक,** कहरुवाशमई. **प्रतिनिधि,** दम्मुल् अख-वेन **मात्रा,** २ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१)फेंफड़ेके क्षतका नाशक, (२)पकाशयके दाहको लाभप्रद, (३) अन्त्रिके क्षत और लेखनता तथा दाहको गुणकर्ता है, (४) मुखसे रुधिर आनेको और अतीसारको रोकता है, (५) यह जला हुआ मक्खनके साथ व्रणपूरक है (६) नाड़ीव्रण (नासूर) को लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(१३९) कागजंगी

फारसी. तुख़्मखाकरोब. **अरबी,** इतरीलाल, जल्लुल्गराब और खरायशातीन **स्वरूप,** भूरा, **स्वाद,** फीका, **पहिचान,** सोआ और सफ़ेद जीरा जैसा तत्सदृश एक बीज है, **प्रकृति** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** कलेजा और गुर्दे-को **दर्पनाशक,** कतीरा और सिकंजवीन **प्रतिनिधि,** कंदश, **मात्रा,** ६ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,**(१) यकृत्के रोधका उद्घाटक (२) वायुको लयकर्ता, और स्वच्छकर्ता, (३) मूत्रल, व्यर्थमलादिको मूत्र द्वारा बहिष्कर्ता, ४) उदरके कृमियोंका नाशक (५) आमाशयकी गरिष्ठताको गुण कर्ता है, (निर्विषैल)

(१४०) काच

संस्कृत काच, **फारसी,** आवगीना **अरबी,** ज़िजाज, **स्वरूप,** सब रंगका और स्वच्छ, **स्वाद,** फीका, **पहिचान,** खानिज एक पथरीला अंग है और बनाया भी जाता है **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है **हानिकर्ता,** आंत और नलोंको, **दर्पनाशक,** कतीरा, **प्रतिनिधि,** जवरजद,**मात्रा,**२ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्राणवायु और दोषोंको स्वच्छ करताहै (२) कांतिप्रद (३) फोड़ा और फुन्सीका नाशक, (४) नेत्रोंको बलप्रद (५) वृक्क और वस्तिको लाभप्रद, (६) अश्मरीको खंडन कर्ता है, (उपविष है)

(१४१) काजल

संस्कृत, कज्जल, **फारसी,** दूदह, **स्वरूप,** अत्यंत काला, **स्वाद,** फीका, **पहिचान,** दीपककी बत्तीका धूआं जामाया जाताहै, **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** गले और फेफड़ेको **प्रतिनिधि,** सुर्मा **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) नेत्रोंके मैल और नजलेका शोधक (२) नेत्र और दृष्टिको बलप्रद, (३) यह गोंदके साथ आगके जले हुओंको लाभ-कर्ता है, (४) इसका रँगा हुआ वस्त्र सूर्यकी गरमीका आकर्षक है, (निर्विषैल)

(१४२) कांडल (गांडल) का साग

संस्कृत, सार्षप शाक, **फ़ारसी,** तरह-सरशफ़, **अरबी,** बुल्फतुल्हरफ़, **स्वरूप,** हरा **स्वाद,** तीखा और कुछ कड़ुआ **पहिचान,** सरसोंका शाक इसी नामसे प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** आमाशय को और मूत्रको रोधकर्ता, **दर्पनाशक,** कासनी और शहद है, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) अत्यंत अधोवायु निस्सारक (३) अल्पाहार (४) सांद्ररुधिरको उत्पन्नकर्ता (५) कफविकार नाशक (६) अति क्षुधावर्द्धक (७) इसका रस स्निग्ध (तर) खुजलीको गुणकर्ता है (८ प्रायः पिडिका और फुंसियोंको लाभ प्रद है, (निर्विषैल)

(१४३) कांदा

संस्कृत, वनपलांडु **फ़ारसी,** प्याजदश्ती, **अरबी,** बसलुलफार, बसलुल्फसली और अस्कील, **स्वरूप,** सफ़ेद, **स्वाद,** कड़ुआ और तीखा, **पहिचान,** प्याज जैसी और प्याजसे बड़ी एक प्रसिद्ध जंगली जड़ है **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** व्याकुलताप्रद और शिरःपीड़ा उत्पन्न कर्ता, **दर्पनाशक** गुड़ और सिकंजवीन हैं **प्रतिनिधि,** लहसन, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अपस्मार (मृगी) मालीखोलिया भ्रम, पक्षवध, अर्दित, रूक्ष धांस और जीर्णकासको लाभकर्ता, (२) प्लीहकी कठोरता, जलोदर और पांडुको गुणकर्ता, (३) त्वचामें रुधिरको प्रत्यक्ष छिड़-छिड़ा लाती है, (४) वमन प्रद, (५) भुलभुलाके इसका सेवन किया जाय तो निर्भय है, (निर्विषैल १ तोलेसे अधिक घातक है)

(१४४) कांदर

फारसी, ओशह, **अरबी,** अश्क और लज्जाकुलजहब **स्वरूप,** काली और पीली **स्वाद,** अत्यंत कड़वी, **पहिचान,** एक वृक्ष-का गोंद है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्त्ता,** आमाशय और वृक्कको. **दर्पनाशक,** अनीसून, जूफ़ा और बादाम है, **प्रतिनिधि,** सफ़ेद राई और जाउशीर है **मात्रा,** १॥। माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) रूक्षताप्रद (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (४) स्वच्छकर्ता (५) शरीरमें प्रवेश करनेसे स्निग्धताको आकर्षण करने वाला (६) यकृत्के रोध का उद्घाटक (७) शहदके साथ इसका पान अपस्मार, पक्षवध और पादहर्षको गुण कर्ता है (८) इसका लेप प्लीहकी शोथ और कठोरताको मृदुकर्ता है (९) सन्धि-की शोथ और कठोरताको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(१४५) कायफल

संस्कृत, कट्फल, **फारसी,** दारशीशआं. **अरबी,** ऊदुलबुर्राक, **इंग्रेजी,** मीरीकासा पीडा **स्वरूप,** लाल. **स्वाद,**

कसेला और सुगंधि युक्त **पहिचान**, तज जैसी एक वृक्षकी छाल है. **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है **हानिकर्ता**, कलेजा और तिल्लनीको **दर्पनाशक**, मस्तगी. **प्रतिनिधि**, असारून और जराबन्द है **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, शोथ और वायुको लयकर्ता (२) बद्धक (३) नजलाको नहीं गिरने देता (४) वातजभ्रमको लाभकर्ता (५) स्निग्धताका शोषक (६) स्नायुओंको बलप्रद जेर (७) गर्भाशयमें १ झिल्ली है कि जिसमें बालक रहताहै) से गर्भका पातक (८) रोध उद्घाटक (९) कास, ज्वर और अर्शको लाभकर्ता (१०) शुक्रमेह और शीतसे उत्पन्न हुई पक्वाशयकी पीड़ाको लाभप्रद (११) इसका गंडूष मुखपाकको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(१४६) काली जीरी

फारसी. करविया, श्याहजीरा, **अरबी**, कमूनरूमी **स्वरूप**, पीली और सफ़ेद तथा हरी **स्वाद**, कुछ कड़वी, तीखी और तीक्ष्ण गंधियुक्त **पहिचान**, सोंफसे छोटा जीरेके समान एक घासका बीज है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, गुर्दा, फेंफड़ा और गरम मिजाज़को **दर्पनाशक**, पहाड़ीपोदीना **प्रतिनिधि**, जीरा, अनीसून और सोंफ **मात्रा**, ९ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफजमलका अत्यंत शोधक (२) पक्वाशयसे हर जातिके कृमि और कद्दूदाना (कृमि विशेष) तथा अन्त्रिके कीड़ेको हरणकर्ता (३) इसका लेप शीतशोथको लयकर्त्ता (४) पाचक (५) क्षुधाप्रद (६) अत्यन्त अधोवायु निस्सारक (७) सुना हुआ सुहागा १ माशेसे ४ माशे तकके साथ इसको कूटके दुग्धके साथ फांके तो बवासीरको गुणकर्ता है यह अनुभूत है (८) इसका नेत्रांजन नेत्रोंको कांतिप्रद है (निर्विषैल)

(१४७) काला दाना

संस्कृत, कृष्णबीज **अरबी**, हब्बुलनील **इंग्रेजी**, आईपोम्यासरोलिया **स्वरूप**, काला और तिकोना **स्वाद**, कड़ुआ **पहिचान** प्रसिद्ध है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, व्याकुलताप्रद है तथा मरोड़ा और अन्त्रिलेखनता उत्पन्न कर्ता **दर्पनाशक**, हरड़ अथवा बादाम रोगनमें भूनना है **प्रतिनिधि**, इंद्रायनकी जड़ **मात्रा**, २ माशे **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दुष्टवात और कफको अतीसार द्वारा शोधक (२) शरीर शोधक (३) यकृत् और प्लीहके रोधका उद्घाटक (४) उदर और व्रणके कृमियोंका नाशक (५) पादांगुल पीड़ा और संधि पीड़ा तथा तर खुजली और प्राचीन दुष्ट क्षतको लाभप्रद है, (६) काले और सफ़ेद दागों को गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(१४८) कालीसुर (कलीसुर)

संस्कृत, कृष्णसारिवा **इंग्रेजी**, इंडियन सारसप्रेला **स्वरूप**, पीला **स्वाद**, कड़ुआ **पहिचान**, एक वृक्षका फल है जोकि बेर

और उन्नावके बराबर होताहै, तथा वृक्ष छोटा और पत्ती महीन होती हैं **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) जलोदर-को गुणकर्ता, (३) वीर्यवर्द्धक, (४) वात, पित्त, कफ एवं दोषोंको लयकर्ता, (५) ज्वरको गुणकर्ता, (६) स्त्रीके योनिरोग और योनिके क्षत जो कि अधिक रुधिर स्रावके कारण होजाते हैं उनको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(१४९) कांस

संस्कृत, काश **इंग्रेजी**, कुइस्ककारबेटा **स्वरूप**, हरा, काला और पीला **स्वाद**, कसेला **पहिचान**, जिसकी हिंदुस्तानी लोग रस्सी बनाते हैं एक घास है **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कठिनतासे मूत्र आना और वस्तिकी पथरी-को गुणकर्ता है, (२) रुधिरविकार और पित्त तथा अवयवोंके दाहको लाभप्रद है, (३) विशेषतः अर्शके रुधिरका रुद्धक है, (निर्विषैल)

(१५०) कांसा

संस्कृत, कांस्य, **फारसी**, रोंई, **अरबी**, तालीकून, **इंग्रेजी**, वेलमेटलवोज, **स्वरूप**, अत्यन्त पीला, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वमनका रुद्धक, (२) कुछ अवयवोंके शोथोंको हरणकर्ता, (३) बुद्धिको बलप्रद, (४) नासिका द्वारा गंधिके नआनेको लाभप्रद, (५) इसमें विषत्वभी है (निर्विषैल अधिक उपविष)

(१५१) कासनी सब्ज

फारसी, कासनी, **अरबी**, हिन्दबाय, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहि-चान**, एक प्रसिद्ध घास है **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, कास (खांसी) वालोंको, **दर्पनाशक**, शर्वत बनफ्सा, **प्रतिनिधि**, पित्तपापड़ा, **मात्रा**, ५ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध और रोमकूपका उद्घाटक, (२) उष्णता, तीक्ष्णता, पित्त, रुधिर और तृषाको शान्तिप्रद, (३) इसके स्वरस का फांट (फाड़) पांडु (पीलिया) और यकृत् तथा प्लीहके रोधको अत्यन्त लाभकर्ता है, (४) पैत्तिकजलोदर और गरमीके रक्तज तथा पैत्तिक ज्वरोंको अत्यन्त लाभदायक हैं (५) इसके विना धोयेहुए ही पत्ते घोटकर पीयेजावें तो प्रकृतिको मृदुकर्ता हैं और अत्यन्त लाभ कर्ता हैं तथा धोये हुए बद्धक और हानिकर्ता हैं (निर्विषैल)

(१५२) कासनी की जड़

फारसी, बेख कासनी, **अरबी**, अस-लुल्हिन्दबाय **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है **हानिकर्ता**, मूर्च्छा प्रद **दर्पनाशक**, सिंकजवीन, **प्रतिनिधि**, सौंफकी जड़ **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध उद्घाटक, (२) दोषोंको

मृदुकर्ता, (३) आहारके आनेजानेवाले मार्गका शोधक, (४) मूत्रप्रवर्त्तक, (५) रक्तशोधक, (६) उदरके आंतिरिक अवयवके शोथको हरणकर्ता, (७) जलोदरको गुणकर्ता, (८) मलको लयकर्ता (९) संनिपात और जीर्णज्वरको लाभप्रद, (१०) आमवात (गठिया) को गुणकर्ता, (११) मुख और हाथ पांवकी भरभराहट (एक प्रकारकी पीड़ा है जो कि परिश्रम करनेसे पैदा होतीहै) को हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(१५३) कासनी के बीज

फारसी, तुख़्म कासनी. **अरबी**, बजरलहिन्दबाय, **स्वरूप**, मटियारंगके सफ़ेद **स्वाद**, फीके **पहिचान**, जीरेसे छोटे एक जातिके प्रसिद्ध बीज हैं. **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडे और रूक्ष. **हानिकर्ता**, तिल्लीको. **दर्पनाशक**, सिंकजवीन और अनीसून. **प्रतिनिधि**. पित्तपापड़ेके बीज और कसूमके बीज हैं **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशे तक **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोधउद्घाटक,(२) पक्काशयको बलप्रद, (३) बद्धक. (४) रुधिरस्रावके रुद्धक (५) आर्त्तवप्रवर्त्तक, (६) इसके बीज बगीचोंमें प्रकट होनेवाली कासनीके बीज और जड़से प्रभावमें अधिक हैं. (७) पांडुकेलिये अत्यन्त लाभकर्ता है (निर्विषैल)

(१५४) कासनी जंगली

फ़ारसी, कासनीदश्ती, **अरबी**, तरहशकूक, **स्वरूप**, हरी. **स्वाद**, कड़वी **पहिचान**, इसके पत्ते कुछ छोटे होतेहैं परन्तु कासनीके समानही होतेहैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष है तथा किसीके मतमें ठंडी और रूक्ष है, **दर्पनाशक**, सिकंजवीन **प्रतिनिधि**, जरावन्द और मदहरजहै, **मात्रा**, ३ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) रोधउद्घाटक. (२) पक्काशयको बलप्रद. (३) बद्धक, (४) रुधिरस्रावका रुद्धक (५) आर्त्तव प्रवर्तक. (६) इसके बीज और जड़ बगीचेमें प्रकट होनेवाली कासनीके बीज और जड़से प्रभावमें अधिक हैं, (७) पांडुकेलिये अत्यन्त लाभकर्ताहै (निर्विषैल)

(१५५) काशम

अरबी, काशम, **स्वरूप**, पीली और हरी, **स्वाद**, कुछ कड़वी, तीखी और सुगंधियुक्त, **पहिचान**, अंजदांके समान एक घास है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गरममिजाज, और वास्तिको, **दर्पनाशक**, सोंफ, और सिर्का, **प्रतिनिधि**, जीरा सफेद, और वरफ **मात्रा**, ३माशे, **गुण,कर्म,प्रयोग**, (१) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (२)वायुको लयकर्ता (३) सांद्रदोषोंकी द्रवताको शमन करके पक्वकर्ता है (४) पक्काशयको बलप्रद, (५) पाचक, (६) अत्यन्त अधोवायु निस्सारक, (७) जलोदर और शीतकी पीड़ाको गुणकर्ता, (८) पक्काशयके कृमियोंकी नाशक है (निर्विषैल)

(१५६) काहू

फारसी, काहू, **अरवी**, ख़स, **स्वरूप**, पत्ते हरे और बीज सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और मीठा **पहिचान**, वागमें होने वाली और जंगली दो जातिकी प्रसिद्ध घास है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, ओजक्षय और सूखी धांसवालोंको, **दर्पनाशक**, पोदीना और करफस, **प्रतिनिधि**, कुलफा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शुद्धदोषोंको उत्पन्नकर्ता, (२) दोषोंको पतलेकर्ता, (३) पित्तकी तीक्ष्णताको शांति प्रद, (४) रक्तशोधक, (५) महामारी वायुका नाशक है, (निर्विषैल)

(१५७) काहू के बीज

फारसी, तुख्मकाहू, **अरबी**, बजरुल्ख़स, **स्वरूप**, सफेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध, है **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, ओजको और विस्मृति उत्पन्नकर्ता है, **दर्पनाशक**, मस्तगी **प्रतिनिधि**, पोस्तके वीज, **मात्रा**, ७ माशे से ९ माशे तक **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पित्त और रुधिरकी तीक्ष्णता (तेजी) को शांतिप्रद, (२) तृषाको शांतिप्रद. (३) मस्तिष्कमें अवखरे (भाप) को नहीं चढ़नेदेता. (४) आमाशयकी जलनको लाभप्रद. (५) पेटको नरम करे (६) मूत्रल. (७) निद्राप्रद. (८) शोथके मलको पक्ककर्ता. (९) रूक्षताप्रद. (१०) अवयवोंको सुस्त करे. (११) रुधिरशोधक. (१२) स्वप्नकी अधिकताको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(१५८) किब्रकी जड़

फारसी, वेख किब्र. **अरबी**, असलुल्किब्र. **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, जिसकी घास धरतीमें फैलीहुई और खीरेके बराबर फल होताहै एक जड़ है. **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, गुर्दा, वस्ति, और आमाशयको **दर्पनाशक**, सिकंजवीन, शहद और अनीसून **प्रतिनिधि**, हींग और लंबी जराबन्द **मात्रा**, ६ माशे. **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध और मस्तिष्कको खोले. (२) स्वच्छकर्ता (३) वायु और शोथको लयकर्ता (४) प्राणोंको मृदुकर्ता. (५) कफ, वायु और लसयुक्त दोषोंको छांटे. (६) मूत्रल और मस्तिष्क सम्बन्धी शीतरोगोंको लाभप्रद. (७) अर्कुलनिसा और बवासीरको गुणकर्ता. (८) सफ़ेद दागोंको गुणकर्ता. (९) उदरके नलको बलप्रद है (निर्विषैल)

(१५९) किरम दाना

फारसी, किरमदाना, **अरबी**, हब्बुल्दूद **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कुछ कडुआ. **पहिचान**. एक वीज है यह दोनों तरफसे नोंकदार होतेहैं **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पैत्तिकमलको अतीसार द्वारा निकाले. (२) पेटके कीड़ोंको मारकर निकाले. (३) योनिमें उष्णता उत्पन्न-

कर्ता और उसको वृथा मलसे स्वच्छकर्ता है (निर्विषैल)

(१६०) किशमिश

फारसी, किशमिश, अरबी, किशमिश, स्वरूप, भूरा, ललाईलिये, स्वाद, मीठा और चाशनी युक्त, पहिचान, मुनक्कासे छोटी काबुलकी प्रसिद्ध मेवा है प्रकृति, गरम और तर तथा बीज ठंडे और रूक्ष हैं, हानिकर्ता, ज्वर उत्पन्नकर्त्ता दर्पनाशक, सिंकजबीन और खीरा, प्रतिनिधि, मुनक्काके बीज, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मलको पक्ककर्ता, (२) कठोरताको मृदुकर्ता, (३) रोध उद्‌घाटक, (४) कफ प्रकृतिको मृदुकर्ता (५) रुधिरको शांतिप्रद, (६) श्वासको लाभप्रद, (७) ओजको बलवान् कर्त्ता, (८) शरीरको बृंहणकर्त्ता, (९) रेचक होतेभी मस्तिष्कको बलप्रद है (निर्विषैल)

(१६१) कीकड़ा

फारसी, खरचंग अरबी, सरतान नेहरी स्वरूप, सफेद और लाल स्वाद, फीका और खारी, पहिचान, मकराके समान परन्तु उससे चौड़ा एक जलका कीड़ा है प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और तर हानिकर्ता, वस्तिको दर्पनाशक, गिलमख़तून, प्रतिनिधि, सीपका कीड़ा, मात्रा, ५ तोला और भस्म किया हुआ ३ माशे है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अधिक भोज्य, (२) दीर्घपाकी (३) ओजप्रद, (४) इसका यूष क्षय, उरःक्षत, राजयक्ष्मा, कास और मुखसे रुधिर आनेको गुणकर्त्ता है (५) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक, (६) इसकी राख उरःक्षत, राजयक्ष्मा और अत्यंत कृशताकी नाशक है (७) अश्मरी (पथरी) को खंडनकर्त्ता है (निर्विषैल)

(१६२) कीलदारू (लिसोड़ा)

फारसी, सरखस स्वरूप, ललाई लिये काला स्वाद, कडुआ और कसेला, पहिचान, गठीली और छूछ वाली एक जड़ है यह स्त्री और पुरुष जातिकी होतीहै प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष, हानिकर्ता, फेफड़ेको दर्पनाशक, शीहअरमनी प्रतिनिधि, कतीरा, मात्रा, ३ माशेसे ६ माशे तक, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) स्वच्छ कर्त्ता (२) रोधउद्‌घाटक, (३) वायुको लयकर्त्ता, (४) आध्माननाशक, (५)निर्लेखता और उष्णता उत्पन्नकर्त्ता, (६) व्रणकर्ता, (७) जूआं नाशक और वातिकज्वरको लाभकर्ता, (८) उदर और आंतके हर जातिके कृमियोंकी नाशक है (९) शहदके साथ इसका सेवन करना गर्भ स्थितिका नाशक है और गर्भपात करनेवाला है (निर्विषैल)

(१६३) कुचला

संस्कृत, तिंदुक, फारसी, कुचला, अरबी, इज़राकी और कातिलुलकलब इंग्रेजी, पाईम्फननटेनक्सवोमिका, स्वरूप, कालापनलिये पीला स्वाद, कडुआ, पहिचान, एक वृक्षके फलका प्रसिद्ध बीज है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम

और रूक्ष, हानिकर्ता, मदकर्ता और घातक है, **दर्पनाशक**, वमन कराना, घी और मिसरी है, **प्रतिनिधि**, विलखर, **मात्रा**, २ रत्ती **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पक्षवध, स्तम्भ, आमवात, कटिपीड़ा, अर्कुलनिसां (जो पीड़ा चूतड़से पैरकी उंगली तक होती है) और वातिकगुल्मको लाभप्रद है, (२) सम्पूर्ण स्नायुके रोगोंको अनुभूत गुणकर्ता है, (३) मूत्रल और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (४)अश्मरीको खंडनकर्ता (५) इसका लेप मुखकी श्यामता व्यंग और स्निग्ध (तर) पामा (खुजली) तथा दद्रु (दाद) को लाभकर्ता है (घातक बिष)

(१६४) कुलीजन (महाभरीवच)

संस्कृत, सुगंधा **फारसी**, खरदारू **अरबी**, खुलंजान, **इंग्रेजी**, ग्रेटरगैलूनाल **स्वरूप**, ललौंईलिये, **स्वाद**, तीक्ष्णगंधियुक्त और स्वादिष्ट, **पहिचान**, एक जड़ है, किसीकी सम्मतिमें पुराने पानकी जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, हृदय, और मस्तिष्कके पर्दोंको और वक्षस्थलको, **दर्पनाशक**, कतीरा, वंसलोचन और अवेरशम **प्रतिनिधि**, दालचीनी और शीतलचीनी, **मात्रा**, १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) आमाशय, पाचकशक्ति, अँतडी, ओज और आंतरिक अवयवोंको बलवान् कर्ता, (२) अधोवायु निस्सारक (३) स्वरशोधक, (४) स्निग्ध कासको लाभप्रद, (५) मूत्ररुद्धक, (६) ओजकी शक्तिको चालनकर्ता, (७) कटिशूल वृक्कशूल और गुल्मको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(१६५) कुटकी सफ़ेद

संस्कृत, कट्वी, **अरबी**, खरबक और अवियज, **स्वरूप**, पिलौंई लिये सफेद, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, जिसके पत्ते बारतंग जैसे होतेहैं, एक वृक्षकी जड़ है और जड़के भीतर मकड़ीके जाले जैसा एक द्रव्य होताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, वृक्कको और गलरोग उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, कतीरा और मस्तगी, **प्रतिनिधि**, पौहकरमूल, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ, सांद्रपित्त और लसयुक्त दोषोंको तथा पीले कफको विरेचन द्वारा निकालने वाली, (२) रोधकी उद्घाटक (३) आमाशयको दुष्टमलसे स्वच्छ कर्ता (४) मूत्र और आर्तव प्रवर्तक, (५) पक्षवध, सन्निपात, कफज अपस्मार यसरगस (रोग विशेष) और मस्तिष्कके शीतरोगोंको गुणकर्ता है, (६) आमवात और संधिपीड़ाको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(१६६) कुटकी स्याह

संस्कृत, कटुंभरा **अरबी**, ख़रबकअस्वद, **इंग्रेजी**, लाकहेलीवोर, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, जिसके फल कईके समान होतेहैं, खोलदार एक घासकी जड़ है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम

और रूक्ष, हानिकर्ता, उष्णप्रकृतिको और गलेके रोग उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, कतीरा और गायका घी, प्रतिनिधि, गारीकून और कंदश, मात्रा, १॥ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) केवल वायु और कफको दस्तके द्वारा निकालनेवाली (२) शरीरकी स्निग्धताकी अत्यन्त शोषक, (३) शोथको लयकर्ता, (४) प्राणोंको मृदुकर्ता, (५) शीतके बहुधा रोग और पुराने नजलेको गुणकर्ता, (६) काले और सफ़ेद दाग, अकौता और त्वचाके रोगोंको लाभप्रद, (७) पित्त और रुधिरके विकारोंको हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(१६७) कुंडल

फ़ारसी, सकबीना, अरवी, सिकवींज, स्वरूप, बाहर लाल और भीतर सफ़ेद, स्वाद, कडुआ और दुर्गंधियुक्त, पहिचान, एक वृक्षका गोंद है गंधि और समानतामें हींग जैसा है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्त्ता, वस्ति और गुर्देको दर्पनाशक, कतीरा और मस्तगी, प्रतिनिधि, जाउशीर और गुड़, मात्रा, ३॥ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) उष्णता उत्पन्नकर्ता, (२) स्वच्छकर्ता, (३) कांतिप्रद, (४) वायुको लयकर्त्ता, (५) गुल्म और प्लीहाके कठिन शोथका नाशक है ।

(१६८) कुंदरू

स्वरूप, कच्चा हरा और पकाहूआ लाल होताहै स्वाद, कच्चा फीका और पकाहुआ खट्टा होताहै, पहिचान, परवलके समान एक लताका फल है प्रकृति, ठंडा और तर, हानिकर्ता, बद्धक और आध्मान उत्पन्न कर्ता, दर्पनाशक, गरम ओषधियां हैं, प्रतिनिधि, लौकी, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पित्त और रुधिरविकारको हरणकर्ता, (२) दोषोंका शोधक, (३) अत्यन्त मुटापेको हरणकर्ता (४) इसकी जड़ स्तम्भनकर्ता और आमाशयको विकृतकर्ता है ।

(१६९) कूठ कडुआ

संस्कृत, तिक्तकुष्ठ, फारसी, कोश्तातल्ख़, अरबी, किस्तुलमुर, स्वरूप, पिलौंई लिये सफ़ेद, स्वाद, कडुआ और सुगंधियुक्त, पहिचान, सेवकी जड़के समान एक जड़ है कि जिसकी घास पृथ्वीपर फैलीहुई होतीहै, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, प्रतिनिधि, विज, मात्रा, खाना उचित नहीं है और लेपमें ३ माशे लीनी जातीहै गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) शीतकी पीड़ा और नुकरस रोगको गुणकर्ता, (३) पीड़ाको शांतिप्रद, (४) घातक है इसलिये इसका खाना किसी प्रकार उचित नहीं है (उपविष)

(१७०) कूठ मीठा

संस्कृत कुष्ठ, फारसी, कोश्ताशीरीं अरबी, किस्तुल्हल्व, इंग्रेजी, कोस्टस्रूट् स्वरूप, बाहर कालापनलिये और भीतर पिलौंईलिये होताहै स्वाद, कुछ मीठा

पहिचान, कड़वे कूठ जैसी एक जड़है इसको सामुद्रीकूठ भी कहतेहैं, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष,**हानिकर्ता,** वस्ति और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** अनीसून और गुलकंद, **प्रतिनिधि,** अक्करकरा, **मात्रा,** ३ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मस्तिष्कको बलप्रद, (२) उत्त-मांग (एजाय रईसा) ओज और यकृत्को बलप्रद, (३) स्नायुओंको बलप्रद, (४) वायुको लयकर्ता, (५) मस्तिष्करोग, पक्षवध, अर्दित और कम्पको गुणकर्ता है (६) उदरके कृमिनाशक (७) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक है (निर्विषैल)

(१७१) केंचुआ

फारसी, ज़गाज़ा, **अरबी,** खराती और अमआयुल्अर्ज, **स्वरूप,** लाल और सफ़ेद,**स्वाद,** फीका और खारी, **पहिचान,** एक बिलस्तभर लंबा मिट्टीका प्रसिद्ध कीड़ा है, **प्रकृति,** १ कक्षा में बाह्यस्निग्धता युक्त गरम और तर है, **दर्पनाशक,** बादामरोग़न, **प्रतिनिधि,** जोक, **मात्रा,** ९ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इस को ६ माशेकी मात्रासे हिमकरके सेवन करे तो मूत्रल होजाताहै, (२) मांसरसके साथ सेवनकरना ओजशक्तिको बलप्रद है, (३) मीठे तेलमें ओटाया-हुआ मलके रोग और पुरानी खांसीको गुणकर्ता है, (४) बादाम रोग़नमें मिलाकर सेवन करे तो प्रायः आंतके उतरनेको गुणकर्ता है, (५) इसका लेप अतिउत्तम बनता है, (निर्विषैल)

(१७२) केतकी

संस्कृत, केतक, **फारसी,** नोएअज़-वाबी, **स्वरूप,** सफ़ेद और हरा, **स्वाद,** फीका और कसेला, **पहिचान,** केवड़ेकी जातिका एक वृक्ष है जिसके फूलमें अत्यन्त सुगंधि होती है, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्षहै, **हानिकर्ता,** उष्णप्रकृतिको **दर्पनाशक,** लालचंदन, **मात्रा,** ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्रसन्नताप्रद, (२) हृदय, मस्तिष्क, यकृत् और सम्पूर्ण इन्द्रियोंको बलप्रद है, (३) रुधिर और पित्तके दाहकी नाशक, (४) शांतिप्रद, (५) हृदयकी व्याकुलता और धड़कनेको लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(१७३) कैथ (कवेट)

संस्कृत, कपित्थ, **इंग्रेजी,** वुडएपल, **स्वरूप,** बाहर सफ़ेद और भीतर पीला होताहै, **स्वाद,** खट्टा और चाशनीयुक्त, **पहिचान,** बड़े अनारकी बराबर और हिन्दुस्तानमें होनेवाले एक ऊंचे वृक्षका गोल और कठोर फल है, **प्रकृति,** ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता,** छातीको, **दर्प-नाशक,** गुड़, **गुण,कर्म,प्रयोग,** (१) गुदा और मनको प्रसन्नकर्ता है (२) बद्धक (३) उष्णप्रकृतिके हृदय, आमाशय और कलेजेको बलप्रद, (४) पित्त नाशक, (५) रतोंधी और संग्रहणीको गुणकर्ता (६) इसके पत्तोंका गंडूष कंठ-पीड़ाको गुणकर्ता है (७) इसके पत्तोंका फाड़ अफीम और केसरके साथ नेत्रपीड़ाको गुणकारक है (निर्विषैल)

(१७४) केला

संस्कृत, कदली, **अरबी**, मोजिदातिला **इंग्रेजी**, मुसासेपियेनटम्, **स्वरूप**, बाहर लाल और पीला तथा भीतरसे सफ़ेद होताहै, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, जिसके पत्ते १॥ गज तकके लंबे और १ हाथ तक के चौड़े होतेहैं और फल १ बिलस्त तकका लम्बा होताहै, **प्रकृति**, शीतता और स्निग्धतामें समहै तथा कच्चा ठण्डा होताहै, **हानिकर्ता**, वायु और कफकर्ता है तथा आध्मान उत्पन्नकर्ता है, **दर्पनाशक**, नमक, सोंठ और शहद है, **प्रतिनिधि**, मिसरी और गुड़ है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अतिभोज्य, (२) दीर्घपाकी, (३) ओजप्रद, (४) सांद्र रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (५) शरीरको वृंहणकर्ता, (६) चित्तप्रसन्नकर्ता, (७) वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (८) उष्णप्रकृतिके ओजको चालनकर्ता (९) स्वच्छकर्ता, (१०) वृक्कके कार्यका नाशक, (११) रूक्षकास और गलेके खरखरानेको गुणकर्ता, (१२) इसकी जड़ उदरकृमिकी नाशक है (१३) हृदयरोगको गुणकर्ता, (१४) इसके पत्तोंकी राख आर्तवके रोधको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(१७५) केवड़े का अर्क

फारसी, अर्क केवड़ा, **अरबी**, मायुल्काजी, **स्वरूप**, जल जैसा, **स्वाद**, सुगंधिलिये जल जैसा, **पहिचान**, वोंड़ी के समान एक वृक्ष है कि जिसके पुष्पोंका अर्क खींचा जाताहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष है, तथा किसीके मतमें ठण्डा और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, तिल्लीको, **दर्पनाशक**, उन्नाव, **प्रतिनिधि**, लालचन्दन, **मात्रा**, ६ तोले, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नकर्ता, (२) हृदय, मस्तिष्क और सम्पूर्ण इन्द्रिय तथा सब अवयवोंको बलप्रद, (३) हृदयकी व्याकुलता, उष्णता, आमाशयकी उष्णता और मूर्च्छाको लाभकर्ता, (४) आनन्दप्रद, (५) रक्तशोधक, (६) सुस्ती और अंगोंके एड़नेको दूरकर्त्ता, (७) इसका शर्वत चेचक और खसरा निकलनेसे पूर्व सेवन करेतो अनुभूत लाभकारक होताहै, (८) नजलाको उत्पन्नकर्ता, (९) वक्षस्थलको सुगन्धितकर्ता है, (निर्विषैल)

(१७६) केवड़ेकी जड़

फारसी, बेख़केवड़ा, **अरबी**, असलुल्काजी, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, तिल्लीको, **दर्पनाशक**, उन्नाव, **प्रतिनिधि**, पित्तपापड़ा **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) रक्तशोधक (३) इन्द्रियोंको बलप्रद, (४) पीड़ाको शांतिप्रद, (५) रक्तविकार और कुष्ठको लाभकारक है (निर्विषैल)

(१७७) केसर

संस्कृत, कुंकुम, **फारसी**, करकीमास,

अरवी, जाफरां और करकम, इंग्रेजी, सैफून, **स्वरूप**, ललोंईलिये पीली, **स्वाद**, कुछ कड़वी और सुगन्धियुक्त, **पहिचान**, जिसका वृक्ष चमेली जैसा होताहै और उसके फूलके तुन्तु (तार) केसर होती है यह कश्मीरकी उत्तम होतीहै **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है **हानिकर्ता**, खुजली और स्नायुको, तथा इन्द्रियोंको गदला करतीहै, **दर्पनाशक**, अनीसून, जरश्क, अफीम और सिकंजवीन है, **प्रतिनिधि**, तज और जावित्री, **मात्रा**, ३ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (२) इन्द्रिय, जोड़, उदरसम्बन्धी अवयव और स्नायुओंको बलप्रद, (३) श्वासिकयंत्रको बलप्रद, (४) आंत और नसोंके मुखमें चिपककर लसके कारण रोधको उत्पन्नकर्ता, (५) मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (६) शोथ और वायु लयकर्ता, (७) दोषोंके सड़जानेको और दुर्गंधित होजानेको शोधनकर्ता, (८) प्रसन्नता और हास्य जनक, (९) वृक्क और वस्तिको स्वच्छकर्ता, (१०) दृष्टिको सुखप्रद, (११) यदि थैलीमें बांधकर आमाशयके ऊपर बांधे तो आमाशयकी स्निग्धताकी नाशक है, (१२) मूत्रल, (१३) इसका सूंघना सन्निपात और छींकको गुणकर्ता है, (१४) कपोलके रूपको स्वच्छकर्ता, (१५) यदि एकवार उपस्थ (लिंगेंद्रिय) में रक्खे तो मूत्र प्रवर्तक है, (निर्विषैल)

(१७८) केहरुवा, (काहरुवा)

फारसी, केहरुवा, काहरुवा, **अरवी**, करनुल्वेहर और मिसवाहउलरूम, **स्वरूप**, पीला और लाल **स्वाद**, फीका और सुगंधियुक्त, **पहिचान**, एक वृक्षका गोंद है और किसीकी सम्मतिमें एक समुद्रकी वस्तु है, **प्रकृति**, सम है और किसीकी सम्मतिमें ठण्डी और रूक्ष है **हानिकर्ता**, शिरको, **दर्पनाशक**, वनफसा **प्रतिनिधि**, वंशलोचन और सिंहरूस है, **मात्रा**, २ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) चित्त प्रसन्नकर्ता (२) हृदयको बलवान्कर्ता, (३) रुधिरका रुद्धक, (४) मुखसे रुधिर आना और रक्तातीसार तथा मूत्रका रुद्धकहै, (५) संपूर्ण अवयव तथा बाह्य और आभ्यन्तरके रुधिर का रुद्धक है, (६) आमाशय, यकृत् और मूत्रमार्गको बलप्रद, (७) वृक्क और वस्तिकी मंदता तथा पीलिया को लाभकर्ता है, (८) मरोड़ाको विशेषतः गुणकर्ता है, (९) अजीर्णको लाभकर्ता और भय (डर) का नाशक है, (निर्विषैल)

(१७९) कौड़ी

संस्कृत, कपर्द **फारसी**, खरमोहरह **अरबी**, दोअ **स्वरूप**, सफेद और कड़ी **स्वाद**, बेस्वाद और फीकी **पहिचान**, घोंघा सीपी जैसी समुद्रके एक कीड़ाकी हड्डी है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्षहै, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, सीप, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**,

प्रयोग, (१) रूक्षताकर्ता, (२) त्वचाशोधक,(३) त्वचाके रोगोंको लाभप्रद, (४) इसकी भस्म (खाक) तिल्लीको गुणकर्ता और मूत्रमार्गके क्षत (जखम) को लाभकर्ता है, (५) रक्तस्रावकी रुद्धक है, (निर्विषैल)

(१८०) कोदों

संस्कृत, कोद्रव, **फारसी**, कोदिरम, **स्वरूप**, पिलौंई लिये, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष है तथा किसीकी सम्मति में गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, अत्यन्त रुद्धक है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशयको पिच्छलकर्ता, (२) बलप्रद, (३) वीर्यनाशक (४) लघुभोज्य, (५) दुष्ट दोषोंको उत्पन्नकर्ता और अत्यन्त बद्धक है, (निर्विषैल)

(१८१) कौला (मुसम्बी)

स्वरूप, ललौंई लिये पीला, **स्वाद**, मीठा और खट्टा, **पहिचान**, एक जातिकी नारंगी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और तर है, **हानिकर्ता**, शीत और स्निग्ध प्रकृतिको, **दर्पनाशक**, नमक और मिसरी है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता (२) हृदय की व्याकुलता, रुधिर और पित्तकी तेजी तथा आमाशय और कलेजेके दाहको शान्तिकर्ता, है (३) इसका छीलका आमाशयको बलवान्कर्ता है, (४) मूत्रल, (५) इसके छीलकेका उबटना करना श्यामता और व्यंग (झांई) का नाशक है, (६) इसके बीज प्रायः विषके दर्पनाशक हैं (७) विषूचिकाको अत्यन्त लाभकारक हैं. (निर्विषैल)

(१८२) कंकोल (शीतलचीनी)

संस्कृत, कंकोल, **स्वरूप**, भूरा और काला, **स्वाद**, कडुआ और तीखा, **पहिचान**, काली मिरचके बराबर एक फल है, **प्रकृति**, गरम, **हानिकर्ता**, कार्श्य उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, हरड़, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) क्षुधा (भूक) वर्द्धक (२) हृदयके रोगोंको लाभकर्ता (३) कफ और वायुके अवगुणका नाशक (४) बद्धक है, (निर्विषैल)

(१८३) कंकरज़द

फारसी, कंकरज़द, **अरबी**, तराबुल्कै, **स्वरूप**, पीला और सफ़ेद, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, कंकरके वृक्षका गोंद है, **प्रकृति**, २ कक्षा में रूक्षहै, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, जोज़ुल्कै, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) सिकंजबीन अथवा शहदके साथ कफज और पैत्तिक मलको वमन द्वारा निकालनेवाला, (२) इसका लेप शोथको लयकर्ता है (३) ओज और पाचकशक्तिको दृढकर्ता है, (निर्विषैल)

(१८४) कंतरीयूनसगीर

अरबी, कंतरीयूनसगीर, स्वरूप, इसका फूल लाल और हरा होताहै, स्वाद, तीक्ष्ण और तीक्ष्णगंधियुक्त, पहिचान, यह पानीके किनारे ऊगती है एक घास है, इसके पत्ते तितलीके समान होतेहैं, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, आंतोंको, दर्पनाशक, बबूलका गोंद है प्रतिनिधि, परसाविशां और ज़राबन्द तथा मदहरिज है, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कफ और लसयुक्त दोषोंको छांटनेवाला, (२) कफज मलको दस्तोंकी राह निकालनेवाला, (३) पित्तजमलका दस्तकी राह निकालनेवाला, (४) शोथ और कठोरताको लयकर्ता, (५) यकृत्के रोधको खोलनेवाला (६) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक है, (निर्विषैल)

(१८५) कंतरयूनिकबीर

अरबी, कंतरियूनकबीर, स्वरूप, हरा, स्वाद, कुछ खट्टा और तीखा तथा कडुआ, पहिचान, जिसकी पत्ती चूका जैसी दानेदार होतीहै एक घासहै, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता मस्तिष्कको दर्पनाशक, बबूलका गोंद और कतीरा है, प्रतिनिधि, साद सुरजान और रसोत है, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) बद्धक (४) कांतिकर्ता, (५) मस्तिष्क शोधक, (६) कलेजा और तिल्लीके रोधका उद्घाटक, (७) कफज गुल्मको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(१८६) कंदर

फारसी, कंदर, अरबी, कदरजक स्वरूप, पीला लाल और सफेद, स्वाद, कुछ कडुआ और सुगंधियुक्त, पहिचान, एक वृक्षका प्रसिद्ध गोंद है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है हानिकर्ता, उष्णप्रकृतिको, दर्पनाशक, उन्नाव, प्रतिनिधि, मस्तगी और बहमन है, मात्रा, २ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रूहहैवानी और रूहनफसानी अर्थात् मस्तिष्क सम्बधीप्राण, ओज और वस्तिको तथा आमाशयको बलप्रद, (२) कफको सुखानेवाला (३) आर्त्तव और रुधिर स्रावका रुद्धक (४) व्रणपूरक (५) इसका स्वरस अत्यन्त गाढ़ा और बद्धक है, (६) अवयवोंको रूक्षकर्ता है, (निर्विषैल)

(१८७) कंदरी

स्वरूप, हरा स्वाद, कडुआ पहिचान, जिसके पत्ते सोंफके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं एक घास है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, उष्ण प्रकृतिको, दर्पनाशक, उन्नाव, प्रतिनिधि, कन्दर, मात्रा, २ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१)

मूत्र और आर्तवप्रवर्त्तक (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) मलको पक और समपक्ककर्ता (४) प्रायः गुण कर्ममें कंदर का प्रतिनिधि है, (निर्विषैल)

(१८८) कंघी

फ़ारसी, दरख्त शानह, अरबी, मुश्तुल्-गोल, स्वरूप, फूल पीला और पत्ते हरे, स्वाद, कुछ कडुआ, पहिचान, दो गज लम्बी एक प्रसिद्ध घास है, प्रकृति, २ कक्षा में गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, आध्मान कर्ता, दर्पनाशक, खांड, प्रतिनिधि, ऊंट-कटेरा, मात्रा, ५ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग (१) वक्षस्थलके रोग, बवासीर, शोथ और पित्तको गुणकर्ता, (२) मूत्रल, (३) वस्ति और मूत्रमार्गके व्रणको लाभकर्ता, (४) इसके बीज ओजप्रद हैं, (५) बद्धक, (६) इस के पत्ते कमरकी पीड़ा और प्रायः अव-यवोंकी पीड़ाको गुणकर्ता है, (७) इसकी कुल्ली करना दातोंके दर्दको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(१८९) कमलगट्टा (गुलहार)

संस्कृत, पद्मवीज, स्वरूप, बाहरकाला और भीतर सफ़ेद होताहै तथा फूल लाल और दिखनोंट होताहै, स्वाद, फीका, और सुस्वादु, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ठंडा और तर, हानिकर्ता, दीर्घपाकी, दर्पनाशक, शहद, प्रतिनिधि, आवलेके बीज, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका फूल पित्तज्वर, पीलया और बारम्बार प्यास लगनेको गुणकारक है, (२) इसकी जड़ ओजप्रद है, (३) अती-सार बद्धक, (४) रुधिरप्रकोप और पित्त-को शांतिप्रद, (५) इसका हिम बालकों-की प्यासकेलिये अनुभूत गुणकारक है, (६) इसकी हरियाली आमाशयको बलप्रद है, (७) अतीसार बद्धक है, (निर्विषैल)

(१९०) खटमल

संस्कृत, मत्कुण फारसी, सरखक और सास, अरबी, फसाफस, स्वरूप, लाल और कालापन लिये, स्वाद, दुर्गंधि-युक्त और वेस्वाद, पहिचान, प्रसिद्धहै जो कि बहुधा खाटोंमें होताहै १ जातिका बड़ा जूआं जैसा कीड़ाहै बहुधा मनुष्यके रुधिरको पीताहै, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्षहै, हानिकर्ता, वमन और हल्लास उत्पन्न कर्ता, दर्पनाशक, घृत और वमन करना, है प्रति-निधि, जूआं, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) यदि गलेमें जोक लिपटगई होवे तो इसको मसल कर सुंघावे अथवा इसके क्वाथका गंडूष देवे तो लाभप्रद है, (२) इसको एक वस्त्रमें मसलकर और जलाकर मृगीवालेके नाकमें धूनी देवे तो लाभकर्ता है (३) यदि पीसके लिंगके छिद्रके भीतर डाले तो मूत्रके रुकनेको दूर करे, (४) बालोंकी जगह मलनेसे बालों को जमादेता है, (५) सांपके काटेहुएको

१ नग निगलवादेवे तो गुणकारक है, (६) इसका लेप उत्तम बनताहै, (उपविष)

(१९१) ख़तमी

फारसी तुख़्म ख़तमी **अरबी**, वजरुल्-ख़तमी, **स्वरूप**, काला **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है **प्रकृति**, ठंडी और तर, **हानिकर्त्ता**, आमाशय और फ़ेफड़ेको, **दर्पनाशक**, शहद और सोंफ, **प्रतिनिधि**, खुब्बाजी और नीलोफर, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मलको पक्क कर्त्ता, (२) शोथको लयकर्त्ता, (३) अवयवोंको ढीला करे, (४) पीड़ाको शांतिप्रद (५) प्रकृतिको मृदुकर्त्ता, (६) पसलीके दर्दको और फ़ेफड़ेको तथा सूखी खांसी कोगुणकर्ता है (७) इसके पत्ते शोथकोलयकर्ता हैं और स्तन तथा गुदाके शोथको अत्यंत लयकर्ता हैं एवं मल और शोथको पाककर्ता हैं (निर्विषैल)

(१९२) ख़तमीके फूल

फारसी, गुलख़तमी **अरबी**, विर्दुल-नंवित और विर्दइज़राकी **स्वरूप**, ऊदा, **स्वाद**, कुछ कडुए, **पहिचान**, प्रसिद्धहैं **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्त्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, खाकसी, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मलको पक्कर्ता, (२) शोथको लयकर्ता, (३) पीड़ाको शांतिकर्ता, (४) पांवधोनेके जलमें इसको मिलावे तो मस्तकमें भापके चढनेको दूर करताहै (५) शिरः पीड़ाको लाभ प्रद, (निर्विषैल)

(१९३) ख़तमीकी जड़

फारसी, रेशाख़तमी और बेख़ख़तमी, **अरबी**, असलुल् ख़तमी, **स्वरूप**, भूरी, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और तरहै **हानिकर्त्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, सोंफ, **प्रतिनिधि**, खुब्बाजी, **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशे तक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) मरोड़ाको शांतिप्रद, (३) आमातीसारको लाभप्रद, (४) पित्तके दस्त और मूत्रकी जलन तथा चिनक और जलनको गुणकर्ता है, (५) गरमी की खांसीको लाभकारक है, (६) पेटको विष्टब्ध करती है (निर्विषैल)

(१९४) खान खजूरा

फारसी, हजारपा, **अरबी**, अरकेअब और अरबेएन, **स्वरूप**, काला और लाल, **पहिचान**, १ बिलस्तका बहुत पैरों वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्षहै, **हानिकर्ता**, घातक है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बड़े खानखजूरेको पकड़कर सुखालेवे और एक बत्तामें लपेटकर तिलके तेलमें उसका काजल पाड़ा जावे तो यह काजल पक्ष्मरोगको लाभकर्ता है (निर्विषैल)

(१६५) खपरिया

संस्कृत, खर्परी, **फारसी**, संगवसरी, **अरबी**, तूतिया किरमानी, **इंग्रेजी**, सल्फेट ऑफ कॉपर, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ खारी, **पहिचान**, लवण जैसी खानिज और प्रसिद्ध वस्तु हैं, **प्रकृति**, शुद्ध करी हुई ठंडी और रूत्त हैं और अशुद्ध गरम और रूत्त है, **हानि-कर्ता**, रोधकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रति-निधि**, तुवालखास, **मात्रा**, २ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दृष्टिकी शक्तिको बल-प्रद, (२) नेत्रके स्वास्थ्यकी स्थितिकर्ता (३) विकारक मलको नेत्रमें नहीं गिरने देता, (४) नेत्र, नाक, उपस्थ, वस्ति और गुदाके व्रणको लाभकर्ता, (५) सब अवयवोंके विस्फोटकोंका पूरक और गुणकारक है, (६) सम्पूर्ण विस्फोटक, व्रण और चीराओंको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(१९६) खरब

फ़ारसी, खरनूब विनती, **अरबी**, ख़रनूब लफ़जी, **स्वरूप**, कुछ काला और भूरा, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, बाकलाके वरावर एक वृत्तका बीज है, **प्रकृति**, २ कत्तामें गरम और रूत्त है तथा किसीके मतमें ठंडा है, **हानिकर्त्ता**, आमाशय और आंतों को, **दर्पनाशक**, बिहीदानेका लुआव (लस) **प्रतिनिधि**, माजू और छोटी भाऊका फल, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) मूत्रल, (४) अवयवोंमें रूत्तता कर्ता, (५) अतीसारका बद्धक, (६) रक्तस्रावका रुद्धक, (७) पीड़ाको शांति प्रद है, (निर्विषैल)

(१९७) खरबूजा

संस्कृत, दशांगुल, **फारसी**, खर्पुजह, **अरबी**, बितीख, **इंग्रेजी**, मेलन्, **स्वरूप**, पिलोंई लिये हरा, **स्वाद**, मीठा और फीका **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, २ कत्तामें गरम और तर है, **हानिकर्ता**, कुपितदोषोंका वर्द्धक, **दर्पनाशक**, सि-कंजबीन और शहद, **प्रतिनिधि**, फूंट, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कांतिप्रद, (२) स्वच्छताकर्ता, (३) नसोंमें शीघ्र प्रवेश होवे, (४) स्निग्धताको उत्पन्नकर्ता, (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) रोध-का उद्घाटक, (७) वृक्क (गुर्दा) का शोधक, (८) मूत्रल, (९) दुग्धका वर्द्धक, (१०) पांडु और जलोदरको लाभकर्ता, (११) पथरीका नाशक, (१२) विना भोजन किये (निन्हे) खाया जायतो पित्त-ज्वरको उत्पन्नकर्ता, (१३) इसका छीलका वमनप्रद है, (१४) लेप करनेसे व्यंग (झांई) का नाशक है (निर्विषैल)

(१९८) खरबूजा के बीज

संस्कृत, दशांगुलबीज, **फारसी**, तुख्मखर्पुजह, **अरबी**, वजरुल्बितीख,

स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीका और सु-स्वादु, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, तिल्ली और उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक**, शहद और वनफसा, **प्रतिनिधि**, चिलगोजा, **मात्रा**, ९ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (२) मूत्रल, (३) वृक्क वस्ति और आंतोंको स्वच्छकर्ता, (४) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (५) मूत्र और दाहका नाशक (६) दुग्ध और शुक्रको उत्पन्नकर्ता, (७) ओजप्रद, (८) इसका लेप मुखकी श्यामताको दूर करनेवाला है, (निर्विषैल)

(१९९) खसखस सफ़ेद

संस्कृत, खसबीज, **फारसी**, कोकिनार, खशखाश सफ़ेद, **अरबी**, बजरुल्, खशखाशुलबुस्तानी, **इंग्रेजी**, पोपीसीडस् **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी और कुछ मीठी, **पहिचान**, खाकसीके बराबर पोस्तका प्रसिद्ध बीज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको और शीतप्रकृतिको, **दर्पनाशक**, मिसरी और शहद, **प्रतिनिधि**, काहूके बीज, **मात्रा**, ११ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अवयवोंको सुस्त और लुंज करनेवाले, (२) निद्राप्रद, (३) पतले मलको पक्वकर्ता अथवा सम पक्वकर्ता, (४) पैत्तिक मलको पक्वकर्ता, (५) बद्धक, (६) वक्षस्थल, कण्ठ और फुफ्फुस तथा आंतकी रूक्षताका नाशक, (७) उष्णता, रूक्षकास, ज्वर, राजयक्ष्मा, और यकृत्के कार्श्यको लाभकर्ता, (८) शरीरको बृंहणकर्ता, (९) ओजप्रद है, (निर्विषैल)

(२००) ख़शख़श स्याह

फारसी, ख़शख़ाश स्याह, कोकिनार, **अरबी**, बजरुल् खशखाशुल्वर्री, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठण्डी और तर, **हानिकर्ता** मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, सौंफ, **प्रतिनिधि**, काहूकेबीज, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) यकृत्की ऊष्मा और प्रदरको लाभप्रद, (२) जीर्णातीसारकी बद्धक, (३) वक्षस्थलको स्वच्छकर्ता, (४) इसकी गन्धि निद्राकी नाशक है, (निर्विषैल)

(२०१) खस

संस्कृत, उशीर, **फारसी**, रेशयेखस खानह, **इंग्रेजी**, अंड्रोपोगनम्युरीकेट्स, **स्वरूप**, ललोंई लिये पीली, **स्वाद**, कुछ कड़वी और सुगंधियुक्त, **पहिचान**, रतन नामक एक घासकी जड़ है, यह तिनकाके समान महीन होतीहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है तथा किसीकी मतमें ठंडी है, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नकर्ता, (२) हृदय, आमाशय और मस्तिष्कको बलप्रद, (३) हृदयकी व्याकुलता तथा वीर्य्यका पतलापन

और जल्दी स्खलित होनेको लाभकर्ता, (४) रक्त शोधक, (५) इसके ऊपर जल डालकर सूंघना मस्तकको आनन्दित कर्ता है (६) इसका लेप दांतोंको गुणकर्ता है, (७) रुधिरका कोप और दाहको नाशकर्ता, (८) इसका इत्र हृदय और मस्तिष्कको प्रसन्नकर्ता है, (९) गरमीकी शिरः पीड़ाका नाशक है (निर्विषैल)

(२०२) खायह (ऊदविलाव)

फारसी, आशबच्चगान, **अरबी**, जन्दबेदस्तर, **स्वरूप**, पीला, और लाल **स्वाद**, फीका और सुगंधियुक्त, **पहिचान**, एक सामुद्री जीव के वृषण हैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गरम प्रकृतिको दर्पनाशक, शरवत बनफसा, **प्रतिनिधि**, विज और पीपल, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध उद्घाटक, (२) वायु और शोथको लयकर्ता, (३) शीतल और विषैल औषधिका दर्पनाशक, (४) वास्तविक उष्णताको चालनकर्ता, और बलप्रद है, (५) मस्तिष्क संबन्धी शीतरोग और स्नायुके रोगोंको लाभ प्रद, (६) आर्त्तव और मूत्रप्रवर्त्तक, (७) ओजको बलप्रद (८) गर्भाशयको बलवान् कर्ता है (निर्विषैल)

(२०३) खिजूर

संस्कृत, भूमिखर्जूरिका, **फारसी**, खुरमाय हिन्दी, **अरबी**, रतबहिन्दी **इंग्रेजी**, डेट्पाम, **स्वरूप**, ललाई लिये काला और कालापनलिये लाल, **स्वाद**, मींठा **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर है, **हानिकर्ता**, रुधिरको **दर्पनाशक**, मींठा बादाम, **प्रतिनिधि**, किशमिश, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) पाचक, (३) ओजप्रद (४) आमाशय यकृत् और ओजको बलवान् कर्ता, (५) गरम प्रकृतिको अत्यन्त अनुकूल है (६) शरीरको बृंहणकर्ता (७) रुधिर उत्पन्नकर्ता, (८) इसकी गुठली अतीसारकी बद्धक है (९) इसकी भस्म रक्तस्रावकी रुद्धक है (१०) व्रण शोधक, (११) इसका मंजन दांतोंको स्वच्छकर्ता है (निर्विषैल)

(२०४) खिरनी

संस्कृत, राजादन; **इंग्रेजी**, ओवटयुसलीव्डमाईमुसोप्स, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, मींठा, **पहिचान**, निबौरीके समान एक बड़े वृक्षका फल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, गुल्मको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, गुलकंद और मठा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नताकर्ता, (२) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (३) शिरके भारापनकी नाशक, (४) तीनों दोष (वात, पित्त, कफ,) के प्रकोपको शांतिप्रद, (५)

वमनको शांतिप्रद, (६) ज्ञुधा उत्पन्नकर्ता, (भूख लगावे) (७) ओजप्रद, (८) वीर्यको सांद्रकर्ता, (९) दीर्घपाकी (१०) प्रमेहको गुणकर्ता, (११) इसके बीजोंका अंजन नेत्रके रोगोंको लाभप्रद है, (१२) इसकी जड़की छाल वीर्य-को सांद्रकर्ता, (१३) इसके बीजकी मिंगी जूंआं और लीककी नाशक है, (निर्विषैल)

(२०५) खीरा

संस्कृत, त्रपुस **फारसी**, खयार, बाव-रंग, **अरबी**, कशद, **स्वरूप**, हरा, पीला और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और कुछ मीठा **पहिचान**, एक वेलका ३ बिलस्त तकका लम्बा प्रसिद्ध फल है **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, शीत प्रकृतिको और कफ उत्पन्नकर्ता तथा आध्मानकर्ता, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पित्त और रुधिरकी गरमी तथा पेटकी अंतडियोंके दाहको शांतिप्रद, (२) तृषाहर, (३) मस्तिष्कसम्बन्धी उष्णरोग और निद्राका न आना तथा पित्तज्वरको लाभप्रद है, (४) इसका भुलभुलाया हुआ पानी पित्त और कफज्वरको गुणकर्ता है (५) गरमी और शिरः पीड़ामें इसको काट कर सूंघना गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२०६) खीराके बीज

संस्कृत, त्रपुसबीज **फारसी**, तुख़्म खयार **अरबी**, बजरुल्फस, **स्वरूप**, सफ़ेद **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, शीत प्रकृतिको, **दर्पनाशक**, सोंफ **प्रतिनिधि**, ककड़ीके बीज, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मूत्रल, (२) दग्ध पित्तको मूत्रमार्गसे रेचनकर्ता, (३) मूत्रका दाह, चिनक, यकृत्का शोथ और प्लीहके शोथको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२०७) खीली (खीला)

फारसी, कसेली, कसेला **स्वरूप**, ललोंई लिये काला, **स्वाद**, लसयुक्त, कुछ कडुआ, **पहिचान**, तजके समान एक वृक्षकी लकड़ी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिको, **दर्पनाशक**, कतीरा **प्रतिनिधि**, दालचीनी, असारून और कडुआ बादाम है **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताकर्ता, स्वच्छकर्ता, (२) मूत्रल, (३) मनको प्रसन्नकर्ता (४) हृदय और आमाशयको बलप्रद (५) नसोंमें चिपककर रोधकर्ता, (६) स्त्रीकी योनिकी स्निग्धताका शोषक है (निर्विषैल)

(२०८) खुब्बाजी

फारसी, खुब्बाजी, नानकुलाग, **अरबी**, खुब्बाजी, **स्वरूप**, पत्ती हरी और फूल ऊदा, बीज भूरा और जड़ पीली होतीहै, **स्वाद**,

पत्ती कड़वी और बीज, फूल तथा जड़ फीके होतेहैं, **पहिचान**, खतमीके समान एक घास है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृति और आमाशयको, **दर्पनाशक**, खटाई, **प्रतिनिधि**, खतमी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता (२) मलको समपक्ककर्ता, (३) यकृत्के रोधकी उद्घाटक, (४) इसके क्वाथको मिसरी डालकर पीवे तो कास और स्वरभङ्गको लाभकर्ता है, (५) प्लीहकी पीड़ा, शोथ, पांडु, रूक्षपामा (खाज) और आंतके व्रणको गुणकर्ता है, (६) आमातीसार, वस्तिके व्रण और मूत्रके दाहको लाभकर्ता, (७) पशुओंके विषकी दर्पनाशक है (निर्विषैल)

(२०९) खुर

फारसी, कफशंग, **अरबी**, जलफ, **स्वरूप**, काला, और उजला, **स्वाद**, वेस्वाद और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, चतुष्पाद पशुओंके पांवके शिरेपर चिराहुआ एक कठोर अंग है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, सींघ, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सम्पूर्ण पशुओंके जलेहुए खुर रेचक हैं (२) मद्यके साथ इसका लेप कीड़ामकोड़ाओंके काटेहुएको गुणकर्ता है, (३) शहदके साथ इसका लेप करना पांवके अंगूठाकी पीड़ाका नाशक है, (४) वकरीके जलेहुए खुर सिरकाके साथ बालोंके उखड़नेको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२१०) खुरफाका शाक

फारसी, तरहखुरफा **अरवी**, बुकलुल्हमका, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ खट्टा, **पहिचान**, एक साग है यह तर और खारी जगहमें ऊगता है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें तर है, **हानिकर्त्ता**, दृष्टिको, **दर्पनाशक**, मस्तंगी, मांस और करासके बीज हैं, **प्रतिनिधि**, काहू, **मात्रा**, ९ तोले, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पित्त और रुधिरकी तीक्ष्णता तथा उष्णताको शांतिप्रद, (२) यकृत् और आमाशयके दाहको लाभप्रद, (३) मूत्रका दाह और वस्तिकी उष्णताको गुणकर्ता, (४) तृषाको शांतिप्रद, (५) कांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(२११) खुरफाके बीज

फारसी, तुख्मखुरफा **अरबी**, बजरुल्हमका और फरफख, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्धहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडे और २ कक्षामें तर हैं, **हानिकर्ता**, ओज, तिल्ली और शीतल आमाशयको, **दर्पनाशक**, गुड़, **प्रतिनिधि**, मीठे कद्दूके बीज और ईसबगोल, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) गरमीका ज्वर और पित्तज्वरको गुणकर्ता, (२) तृषाको शांतिप्रद, (३) गरमीकी शिरःपीड़ा और आमाशयकी गरमीको लाभकर्ता, (४) गर्भाशय और यकृत्की गर-

मीका नाशक, (५) गरमीकी खांसी और मुखसे रुधिरआने को लाभकर्ता, (६) जलके पीतेही पेशाबके आनेको लाभकर्ता है (निर्विषैल)

(२१२) खूबकलां

फारसी, खाकसी, **अरबी**, हुब्बह, **स्वरूप**, पिलोंईलिये भूरी, **स्वाद**, फीकी **पहिचान**, पोस्तके बराबर एक प्रसिद्ध बीज है **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, शिरः पीड़ा उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, तोदरी, **मात्रा**, ६ माशे तक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अधिक ओजकर्ता, (२) क्षुधावर्द्धक,(३)शोथ और वायुको लयकर्ता, (४) आमाशयको बलप्रद, (५) पाचकशक्तिको दृढ़कर्ता, (६) विस्फोटक और मसूरिका रोगको लाभकर्ता, (७) रोधकी उद्घाटक, (८) छिद्रोद्घाटक और मुखके रूपको स्वच्छकर्ता, (९)इसको भूनकर किसी उचित अवलेहके साथ देवे तो यह जीर्णकास और ज्वरको गुणकारक है, (१०) दुग्धके साथ शरीरको बृंहणकर्ता है (निर्विषैल)

(२१३) खूबानी

फारसी, जर्वआलू, और शकरवादाम, **अरबी**, मिशमिश, **स्वरूप**, पीली, **स्वाद** मींठी, **पहिचान**, आलूबुखारेके समान एक फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, अफरा करनेवाली और सड़कर जल्दी रोग पैदा करतीहै, **दर्पनाशक**, मिसरी और सिकंजवीन, **प्रतिनिधि**, आंडू, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तकी रेचक (२) तृषा और रुधिरप्रकोपको शांतिप्रद, (३) मलको समपक कर्ता, (४) प्रकृति और कठोरताको मृदुकर्ता, (५) रोधकी उद्घाटक (६) पित्त रुधिर और ज्वरको लाभ कर्ता, (७) इसकी गरमी अर्शको लाभ करती है, (८) अवयवोंको बलवान्कर्ता (९) उदरके कृमिनाशक है, (निर्विषैल)

(२१४) खबनी

फारसी, पेवन्दमरियम, **अरबी**, हब्बुलमोहलब, **स्वरूप**, छीलका कालापन लिये लाल और लकड़ी सफेद होतीहै **स्वाद**, कुछ कड़वी और तीखी, सुगंधियुक्त, **पहिचान**, कावली हरड़के बराबर एक वृक्षका बीज है, और डालीके सिरेपर लगता है इसका वृक्ष हब्बुलखिज़रके वृक्षके समान और पत्ते वेदके पत्तोंके समान होतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, मस्तिष्क और गरम अंतडीको, **दर्पनाशक**, गुलाब, घी और वनफ्सा, **प्रतिनिधि**, अखरोट और कडुआ वादाम, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बद्धक और लय शक्तिके होतेभी अतिप्रसन्नताप्रद, (२) इन्द्रियोंको बलप्रद, (३) लसके कारण नसोंके मुखमें चिपककर रोध उत्पन्न-

कर्ता, (४) वक्षस्थलसे सांद्र और लसयुक्त स्निग्धताका रेचक, (५) हृदयकी व्याकुलता, श्वास और मूर्च्छाको गुणकर्ता, (६) यकृत् और प्लीहको बलप्रद, (७) यकृत्, प्लीह, वृक्क, पृष्ठकी आभ्यंतर पीड़ा और मायुलअसलके साथ गुल्मको अतिशय लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(२१५) गज पीपल

संस्कृत, कपिवल्ली, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, लाल मिरचके समान एक बूटीका फल है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पाचक, (२) यकृत् और आमाशयको बलप्रद (३) स्तम्भ और अजीर्णरोगको हरणकर्ता (४) उदरके रोग और अर्शको लाभप्रद, (५) अतीसारवर्द्धक, (६) उदरकृमिनाशक, (७) बाजीकरणके प्रयोगमें लगाने और मलनेसे गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२१६) गर्दआसिया

फारसी, गर्द आसिया, **अरबी**, गुबारुल्‌खारिही, **स्वरूप**, धूरियारंगका, **स्वाद**, बेस्वाद, **पहिचान**, चक्कीकी उड़न है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) इसको नाकमें सूंघना नकसीरको बंद करताहै, (३) इसका मस्तकपर लेप कपना नेत्रपर मलके गिरनेको रोकता है और पट्ठोंको (मोटी नसोंको) दृढ़ करताहै (निर्विषैल)

(२१७) गाजर

संस्कृत, गार्जर, **फारसी**, जरवक और गजर, **अरबी**, जजर, **स्वरूप**, काली और ऊदी, **स्वाद**, मीठी और फीकी, **पहिचान**, एक प्रकारका प्रसिद्ध कंद है और सबकी ही काममें आतीहै, **प्रकृति**, स्निग्धताके साथ गरम और तर है, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, गरम ओषधि और गुड़, **प्रतिनिधि**, सलगम, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छकर्ता, (२) यकृत्के रोधकी उद्घाटक, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) प्रकृतिको मृदुकर्ता (५) अधिक ओजकर्ता, (६) ओजकी शक्तिको चालनकर्ता, (७) कफकी रेचक, (८) कास और वक्षस्थलकी पीड़ाको गुणकर्ता, (९) मूत्रल (१०) वृक्क और वस्तिकी अश्मरीकी नाशक, (११) जलोदरको लाभकर्ता, (१२) इसका स्वरस गरमीकी हृदयव्याकुलताको अतिलाभप्रद है, (१३) इसका हलुआ स्वादिष्ट और बलवान्‌कर्ता है, (निर्विषैल)

(२१८) गाजरके बीज

संस्कृत, गार्जरबीज, **फारसी**, तुख्म गज़र, **अरबी**, बजरुल्‌जजर, **स्वरूप**, लाल और भूरा, **स्वाद**, फीके और तीखे

पहिचान, प्रसिद्ध हैं, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष हैं, हानिकर्ता, आमाशय, कंठ और स्नायुको, दर्पनाशक, अनीसून, प्रतिनिधि, दोकू और अनीसून, मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) ओजको बलप्रद, (२) मूत्रल, (३) ओजकर्ता, (४) गर्भाशयको वृथामलसे स्वच्छकर्ता, (५) वक्षस्थलकी पीड़ाको लाभकर्ता (६) जलेहुए जलोदर, मूत्राघात, आध्मान, और व्रणको गुणकर्ता, (७) वृक्क और वस्तिकी पथरीके खंडनकर्ता हैं, (निर्विषैल)

(२१९) गाजर जंगली

संस्कृत, गृंजन, फारसी, गजरदस्ती, अरबी, वजरुल्लबर्री, स्वरूप, सफ़ेद और पीली, स्वाद, कुछ मीठी और लसयुक्त, पहिचान, गाजर जैसी गांठदार एक प्रकारकी जड़ है, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और तर, हानिकर्ता, फुफ्फुस और क्षुधाको दर्पनाशक, शहद और आमले, प्रतिनिधि, सनोबरके बीज, वोजीदां और गाजरके बीज, मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) ओजप्रद, (२) रोधउद्घाटक, (३) पीठको बलवान्कर्ता, (४) आमाशयको उष्णताप्रद, (५) यकृत्, और वृक्कको उष्णताप्रद, (६) प्राण, स्नायु और ओजको बलप्रद, (७) शुक्रल और सांद्रकर्ता है, (निर्विषैल)

(२२०) गाजर जंगलीके बीज

संस्कृत, गृंजनबीज, फारसी, तुरुम गजरदस्ती, अरबी, दोकू, बजरुल्जजरुल्बर्री, स्वरूप, कालापनलिये, स्वाद, तेज और सुगन्धियुक्त, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, वस्ति, ओज और उष्णप्रकृतिको, दर्पनाशक, कतीरा, और मस्तगी, प्रतिनिधि, गाजरके बीज और तुरुमकरफस, मात्रा, ४ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रोधका उद्घाटक, (२) मूत्रल, (३) आर्तवप्रवर्तक, (४) आमाशय और क्षुधाशक्तिको बलप्रद, (५) शुक्रल, (६) वायु और वस्तिकी अश्मरीको लयकर्ता, (७) कफज और सांद्रमलको लयकर्ता, (८) वृक्क और वस्तिकी अश्मरीको खण्डनकर्ता, (९) जीर्णकास और वक्षस्थलके वृथामलको हरणकर्ता, (१०) वालग्रहोंको लाभप्रदहै, (निर्विषैल)

(२२१) गांझा

संस्कृत, गंजा, फारसी, बंगदस्ती, अरबी, कतबबर्री, स्वरूप, हरा, स्वाद, तेज और गन्धियुक्त, पहिचान, भांगकी जातिकी एक प्रकारकी घास है, इसको चिलममें रखकर पीते हैं, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, मस्तिष्कको और मूर्छाकर्ता, दर्पनाशक, गायका घी और खटाई, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मदकर्ता, (२) सर्वांग और प्रायः

मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवोंको शिथिल और सुन्नकर्ता, (३) अत्यन्त रूक्षहै और शिथिलता तथा सुन्न करनेमें अफीमसे अधिकतर है (उपविष)

(२२२) ग़ाफ़िस

अरबी, ग़ाफ़िस, **स्वरूप**, कालापन-लिये ऊदा, **स्वाद**, अत्यन्त कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके पत्ते लम्बे, चौड़े और खर-खरे होतेहैं यह कांटेवाली एक प्रकारकी घास है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, तिल्लीको-**दर्पनाशक**, अनीसून और विर्द, **प्रतिनिधि**, उसारारेवन्द और आफ़िस्तीं, **मात्रा**, ५ माशेसे ६ माशे तक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग** (१) दोष और प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) मलशोधक, (३) कांतिप्रद, (४) स्निग्ध-ताकी आकर्षक, (५) यकृत् और प्लीहके रोधकी उद्घाटक, (६) शरीरको द्विदोषज ज्वरोंसे शोधनकर्ता, (७) लसयुक्त दोषों-को छांटनेवाली, (८) जलेहुएको गुणकर्ता (९) जलोदर और शोथको लयकर्ता, (१०) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (११) दुग्धप्रवर्तक, (१२) इसका चुआव बल-वान्‌कर्ता है, (निर्विषैल)

(२२३) ग़ार

अरबी, ग़ार, **स्वरूप**, बीज लाल और भूरा, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, सुगन्धियुक्त, **पहिचान**, कालीपृथ्वीमें एक वृक्ष होताहै, यूनानके लोग इसकी बहुत इज्जत करतेहैं और इसकी अवस्था (उमर) हजार बर्षकी होतीहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्‌को **दर्पनाशक**, जरश्क, कतीरा और वंशलो-चन, प्रतिनिधि, कलौंजी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके बीज शोथ और वायुके लयकर्ता हैं, (२) प्रकृ-तिको मृदुकर्ता, (३) गर्भाशय और वृक्क-की पीड़ा तथा बिच्छूके काटनेको गुणकर्ता (४) अत्यन्त मूत्र और आर्तवप्रद, (५) पीनेके द्रव्योंके विषका दर्पनाशक, (६) बालकोंको जरायुमें मारडालेहै, (७) धांस, श्वास, खांसी, यकृत् और वस्तिकी पथरीको लाभ कर्ता, (८) पथरीको तोड़ता है, (निर्विषैल)

(२२४) ग़ारीकून

फारसी, माहशां, **अरबी**, ग़ारीकून, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध द्रव्य है जिसको अंजीरके वृक्षसे प्राप्त करतेहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, व्याकुलता और गलेमें रोध उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, दूध और जन्द वेदस्तर, **प्रतिनिधि**, निसोथ और इन्द्रा-यनकागूदा, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) तीनों दोषोंका रेचक, (२) प्रकृतिको स्वच्छकर्ता, (३) सांद्रदोषोंको द्रव और स्वच्छकर्ता, (४) प्रकटहुए मल-का रेचक, (५) वायु, शोथ और गुल्मको लयकर्ता, (६) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक,

(७) स्नायु, हृदय और मस्तिष्कको बलवान्कर्ता, (८) प्रायः विषका दर्पनाशक है (९) कफज्वरको लाभकर्ता, (१०) इसका पान करना उचित नहीं है (निर्विषैल है परन्तु इसमें एक वस्तु नखके समान होतीहै, वह विष और घातक है ।)

(२२५) ग़ालियून

स्वरूप, फूल पीला, **स्वाद**, कड़ुआ, और तीखा, सुगंधि युक्त, **पहिचान**, प्रायः तलावके किनारेपर लम्बे पत्तोंकी खड़ीहुई एक प्रकारकी घास होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, यकृत् और प्लीहको, **दर्पनाशक**, अनीसून **प्रतिनिधि**, ग़ाफिस, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रुधिरस्रावका रुद्धक (२) इसके फूलोंका लेप आगके जलेहुएको गुणकर्ता है, (३) व्रणका रुधिर तथा पीवके वहनेको लाभकर्ता है, (४) यह मोमरोग़न अथवा गुलरोग़नके साथ दर्दको अत्यन्त लाभकर्ता है, (५) इसकी जड़ ओज़को अत्यन्त चालनकर्ता है,

(२२६) गावजवां

फारसी, गावजवां, **अरबी**, लिसानुस्सोर, **स्वरूप**, हरियालीलिये सफ़ेद, बुंदकीदार, **स्वाद**, फीका, और कुछ कड़ुआ तथा कसेला, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध घासके पत्ते हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, तिल्लीको, **दर्पनाशक**, चंदन, **प्रतिनिधि**, कच्चा अवरेशम और गुलाबके फूल, **मात्रा**, ४ माशेसे ६ माशे तक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (२) प्राण और वास्तविक उष्णताको बलप्रद, (३) एज़ाय रईसा (उत्तमांग) को भी बलप्रद, (४) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (५) केवल पैत्तिक दोष और उन दोषोंको जो दुग्धपानसे हो गयेहों रेचनकर्ता है, (६) उरःस्थलकी खरखराहट, खांसी, श्वास और वातके रोगोंको लाभकर्ता है (निर्विषैल)

(२२७) गावजवांकेफूल

फारसी, गुलगावज़वां, **अरबी**, जोहरतुल्लिसनुस्सोर, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, फीका, और कसेला, **पहिचान**, अनारके फूल जैसा और उससे कुछ छोटा होताहै, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, तिल्लीको, **दर्पनाशक**, चंदन, **प्रतिनिधि**, गावजवां, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) चितको प्रसन्नकर्ता, (२) प्राण, वास्तविक उष्णता और एज़ाय रईसा (उत्तमांग) को बलप्रद, (३) इन्द्रियोंको बलप्रद, (४) केवल पित्तके दोष और दुग्धपानके दोषोंको रेचनकर्ता, (५) पीलियाको लाभकर्ता, (६) हृदयकी व्याकुलता और प्यासको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(२२८) गावजवांके बीज

फारसी, तुख़्मगावजवां, अरबी, बज़रुल्हिसानुस्सोर, स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीका, लुआबदार, पहिचान, कुसुमके बीज जैसे और कुछ छोटे होतेहैं, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और तर, हानिकर्ता, तिल्लीको दर्पनाशक, धनियां और चंदन प्रतिनिधि, गावजवांके फूल हैं, मात्रा, १ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (२) बलप्रद, (३) अपने सम्पूर्ण कर्मोंमें गावजवांके फूल और पत्तोंके समान हैं किन्तु गुणोंमें फूलसे अधिकतर है, (निर्विषैल)

(२२९) गावरधन

फारसी, संगगाव, अरबी, हजरुल्बकर, स्वरूप, पिलोंई लिये, स्वाद, कडुआ और फीका, पहिचान, गायके पित्तेमें एक प्रसिद्ध पथरी होती है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै तथा किसीके मतमें २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष है, हानिकर्ता, उष्णप्रकृतिको और शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, कतीरा, मात्रा, दो जौके बराबर, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) बृंहणकर्ता (३) मूत्र और आर्त्तव प्रवर्त्तक, (४) वृक्क और वस्तिकी पथरीका नाशक, (५) इसका लेप मुखकी झांई और काले दागोंको गुणकर्ता है, (६) इसकी बुर्की रुधिरकी रुद्धक और व्रणकी पूरक है, (निर्विषैल)

(२३०) गावशीर

फारसी, गावशीर, अरबी, जावशीर, स्वरूप, बाहर लाल और भीतर सफ़ेद, स्वाद, कडुआ और दुर्गंधि युक्त, पहिचान, जिसके पत्ते अंजीरके पत्तोंके समान होतेहैं एक वृक्षका गोंद है, प्रकृति ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, वृषणोंको, दर्पनाशक, मरमाखोज और कनोचा, प्रतिनिधि, अश्क, मात्रा ४ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वायुको लयकर्ता, (२) रोधका उद्घाटक, (३) स्नायुको बलप्रद, (४) कठोरताको मृदुकर्ता, (५) शीतरोग, जलोदर, पीलिया, और मूत्रकृच्छ्रको लाभकर्ता, (६) वस्तिकी खाज और व्रणके उभारको गुणकर्ता, (७) कफजगुल्मको लाभकर्ता, (८) इसके बीजोंको मद्यके साथ देवे तो गर्भाशयके मुखके बंद होनेको लाभप्रद है, (९) स्नायुकी स्निग्धताका शोधक (१०) पादहर्ष और कफज स्निग्धगुल्मको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२३१) गिले मख़्तूम

फारसी, गिले मख़तूम, अरबी, तीन मख़्तूम, स्वरूप, लाल, स्वाद, फीका, पहिचान, एक प्रकारकी लाल मिट्टीकी बनीहुई और घुटीहुई टिकिया है, प्रकृति, ठंडी और रूक्ष है, हानिकर्ता, फेंफड़े और तिल्लीको दर्पनाशक, कतीरा और शहद

प्रतिनिधि, गेरू, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक और प्रसन्नता प्रद, (२) हृदयको बलप्रद, (३) व्रणकी पूरक (४) गरमीकी सूजनको लाभकर्ता, (५) अवयवोंमें मलको नहीं गिरने देवे, (६) सम्पूर्ण विषोंकी नाशक (७) बहतेहुए रुधिरकी रुद्धक है, वह रुधिर चाहे प्रत्यक्षमें बहता-होवे, चाहे भीतर बहता होवे (८) रगोंके मुख और रास्तेको बंद करदेतीहै (निर्विषैल)

(२३२) गुड़

संस्कृत, गुड़, **फारसी**, क्रन्दस्याह, **अरबी**, फानीज, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, मींठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्ण-प्रकृतिको, **दर्पनाशक**, खटाई और वंश-लोचन, **प्रतिनिधि**, शहत, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उदरको मृदुकर्ता, (२) स्वच्छकर्ता, (३) आंत और गर्भाशय-की शीतताको गुणकर्ता, (४) कफ-शोधक, (५) पाचक, (६) श्वास, कास और धांसको लाभप्रद, (७) वक्षस्थलकी पीड़ाको गुणकर्ता, (८) इसके खारको यदि नमकके साथ देवे तो खांसीको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२३३) गुडहल

स्वरूप, लाल और फूल गुलावी, **स्वाद**, फीकी और लसयुक्त, **पहिचान**, जिसके पत्ते तूतके पत्तोंके समान होतेहैं एक वृक्ष है, **प्रकृति**, सम, **हानिकर्ता**, मज़लाको **दर्पनाशक**, मिसरी, **प्रतिनिधि**, चांदनी-के फूल, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) हृदयको प्रसन्नकर्ता, (२) स्वरको आनन्दप्रद, (३) हृदयकी गरम और ठंडी व्याकुलताको गुण-कर्ता, (४) प्रायः मस्तिष्कमें भापके चढ़नेको दूर करे (५) हृदयके धड़कने-को लाभकर्ता, (६) इसके पत्ते, फूल और जड़ भ्रम और उन्मादको गुणकर्ता हैं, (७) बुद्धि और इन्द्रियोंको गुणकर्ता, (८) ओजप्रद है, (निर्विषैल)

(२३४) गुर्च (गिलोय)

संस्कृत, गुडूची, **फारसी**, गिलोयनीम, **इंग्रेजी**, गुलांच, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, एक जातिकी प्रसिद्ध लता है जो कि समीपके वृक्षादिपर चढ़तीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **प्रतिनिधि**, गिलोयसत्त, **मात्रा**, ४ माशेसे ९ माशे तक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अजीर्ण, पैत्तिकज्वर और रुधिरविकारको गुणकर्ता (२) हृदय, यकृत् और आमाशयके दाहको हरण-कर्ता (३) खांसी, पीलिया, रद्द और मूर्च्छाको गुणकर्ता, (४) कफकी रेचक (५) ओज और क्षुधावर्द्धक, (६) शुक्रल और सांद्रकर्ता है, (निर्विषैल)

(२३५) गुर्चका सत्त

संस्कृत, गुडूचीसत्व, **स्वरूप**, सफ़ेद

स्वाद, कुछ कडुआ, **पहिचान**, गिलोयका निशास्ता (सार) है **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, गिलोय, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तज्वर और रुधिरविकारको लाभकर्ता, (२) हृदय, यकृत् और आमाशयके दाहको गुणकर्ता, (३) कफकी खांसी और प्रमेहको हरणकर्ता, (४) जीर्णातीसार (पुरानेदस्त) का वर्द्धक, (५) पित्तप्रकोपको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(२३६) गुल आचीन

स्वरूप, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसके पत्ते मोटे होतेहैं एक वृक्षका फूल है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिको, **दर्पनाशक**, तक्र (मठा) **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इस वृक्षके जड़की छाल बलवान् रेचक है, (२) उपदंश और दुष्टव्रणको लाभकर्ता (३) इसका लेप मलको पक्कर्ता है, (४) कठोर शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(२३७) गुलाबका अर्क़

फारसी, अर्क़गुलाव, जुलाव, और मायुवर्द, **स्वरूप**, जल जैसा **स्वाद**, जल जैसा और सुगंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, शीतलतायुक्त स्नायुको जोड़नेवाला है, **हानिकर्त्ता**, नजला और बालोंको, **दर्पनाशक**, मिसरी, **प्रतिनिधि**, सोंफका अर्क़, **मात्रा**, ५, ६ और १० तोला तक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मस्तिष्क हृदय और आमाशयके मुखको बलप्रद, (२) गरमी की व्याकुलताको गुणकर्ता, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) पाचक और रेचक, (५) इसमें सुरमाको पीसकर अंजन लगावे तो नेत्रके दाहको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२३८) गुलाबका फूल

संस्कृत, शतपत्री, **फारसी**, गुलेसुर्ख़ **अरबी**, विर्दएहमर, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, फीका, कुछ कसेला और मीठा, **पहिचान**,प्रसिद्ध है,**प्रकृति**, १ कक्षामें स्नायुको जोड़नेवाला और ठंडा तथा २ कक्षामें रूक्षहै, **हानिकर्ता**, ओजको और तृषाको उत्पन्न कर्ता, **दर्पनाशक**, मर्जजोश और अनीसून, **प्रतिनिधि**, बनफ्सा, **मात्रा**, २ तोले, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्नायु और प्राणोंको बलप्रद, (२) प्रसन्नताप्रद, (३) स्वच्छकर्ता, (४) रेचक (५) शोथ और वायुको लयकर्ता (६) पित्त और कफको शांतिप्रद, (७) वृक्कशूल, शिरःपीड़ा और ज्वरको लाभप्रद, (८) हृदयकी व्याकुलता और मूर्च्छाको गुणकर्ता, (९) इसकी गंधि नजलाको उत्पन्न करनेवालीहै (१०) इसका लेप आमाशयकी स्निग्धताका शोषक है, (निर्विषैल)

(२३९) गुलाबका जीरा

संस्कृत शतपत्रकेसर, **फारसी** जीरयेगुलसुर्ख, **अरबी**, जरवर्द **स्वरूप**, ललाई लिये, **स्वाद**, कसेला और फीका

पहिचान, प्रसिद्ध है प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है तथा किसीके मतमें ठंडा है, हानिकर्ता फुप्फुसको, दर्पनाशक, कतीरा, प्रतिनिधि, कज़माज़िज,मात्रा, ७ माशे तक, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मुखसे रुधिरआना और रक्तस्रावको हरणकर्ता, (२) यदि अतीसार किसी प्रकार बन्द नहोवे तो इससे बन्द होजाताहै, (३) दृष्टिको बलप्रद, (४) ओजप्रद, (५) गर्भाशयको बलवान्कर्ता (६) इसकी पोटली संकोचन योगोंमें गिनीजाती है (निर्विषैल)

(२४०) गुलथी (कुलथी)

संस्कृत, कुलत्थिका, फारसी, माशहिंदी, अरबी, हब्बुल्कलत, इंग्रेजी, डोलीकोसबाईफ्लोरस, स्वरूप, काली और भूरी, स्वाद, कड़वी और तेज है, पहिचान, मसूरके बराबर एक प्रसिद्ध बीज है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, फेंफड़ेको, दर्पनाशक, शहद, प्रतिनिधि, अलसी, मात्रा, ३ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वृक्क (गुर्दा) की पथरीको खंडनकर्ता, (२) क्षुधाप्रद, (३) हिचकीकी नाशक, (४) मूत्रप्रवर्तक, (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६) वीर्यशोधक, (७) प्लीहके रोधकी उद्घाटक, (८) गुल्मको लाभकर्ता (९) इसका लेप बवासिरकेलिये अनुभूत गुणकारीहै, (निर्विषैल)

(२४१) गुलदाऊदी

फारसी, गुलदाऊदी, अरबी, यासूम, स्वरूप, पीला और सफ़ेद, स्वाद, तेज और तेजगंधियुक्त, पहिचान, जिसका वृक्ष दिखनोट और आधेगजका होताहै तथा पुष्प सुगंधित होताहै, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, मिसरी और मस्तगी, मात्रा, ६ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका फूल सूजन और जमेहुए रुधिरको लयकर्ता है, (२) वृक्क और वस्तिकी पथरीका नाशक, (३) आर्त्तवप्रवर्त्तक, (४) वृक्क और वस्तिकी वायुको लयकर्ता, (५) गर्भाशयकी वायुको लयकर्ता, (६) वातजगुल्म और प्रमेहको लाभकर्ता, (७) इसका लेप कफज शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(२४२) गुलदुपहरिया

संस्कृत, बंधूक, इंग्रेजी, पेरोटपिट्सफिनिश्या, स्वरूप, लाल, सफ़ेद और पीला, स्वाद, फीका और कुछ कडुआ, पहिचान, छोटा कटोरा जैसा एक फूल है दुपहरको खिलताहै, प्रकृति, ठंडा और तर, कोई गरम और रूक्षभी कहतेहैं, हानिकर्ता, कफ उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, शहद, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) हलका और और स्वच्छ, (२) बद्धक, (३) कफ और वातके विकारका नाशक, (४) पित्तके विकारको हरणकर्ता, (५) इसके

फूलका स्वरस निचोड़कर नाकमें डाले तो आधासीसीको लाभदायकहै (निर्विषैल)

(२४३) गुलरोगन

फारसी, रोगनगुल, अरवी, दहनुल्वर्द स्वरूप, ललाँई लिये, स्वाद, बेस्वाद और चिकना, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, स्नायुको जोड़नेवाला, मात्रा, २ तोला, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मलको पक्वकर्ता, (२) बद्धक, (३) शोथको लयकर्ता, (४) रोधउद्घाटक, (५) रेचक होतेभी शीत और उष्ण दोनों मलोंको अनुकूलहै (६) आमाशय और गुदाके दाहको शांतिप्रदहै (निर्विषैल)

(२४४) गुलकंद

फारसी, गुलकंद अरवी, जुल्नजवीन, स्वरूप, लाल, स्वाद, मीठा, पहिचान, शहद अथवा खांडमें गुलावके फूलोंको मथकर धूपमें परिपाक करतेहैं, हानिकर्ता, यकृत्को, दर्पनाशक, पोस्त, मात्रा, २ तोले, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मस्तिष्क और आमाशयको बलवान्कर्ता, (२) बाह्य और दुष्ट स्निग्धताका शोषक (३) विशेषतः यदि भोजनके पीछे सेवन कियाजावे तो मस्तिष्कमें भापको नहीं चढ़नेदेता (४) शहद मिलाकर देवे तो शीतप्रकृतिवाला है (५) वृद्ध और स्निग्ध मस्तिष्कको लाभप्रद है, (६) पक्षवध, आमवात और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ाको गुणकर्ता है, (७) पथरीका नाशक (८) उरःक्षतको लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(२४५) गुलमेहँदी

स्वरूप, सबरंगका होताहै, स्वाद, कुछ कड़वी, पहिचान, बगीचोंमें होनेवाला एक प्रसिद्ध फूलहै, प्रकृति, गरम और तर, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कलिया (मांसद्रव) में इसके बीजोंका खाना ओजको बलवान्कर्ता है, (२) इसके पंचांगका निचोड़ाहुआ स्वरस यदि गरम जलके साथ देवे तो अवयवोंके दाहको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(२४६) गुलनारबेसमर

फारसी गुलनारवेसमर अरवी, जलनार, स्वरूप, अत्यन्त लाल, स्वाद, कडुआ और कसेला, पहिचान, फलोंके विना एक जातिका अनार है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, हानिकर्ता, शिरःपीड़ा और रोध उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, कतीरा, प्रतिनिधि, जीरा, अनार और जुफ्तविल्लूत है, मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) अतीसारका बद्धक, (३) रक्तस्रावका रुद्धक, (४) मलको पक्वकर्ता, (५) रूक्षताकर्ता, (६) अवयवोंको बलप्रद, (७) पित्तातिसार और रक्तातिसारको लाभकर्ता, (८) इसका चूर्ण मुखसे रुधिरआनेको और रक्तस्रावको गुणकर्ता है, (९) दांतोंको दृढ़ (मजबूत) कर्ता है (निर्विषैल)

(२४७) गुलाबसदा

फारसी, सदागुलाब, अरबी, वर्द-वर्री, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, फीका और कुछ मीठा, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, अवयवोंको जोड़नेवाला, हानिकर्ता, नजला और जुक़ाम उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, अनीसून और कन्द, प्रतिनिधि, वनफ्सा मात्रा, ६ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वाह्यअवयव, यकृत्, आमाशय, गुदा और गर्भाशयको बलप्रद, (२) गरमीकी हृदय व्याकुलताको गुणकर्ता, (३) इसकी जड़ अकरकराके समान कफको जला देती है, (निर्विषैल)

(२४८) गुलाबजामन

स्वरूप, पीली, स्वाद, मीठी, पहिचान, लुकाटके बराबर बंगाल प्रान्तमें एक सुस्वादु फल होताहै इसमें गुलाब जैसी सुगंधि होतीहै, हानिकर्ता, आध्मानकर्ता, दर्प-नाशक, सेव, प्रतिनिधि, सेव, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (२) उत्तमांग, (एजायरईसा) को बलवान् कर्ता, (३) रुधिरको सांद्रकर्ता, (४) इसके सम्पूर्ण कर्म प्रायः सेव जैसे हैं (निर्विषैल)

(२४९) गूगल

संस्कृत, गुग्गुलु, फारसी, बूयजहूदां अरबी, मिकलअर्जक, इंग्रेज़ी वेडल्यम् स्वरूप, काला और लाल, स्वाद, कडुआ, पहिचान, एक वृक्षका जमाहुआ प्रसिद्ध गोंद हैं, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता फेंफड़ेको और कलेजेको, दर्पनाशक, कतीरा और केसर, प्रतिनिधि, एलुआ और मरमकी मात्रा, ३॥ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) स्वच्छकर्ता, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) वायुको लयकर्ता, (४) बवासीरको लाभकर्ता, (५) लसयुक्त दोषोंको शोधनकर्ता, (६) गरदनका जिकड़ जाना, कण्ठकी पीड़ा, और स्निग्ध-कासको लाभकर्ता है, (७) इसकी धूनी कीड़ा मकोड़ाओंको भगादेतीहै, (निर्विषैल)

(२५०) गूलर

संस्कृत, उदम्बर, फारसी, समरापिस्ता और अंजीरआदम, अरबी, जमीज़, इंगेजी, केगट्री स्वरूप, कच्चा हरा और पका हुआ लाल होताहै, पहिचान, अंजरिके बराबर एक प्रसिद्ध फल है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर है तथा किसीके मतमें ठंडा है, हानिकर्ता, आमा-शयको और ज्वर उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, अनीसून और सिकंजबीन, गुण, कर्म, प्रयोग (१) इसका फल आध्मानकर्ता है, (२) अतृप्त कर, (३) चित्तभ्रम, सूखी खांसी, वक्षस्थलकी पीड़ा, तिल्ली और गुर्देकी पीड़ा को गुणकर्ता है, (४) मुखसे रुधिर आनेको लाभप्रद, (५) नेत्ररोगमें इसके पके फलोंको कीड़ों समेत खावे तो प्रायः गुणकर्ता हैं, (६) इसका अवलेह धांस,

श्वास और पुरानी खांसीको लाभकर्ता है, (७) इसके पिसेहुए पत्ते अतीसारके बद्धक हैं और लकड़ीकी राख उपदंशकी चटको गुणकर्ता है,(निर्विषैल)

(२५१) गेंदे का फूल

संस्कृत, पद्मचारिणी, **फारसी**, गुलसदवर्ग, **स्वरूप**, लाल और पीला तथा पत्ती हरी होतीहैं, **स्वाद**, फीका, तेज और तेज गंधियुक्त, **पहिचान**, इसका दिखनोट फूल वर्षाऋतुमें होताहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, दोनामरुआ, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पत्तोंके रसका फाड़ कानकी पीड़ाको गुणकर्ता है, (२) स्तनकी शोथको लयकर्ता, (३) मूत्रल, (४) इसके पत्तोंके काढे का गंडूष दांतोंकी पीड़ाका नाशक है, (५) इसके स्वरसका फाड़ नमक और कालीमिरच के साथ पीया जावे तो बवासीरको लाभकर्ताहै, (६) फूलकी बोंडीका चूर्ण १ तोले मिसरी और खालिस दहीके साथ देवे तो श्वास और खांसीकेलिये अनुभूत गुणकारी है, परन्तु इसको सेवन करते समय जलसे परहेज रक्खे, (निर्विषैल)

(२५२) गेरू (गवरूरा)

संस्कृत, गेरुक, **फारसी**, गिलेसुर्खमिसरी, **अरबी**, तीनुल्एहमरमग़रबी, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आंत और झिल्लीमें रोध उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, मस्तगी, **प्रतिनिधि**, गुलकबरसी, **मात्रा**, ५ माशे, ६ माशे और ७ माशे तक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) रूक्ष, (३) मलको पक्वकर्ता, (४) रुधिरका रुद्धक, (५) गरमीको शांतिप्रद,(६) प्रायः अवयवोंकी उष्णताको हरणकर्ता, (७) आंतोंकी लेखनता, जखम, वस्तिकी जखम, बवासीर और प्रमेहको गुणकर्ता है, (८) आर्त्तवका रुद्धक, (९) कृमिनाशक, (१०) इसका लेप शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(२५३) गेरूरा

फारसी, जाल और खरूक, **अरबी**, इख़्तफार, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त कडुआ और बुरा, **पहिचान**, गोबरका कीड़ा है जो कि वर्षामें होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका हिम आमाशय, आंत और कलेजेके दोषोंका रेचक, (२) जलोदरकेलिये अनुभूत गुणकर्ता, है (३) इसका स्वरस दृष्टिको बलप्रद है, (४) इसको बिच्छूके काटेपर मले तो गुणकर्ता है, (५) बिच्छूके विषको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२५४) गेंहूं

संस्कृत, गोधूम, **फारसी**, गंदुम **अरबी**, हन्त, **इंग्रेजी**, ह्वीट, **स्वरूप**, पीला, सफ़ेद और लाल, **स्वाद**, फीका और कुछ मीठा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और सम है,

हानिकर्ता, कब्जियतवालोंको, दर्पनाशक, सिर्का और कांजी, प्रतिनिधि, जौ, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसकी रोटी सुस्वास्थ्य के लिये सम्पूर्ण भोजनोंमें उत्तम है, (२) शुद्धि रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) इसकी मोटी रोटी आध्मानकर्ता है, (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६) गेंहूंको चवाकर गिलटियों पर लेप करे तो उनके मलको पक्कर्ता, अथवा लयकर्ताहै, (७)इसके आटेकी महेरी नीमके पत्तों के रसके फाड़में पक्करीहुई फोड़ा और बादको गुणकर्ता है,(८) इसका तैल दाद झांई और सफ़ेद दाग़ोंको लाभकर्ता है, (९) कच्चे गेंहूं आमाशयमें कृमि उत्पन्नकर्ता हैं, (निर्विषैल)

(२५५) गेंहूं जंगली

संस्कृत, वनगोधूम, **फारसी**, गन्दुमदश्ती, **अरवी**, दोसर, **स्वरूप**, बीज हरा और काला, **स्वाद**, कुछ कडुआ और फीका, गेंहूंके समान एक ओषधि है, और इससे लम्बी और कठोर होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरग और २ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, वृषणोंको, **दर्पनाशक**, गूगल और कतीरा, **प्रतिनिधि**, कालादाना, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आभ्यन्तर मलको पक्क और समपक्ककर्ता, (२) रेचक, (३) वायु और शोथको लयकर्ता, (४) रूक्षताकर्ता, (५) कठोर शोथको मृदुकर्ता, (६) उदरकृमिनाशक, (७) चाकसू और मिसरीके साथ इसका नेत्रांजन नेत्रके रोहेको और गुहेरीको हरणकर्ता है और गुणकर्ता है, (८) इसका लेप सूखी खुजली और कठिनशोथको गुणकर्ताहै तथा बालोंको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(२५६) गोखरू

संस्कृत, गोक्षुर, **फारसी**, खारखसक, **इंग्रेजी**, पेडाल्यमम्यूरेक्स, **स्वरूप**, हरा और पीला, **स्वाद**, कुछ कडुआ **पहिचान**, एक घासके प्रसिद्ध कांटे हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, तिल्लीको **दर्पनाशक**, वादाम **प्रतिनिधि**, खीरा और ककड़ीके बीज, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (२) वृक्क और वस्तिकी अश्मरी (पथरी) का नाशक, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता. (४) अपान वायुनिस्सारक, (५) कमरकी पीड़ा, जलोदर, और वातजगुल्मको गुणकर्ता, (६) शोथको लयकर्ता, (७) आर्त्तवप्रवर्त्तक है, (निर्विषैल)

(२५७) गोखरूका साग

संस्कृत, गोक्षुरशाक, **फारसी**, तरहखारखसक, **अरवी**, बुकुलुलखसक, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, तिल्लीको, **दर्पनाशक**, नमक, **प्रतिनिधि**, कुलफाका साग, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) द्रव (पतले)

रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) अधोवायु निस्सारक, (४) रसको अशुद्धकर्ता, (५) रक्तशोधक, (६) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (७) इसके ताजे रसका फांट (फाड़) प्रमेह और मूत्रदाहको लाभकर्ता है, (८) इसका लेप शोथके दाहको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(२५८) गोंडल

फारसी, बीरजद, **अरबी,** बरदी, **स्वरूप,** हरा और पीला, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** जिसके पत्ते खिजूरके जैसे होतेहैं और इसकी रस्सी भी बनातेहैं, एक घास है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता,** उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक,** शहद, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इसका जल दांतोंको स्वच्छकर्ता है, (२) रक्तस्रावका रुद्धक, (३) इसका चवाना प्याज की दुर्गंधिका नाशक है, (४) लेहसन और मद्यकी दुर्गंधिका नाशक, (५) इसके पत्तोंका लेप शोथको लयकर्ता है, (६) इसके जले हुए पत्ते सिरकाके साथ पीवे तो प्लीहके शोथको गुणकर्ता हैं, (निर्विषैल)

(२५९) गोंदनी

स्वरूप, इसका कच्चा फल हरा और पका हुआ लाल होताहै, **स्वाद,** कच्चा फल फीका और पका मींठा होताहै, **पहिचान,** फालसेकी बराबर लसयुक्त जिसमें फल होतेहैं एक वृक्ष होताहै, **प्रकृति,** ठंडा और तर, **हानिकर्ता,** इसके ऊपर जल पीना मूर्च्छा, हल्लास और आध्मान उत्पन्नकर्ता है, **दर्पनाशक, गुड़, प्रतिनिधि** लिहसोड़े, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) आन्तरिक मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (३) उदरकृमिनाशक, (४) कासको गुणकर्ता, (५) स्वरशोधक, (६) ओजवर्द्धक (७) वीर्यको सांद्रकर्ता, (८) इसकी पत्ती जड़ और डालीकी छाल मुंहके आनेको और मुहके दानोंको गुणकर्ता हैं, (६) पत्तोंकी राख व्रणोंको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२६०) गोभी

संस्कृत, गोजिह्वा **फारसी,** कल्लमरूमी, **अरबी,** क्रबनीत, **स्वरूप,** सफ़ेद और पीला, **स्वाद,** फीकी, **पहिचान,** फूलकी जातिकी एक प्रसिद्ध तरकारी है, **प्रकृति,** ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता,** बद्धक और रेचकशक्तिके साथ आध्मान उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक,** गरम मसाला, **प्रतिनिधि,** करमकल्ला, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अवयवोंको बलवान्कर्ता, (२) कफ, पित्त और रुधिरविकार नाशक, (३) प्रमेहको लाभकर्ता, (४) कास और फोड़ा फुंसियोंको गुणकर्ता, (५) मूत्रल, (६) मदको शांतिप्रद, (७) जलमें पिसे हुए पत्ते वमनमें रुधिर आनेको लाभ कर्ता हैं, (८) पत्तोंके काढ़ेकी धारासे सेक करना आमवात (गठिया) को गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२६१) गोमा

संस्कृत, द्रोणा, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, छत्तादार, गोलपत्तीकी और सफेद तथा दिखनोट घास है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिजाजको, **दर्पनाशक**, अनार, **प्रतिनिधि**, कईका शाक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) वात और कफके विकारोंकी नाशक, (३) पांडु (पीलिया) को गुणकर्ता, (४) अवयवोंके शोथको लाभकर्ता, (५) उदर कृमिनाशक, (६) अर्श (बवासीर) को लाभप्रद, (७) इसके शाकको पकाकर खाना क्षुधाप्रद है, (८) इसकेबीजोंका नाभिमें लेप करे तो अत्यन्त स्तम्भन कर्ता है, (निर्विषैल)

(२६२) गोश्त अबाबील (मयानीपट, टेरी)

फारसी, गोश्तपरस्तूक, **अरबी**, लहमुलखत्ताफ़, **स्वरूप**, कुछ काला **स्वाद**, लोनियां, **पहिचान**, उजाड़में रहने वाला गोरय्याके बराबर एक जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, सिकंजवीन, **प्रतिनिधि**, ममोला, **मात्रा**, * **गुण, प्रयोग**, (१) मांस, वृक्क और वस्तिकी अश्मरी (पथरी)का नाशक है, (२) पीलिया को लाभप्रद, (३) प्लीहरोगको गुणकर्ता, (४) रूपको स्वच्छकर्ता, (५) कांतिप्रद, (६) इसके स्वरसका नेत्रांजन दृष्टिको बलवान्कर्ता है, (७) वृषणोंमें पानी उतरनेको लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(*) सम्पूर्ण मांसोंकी मात्राओंको जठराग्नि का बलाबल बिचारकर देनी चाहिये ।

(२६३) गोश्त उल्लूका

संस्कृत, उल्लूकमांस, **फारसी**, गोश्तचुग़द, **अरबी**, लहमुलबूम **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, लोनियां और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, यह पक्षी उजाड़में रहता है मन्ददृष्टिके कारण दिनमें नहीं निकलता, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अनेक रोग उत्पन्नकर्ता, **मात्रा**, अभक्ष्य है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१)मनुष्यके सब कर्मोंमें इसका मांस त्याज्य है तथा विक्षिप्त और निर्बुद्धिकर्ता है, (२) इसका रुधिर अथवा पित्ता झाऊकी लकड़ी और शहदके साथ पीवे तो मूत्रकृच्छ्र और सोतेमें पेशाव निकलजानेको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२६४) गोश्त ऊंटका

संस्कृत, उष्ट्रमांस, **फारसी**, गोश्तशुतर, **अरबी**, लहमुलअवल, जमल, **स्वरूप**, कुछ नीला और ललोंई लिये, **स्वाद** लोनियां और कठोर, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्षहै, **हानिकर्ता**, दोषोंको दुष्टकर्ता, **दर्पनाशक**, उष्ण ओषधि, नमक और राई, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पिच्छिल, (२) गरिष्ठ और दीर्घपाकी, (३) वातज रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (४) ओ-

जको बलप्रद (५) शीतज्वर और ज्वरको लाभप्रद (६) कूल्हेकी पीड़ा, हलीमक और मूत्रके दाहको गुणकर्ता (७) इसकी चरबीका लेप बवासीरको गुणकर्ता है (८) इसकी पोंगीका गूदा इसीके बालोंमें सानकर हमूलकरना (वटिकाको गर्भाशयमें रखना) गर्भधारणमें सहायक है (९) इसके मूत्रको पीवे तो जलोदरको गुणकर्ता है (१०) इसके मदोन्मत्तताके समयका फेन (झाग) उन्मादको उत्पन्नकर्ता है (निर्विषैल)

(२६५) गोश्त बारहसिंघा

संस्कृत, न्यंकुमांस, **फारसी**, गोश्तगवज्न, **अरबी**, लहमुल्ईल, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीका और सूखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और आध्मान उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, धनियां, दही और घी, **प्रतिनिधि**, शुतरमुर्ग **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शीघ्रपाकी और ओजको बलवान्कर्ता (२) अतृप्तिकर (३) इसके आंसू जो कि नेत्रोंमें इकठ्ठे होकर जमजातेहैं वह विषके उत्तम दर्पनाशक हैं (निर्विषैल, पूंछ और खुर घातक हैं)

(२६६) गोश्त बाज

संस्कृत, शशघातक मांस, **फारसी**, गोश्तबाज़, **अरबी**, लहमुल्बाज़ी, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, खारी और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, कबूतरके बराबर एक घातक पक्षी है यह छोटे छोटे पक्षियोंको मारताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गुल्मको, **दर्पनाशक**, गरमबीज, **मात्रा**, अभक्ष्य, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी, (२) अतृप्तिकर, (३) शोथको लयकर्ता, इसके परोंकी राख घावको भरनेवाली है और बीट त्वचाके दागोंको स्वच्छ और प्रकाशवान् करनेवाली है, (निर्विषैल)

(२६७) गोश्त पांडक

संस्कृत, पांडुमांस, **फारसी**, गोश्तकूकू **अरबी**, गोश्तफाख़्ता और हिमामुल्तोफा, **स्वरूप**, लाल और गुलाबी, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, कबूतर जैसा एकपक्षी है परन्तु कंठावाला होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और निद्रानाशक, **दर्पनाशक**, घी, धनियां और सिरका, **प्रतिनिधि**, गोरय्या, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वृथा और दुष्ट दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (२) वृथा रसजनक, (३) इसका गाढा यूष जिसमें कि मांस अत्यन्त लगायाजावै वह कंप, पक्षवध, पादहर्ष, और बहुधा शीतके स्नायुरोगोंको गुणकर्ता है,(४) दुर्गंधित अपान वायुको सम्हारनेवाला (५) रोधका उद्घाटक,(६) विष्ठा और व्यंग (झाईं) को लाभप्रद, (७) शोथको लयकर्ता, (८) इसके परोंकी धूनी चौथय्या ज्वरको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(२६८) गोस्त विज्जू

फारसी, गोश्त कफ्तार, **अरबी**, लहमुल् जीश और अरजा, **स्वरूप**, कालापनलिये **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त और बेस्वाद, **पहिचान**, लोमड़ी जैसा एक जीव है जो कि चलनेमें लंग करता है बहुधा कबरस्तानमें मुर्दाओंके खानेको रहताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षा-में गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़े को, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, न्योला, **मात्रा**, अभक्ष्य, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके मांसका यूष सोया, नमक और घीके साथ खावे तो गठियाको गुणकर्ता है (२) ग्रीवास्तम्भ और ग्रीवाक्षेपको लाभप्रद, (३) स्तम्भ, जांघकी पीड़ा, पेरकी उंगली-की पीड़ा और दुर्गंधित अपान वायुको गुणकर्ता, (४) मांस और आमाशयकी शीतता, कफ, वातज्वर, गालोंकी पिलोंई, और शीतकी पीड़ाको लाभकर्ता, (५) इसका रुधिर उन्माद नाशक है, (६) इसकी वीट उन्मादकारक है, (७) इसका पित्ता त्रिदोषका रेचक है (उपविष)

(२६९) गोश्त बटेर

संस्कृत, वर्तीक मांस, **अरबी**, लहमुल् सम्मानी, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, नमकीन और सूखा, **पहिचान**, गोरय्याके बराबर एक पहाड़ी पक्षी है गरमी और बरसातमें अधिक होताहै, **प्रकृति**, सम है, और किसी-के मतमें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, वद्धक है, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, मुर्गीका छोटाबच्चा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) राजयक्ष्मा, ज्वर और तीनोंदोष (वात, पित्त, कफ,) के विकारोंका नाशक, (२) क्षुधाको उत्पन्नकर्ता, (३) आमाशयको बलवान्कर्ता, (४) कृश और निर्बल आंतोके मनुष्योंको इसका भक्षण करना अत्यन्त अनुकूल है, (५) ओज और प्रायः अवयवोंको बलवान्कर्ता है, (निर्विषैल)

(२७०) गोश्त बरकील

स्वरूप, पीला और मांस लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, गोरय्याके बराबर एक पक्षी है प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षा में रूक्ष है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमा-शयमें शीघ्र उतरनेवाला, (२) शुद्ध रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) वृद्धके लिये अत्यन्त अनुकूल भोज्य है, (४) ओजको बलप्रद, (५) विशेषतः कफ और पित्तके विकारोंका नाशक है, (निर्विषैल)

(२७१) गोश्त बतक

संस्कृत, कलहंस मांस, **फारसी**, गोश्तबतक और गोश्त अरवक, **अरबी**, लह-मुल्बत, **स्वरूप**, सफ़ेदी लिये, **स्वाद**, नमकीन और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, एक जलप्रिय प्रसिद्ध पक्षी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता और जल्दी सड़जाता है **दर्पनाशक**, गरममसाला, **प्रतिनिधि**, पिंडुकिया, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यन्त भोज्य, (२) उष्णवायु नाशक,

(३) ओजको बलप्रद, (४) शुक्रल (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) वृक्कको बृंहणकर्ता, (७) इसके पर और बाजू (भुजा) की भस्म कंठमालाको लयकारक है और बीट मुखकी श्यामता और झाईकी नाशक है, (निर्विषैल)

(२७२) गोश्त बकरी

संस्कृत छागल मांस, **फारसी**, गोश्तबुज, और गोश्तमेश, **अरबी**, लहमुल ग़ाग़र **स्वरूप**, गुलाबी और लाल, **स्वाद**, कुछ नमकीन और फीका, **पहिचान**, चार पांवका एक प्रसिद्ध पशु है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, वातप्रकृतिवालों को **दर्पनाशक**, बादाम और नारियल, **प्रतिनिधि**, बटेर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रसको समपक्वकर्ता, (२) स्वच्छ रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) उष्णप्रकृति वालोंको अनुकूल भोज्य है, (४) इसके सिरका भेजा (मस्तिष्क) अत्यन्त स्निग्धताको उत्पन्नकर्ता, (५) मस्तिष्कको मृदुकर्ता, (६) इसका चालीस दिनका बच्चा कृश और वृद्ध मनुष्योंको अत्यन्त लाभप्रद और अनुकूल है, क्योंकि इसमें गरमी कम होतीहै (७) इसके पित्ते का नेत्रांजन नक्तांध्य (रतौंधी) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(२७३) गोश्त बगुला

संस्कृत बकमांस, **फारसी**, गोश्त बूतीमार, और ग़मखुरक, **अरबी**, लहमुल बहालिकुल्बहरी और शिफ्तेनुल्बर्री **स्वरूप**, सफ़ेद और भूरा तथा मांस सफ़ेद और गुलाबी होताहै, **स्वाद**, फीका और वासयुक्त, **पहिचान**, कबूतरके बराबर एक पक्षी है तलाब और झीलकी मच्छियोंको मारकर खाता है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, गरम मिजाजवालोंको और वातल है **दर्पनाशक**, धनियां, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) शुद्ध रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) रुद्धकशक्ति और इंद्रियोंको बलप्रद, (४) भूला मारेहुए मनुष्योंको अनुकूल है, (५) धारणा शक्तिका वर्द्धक, (६) ओजके बलको चालनकर्ता (७) इसकी चरबीकी मालिश अर्शके रुधिरकी रुद्धक है (निर्विषैल)

(२७४) गोश्त बुलबुल

फारसी गोश्तहज़ारदास्ता, **अरबी**, लहमुलअंदलीप और अनादिल, **स्वरूप**, कालापनलिये भूरा, **स्वाद**, नमकीन, **पहिचान**, अत्यन्त सुरीला प्रसिद्ध पर्वती पक्षी है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिजाज़वालोंको, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजको चालनकर्ता, (२) इसका अंडा और मस्तिष्क दोनों अधिक ओजप्रद हैं (३) इसकी बीट त्वचाके चिन्होंको स्वच्छ और प्रकाशवान् कर्ता है, (४) मुखकी झाई का नाशक, (५) स्वरूपको स्वच्छ और उत्तमकर्ता, (६) पलकोंके बालोंको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२७५) गोश्त बिल्ली

संस्कृत, मार्जार मांस, फारसी, गोश्त-गुर्वह, अरबी, लहमुल्सनूर, स्वरूप, रंगबिरंगी, और मांस गुलाबी होताहै, स्वाद, बेस्वाद और दुर्गंधियुक्त, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, स्निग्धताधिक्यके साथ २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, कृशता और उरःक्षत उत्पन्नकर्ता, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मांस बढ़ानेवाला (२) शीतप्रकृतिवालोंको और स्निग्ध आमवातवालोंको अनुकूल है (३) पादांगुलि पीड़ा और अंडकोशोंके बढ़नेको गुणकर्ता है, (४) गुर्देको गरम करनेवाला, (५) बवासीर और पीठकी पीड़ाको लाभप्रद, (६) इसका चमड़ा गरम और रूक्ष है तथा शरीरको गरम करनेवाला है (७) काली बिल्लीका पित्ता गुलशव्वोंके तैलके साथ आर्दितरोग और सफ़ेद बालोंको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२७६) गोस्त बन्दर

संस्कृत, वानरमांस, फारसी, गोश्त बूज़ीनह, अरबी, लहमुलक़र्व, स्वरूप, लाल, स्वाद, बेस्वाद और दुर्गंधियुक्त, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसके रुधिरकी मालिश बालोंको उत्पन्नकर्ता है, (२) यदि इसके मांस और रुधिरको सेवन करें तो तत्काल गूंगा होजाता है । परन्तु यह दोनों ताजे और गरमागरम होनेचाहिये (उपविष)

(२७७) गोश्त बहरी

अरबी, शांहीं, स्वरूप, भूरा और मांस लाल, स्वाद, कड़वास लिये दुर्गंधियुक्त, पहिचान, बाजकी जातिका चीलके बराबर प्रसिद्ध पक्षी है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, मात्रा, अनुचित, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रूक्षताकर्ता (२) स्निग्ध और कफप्रकृतिवालोंको अनुकूल है (३) वातल (४) क्रोध और कार्श्यकर्ता है, (निर्विषैल)

(२७८) गोश्त भैंस

संस्कृत, माहिषमांस, फारसी, गोश्त गावमेश, अरबी, लहमुल्जामूश, स्वरूप, कालापनलिये लाल, स्वाद, नमकीन, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, आध्मानकर्ता और वातल, दर्पनाशक, दालचीनी, कवाबचीनी और क़र्ड़, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पिच्छल और दीर्घपाकी, (२) वातज दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (३) मिहनती आदमीको और गुर्देकी कमजोरीको लाभप्रद (४) इसके बच्चेका मांस कम पिच्छल है और पथ्य है, (निर्विषैल)

(२७९) गोश्त भेड़

संस्कृत, एडकमांस, फारसी, गोश्त मेश और गोसफन्द, अरबी, लहमुल्जां, स्वरूप, सफ़ेदी लिये गुलाबी, स्वाद, फीका पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कक्षामें

गरम और तर, हानिकर्ता आध्मानकर्ता, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शीघ्रपाकी, (२) अत्यन्त भोज्य, (३) गाढ़े और कठोर रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (४) अवयवोंको बलप्रद, (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) शोथ और वातज जलोदरको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(२८०) गोश्त भेड़िया

संस्कृत, वृकमांस, फारसी, गोश्तगुर्ग, अरबी, लहमुल्ज़यब, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, दुर्गंधियुक्त, पहिचान, कुत्तेकी बराबर एक प्रसिद्ध हिंसक जीव है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, गुण कर्म, प्रयोग, (१) इसका कलेजा यकृत् संम्बन्धी रोगोंको गुणकर्ता है, (२) इसका कलेजा सिकंजवीनके साथ पीलियाको लाभप्रद है, (३) करफ्स (पहाड़ी पोदीना) और जलके साथ तिल्लीको गुणकर्ता है,(४) इसके पित्तेको चनेके बराबर बेसनके साथ खावे तो ओजको बलप्रद है (५) इसका लेप ओजप्रद है, (६) आक्षेप, अपस्मार और शीतसे उत्पन्नहुई स्नायुकी ऐंठनको गुणकर्ता है इसकी हड्डीका बुरादा प्रायः गुल्मको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(२८१) गोश्त टीड़ी

संस्कृत, शलभ मांस, फारसी, गोश्तमलख़, अरबी, लहमुल् जराउल्लेर, स्वरूप, लाल, स्वाद, नमकीन, पहिचान, एक प्रसिद्ध कीड़ा है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, दर्पनाशक, सिकंजवीन और अनारमैखुश, गुण,कर्म,प्रयोग, (१) ओजप्रद, (२) अशुद्ध दोषोंको स्वच्छकर्ता और शोधक, (३) फेंफड़ेके समीपके पर्दोंके रोगोंको लाभप्रद, (४) मूत्रकृच्छ्रको लाभप्रद, (५) इसकी धूनी बवासीर और मूत्रके रोधको गुणकारकहै, (६)इसका सेवन कुष्ठरोगको गुणकारक है (निर्विषैल)

(२८२) गोश्त तीतर

संस्कृत, तित्तिरमांस, फारसी, गोश्ततैदू, अरबी, लहमुल्दुर्राज, स्वरूप, सफ़ेदी लिये, स्वाद, नमकीन, पहिचान, बटेरके समान और कबूतर जैसा एक सफ़ेद पक्षी है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, दर्पनाशक,खटाई, प्रतिनिधि,बटेर,गुण,कर्म, प्रयोग, (१) मस्तिष्कको अधिक गुणकर्ता, (२) ज्ञान, बुद्धि और धारणाशक्तिका वर्द्धक, (३) शीत और स्निग्ध आमाशयको बलप्रद (४) ओजप्रद, (५) रसको संपककर्ता (६) इसकी बीट नेत्रोंकी सफ़ेदीको स्वच्छकर्ता है (७) त्वचाके चिह्नोंको हरणकर्ता है (निर्विषैल)

(२८३) गोश्त तेंदुआ

संस्कृत, बालीकमांस, फारसी, गोश्तपलंग, अरबी, लहमुल्नमर, स्वरूप, लाल, स्वाद, दुर्गंधियुक्त, पहिचान, कुत्ते की बराबर शेर जैसा अत्यन्त चालाक,बली

और घातकजीव है कोईभी पशु इसके मांसको नहीं खाता, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, शेर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी चरबीकी मालिश पक्षवध, पादहर्ष, आमवात, पैरकी उंगलीकी पीड़ा और शीतके स्नायुरोगोंको गुणकर्ता है, (२) इसके रुधिरका नेत्रांजन सम्पूर्ण नेत्ररोगोंको लाभप्रद है (३) इसके रुधिरका लेप त्वचाके चिन्ह, कालेदाग, झांई और मुखकी श्यामताका नाशक है, (उपविष)

(२८४) गोश्तचिड़िया (गोरय्या)

संस्कृत, चटकमांस, **फारसी**, गोश्तकुंजिश्व, **अरबी**, लहमुल्अस्फोर, **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिजाजवालोंको और अंतडीयोंको, **दर्पनाशक**, अनारका पानी और सिकंजवीन, **प्रतिनिधि**, बटेर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजको चालनकर्ता, (२)शरीरको बृंहणकर्ता, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, और स्वच्छभोज्यहै,(४) आमाशयको बलप्रद, (५) जलोदर, पक्षवध, यकृत्, कार्श्य और पीलियाको लाभप्रद (६) उपस्थको स्तम्भनकर्ता है, (निर्विषैल)

(२८५) गोश्तचकावक

फारसी, गोश्तजकावक, करकरा, **अरबी**, लहमुल्कीरतो और अब्बुलमलीह, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, नमकीन, **पहिचान**, रूपवान् और सुरीला जिसके शिरमें पिंडुकिया के जैसा मुकुट होताहै एक पक्षी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरममिज़ाजवालोंको, **दर्पनाशक**, कासनी, खट्टेफल और बादामरोग़न है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके मांसका यूष प्रकृतिको मृदुकर्ताहै, (२) इसके कबाब (सकिंचेंमें लगाकर सेका-हुआ मांस) को सेवन करना सदैव पथ्य है, (३) पक्षवध और वस्तिकी पीड़ाको गुणकर्ता, (४) इसकी सर्वांगभस्म पार्श्वशूल और हृदयशूलको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(२८६) गोश्त चकवाचकवी

संस्कृत, कारंडमांस, **फारसी**, गोश्तसुर्खाव, **अरबी**, लहमुल्ख़ाम और नहाफा, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीका और गंधियुक्त, **पहिचान**, चितकवरा और राजहंससे छोटा जलके समीप रहनेवाला एक पक्षी है **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, गरममिजाजवालोंको और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, सिरका और जौका यूष **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सांद्र और दृढरुधिरको उत्पन्नकर्ता, (२) शुक्रल (३) वीर्यको बलप्रद, (४) नेत्र और शिरको बलप्रद, (५) ओजको चालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(२८७) गोश्त चकोर

फारसी, गोश्तकब्क, कबह और मुर्ग़आतिशख़्वार, **अरबी**, लहमुल्हजल, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, स्वरूपवान्

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सुंदर चालका कबूतरके बराबर एकपक्षी है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता और मूत्ररुद्धक है, दर्पनाशक, सिकंजवीन और खटाई प्रतिनिधि, बटेर गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बहुधा अवयवोंको बलप्रद, (२) शीघ्रपाकी, (३) अतिभोज्य, (४) शुद्धरुधिरको उत्पन्नकर्ता, (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) ओजपद, (७) पक्षवध, अर्द्दित और मस्तिष्क सम्बन्धी शीतरोगोंको लाभप्रद (८) वक्षस्थलके शीतरोग और जलोदरको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(२८८) गोश्त चिमगादड़

फारसी, गोश्तशप्परह अरबी, ख़िफ्फास, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, दुर्गन्धियुक्त और कड़वा, **पहिचान**, एक अनोंखा पक्षी है और पक्षी जैसे इसके पर नहीं होते इसकी स्त्री (मांदा) ऋतुधर्मसे होती और दूध देती है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और ४ कक्षामें रूक्ष है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका पकायाहुआ यूप पीवका रेचक है (२) पित्त और रसका रेचक, (३) जलोदर और पसलीकी पीड़ाको लाभप्रद, (४) जीतून अथवा चमेलीके तैलमें इसका पकाहुआ हरीरा पक्षवध, वेपथु, आमवात और पीठकी पीड़ाको गुणकर्ता है, (५) पैरकी अंगुलीकी पीड़ाको लाभकर्ता, (६) शीतकी शोथको लयकर्ता, (७) इसकी जलाई हुई राख नेत्र की गरमी और जालेको गुणकर्ता है, (८) इसकी बीट बहुत ही गरम है परन्तु इसका नेत्रांजन दृष्टिको बलप्रद है, (उपविष)

(२८९) गोश्त ख़िच्चर

फारसी, गोस्तअस्तर, **अरबी**, लहमुल्बगल, **स्वरूप**, कालापनलिये लाल, **स्वाद**, नमकीन, **पहिचान**, गधेसे बड़ा और घोड़ेसे छोटा चार पांवका एक जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण कर्म, प्रयोग**, (१) आमवातको लाभकर्ता (२)इसकी चरबीकी मालिश पैरकी अंगुलीकी पीड़ा और जो पीड़ा चूतड़से पैरकी अंगुली पर्यंत होतीहै उसको लाभकारक है, (३) इसकी चरबीकी धूनी गर्भको गिरानेवाली है और मकानसे कीड़ा मकोड़ाओंको भगानेवाली है, (४) इसके मूत्र और कलेजेके स्वरसमें भिगोयाहुआ वस्त्र गर्भाशयमें रक्खेतो गर्भस्थितिका नाशक है (निर्विषैल)

(२९०) गोश्त खरगोश

संस्कृत, लंबकर्णमांस, **फारसी**, गोश्तख़रगोश, **अरबी**, लहमुल्अर्नबुल्बर्री, **स्वरूप**, सफ़ेद और गुलावी, **स्वाद**, सुस्वादु, **पहिचान**, बिल्लीसे छोटा और बहुतही गरीब एक मृदुजीव है इसके कान लम्बे होतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम है और किसीके मतमें ठंडा है, **हानिकर्ता**, वादी और गरमीके मिजाजवालों को, **दर्पनाशक**, घी और अनार, **प्रतिनिधि**, लोमड़ी, **गुण**, **कर्म**,

प्रयोग, (१) पक्षवध, अर्दित और स्तम्भको गुणकर्ता, (२) जिस जलमें यह पकाया जावे उस जलमें बैठजावेतो पैरके अंगुलीकी पीड़ा और गठियाको लाभप्रद है, (३) इसके बाल अपस्मारको गुणकर्ता हैं (निर्विषैल)

(२९१) गोश्त दुम्बह

संस्कृत, एडकमांस, **फारसी**, गोश्त दुम्बह, **अरबी**, लहमुल्कबश, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, सुस्वादु, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) गाढ़े रुधिर–को उत्पन्नकर्ता, (२) रसको संपककर्ता (३) अवयवोंको बलप्रद, (४) ओज-प्रद, (५) इसकी चरबी कठोर शोथको लयकरनेवाली है और शरीर तथा स्नायुको मृदु (मुलायम) करनेवाली है, (निर्विषैल)

(२९२) गोश्तरीछ

संस्कृत, ऋक्षमांस, **फारसी**, गोश्त खरस, **अरबी**, लहमुल्दब, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, घातक और बलवान् एक प्रसिद्ध जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका पित्ता रोधका उद्घाटक है, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) इसके पित्तेका पीना मिरगीको लाभप्रद है, (४) सोंफका फाड़ और शहदके साथ इसके पित्तेका नेत्रांजन दृष्टिको बलवान् कर्ता है, (५) नेत्रोंके जालेको गुणकर्ता है, (६) गिरे-हुए बालोंको प्रकटकर्ता है (उपविष)

(२९३) गोश्त सारस

संस्कृत, सारसमांस, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसके पांव, गर्दन और चोंच बहुत लम्बी होतीहै एक पक्षी है, **प्रकृति**, ठंडा और तर है तथा किसीके मतमें गरम और तर है, **हानिकर्ता**, मूत्र और पुरीषका रुद्धक है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अवयवोंको बलप्रद, (२) पित्त और रुधिरके विकारोंका नाशक है (निर्विषैल)

(२९४) गोश्त सांप

संस्कृत, सर्पमांस, **फारसी**, गोश्तमार, **अरबी**, लहमुल्हय्य, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाजवालोंको, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी चरबीका नेत्रांजन ढलका (आखमें पानी उतरने) को गुण-कर्ता है (२) जीतूनके तेलके साथ कंठ-मालाको लयकर्ता है (३) सिरकाके साथ गिरेहुए बालोंको प्रकटकर्ताहै, (४) इसके अंडोंको सिर्काके साथ लगानेसे सफ़ेद दागों-को लाभ होताहै, (सांपके पूंछ और मुख विषैल होतेहैं)

(२९५) गोश्त सेह

फारसी, गोश्त खारपुश्त, **अरबी**, लहमुल् फितना, **स्वरूप**, कालापन लिये लाल, **स्वाद**, बुरा और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**,

जिसके शरीरमें बालोंकी जगह कांटे होतेहैं लोमड़ीके बराबर चार पांववाला एक जीव है, प्रकृति २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, यकृत् और आमाशयको दुष्टकर्ता, दर्पनाशक, हरीरा और बादामरोग़न, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रूक्षताकर्ता, (२) दोषोंको अत्यन्त लयकर्ता, (३) मलको अंतडियोंपर नहीं गिरनेदेता, (४) यदि उचित औषधियोंके साथ सेवन कियाजावे तो पक्षवध, वेपथु, स्नायुके रोग और श्लीपदको लाभकर्ता है, (५) शीत और स्निग्ध प्रकृतिवालोंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(२९६) गोश्त सुरागाय

फारसी, गोश्तग़शग़ा, अरबी, लहमुल्बहल और बकरजबली, स्वरूप, लाल, स्वाद, नमकीन, पहिचान, भैंसजैसा चार पांवका एक पहाड़ी जीव है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, रुधिरको और वातल तथा पिच्छल दुष्टदोषोंको उत्पन्नकर्ता और कुष्ठ करनेवाला है, दर्पनाशक,सिरका, मुरब्बा और गरममसाला गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पूर्ण आहार है, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) इसकी चरबी पक्षवध, ग्रीवास्तम्भ, पैरकी अंगुलीकी पीड़ा और गठियाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(२९७) गोश्त संजाब

स्वरूप, कालापनलिये लाल, स्वाद, गंधियुक्त, पहिचान, चूहेसे बहुत बड़ा और छोटीपूंछवाला एक जंगली जीव है, प्रकृति, १ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, गुल्मको उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, बादामरोग़न, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका मांस गरमीको शांतिप्रद है, (२) वक्षस्थलकी पीड़ा, कास और जख़्मको गुणकर्ता, (३) इसका चमड़ा प्रकृतिको समकर्ता और संधिपीड़ाको लाभप्रद है, (४) इसके बालोंकी बुर्की व्रणपूरक और रुधिरकी रुद्धक है (निर्विषैल)

(२९८) गोश्त सूअर

संस्कृत, वाराहमांस, फारसी, गोश्तखोक, अरबी, लहमुल्तखजीर, स्वरूप, लाल और गुलाबी, स्वाद, नमकीन, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें तर है, हानिकर्ता, बुद्धिको, दर्पनाशक, मद्य और मिसरी, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रोधका उद्घाटक, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) पिच्छल और लसयुक्त दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (४) बुद्धिको विगाड़नेवाला, (५) श्लीपद और आमवातको उत्पन्नकर्ता, (६) इसकी चरबी नमक और मोमियायीके साथ बधिरताकी नाशकहै, (७) इसका रुधिर सम्पूर्ण कर्मोंमें मनुष्यके रुधिरके समान है,(८) इसकी चरबीका लेप उचित औषधियोंके साथ किया जावे तो शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(२९९) गोश्त शुतर्मुर्ग

फारसी, गोश्तशुतर्मुर्ग, **अरबी**, लहमुलनामह, **स्वरूप**, लाल और गुलाबी, **स्वाद**, नमकीन और सूखा, **पहिचान**, एक पक्षी है जिसकी गर्दन और पांव लम्बे होतेहैं और इसके शरीरकी संधियां उखड़ी जैसी होतीहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाजवालों-को और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, घी और सिरका, **प्रतिनिधि**, मोर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) कफशोधक, (३) पक्षवध, अर्दित जलोदर, स्तम्भ और पादांगुलिपीड़ाको गुणकर्ता, (४) आमवातको लाभप्रद, (५) इसके रुधिरका लेप शोथको लय-कर्ता है और बीट झाईं तथा चेचकके दाग़ोंकी नाशक है, (६) आमाशयको अत्यन्त बलप्रद है, (निर्विषैल)

(३००) शुतरगाव

फारसी, गोश्त अश्तर गाव, **अरबी**, लहमुल् ज़राफह, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, नमकीन, **पहिचान**, जिसकी गर्दन और पैर लम्बे तथा छोटे क़दवाला चार पांवका जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाजवालोंको और वातज दोषोंको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, इसीका पैर सहित पकायाहुआ हरीरा और खर्बूजा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशयको बलप्रद, (२) इसका पित्ता और पैर सहित पकायाहुआ हरीरा आंखके ढलकेको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३०१) गोश्त शेर और बघेरा

संस्कृत, व्याघ्रमांस, **फारसी**, गोश्त-शेर, **अरबी**, लहमुल्असद, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त और रूखा, **पहि-चान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी (२) शूरवीरता जनक, (३) इसकी चरबी-का लेप कमर, उपस्थ, वृषण और गुदा-को ओजप्रद है, (४) कंठमालाको गुणकर्ता, (५) कठोर और दुष्ट शोथको लयकर्ता, (६) इसकी पूंछका बाल विषेशतः घातक है, (उपविष)

(३०२) गोश्त तोता

संस्कृत, शुकमांस, **फारसी**, गोश्त-तूती, **अरबी**, लहमुल्बीग़ा, **स्वरूप**, हरा और लाल, **स्वाद**, रूखा और कसेला, **पहिचान**, हरे रंगका एक प्रसिद्ध पक्षीहै **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, गरम मसाला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पेटको गुंम करनेवाला (२) गिरने और पड़नेकी चोटको लाभप्रद, (३) झाईं-का नाशक, (४) खांसीको लाभकर्ता, (५) दीर्घपाकी (६) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (७) इसकी जीभ सुवचनता जनक और बालकोंकी जीभके तुतलाहटकी नाशक है,

(८) इसकी बीट झांई और मुखकी श्यामता की नाशक है, (निर्विषैल)

(३०३) गोश्त कुमरी

फारसी, गोश्तकुमरी, **अरवी**, लहमुल् कुमरी, **स्वरूप**, सफ़ेद और गुलावी, **स्वाद**, नमकीन, **पहिचान**, पिंडुकियाके वरावर एक पक्षी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, भ्रम और कुष्ठ उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, घी, बादाम और मृदु ओषधि हैं, **प्रतिनिधि**, वटेर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शीतप्रकृतिवालोंको अति अनुकूल है, (२) स्निग्ध और कफप्रकृतिवालोंको अनुकूल है, (३) इसका अंडा बालकोंके जल्दी बोलनेको अनुभूत गुणदायक है, (४) रुधिरको दुष्टकर्ता, (५) बालकोंके शरीरमें इसका निकाला हुआ तैल लगावे तो बालकोंको शीघ्रही चलनेवाले करदेता है, (निर्विषैल)

(३०४) गोश्त गाय

संस्कृत, गोमांस, **फारसी**, गोश्तगाव **अरवी**, लहमुल्बकर, **स्वरूप**, गुलाबी और लाल, **स्वाद**, कुछ गंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**, कालीमिरच और दालचीनी, **प्रतिनिधि**, नीलगाय, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी, (२) पिच्छल रसको असंपक्कर्ता, (३) दुष्ट रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (४) वातज रोगजनक, (५) आमवात और जो पीड़ा चूतड़से पैरकी अंगुली तक होतीहै उसको हानिकारक है, (६) मस्तिष्कमें अशुद्ध भापको चढ़ानेवाला है, (७) मसूड़े और होठोंमें शोथको उत्पन्नकरनेवाला है, (निर्विषैल)

(३०५) गोश्त कबूतर

संस्कृत, पारावत,मांस, **फारसी**, गोश्तकबूतर, **अरवी**, लहमुल् हमाम, **स्वरूप**, गुलावी, **स्वाद**, स्वादिष्ट, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है और जंगली कबूतरका मांस २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाजवालोंको, **दर्पनाशक**, धनियां और अंगूर, **प्रतिनिधि**, तीतर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पक्षवध, अर्दित, कम्प, पादहर्ष और स्तम्भको गुणकर्ता, (२) शुद्धशोणित जनक, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) वृक्क और वस्तिको बलप्रद, (५) ओजप्रद, (६) शुक्रल, (७) वातजरोग और जलोदरको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३०६) गोश्त कुत्ता

संस्कृत, श्वानमांस, **फारसी**, गोश्तसग, **अरवी**, लहमुल्कलव, **स्वरूप**, सफ़ेदीलिये, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका भुना हुआ कलेजा बावले कुत्तेके विषका नाशक है, (२) इसकी जीभकी राख

प्रमेहको गुणकारक है और मूत्र मार्गके क्षतका नाशक है, (३) इसकी चरबी कंठमालाको गुणकारक है, (उपविष)

(३०७) गोश्त कछुआ

संस्कृत, कूर्ममांस, **फारसी**, गोश्त-संगपुश्त, **अरबी**, लहमुल्सलख़फात, **स्वरूप**, सफ़ेदी लिये लाल, **स्वाद**, बसांदा, **पहिचान**, जलका एक प्रसिद्ध जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, आंतोंको, **दर्पनाशक**, शहद, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) कमरको बलप्रद, (३) आर्त्तवका रुद्धक, (४) वायुको लयकर्ता, (५) चीराके भरलानेमें जंद-वेदस्तरके समान गुणकारक है, (६) इसका लेप शोथको लयकारक है, (७) इसके ताजे रुधिरका पीना मिरगी और आक्षेपकको गुणकारक है,(८)इसके पित्तका लेप गलेके रोध और गर्भाशयके भिचनेको तथा दुष्ट व्रणोंको लाभप्रद है, (९) मिरगीवाले-की नाकमें इसके पत्तेको मलेतो लाभकारक है, (१०) इसके अंडेको सोंफके अरकमें देवे तो वृषणोंके शोथको लाभप्रद है, (११) इसकी हड्डी राख कांचके निकलनेको लाभप्रद है, (१२) इसकी पिसी हुई हड्डीकी बत्ती प्रदरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३०८) गोश्त गधा

संस्कृत, गर्धवमांस, **फारसी**, गोश्तखर, और दराज़गोश्त, **अरबी**, लहमुल्हिमार-एहली, **स्वरूप**, निलोंई लिये लाल, **स्वाद**, नमकीन और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी, (२) मिरगी, तिजारी और चौथय्या ज्वरको लाभप्रद, (३) इसकी चरबीका लेप व्रणके चिन्ह और अंतड़ीके घाव भरनेमें गुणकारक है, (४) इसकी लीद पीलियाको लाभकारक है और वस्ति एवं वृक्क की पथरीकी नाशक है, (५) गर्भको जेर सहित निकाले, (६) इसके खुरकी धूनी प्रसवकी कठिनताको गुणकारक है, (७) इसके खुरकी भस्मका लेप गुदाके चीराको और कंठमालाको गुणकर्ता है,(८) जीतूनके तेलके साथ आमवात (गठिया) को लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(३०९) गोश्त गिद्ध

संस्कृत, गृध्रमांस, **फारसी**, गोश्त कर्गस, **अरबी**, लहमुल्नसर, **स्वरूप**, निलोंईलिये लाल, **स्वाद**, बसांदा और नमकीन, **पहिचान**, मुर्दाओंको खानेवाला, दृढ़ अंगवाला और अत्यंत उड़नेवाला बड़ी अवस्थाका एक पक्षी है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, दोषोंको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, दालचीनी और सिरका, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका मांस पिच्छिलवात, गुल्म और अन्त्रियोंके सूक्ष्म रोधको लयकर्ता, (२) रोध उद्घाटक (३) पथरीका नाशक, (४) कफशोधक

(५) इसके अंडेका लेप ओजप्रद है, (६) इसकी बीट झांई और मुखकी श्यामताकी नाशक है, (७) कंठमालाको लयकर्ता, (८) इसके पंखोंकी भस्मको तेलके साथ लगावे तो गीली और सूखी खाजको तथा व्रणको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(३१०) गोश्त कुलंग

संस्कृत, कुलंगमांस **फारसी**, गोश्त कुलंग, **अरबी**, लहमुल्कर्की, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, सूखा और रूखा, **पहिचान**, जलके समीप रहनेवाला और सारसके समान एक पक्षी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और पिच्छल-दोष जनक है, **दर्पनाशक**, सिर्का, जल और नमक, **प्रतिनिधि**, सारस, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रोधउद्घाटक, (२) शरीरको बलप्रद, (३) गुल्मको लयकर्ता और लाभप्रद, (४) इसके भेजेका नेत्रांजन रतौंधीको लाभप्रद है, (५) इसके भेजेका लेप सफ़ेद दाग़ और खुजलीको गुणकर्ता है, (६) इसके पित्तेको चमेलीके तैलमें पीसकर एक जौके बराबर खावे तो विस्मृतिको गुणकारक है और शिरके सफ़ेद बालोंको लाभप्रद है, (७) इसकी चरबीको सिर्का और जंगली प्याज़-के साथ खानेसे तिल्लीके कड़ेपनको लाभ होता है, (निर्विषैल)

(३११) गोश्त गोरख़र

फारसी, गोश्तगोरख़र, **अरबी**, लहमुल् हिमारुल्वहश, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, नमकीन, **पहिचान**, गधाके समान और उससे बड़ा चारपांवका एक जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, पिच्छल और वातजनक, **दर्पनाशक**, नमक, दालचीनी और सोंठ, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) सम्पूर्ण कर्मोंमें घरेलू गधा जैसा है, (२) स्त्रीके दूधके साथ इसकी चरबीका लेप बालकोंके अत्यंत रोनेको बहुत गुणकारक है, (३) केवल इसकी चरबीका लेप मुखकी श्यामता और दादको गुण-कारक है, (४) इसके पित्तेका लेप बालोंके उखाड़नेको और पिंडलीकी नस फूलनेकी पीड़ाको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(३१२) गोश्त कोकिला (कोयल)

संस्कृत, पिकमांस, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, बसांदा और रूक्ष, **पहिचान**, कौआके बराबर एक काला पक्षी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वातल, **प्रतिनिधि**, कौआ, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका मांस बद्धक है, (२) कोष्ठबद्धकर्ता, (३) शरीरको बलप्रद, (४) वायु और कफके विकारों-का नाशक, (५) इसके परोंकी भस्म व्रणोंकी शोषक और पूरक है, (निर्विषैल)

(३१३) गोश्त गोह

संस्कृत, गोधामांस, **फारसी**, गोश्त-सूसमार, **अरबी**, लहमुल्सब, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, बसांदा और कुछ कड़ुआ

पहिचान, बिल्लीके बराबर और पूंछदार नौला की जातिका एक जीव है, प्रकृति, २कत्तामें गर्म और रूत्त, हानिकर्ता, व्याकुलताप्रद, दर्पनाशक, गेरू घी और सिर्का, प्रतिनिधि, सांड़ा, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका मांस अत्यन्त उष्णताप्रद है, (२) क्रोध और कोपको उत्पन्नकर्ता, (३) इसकी बीटका नेत्रांजन नेत्रके जाले और मोतियाबिंदको गुणकारक है, (४) सिर्काके साथ इसका लेप व्यंग और काले दागों को गुणकर्ता है, (५) इसकी चरबी ओजप्रद है और ओजको चालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(३१४) गोश्त घोड़ा

संस्कृत, अश्वमांस, फारसी, गोश्तअस्प, अरबी, लहमुलफरस, स्वरूप, लाल, स्वाद, नमकीन, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कत्तामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, दर्पनाशक, इसीको उबालना, मठा और खट्टा अनार है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसके मांसका सेवन करना बहादुरी और वीरताको उत्पन्नकर्ता है, (२) हृदयमें कठोरता उत्पन्नकर्ता, (३) इसका कबाब शीतप्रकृतिवालोंको ओजप्रद है, (४) इसकेमांसकी भस्म स्निग्धप्रकृतिवालोंके अतिसारकी बद्धक है और रुधिर तथा विस्फोटक इत्यादिको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३१५) गोश्त गेंड़ा

संस्कृत, गंडमांस, फारसी, गोश्तकरगदन, अरबी, लहमुल्सरमीस, स्वरूप, लाल और कालापनलिये, स्वाद, कड़ा और तीखा, पहिचान, सूअर जैसा चार पांवका एक प्रसिद्ध जीव है, परन्तु इसके शिरमें एक सींग होताहै और चूतड़की खाल अति कठोर होतीहै, प्रकृति, २ कत्तामें गरम और रूत्त, हानिकर्ता, घातक है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अवयवोंमें अत्यन्त शिथिलता उत्पन्नकर्ता और मृत्युका कारण है, (२) इसका सींग बवासीर और प्रसवके कष्टको गुणकारक है, (३) इसकी चरबीका मर्दन वीरताको प्रकटकर्ता है, (४) इसकी खालका तैल तितलीके तैलके साथ व्रणपूरक और गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३१६) गोश्त लड़ूरा

फारसी, गोश्तकारकीना, अरबी, लहमुल्शक्राक़, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, नमकीन, पहिचान, गौरय्यासे बड़ा और हिंसक एक पक्षी है. प्रकृति, गरम और रूत्त है, हानिकर्ता, उष्णप्रकृतिवालोंको शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, सिकंजवीन, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पिच्छलवात और कफके बहिर्मलको, अत्यन्त लयकारक, (२) दीर्घपाकी, (३) इसकी बीटका लेप मुखकी स्याही और झाईका नाशक है, (निर्विषैल)

(३१७) गोश्त लक़्लक़्

फारसी, गोश्तलक़्लक़, **अरबी**, लहमुल्लक़्लक़, **स्वरूप**, कालापनलिये लाल, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, दृढ़ अंगवाला एक जलका पक्षी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाज वालोंको, **दर्पनाशक**, घी और धनियां, **प्रतिनिधि**, मोर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पक्षवध, अर्दित और पादहर्षको गुणकर्ता, (२) पिच्छलवायुको लयकर्ता, (३) कदाचित् किसी अवयवमें शीत स्थित होगयाहो तो उसका नाशक है, (४) ओजके मांद्यको गुणकर्ता, (५) इसका अंडा मांससे अधिक गुणकारक है, (६) काले दागोंको गुणकर्ता, (७) इसकी बीट झांई और त्वचाके रोगोंकी नाशक है, (निर्विषैल)

(३१८) गोश्त लवा

संस्कृत, लवामांस, **अरबी**, लहमुल्सलवी, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, नमकीन और रूक्ष, **पहिचान**, पिंडुकियाकी बराबर और वैसेही रूपका एक पक्षी है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और बद्धक, **दर्पनाशक**, सिर्का और घी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) हृदय और यकृत्को बलप्रद, (२) क्षुधावर्धक, (३) कार्श्यवालोंको अनुकूल भोज्य है (४) रोध उद्घाटक, (५) जलोदर और पिच्छल वातको लयकर्ता, (६) पक्षवधको गुणकर्ता, (७) आंतोंकी सर्दीका नाशक, (८) स्नायुओंकी सर्दी और ओजको चालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(३१९) गोश्त लोमड़ी

फारसी, गोश्तरोबाह, **अरबी**, लहमुल्सालब, **स्वरूप**, कालापनलिये, लाल, **स्वाद**, बसांदा और दुर्गन्धियुक्त, **पहिचान**, बिल्लीके बराबर चारपैरका एक जीव है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, खाया नहीं जाता और किसी को विष है, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन, चाशनीदारअनार और मठा, **प्रतिनिधि**, न्यौला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसको जीताही पकड़कर और हाथ पैर बांधकर जलमें डालकर खूब पकावे जब गलकर टुकड़े २ होजावें तब उस जलसे सेके तो पैरकी अंगुलीकी पीड़ा और गठियाको गुणकर्ता है, (२) इसकी चरबी जैतूनके तैलके साथ मले तो कानकी पीड़ा और गठियाको गुणकर्ता है, (३) इसकी जलाईहुई खाल आगके जलेहुएको और बवासीरवालोंको तथा व्रणवालोंको गुणकर्ता है, (४) इसके मांसका सेवन जळज जलोदरको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३२०) गोश्त मुर्ग़ाबी

संस्कृत, जलकुक्कुटमांस, **फारसी**, गोश्तमुर्ग़ाबी और क़ाज़, **अरबी**, लहमुल्अदज और तैरुल्माय, **स्वरूप**, अत्यंत लाल, **स्वाद**, बसांदा और नमकीन, **पहिचान**, एक जलका पक्षी है इसकी कितनीही जाति होतीहैं

प्रकृति, गरम और तर, हानिकर्त्ता, आध्मानकर्ता और दीर्घपाकी, दर्पनाशक, जल और अनार, प्रतिनिधि, बतक, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अनहित भोजन है, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) ओजको चालनकर्ता, (४) इसकी चरबीकी मालिश गलरोध और आक्षेपकको गुणदायक है, (५) शीतके शोथको और गुदाकी कठोरताको लयकर्ता, (६) गुदाके चीराको लाभप्रद, (७) त्वचाके दागोंको हरणकर्ता, (८) इसका भेजा गुदाके शोथमें लगावे तो गुणकारक है, (निर्विषैल)

(२२१) गोश्त मुर्ग़ा और मुर्ग़ी

संस्कृत, कुक्कुटमांस फारसी, गोश्तमांकियां और खरूस, अरबी, लहमुद्दुजाजवद्दीक, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, कुछ बसांदा, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और स्निग्धतामें सम है, हानिकर्त्ता, बवासीर और पैरकी अंगुलीकी पीड़ाको प्रकटकर्ता, दर्पनाशक, घी, प्रतिनिधि, कबूतर, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अतिभोज्य (२) बुद्धिवर्द्धक और बुद्धिमें तीक्ष्णताकर्ता, (३) अत्यन्त शुक्रल, (४) मस्तिष्क और बुद्धिको बलप्रद, (५) ओजवर्द्धक, (६) गुल्मको लाभप्रद, (७) रूप और स्वरका शोधक, (८) इसके पेटको चीरकर और भीतरसे स्वच्छ करके गरम २ ही सांपके काटेकी जगहपर बांधदेवे तो उसके विषको हरणकर्त्ता है, (९) कफज्वर और सन्निपातज्वरको गुणकर्ता है (निर्विषैल)

(३२२) गोश्त ममोला (ठपकी)

फारसी, गोश्तसरीचा और सगाना, अरबी, लहमुल्फरागून और सावह, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, नमकीन, पहिचान, एक अत्यन्त छोटा पक्षी है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्त्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, प्रतिनिधि, लटूरा, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसको भूनकर शहदके साथ सेवन करे तो वृक्क और वस्तिकी पथरीका नाशक है, (२) मूत्रल, (३) मूत्रकृच्छ्रको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३२३) गोश्त मोर

संस्कृत, मयूरमांस, फारसी, गोश्तताऊस, अरबी, लहमुल्ताऊस, स्वरूप, कालापनलिये लाल, स्वाद, बसांदा, पहिचान, चोटीदार और रूपवान् एक प्रसिद्ध पक्षी है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, दीर्घपाकी और पिच्छल है, दर्पनाशक, गरम मसाला गुण, कर्म, प्रयोग, (१) आमाशयको बलप्रद, (२) इसका यूष पार्श्वशूलको गुणकर्ता है, (३) इसकी चरबीका लेप ओजको चालनकर्ता है (४) इसकी हड्डीकी राखका मंजन दांतोंको दृढकर्ता है, (५) इसके पित्तेको सिकंजबीनके साथपीवे तो पुराने दस्तोंका बद्धक है

(६) इसके रुधिरका लेप व्रणपूरक और व्रणको लाभकारक है, (७) इसकी बीटका मर्दन झाई और मस्सोंका नाशक है, (८) इसकी पूंछका नेत्रांजन उत्तम होताहै, (निर्विषैल)

(३२४) गोश्त मद्दू

फारसी, गोश्तफालनहवह, **अरबी**, लहमुल्अककअौर अक्कक्अ, **स्वरूप**, कालापनलिये लाल, **स्वाद**, बसांदा और बेस्वाद, **पहिचान**, कौआके समान एक काला पक्षी है और कोई २ जंगली कौआ बताते हैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, कौआ, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) धारणाशक्तिको बलप्रद, (२) इसके सिरका भेजा बालकोंकी बुद्धिका वर्द्धक है, (३) इसके पित्तेका पानी आंखमें गेरे तो दृष्टिको बलप्रद है, (४) नेत्रव्रणको गुणकर्ता (५) इसके पित्तेका नेत्रांजन करनेवाला जगत्में प्रिय होताहै, (६) इसकी बीट झाई और कालेदागोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३२५) गोश्त कौआ

संस्कृत, काकमांस, **फारसी**, गोश्तज़ाग़, **अरबी**, लहमुल्ग़राबुलअस्वद, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्त्ता**, फेंफड़ेको और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, गरम मसाला, **प्रतिनिधि**, चील, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यन्त लघु, (२) इसके यूषका पान पिच्छल वायु और गुल्मका नाशक है, (३) इसके यूषमें बैठना वायुको लयकर्ता है, (४) इसकी बीट दृष्टिको बलप्रद और झाईकी नाशक है, (५) काले कौएको एक बर्त्तनमें रक्खे और ऊपरसे लोहचूर्ण और खटाईका पानी तथा तीक्ष्ण सिर्का डालकर मुख बंद करके चालीस दिन घोड़ेकी लीदमें दबादेवे तो वह तैल होजावेगा यह उत्तम खिज़ाब (केशरंजन)है (खाना उचित नहीं है)

(३२६) गोश्त मगरमच्छ घड़याल

संस्कृत, घंटिकमांस, **फारसी**, गोश्तनिहंग, **अरबी**, लहमुल्तमसाह्, **स्वरूप**, गुलाबी और सफ़ेद, **स्वाद**, कडुआ और बसांदा, **पहिचान**, दृढ़ अंगवाला और बली तथा कांटेयुक्त एक जलका जीव है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, अपक्करसको उत्पन्नकर्ता, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका मांस ओजको बलप्रद, और ओजको चालनकर्ता है, (२) पतले और दुबलेकौए का मांस बृंहणकर्ता है, (३) गुल्मको लाभकर्ता, (४) इसकी लीद आंखके जालेको गुणकरती है, (५) इसकी चरबी गुलरोग़नके साथ शिरःपीड़ा और आधासीसीको लाभप्रद है (६) कानमें डालनेसे बधिरता और कर्णपीड़ाको गुणकारक है, (७) इसकी मालिशवृक्कशूल और कटिशूलको गुणकारक

है (८) इसके दाहनी तरफके दांतको दाहनी भुजामें बांधे तो प्रायः विषयशक्तिको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३२७) गोश्त नीलगाय

संस्कृत, नीलांगकमांस, फारसी, गोश्तनीलागाव, अरबी, लहमुल्बक़रुलवहश, स्वरूप, कालापनलिये गुलाबी, स्वाद, नमकीन, पहिचान, गायके बराबर और गोरखरके समान एक चार पांवका जीव है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, हानिकर्ता, आध्मानकर्ता, दर्पनाशक, गरम मसाला, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शीघ्रपाकी, (२) वातल, (३) मूत्रल, (४) शीतप्रकृतिवालोंको और ओजको बलप्रद (५) इसके सींगकी राख कतीराके साथ रक्तस्राव और रक्तप्रदरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३२८) गोश्त नीलकंठ (कटनास)

संस्कृत, नीलकंठमांस फारसी, गोश्त सब्जक, स्वरूप, नीला, स्वाद, बसांदा, पहिचान, कबूतरके बराबर और कालापनलिये एक नीला पक्षी है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वातल, (२) वात और कफके विकारोंका नाशक, (३) रुधिर प्रकोपको लाभप्रद, (४) उपदंशमें इसके मांसका सेवन गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३२९) गोश्त न्योला

संस्कृत, बभ्रुमांस, फारसी, गोश्तरासू अरबी, लहमुल्इबनुलअर्स, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, गंधियुक्त, पहिचान, चूहेके समान और उससे लम्बा मोटी पूंछवाला एक जीव है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, दर्पनाशक, सिर्का, प्रतिनिधि, गोह, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) न्योलाको मारकर और उसके पेटको चीरकर भीतरसे साफ करके ज़ैतूनके तैलमें इतना पकावे कि बिलकुल घुलजावे फिर उस तैलको छानकर रखलेवे और पैरकी अंगुलीकी पीड़ापर मले तो लाभप्रद है और बवासीरकी वायुको लाभप्रद है, (२) इसी तैलको उपस्थ और कमरमें मले तो ओजके लिये अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३३०) गोश्त पोई (नकचकनी)

फारसी, गोश्तवाक, स्वरूप, गुलाबी स्वाद, बसांदा, पहिचान, बिलस्तभरका लंबा एक जलका जीव है इसके शिरमें अलकावली जैसी लटकती है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, दर्पनाशक, खट्टे फल और सिंकजबीन, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वायुको लयकर्ता, (२) पक्षवधको अत्यन्त गुणदायक है, (३) इसके तैलकी मालिश पक्षवधको लाभप्रद है (४) इसका पिता आंखके जालेको और काले दाग़ोंको गुणकारक है, (५) इसका मांस बवासीरको अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३३१) गोश्त हाथी

संस्कृत, हस्तिमांस, फारसी, गोश्त-फील, अरबी, लहमुल्फील, स्वरूप, ललोईलिये काला, स्वाद, नमकीन और बेस्वाद, पहिचान, अत्यन्त स्थूल शरीरका सूंढ़ वाला और चार पैरोंका प्रसिद्ध पशु है, प्रकृति, २ कत्तामें ठंडा और रूक्ष है गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसके पित्ते-का नेत्रांजन दृष्टिको कांतिप्रद और बलप्रद है, (२) इसका नख नेत्रके जालेको लेखन-कर्ता है, (३) इसके मूत्रका पान गर्भधारणकेलिये अनुभूत गुणकारक है, (४) इसकी लीदकी बत्ती गर्भको नहीं रहने देती (५) इसकी लीदकी धूनी पुराने ज्वरको लाभप्रद है, (६) इसकी खाल ज्वरोंको गुणकारक है, (७) इसके दांतोंके बुरादेको ऋतुस्नानके पीछे यदि स्त्रीको सेवन करावे तो गर्भस्थति-मद है, (निर्विषैल)

(३३२) गोश्त हुदहुद

फारसी, गोश्तमुर्गसुलेमां और बूबक, अरबी, लहमुल्हुदहुद, स्वरूप, गुलावी, स्वाद, कुछ बसांदा, पहिचान, काली बुंदकीदार और मुकुटवाला एक पक्षी है, प्रकृति, १ कत्तामें गरम और रूक्ष, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रोधका उद्-घाटक, (२) गुल्म और मरोड़ाको गुणकर्ता, (३) वस्ति और वृक्कमें जमे-हुए रुधिरको लयकर्ता, (४) इसके हृदयको ताज़े घीमें तलकर शहदके साथ सेवन करे तो बुद्धि और धारणाशक्तिको बलप्रद है, (५) इसका सूखा हृदय (दिल) ओजको बलवान् कर्ता है, (६) इसके पित्तेका नेत्रांजन आंखके जालेको लाभप्रद है, (७) इसको मारकर दरवाजेमें लटकादेवे तो जादूको हरणकर्ता है, (८) बाल और अपस्मारको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३३३) गोश्त हड़कीला

फारसी, गोश्तमुर्दारख़्वार, अरबी, लहमुल्रहमा, स्वरूप, लाल, स्वाद, दुर्गंधियुक्त, पहिचान, गिद्धके समान एक-जीव है जिसकी गरदनमें गरमीसे भरी हुई १ थैली होतीहै प्रकृति, २ कत्तामें गरम और १ कत्तामें रूक्ष है, हानिकर्ता, तृषाको उत्पन्नकर्ता और दोषरोधक, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसकी सूखीखालकी बुर्की रक्तस्रावको गुणप्रद है, (२) व्रणपू-रक, (३) सिरकाके साथ दादको लाभ-प्रद, (४) रोग़न बनफ्साके साथ आ-धासीसीको गुणकारक है, (५) इसकी बीटकी बत्ती गर्भको गिरानेवाली है, (६) आर्त्तवप्रवर्त्तक, (७)इसका संगदाना (एक पत्थर है जो कि इसके पेटसे निकलता है) सिर्काके साथ सफ़ेद दाग़ोंको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(३३४) गोश्त हिरन

संस्कृत, हरिणमांस, फारसी, गोश्त-

आहू, अरबी, लहमुल्जर्वह और अलग़िज़ाल, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, रूखा और फीका, पहिचान, चारपैरका १ प्रसिद्ध पशु है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, दीर्घपाकी और गुल्मको उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, सिकंजवीन और खट्टे फल, प्रतिनिधि, गोमांस, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) सम्पूर्ण कर्मोंमें मनुष्यकी प्रकृतिके अनकूल है, (२) अत्यंतभोज्य, (३) रूक्षताकर्ता, (४) पक्षवध, स्तम्भ और शीतके रोगोंको गुणकर्ता (५) इसकी चर्म (खाल) पर वैठना ओजको न्यून करनेवाला और कीड़ा मकोड़ाओंको भगानेवाला है, (निर्विषैल)

(३३५) गोश्त हंस

संस्कृत, हंसमांस, अरबी, लहमुल्राञान, स्वरूप, गुलाबी, स्वाद, कुछ वसांदा, पहिचान, सारसके समान और उससे लम्बीनारका एक जलका पक्षी है, प्रकृति, गरम और तर, हानिकर्ता, आध्मानकर्ता और दीर्घपाकी, दर्पनाशक, गरम मसाला, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका मांस ओजप्रद है, (२) क्षुधावर्द्धक, (३) अवयवोंको वलप्रद, (४) पित्तकी तीक्ष्णताको हरणकर्ता, (५) स्वरशोधक, (६) मुखके रूपको कांतिप्रद और वातरक्तको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(३३६) घी

संस्कृत, घृत, फ़ारसी, रोग़नज़र्द, अरबी समन और जवद, स्वरूप, सफ़ेद और पीला तथा चिकना, स्वाद, फीका, पहिचान दूधको जमाकर और मथकर छाछके द्वारा चिकनाई निकालतह, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और तर, हानिकर्त्ता, आमाशयमें शैथिल्य और अरुचि उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, नमक और शहद, प्रतिनिधि, ताज़ा दुग्ध, मात्रा, ५ तोले, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) अंतर्मलको समपक्ककर्ता, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) अवयवोंको दृढकर्ता, (५) रोधका उद्घाटक (६) स्वरशोधक, (७) उरः स्थलकी खरखराहटका नाशक (८) गलेमें रूक्षता उत्पन्नकर्ता, (९) रूक्ष कासको गुणकर्ता, (१०) प्रकृतिको प्रसन्नकर्ता, (११) मस्तिष्कको वलवान्कर्ता, (१२) बालकोंके मसूढ़ोंमें मलनेसे दांत जल्दी और सुगमतासे निकलतेहैं, (१३) प्रायः गरम और रूक्ष विषको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३३७) घीग्वार

संस्कृत, कुमारी, फारसी, फेकरा, अरबी, हवारा, इंग्रेजी, आलोइइंडिका, स्वरूप, बाहरसे हरा और गूदा सफ़ेद होताहै, स्वाद, कडुआ और दुर्गंधियुक्त, पहिचान, जिसमें केवल पत्तेही होतेहैं सर्वत्र प्रसिद्ध है, इसके पत्ते बहुत मोटे होतेहै और उनके भीतर लसयुक्त गूदा होताहै इसीको पकाकरके एलुआ बनातेहैं, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और

रूक्ष है तथा किसीके मतमें ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गरम मिज़ाजवालोंको, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पैत्तिक अंतर्मलका रेचक, (२) बहुधा कफजरोगोंको लाभप्रद, (३) तिल्ली और उदरकी पीड़ाको गुणकर्ता, (४) पाचक भोज्य है (५) क्षुधावर्द्धक, (६) इसके गूदेमें ५ तोले वेसनको गूंधकर और उसकी रोटी बनाकर बहुतसे घीमें मसले और बूरा मिलाकर खावे तो ओजको बलप्रद है, (७) अमियांहलदीके साथ इसके गूदेका लेप शोथकी कठोरताको लयकारक है, (८) फिटकरीके साथ आंखकी चोट और ललोईको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३३८) घुंगची

संस्कृत, उच्चटा, **फ़ारसी**, चश्मखुरूस, **अरबी**, एनुद्दीक, **इंग्रेजी**, आब्रसप्रीकेटोरिअस्, **स्वरूप**, पत्ती हरी और बीज लाल होताहै, **स्वाद**, कडुआ और फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध लताकी घास है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाजनक, **दर्पनाशक**, सूखाधनियां और ताज़ा दूध, **मात्रा**, १ माशा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (२) स्नायुओंको बलप्रद, (३) बलकी रक्षक, (४) जराव्याधिको दूरकरनेवाली (५) ओजकोबलवान्‌कर्ता, (६) शुक्रल है यह दो प्रकारकी होतीहै एक लाल और दूसरी सफ़ेद इन दोनोंमें सफ़ेद उत्तम होतीहै, (निर्विषैल)

(३३९) चकोतरा

संस्कृत, मधुकर्कटी, **फ़ारसी**, चकोतरा, **स्वरूप**, छीलका पीला और गूदा लाल होताहै, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त, **पहिचान**, नीबूके समान एक फल है और छीलका अधिक मोटा होताहै तथा वज़नमें भी १ सेरका होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, उरःस्थलको, **दर्पनाशक**, खांड, **प्रतिनिधि**, अनन्नास, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) तृषा और पित्तको शांतिप्रद, (२) क्षुधाको उत्पन्नकर्ता, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) बहुतसे कर्मोंमें नीबूका प्रतिनिधि है, (५) इसका छीलका हृदयकी व्याकुलता और मूर्च्छाको हरण करनेवाला तथा मुखके रूपका शोधक है, (निर्विषैल)

(३४०) चक्कादाना

स्वरूप, भूरा, **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ, **पहिचान**, हुब्बविलसांके समान एक कड़ा बीज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बालकोंको विरेचन करानेवाला, (२) गुल्मको लाभप्रद (३) वायुको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(३४१) चिचेड़ा

संस्कृत, चिचिंडा, **इंग्रेजी**, स्नेकगोर्ड,

स्वरूप, सफ़ेद धारीदार हरा, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**,एक बिलश्तसे दोगजतकका लम्बा एक लताका फल है इसकी तर्कारी होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा **हानिकर्ता** आमाशयको और शीतप्रकृतिवालोंको तथा आध्मानकर्ता और ओजप्रद है, **दर्पनाशक**, मांस और गरम मसाला, **प्रतिनिधि**, परवल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरकी रूक्षता और कार्श्यको हरणकर्ता, (२) पाचक, (३) अत्यंत लघु, (४) पित्त-प्रकृतिको लाभप्रद, (५) क्षुधावर्द्धक, (६) इसकी जड़ रेचक है, (७) उपदंश और वातरक्तको गुणप्रद (८) इसका बीज वमन करानेवाला है और उदरके कृमियोंका नाशक है, (निर्विषैल)

(३४२) चना

संस्कृत, चणक, **फारसी**, नखूद, **अरबी**, हमस, **इंग्रेजी**, ग्राम, **स्वरूप**, लाल और पीला, **स्वाद**, फीका और सोंधा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्तिको और आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**,पोस्त, सिकंजवीन और गुलकंद, **प्रतिनिधि**, लोबिया और बाकला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अतिभोज्य, (२) शरीरको वृथा मलसे और अतर्मलसे स्वच्छकर्ता, (३) यकृत्, प्लीह और वृक्कके रोधका उद्घाटक, (४) स्वच्छकर्ता, (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६) वास्तविक उष्णताको बलप्रद, (७) शुद्ध दोषोंको उत्पन्नकर्ता. (८) शरीरको बृंहणकर्ता. (९) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (१०) स्वर और रक्तका शोधक. (११) प्रायः रुधिर और वायुके रोगोंको गुणप्रद. (१२) मूत्रल. (१३) इसको जलमें भिगोदेवे और उस जलका पान करे तो अत्यन्त हानिकारक है (निर्विषैल)

(३४३) चनापटापर (रसभरी)

स्वरूप. पीला और हरा. **स्वाद**, चाशनी युक्त, **पहिचान**, एक संपुटकी थैलीके भीतर होनेवाला एक घासका फल है, **प्रकृति**, रेचक शक्तिके साथ २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, फुप्फुस और मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, सिकंजवीन, **प्रतिनिधि**, क्शरिआबेर **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अपक्व और पिच्छल मलका रेचक, (२) कफको स्वच्छकर्ता. (३) प्रायः पित्त और वायुके रोगोंको लाभप्रद, (४) प्रकृतिको प्रसन्नकर्ता. (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६)अपने कर्मोंमें मकोयके समान है, (७) इसके ऊपर जलका पीना हानिप्रद है. (निर्विषैल)

(३४४) चनार

फारसी, चनार, **अरबी**, दुलब, **स्वरूप**,पत्ती हरी और इसकी लकड़ी प्रभावशाली होतीहै, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**,

एक बड़ावृक्ष है प्रायः ठंडे देशोंमें होताहै इसकी पत्ती चौड़ी और दानेदार दांतेवाली होतीहै प्रकृति, इसकी लकड़ी १ कक्षामें ठंडी और तर है तथा छाल और सार ठंडे और रूक्ष होतेहैं, हानिकर्ता, उपस्थ और स्वरको, दर्पनाशक, अगर, दालचीनी और ताज़ा दुग्ध, प्रतिनिधि, अनारका छीलका, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसकी छालकी भस्मका लेप कांतिप्रद है, (२) रूक्षताकर्ता, (३) सफ़ेद दाग़ोंको लाभप्रद, (४) व्रणकी दुर्गंधित स्निग्धताको हरणकर्ता, (५) इसके ताजे फलका काढ़ा विषैल जीवके विषको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३४५) चरबी

संस्कृत, वसा, फारसी, पीह, अरबी, शहम, स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीका और चिकना, पहिचान, जीवोंके अंगोंका १प्रसिद्ध अवयव है, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और तर, हानिकर्ता, आमाशयके मुखको, दर्पनाशक, नमक और कालीमिरच, प्रतिनिधि, रोग़नजीत, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कठिन शोथको लयकर्ता, (२) पीड़ाको शान्तिप्रद, (३) अवयवोंको स्निग्धकर्ता, (४) इसका पान करना शरीरको दृढकर्ता, (५) बृंहणकर्ता, (६) हर एक जीवकी चरबीका गुण उसही जीवके समानहै, (निर्विषैल)

(३४६) चरस

फारसी, शबनमबंग, अरबी, रूहउल्लीज, स्वरूप, काला, स्वाद, कडुआ, पहिचान, भांगके पत्तोंपर ओसके जमनेसे उसही भंगको चरस कहतेहैं और यह बनाया भी जाताहै, प्रकृति, गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, हृदय और मस्तिष्कको निर्बल करने वाला, दर्पनाशक, गोदुग्ध, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मदकर्ता, (२) स्तम्भनकर्ता (३) रूक्षता कर्ता, (४) शोथको लयकर्ता, (५) दृष्टिका नाशक, (६) बाह्य और आभ्यंतर इंद्रियोंको गदला करताहै, (निर्विषैल)

(३४७) चलापा

स्वरूप, भूरी, स्वाद, कड़वी और दुर्गंधियुक्त, पहिचान, शलगमके बराबर एक जड़ है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, उष्णप्रकृति वालोंको और शिरःपीड़ा उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, खटाई, प्रतिनिधि, मचूकां, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक होतेभी अत्यन्त रेचक है और प्रकृतिको दुःसह नहीं है, (२) वृक्कशूल, उदरशूल और चूतड़से पांवकी अंगुलीतक जो पीड़ा उठतीहै उसको और गठियाको लाभप्रद है, (३) गुल्म, जलोदर और पीलियाको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(३४८) चाकसू

फारसी, चश्मीजज और चश्मक, अरबी, चश्मीज़जिन्नतुस्सोदां, स्वरूप, काला, स्वाद, कुछ कडुआ, पहिचान,

मसूर जैसा एक बीज है, **प्रकृति**, २ कक्षा-में गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्ण-प्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, हरा धनियां, **प्रतिनिधि**,तृतिया, **मात्रा**,२माशे,**गुण**,**कर्म**, **प्रयोग**,(१)स्वच्छकर्ता, (२)बद्धक, (३) शोथको लयकर्ता, (४) दृष्टि-को बलप्रद,(५)आखके ढलकेको और जाले-को लाभप्रद, (६)व्रणको गुणप्रद,(७)प्रायः उपस्थके व्रणको और नेत्रकी पीड़ाको लाभकर्ता है परंतु विना भुलभुलाये खाना उचित नहीं है (निर्विषैल)

(३४९) चांदी

संस्कृत, रूप्य, **फारसी**, नुक़रा और सीम, **अरबी**, फिज्जह, **इंग्रेजी**, सिलह्वर, **स्वरूप**, सफ़ेद और चमकदार, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध और खनिज क़ीमती वस्तु है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आंत और वस्तिको, **दर्पनाशक**, कतीरा और शहद, **प्रतिनिधि**, फ़िरोज़ा, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) हृदय और आमाशयको बलप्रद, (२) जीवनशक्तिकी रक्षक, (३) मांस, मेदा, मज्जा, अस्थि और शुक्रको बलप्रद और शुक्रशोधक, (४) कफ और अतिस्थौल्यता-को हरणकर्ता, (५) इसकी भस्म प्रायः अवयवोंको बलप्रद है और बहुतसे रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३५०) चांदनीके फूल

स्वरूप, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रायः वृक्षोंपर चढ़ताहै एक लता (बेल) का फूल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्त्ता**, शीतप्रकृति-वालोंको, **दर्पनाशक**, बूरा और बतासा, **प्रतिनिधि**, सेवतीका फूल, **मात्रा**,९ नग, **गुण**, **कर्म** **प्रयोग**, (१) हृदयको बल-प्रद, (२) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (३) हृदयकी व्याकुलताको लाभप्रद, (४) इसका गुलक़ंद हृदयकी व्याकुलता, भ्रम, हृदयका धड़कना और बहुतसे पित्तरोगों-को गुणकारक है (निर्विषैल)

(३५१) चावल

संस्कृत, तंदुल, **फारसी**, विरंज, **अरबी**, उर्ज, **स्वरूप**, सफ़ेद और लाल, **स्वाद**, फीका **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष है तथा किसीके मतमें गरम और रूक्ष है **हानिकर्ता**, गुल्मकर्ता और रोधकर्ता, **दर्पनाशक**, बूरा, दूध और घी, **प्रतिनिधि**, जौका चून, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शुद्ध दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (२) तृषा-को हरणकर्ता, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) शुक्रल, (५) आमातिसार, अं-त्रिव्रण और लेखनता तथा रक्तातिसार और वृक्क तथा वास्तिको गुणकर्ता है, (६) यदि पीसकर मुखमें मले तो दानोंके चिह्नों-का नाशक है, (७) इसके दानोंको छिलका सहित खावेतो घातक हैं, (निर्विषैल नाज है)

(३५२) चावल मोंगरा

संस्कृत, शालि, **फ़ारसी**, विरंजमोंगरा,

अरबी, उर्ज़ मोंजरा, इंग्रेज़ी, राईस, स्वरूप, सफ़ेद, लाल और काला, स्वाद, फीका, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, गरम मिज़ाजवालोंको, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रोधका उद्घाटक, (२) कांतिप्रद, (३) रक्तशोधक, (४) कुष्ठ, खुजली, दाद और रुधिरविकार तथा वातसम्बन्धी त्वचाके रोगोंको खाने और लगानेसे गुणकारक है, (५) इसका तैलभी खुजली और दादको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३५३) चाय

फारसी, चायख़ताई, स्वरूप, काली, स्वाद, कुछकड़वी, पहिचान, जिसमें थोड़ी सुगन्धि होतीहै एक घासका पत्ता है इसकी बहुतसी जाति होतीहैं, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, रूक्षता और खुजलीको उत्पन्नकर्ता तथा श्वास और उरःक्षतको उत्पन्नकर्ता है, दर्पनाशक, सोंफ़, दूध और बूरा, प्रतिनिधि, चनाका पानी, मात्रा, ३ माशे गुण, कर्म, प्रयोग, (१) आमाशय, ओज और शीतप्रकृतिवालोंको बलप्रद, (२) मन और प्रकृतिको प्रसन्नकर्ता (३) विषयशक्तिका वर्द्धक, (४) स्वच्छकर्ता, (५) लसयुक्त दोषोंका शोधक, (६) रोधका उद्घाटक, (७) अंतर्मलको पककर्ता, (८) प्रस्वेदप्रद, (९) झूंठी तृषाको शांतिप्रद, (१०) शरीरके रूपका शोधक (११) रक्तप्रकोपको लाभकर्ता, (१२) वायु और शोथको लयकर्ता (१३) प्रकृतिमें गरमी उत्पन्नकर्ता, (१४) पाचक है, (निर्विषैल)

(३५४) चिकनी डली

फारसी, पोपल, अरबी, फोफल, स्वरूप, लाल और सफ़ेद, स्वाद, कसैली, पहिचान, एक प्रसिद्ध फल है, प्रकृति, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, फुप्फुसको, दर्पनाशक, बबूलका गोंद, मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वद्धक, (२) बहिर्मलको पककर्ता, (३) स्नायु, हृदय और आमाशयको बलप्रद, (४) अपने कसैलेपनसे दस्तावर है। (निर्विषैल)

(३५५) चिरचिरा (ओंगा)

संस्कृत, अपामार्ग, फारसी, खारवाझगूनह, अरबी, अतकमह, इंग्रेज़ी, चेलफलावर, स्वरूप, पत्ता हरा और फूल लाल होताहै, स्वाद, कडुआ, पहिचान, एक जातिकी घास है, प्रकृति, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, हानिकर्ता, वीर्य और क्षुधाको हरणकर्ता, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बवासीर, दाद, जोड़ोंकी ऐंठन, कालेदाग़, खुजली, जलंदर और फोड़ाओंको लाभप्रद, (२) इसकी लकड़ीकी दांतोन मुखकी दुर्गंधिनाशक है, (३) इसके पत्तोंके रसको और फाड़को मठेमें मिलाकर स्त्रियोंको पिलावे तो रज बंद होजाता है

और नेत्रोंमें डाले तो नेत्रोंके गदलापनको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३५६) चिरायता

संस्कृत, किरात, **फारसी**, नेनिहादन्दी, **अरबी**, कसबुल्रायरह, **इंग्रेज़ी**, चिरेटा, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, एक जातिकी प्रसिद्ध घास है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, कमरको, **दर्पनाशक**, अनीसून, **प्रतिनिधि**, मसूर, चंदन और केसर, **मात्रा** ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको स्वच्छकर्ता, (२) मूत्रल, (३) शोथको लयकर्ता, (४) यकृत् और हृदयको बलप्रद, (५) जलोदर, वक्षस्थलकी पीड़ा, गर्भाशयकी पीड़ा, बहुमूत्र और बहुधा त्वचाके रोगोंको लाभप्रद है, (६) रक्तशोधक, (७) यकृत् और पक्वाशयके शोथको गुणकर्ता, (८) रूक्ष और स्निग्ध खुजली तथा कोढ़का नाशक है ।

(३५७) चिरोंजी

संस्कृत, प्रियाल, **फारसी**, नुकुलख्वाजह, **अरबी**, हब्बुलसमनह, **इंग्रेज़ी**, बुकेनियालेटिफेलिया, **स्वरूप**, लाल और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और सुस्वादु तथा चिकना, **पहिचान**, जिसको इंचार कहते हैं एक पहाड़ी फलकी मिंगी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरिष्ठ और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और शहद ,**प्रतिनिधि**, पिस्ता और तिल, **मात्रा**, ११ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अतिभोज्य, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) कफज अंतर्मलका रेचक, (४) पित्तका रेचक, (५) ओज और बलको अधिक उत्पन्नकर्ता, (६) कांतिप्रद, (७) मुखके रूपका शोधक, (८) ज्वराधिक्यता, रक्तप्रकोप और तृषाको शांतिप्रद, (९) इसका हरीरा मिश्री और बादामके साथ ओजका वर्द्धक है, (निर्विषैल)

(३५८) चिलगोजा

फारसी, चिलगोजह, **स्वरूप**, छीलका लाल और गूदा सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा और चिकना तथा सुस्वादु, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, खट्टे फल और सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, बादाम और शुकाकुल, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (२) क्षुधावर्द्धक, (३) हृदय और स्नायुके बलका वर्द्धक, (४) रोधका उद्घाटक, (५) आमाशय, यकृत्, वृक्क, वस्ति और उपस्थको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३५९) चीत (जीत)

स्वरूप, पत्ती हरी और फूल सफ़ेद तथा बीज काला होताहै, **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, जिसकी पत्ती इमलीकी पत्तीके समान होतीहै एक मध्यम कदका वृक्ष है **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण**,

कर्म, प्रयोग, (१) इसकी पत्तीका स्वरस कफका रेचक है, (२) कृमिनाशक, (३) इसके पत्तोंका लेप शोथको लयकारक है, (४) विस्फोटकको पक्ककर्ता है, (निर्विषैल)

(३६०) चीता

संस्कृत, चित्रक, **फारसी,** वेखवरंदह और शीतरह, **अरबी,** शीतरजहिंदी, **इंग्रेजी,** प्लंविगोकौरुलेऐसो, **स्वरूप,** पत्ती हरी और फूल लाल तथा जड़ सफ़ेद होतीहै, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** एक घास है यह उजाड़ और ऊसरमें होती है, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** फेंफड़ेको और कलेजेको, **दर्पनाशक,** बबूलका गोंद और मस्तगी तथा गुलाबका फूल, **प्रतिनिधि,** नरकचूर और मजीठ, **मात्रा,** ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) स्वच्छकर्ता, (२) पाचक, (३) त्वचामें व्रणोंको उत्पन्नकर्ता, (४) त्वचाको जलानेवाला, (५) ओजको बलप्रद, (६) पिच्छल दोषोंका रेचक, (७) स्वरशोधक (८) शिराओंके कफको लयकर्ता, (९) आमवातको हरणकर्ता, (१०) ओजको चालनकर्ता, (११) इसका लेप सफ़ेद दागोंको गुणकारक है, (उपविष)

(३६१) चुकंदर

फारसी, चुकंदर, **अरबी,** सलक़, **स्वरूप,** लाल, **स्वाद,** कुछ मीठा, **पहिचान,** एक शाककी जड़ और प्रसिद्ध तर्कारी है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और तर तथा स्नायुयौगिक है, **हानिकर्ता,** आमाशयको और मरोड़ा तथा गुल्मको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक,** मांस, मसूर और राई, **प्रतिनिधि,** शलगम, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) स्वच्छकर्ता, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता (४) कफज अंतर्मलको पक्ककर्ता, (५) आध्मानकर्ता, (६) लघुभोज्य, (७) इसका सर्वाङ्ग प्रकृतिका रुद्धक है, (८) यह पकाहुआ ओजको चालन करनेवाला है, (९) वृक्कशूल, आमवात और कम्पको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३६२) चुकंदरके बीज

फारसी, तुख्मचुकंदर, **अरबी,** वज़रुल्सलक़, **स्वरूप,** कालापनलिये, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** आमाशयको, **दर्पनाशक,** सिकंजवीन, **प्रतिनिधि,** शलगमके बीज, **मात्रा,** ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मूत्रप्रवर्त्तक, (२) आर्त्तवप्रवर्त्तक, (३) कफनाशक, (४) वायुको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(३६३) चुम्बक

फारसी, संगआहनरुबा, **अरबी,** हजरमिकनातीस, **स्वरूप,** काला, **स्वाद,** बेस्वाद, **पहिचान,** जोकि लोहेको अपनी तरफ़ खींचताहै एक प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति,** ३

कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उरः-स्थलको, **दर्पनाशक**, रब्बुस्सूस, **प्रतिनिधि**, समुद्रफेन, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छकर्ता, (२) पक्ष-वध, अर्दित, गठिया, जांघकी पीड़ा और पैरकी अंगुलीकी पीड़ाको गुणकर्ता, (३) इसका पीना यकृत् और तिल्लीको बलप्रद, (४) गुर्दा और वस्तिकी पथरीका नाशक है, (५) इसको रेशमी कपड़ेमें लपेटकर बाई जांघमें बांधे तो विशेषतः प्रसूत-कालमें जल्दी और सुगमता करने-वाला है, (६) इसकी बुर्कीको घावमें बुर्के तो रुधिरकी रुद्धक और व्रणकी शोधक तथा पूरक है, (७) जब शनैश्चर वृषराशिमें होवे उस समय एक मनुष्य इस पत्थरको गुलावजलमें घिसकर आंखोंमें नेत्रांजन करे और दूसरा मनुष्य लोहेको देरतक देखतारहे तो इन दोनों मनुष्योंमें अत्यन्त प्रीति होजावेगी, (अधिक सेवन उपविष है)

(३६४) चूक

संस्कृत, चुक्र, **स्वरूप**, कालापनलिये **स्वाद**, बहुत खट्टा, **पहिचान**, इसको पहाड़ी मनुष्य लातेहैं, एक फलका स्वरस है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, स्नायुओंको, **दर्पनाशक**, खांड़, **प्रतिनिधि**, नीबू, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशयको बलप्रद, (२) पित्त और रुधिरके दाहको हरण-कर्ता, (३) पेटके अफरेको गुणप्रद, (४) पाचक, (५) खुजली, कोढ़ और बहुधा त्वचाके रोगोंको लाभप्रद, (६) जमालगोटेके विषको हरणकर्ता है, (नि-र्विषैल)

(३६५) चूकेका साग

संस्कृत, चुक्रिका, **फारसी**, तरह-हिरासाई, **अरबी**, बुल्कयेहमिज़ह, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, खट्टी पालकको चूकेका साग कहतेहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हा-निकर्ता**, स्नायु और शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, शहद और अनारका शर्बत, **प्रतिनिधि**, ज़रश्क और अनार, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) यकृत्को बलप्रद, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) गरम मिज़ाज-वालोंके वक्षस्थलकी जलन और कड़ुए पित्तका नाशक है, (४) क्षुधाप्रद, (५) वायुको लयकर्ता, (६) पाचक है, (निर्विषैल)

(३६६) चूकेके बीज

संस्कृत, चुक्रबीज, **फारसी**, तुख़्म-तुर्शह, **अरबी**, बज़रुल् हमाज़, **स्वरूप**, ललौंईलिये काले, **स्वाद**, खट्टे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, ठंडे और रूक्ष, **हानि-कर्ता**, तिल्ली और गुर्देको, **दर्पनाशक**, सौंफ और गुड़, **प्रतिनिधि**, वारतंगके बीज, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) यकृत्, हृदय, आमाशयके रोग, वमन और पांडुको गुण-

कर्ता, (३) रक्तातिसार और पित्तातिसारको लाभप्रद, (४) कडुए पित्तका और रक्तका शोधक, (५) व्रण, रक्तातिसार, अन्त्रियोंकी लेखनता, पांडु और प्रदरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३६७) चूकेकी पत्ती

संस्कृत, चुक्रपत्र, स्वरूप, हरी, स्वाद, कुछ खट्टी, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, १ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, हानिकर्त्ता, स्नायुओंको, दर्पनाशक, गुड़ और बूरा, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पित्तको हरणकरनेवाली (२) तृषाको शांतिप्रद, (३) अतिसार और आर्त्तवकी रुद्धक, (४) ओजप्रद, (५) प्रमेह और उपदंशको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३६८) चूना

संस्कृत, चूर्णक, फारसी, आहक, अरबी, नूरह और कल्स, स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीका और अतितीक्ष्ण, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, मांसभक्षक और घातक है, दर्पनाशक, घी और बादामरोग़न, प्रतिनिधि, दौनामरुआ, मात्रा, १ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रक्तस्रावका रुद्धक, (२) गुदामें इसका लेप करे तो अतिसारका बद्धक है, (३) शोथको लयकर्ता, (४) आगके जलेहुएको इसका लेप गुणकारक है, (इसकी अधिकता घातक है)

(३६९) चूहाकनी

संस्कृत, मूसाकर्णी, फारसी, गोशमूश, अरबी, आज़ानुल्फार, स्वरूप, पत्ती हरी और फूल गुलाबी, स्वाद, फीका, पहिचान, चूहोंके कानके समान एक घास है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, वस्तिको, दर्पनाशक, दौनामरुआ, प्रतिनिधि, दौनामरुआ, मात्रा, २ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मूत्रप्रवर्तक, (२) शोथको लयकर्ता, (३) रोधका उद्घाटक, (४) शीतरोग, अर्दित, पक्षवध और अपस्मारको गुणकर्ता, (५) इसकी नस्य विशेषतः अर्दितको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३७०) चेना

फारसी, अर्जन, अरबी, दुखन, स्वरूप, ललोईलिये, स्वाद, फीका, पहिचान, एक प्रसिद्ध बीज है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, हानिकर्ता, रोधको उत्पन्नकर्ता, दर्पनाशक, दूध, बूरा और घी, प्रतिनिधि, काकन और चांवल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) अल्पाहार, (२) रूक्षताप्रद, (३) विष्टम्भकर्ता, (४) मूत्रल, (५) आमाशयकी थैलीमें देरसे उतरनेवाला, (६) इसकी सीकें शोथको लयकारक हैं, (७) आध्मानकर्ता है, (एक निर्विषैल नाज है)

(३७१) चोबविलसां

फारसी, चोबविलसां, अरबी, ऊद-

विलसां, **स्वरूप**, गेंहुआं रंगका, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, सुगंधियुक्त एक लकड़ी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, आंतोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा, चंदन और वंशलोचन, **प्रतिनिधि**, हुब्बविलसां, **मात्रा**. १। माशा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोधका उद्घाटक (२) जोड़ोंको बलप्रद, (३) मस्तिष्ककी स्निग्धताका नाशक, (४) धांस, श्वास, आमाशय और कलेजेकी सरदीको लाभप्रद है, (५) बहुतसे विषोंका दर्पनाशक है, (निर्विषैल)

(३७२) चोबचीनी

संस्कृत, द्वीपान्तरवचा, **फारसी**, चोवचीनी, **अरबी**, खश्बुलसीनी, **इंग्रेज़ी**, चाइनारुट्चक्का, **स्वरूप**, गुलाबी, **स्वाद**, कड़वी और तीखी, **पहिचान**, एक पर्वती वृक्षकी जड़ है, **प्रकृति**, उष्णतायुक्त स्नायुको जोड़नेवाला, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, अनार, **प्रतिनिधि**, उशवा, **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशे तक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छकर्ता, (२) वृथामलको लयकर्ता, (३) रोधका उद्घाटक (४) रक्तशोधक, (५) प्राणवायु और वास्तविक उष्णताको बलप्रद, (६) व्यर्थस्निग्धताका शोषक, (७) पक्षवध, अर्दित, बहुधा मस्तिष्क संबन्धी शीतरोग, स्नायुरोग, गर्भाशय और गुदाके रोगोंको गुणकारक है, (८) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (९) उपदंश, कुष्ठ और खाजको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(३७३) चोबहयात

फारसी, चोबहयात, **अरबी**, खश्बुलहयात, **स्वरूप**, भूरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें एक लकड़ी होतीहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) छिद्र और रोधका उद्घाटक, (२) शोथको लयकर्ता, (३) पीड़ाको शांतिप्रद, (४) बहुतसे बिषोंको हरणकर्ता, (५) बद्धक (६) विषूचिका, स्निग्धातिसार, हृल्लास और आन्तरिक वायुको गुणकर्ता, (७) इसका मल्हम व्रणपूरक है (निर्विषैल)

(३७४) चौलाईका साग

संस्कृत, तंडुलीय, **फारसी**, सफ़ेदमर्ज, **अरबी**, बुक्लये यमानियां, **इंग्रेज़ी**, हरमेंफ्रोडाईटएमेरथ, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध शाक है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डा और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, गरम पदार्थ, **प्रतिनिधि**, कुलफा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) शरीरको स्निग्धताप्रद, (३) लघुभोज्य, (४) गरमीको शांतिप्रद, (५) शुद्धदोषोंको उत्पन्नकर्ता, (६) तृषाको शांतिप्रद, (७) गरम खांसीको गुणकर्ता, (८) मूत्रल है (निर्विषैल)

(३७५) चन्दन सफ़ेद

संस्कृत, श्रीखंड, **फारसी**, सन्दलसफ़ेद, **अरबी**, सन्दलअबियज़ **इंग्रेज़ी**, सांडलवुड्, **स्वरूप**, सफ़ेद **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और सुगन्धियुक्त, **पहिचान**, एक बड़ा वृक्ष है, इसकी लकड़ी काममें आती है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डा और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, ओजको हरणकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद और मिश्री, **प्रतिनिधि**, लालचन्दन, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) चित्तको प्रसन्नकर्ता, (२) हृदय और आमाशयको बलप्रद, (३) बहिर्मलको पक्वकर्ता, (४) बद्धक, (५) शोथको लयकर्ता, (६) रक्तशोधक, (७) हृदयकी व्याकुलता, आमाशयका दाह और पैत्तिक अतिसारको हरणकर्ता, (८) इसकी सुगन्धि महामारीकी वायुकी नाशक है, (९) यदि घिसकर लेप करे तो शिरकी पीड़ाको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३७६) चन्दन लाल (मुक्त चंदन)

संस्कृत, रक्तचन्दन, **फारसी**, संदलसुर्ख़, **अरबी**, सन्दलएहमर, **इंग्रेज़ी**, रेडसांडलवुड, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और सुगन्धियुक्त, **पहिचान**, यहभी सफ़ेद चन्दन जैसा प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डा और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, खुजलीको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, गुलरोग़न और सिर्का, **प्रतिनिधि**, सफ़ेद चन्दन, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रक्तातिसार, ज्वर और हृदयकी व्याकुलताको हरणकर्ता, (२) लालचन्दनका लेप सफ़ेद चन्दनसे अधिक प्रभावशाली है, (३) शोथको लयकर्ता, (४) बहिर्मलको पक्वकर्ता, (५) दाह और गरमीको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(३७७) चन्दरूस

फारसी, सिंदरूस, **स्वरूप**, पीला और लाल, **स्वाद**, फीका और कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, कहरुब्बाके समान एक खानिज द्रव्य है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्कको **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, कहरुब्बा और शमई, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) मस्तिष्क सम्बन्धी अवयव और प्रायः सम्पूर्ण अवयवोंकी स्निग्धताका शोषक है, (२) बाह्य और आन्तरिक अवयवोंके रुधिरका रुद्धक और बद्धक है, (३) आमाशय और आंतोंके कफका शोधक, (४) उदरके कृमियोंका नाशक, (५) इसका मंजन दांत और मसूढ़ोंको दृढ़कर्ता है, (६) इसकी धूनी बवासीरको लाभप्रद है, (७) इसका नेत्रांजन दृष्टिको बलप्रदहै, (निर्विषैल)

(३७८) चम्पा

संस्कृत. चाम्पेय, **फारसी**, फाग़रह, **अरबी**, फाग़रह, **स्वाद**, तीक्ष्ण और तीक्ष्णगंधियुक्त, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध

CC0. Gurukul Kangri Collection

फूल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, क्षुधानाशक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी सुगंधि हृदय, मस्तिष्क और शीतप्रकृतिवालोंको बलप्रद है, (२) इसका सेवन करना प्रायः वात, कफ और वायुके रोगोंको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३७९) चमेली

संस्कृत, जाति, **फारसी**, यासमीं, **स्वरूप**, फूल सफ़ेद होताहै, **स्वाद**, सुगंधियुक्त और कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, अत्यंत सुगंधियुक्त एक प्रसिद्ध फूल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरममिज़ाजवालोंको और शिरमें पीड़ा उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, वनफ्शा और गुलाबका फूल **प्रतिनिधि**, नरगिस और सोसन, **मात्रा**, १॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको प्रसन्नकर्ता, (२) छिद्र और रोधका उद्घाटक, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) इसका सेवन कफज और वातज अंतर्मलको रेचनकर्ता है, (५) पिच्छलवायुको लयकर्ता, (६) पक्षवध, अर्दित, गठिया और पादहर्षको गुणकर्ता, (७) मूत्रल, (८) ओजको चालनकर्ता, (९) इसकी गंधि मस्तकको बलप्रद है, (१०) बालोंको सफ़ेद करती है, (११) इसका लेप ओजको बलप्रद और स्थूलताप्रद है, (१२) इसके पत्तोंके काढ़ेकी कुल्ली दांतोंके दर्दको और मुखके पकनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३८०) छड़ीला

संस्कृत, शैलेय, **फारसी**, दिवाली और दिवाला **अरबी**, अश्नह और शतुल्अजूज़, **स्वरूप**, भूरा **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, बिना पत्तोंके रस्सी जैसा वृक्षोंके ऊपर उत्पन्न होताहै, **प्रकृति**, बद्धक शक्तियुक्त सम है, **हानिकर्ता**, आंत और उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक**, अनीसून, **प्रतिनिधि**, बालछड़ और करोमाना, **मात्रा**, १०॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) प्राणोंके और सत्वके अनुकूल है, (४) बलप्रद, (५) इसका काढ़ा वक्षस्थलको संतोषदायक है, (६) मिरगी, वमन, उबकाई, कलेजेका दर्द और कलेजेकी बिमारियां तथा गर्भाशयको गुणकारक है, (७) आमाशयको बलप्रद, (८) ओजको उत्पन्नकर्ता, (९) आर्त्तवप्रवर्त्तक है, (निर्विषैल)

(३८१) छाछ (मठा)

संस्कृत, तक्र, **फारसी**, दोग़, **अरबी**, महीज, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खट्टी, **पहिचान**, मथाहुआ दही है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, संनिपातज्वरको, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और बज़ूरी, **प्रतिनिधि**, दही, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) तृषाको शांतिप्रद, (२) अपक दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) ओजको चालनकर्ता,

(५) जो मनुष्य उष्णप्रकृतिवाले हैं, उनके ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (६) इसकी कुल्ली मुखकी सूजन और मुखके रोगोंको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(३८२) छालसर

फारसी, बाकलायमिसरी, **अरबी,** तरमस, **स्वरूप,** पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद,** कड़वी और तीक्ष्णगन्धियुक्त, **पहिचान,** बाकलाके बीजके समान एक गोल बीज है, **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता,** दीर्घपाकी, **दर्पनाशक,** नमक और सातर, **प्रतिनिधि,** लोविया और खरबूजाके बीज तथा आफिस्तीं, **मात्रा,** ५॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) यकृत् और प्लीहके रोधका उद्घाटक, (२) कठोरताको लयकर्ता (३) कांतिप्रद, (४) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (५) गर्भाशयसे गर्भका पात करनेवाला, (६) उदरके कृमियोंको निकालनेवाला (७) मुखव्यंग (चेहरेकी झांई) सफ़ेद और काले दाग़ोंको गुणकारक है (८) प्लीहकी शोथको गुणकारक है (निर्विषैल)

(३८३) छुहारा (खिजूर)

संस्कृत, खर्जूर, **फारसी,** खुर्मा, **अरबी,** तमर, **इंग्रेज़ी,** डेट्पाम, **स्वरूप,** लाल, **स्वाद,** मीठा और कसेला, **पहिचान,** एक प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** शिरःपीड़ाप्रद और उष्णताप्रद, **दर्पनाशक,** अनारका स्वरस और बादाम, **प्रतिनिधि,** मुनक्का और किशमिश, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शुद्ध रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (२) अत्याहार (थोड़ा खाना बहुत मालूम होवे) (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (५) वृक्क और कटि (कमर) को बलप्रद, (६) पक्षवध और अर्दितको लाभप्रद, (७) अश्मरीको खण्डनकर्ता, (८) वक्षस्थल और फेंफड़ेके अनुकूल है, (निर्विषैल)

(३८४) जलनीम

स्वरूप, हरा, **स्वाद,** कड़ुआ और तीखा, **पहिचान,** एक घास है, तराईमें ऊगती है, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** व्रणकारक, **दर्पनाशक,** घी, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) रक्तशोधक, (२) प्रायः त्वचाके रोगोंको लाभप्रद, (३) तर खुजली, आतिशक और कोढ़को गुणकारक, (४) कफजमलको अतिसार द्वारा शोधन करनेवाली है, (निर्विषैल)

(३८५) जवासा

संस्कृत, यवास, **फारसी,** खारिश्तर, **अरबी,** जाज, **इंग्रेज़ी,** अलहागीमोरोरम, **स्वरूप,** हरा, **स्वाद,** कुछ कड़ुआ और तीखा, **पहिचान,** एक जातिकी प्रसिद्ध घास है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** शिर और हृदयको, **दर्पनाशक,** कतीरा और नीलोफ़रके फूल, **प्रतिनिधि,**

जन्दकोकी और सिंदरस, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मलको पक्कर्ता, (२) रोधका उद्घाटक (३) कांतिप्रद, (४) कुष्ठ विषोंका दर्पनाशक, (५) गठियाको लाभप्रद, (६) प्राचीन शिरकी पीड़ाको लाभप्रद, (७) मूत्रल, (८) इसका नेत्रांजन (सुरमा) आंखके जालेको गुणकारक है, (९) इसका तैल गठियाकेलिये अत्यन्त गुणकारक है, (निर्विषैल)

(३८६) ज्वार

संस्कृत, यवनाल, **फारसी**, जिर्हमक्का, **अरबी**, हिन्तयेरूमिया और खन्दरूस, **स्वरूप**, पीली और लाल, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, एक जातिका प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठण्डी और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गरिष्ठ और आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**, गुलकन्द, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको सम्हारनेवाला- (२) अतिसारबद्धक (३) उरःक्षतको लाभप्रद, (४) कफको लयकर्ता, (५) गरिष्ठ और पिच्छल है, (६) इसमें जो आहारत्व है वह गेंहूंसे कम और चावलसे अधिक है, (निर्विषैल एक नाज है)

(३८७) जवाखार

संस्कृत, यवक्षार, **अरबी**, नतरून, **इंग्रेजी**, कार्बोनेटआफ्पुटास, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खारी और कड़ुआ, **पहिचान**, एक जातिका लवण (नमक) है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वमनलानेवाला, **दर्पनाशक**, वंशलोचन और बबूलका गोंद, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायु तथा कफको लयकर्ता, (२) गुल्मको लाभप्रद, (३) उचित योगके साथ कफज कासको गुणकारक, (४) रोधका उद्घाटक, (५) पाचक, (६) वस्तिकी अश्मरी (पथरी) का नाशक है (निर्विषैल)

(३८८) जफ्तरतबरूमी

अरबी, जफ्तरतबरूमी, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, सर्व वृक्षोंसे एक स्निग्धता निकलतीहै इसकी बहुतसी जाति हैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको और तिल्लीको, **दर्पनाशक**, कतीरा, बनफ्सा, और कपूर, **प्रतिनिधि**, जाउशीर और मौम, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) सन्धिके बन्धनोंको बलप्रद, (३) पक्षवध, पादांगुलिपीड़ा, जांघ और पीड़रीकी पीड़ा, शीतवायु और घोंटूके दर्दको गुणकारक है, (४) सांद्रदोषोंको समपक्कर्ता, (५) वक्षस्थल और कण्ठकी रुकावटको शोधनकर्ता, (६) लिंगको दृढ़ और स्थूलकर्ता, (६) रुधिरको त्वचाकी तरफ आकर्षण करनेवाला, (८) गुदाके फटजानेको गुणकर्ता, (९) इसका लेप ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(३८९) जमालगोटा

संस्कृत, जयपाल, **फारसी**, तुख्मवेदंजरिखताई, **अरबी**, हब्बुस्सलातीन, इंग्रेज़ी, क्रोटनसीड, **स्वरूप**, बाहर काला और भीतर सफ़ेद, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, जिसकी मिंगीमें चिकनाई होतीहै एक बीज है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और वमनप्रद तथा बलवान् रेचक है, **दर्पनाशक**, दूध और चीनी, **प्रतिनिधि**, रेंडी, **मात्रा**, १ नग, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यंत रेचक, (२) स्वच्छकर्ता, (३) स्निग्धताका आकर्षक, (४) रोधका उद्घाटक, (५) शीतरोग, उपदंश (आतिशक) कोढ़ और त्वचाके रोगोंको लाभकर्ता, (६) इसका तैल भी रेचक है, (७) इसके तैलका लेप ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता है, (८) बलप्रद, (९) बालकोंका अपस्मार और बालकोंकी पसलीके रोगोंको शहदके साथ अनुभूत गुणकारक है परन्तु विना शोधनकिये इसको सेवन करना किसी प्रकार उचित नहीं है, (निर्विषैल)

(३९०) जरांकस

फारसी, काहमक्खी, **अरबी**, अज़खर, **स्वरूप**, पीली, **स्वाद**, तीखी और तीक्ष्णगंधियुक्त, **पहिचान**, दुर्गंधियुक्त एक प्रसिद्ध घास है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और वृक्कको तथा शिर:पीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, गुलाब, नीलोफर और चंदन, **प्रतिनिधि**, कूठ, केसर और चिरायता, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) अश्मरी (पथरी) को नष्टकर्ता, (३) रोधकी उद्घाटक, (४) पिच्छल दोषोंको पतले करनेवाली, (५) पीड़ाको शांतिप्रद, (६) शीतरोग, पक्षवध, अर्दित, कम्प, स्तम्भ और आमाशयको बलप्रद (७) दांतोंको स्थिरकर्ता है, (निर्विषैल)

(३९१) ज़रावन्ददराज़

फारसी, ज़रावंददराज़, **अरबी**, ज़रावन्दतवील, **स्वरूप**, कालापनलिये लाल और पीली, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, एक वृक्षकी जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्त्ता**, कलेजा और तिल्लीको, **दर्पनाशक**, शहद और ज़रश्क, **प्रतिनिधि**, गोल ज़रावन्द, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रायः स्थावर और जंगम विषोंके दर्पकी नाशक, (२) स्वच्छकर्ता, (३) स्निग्धताकी आकर्षक, (४) शोथ और वायुको लयकर्ता, (५) कफशोधक (६) रोधकी उद्घाटक, (७) अश्मरी (पथरी) को खंडनकर्ता, (८) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (९) वक्षस्थल और यकृत्को शोधनकर्ता, (१०) कफजमलको अतिसार द्वारा शोधन करनेवाला, (११) उदरकृमिनाशक, (१२) अपस्मार

(मिरगी) को लाभप्रद, (१३) प्रसवकालमें बालकको सुगमतासे उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(३९२) ज़रावन्दगिर्द

फारसी, ज़रावन्दगिर्द, **अरबी**, ज़रावन्दमदहरिज, **स्वरूप**, बाहर पीली और भीतरसे ललोईलिये, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, जिसके ऊपरका बक्कल बहुत मोटा होताहै एक गोल और लम्बी जड़ है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, प्लीहके अवयवोंमें रूक्षता उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद और रोग़नकद्दू, **प्रतिनिधि**, लम्बी ज़रावन्द, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) मृदुताप्रद, (३) वक्षस्थल (सीना) और फुफ्फुसकी आंतोंको शोधनकरनेवाली (४) आमाशय और मस्तिष्कको बलप्रद, (५) श्वास, जीर्णकास, वक्षस्थलकी पीड़ा, पक्षवध और गठियाको गुणकारक, (६) कफजमलको अतिसार द्वारा शोधक, (७) कफ शोधक है, (निर्विषैल)

(३९३) ज़रश्क

फारसी, ज़रश्कबिहीदाना, **अरबी**, अवियजबारीस, **स्वरूप**, ऊदा और लाल, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त, **पहिचान**, एक कांटेवाले वृक्षका प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, बद्धक शक्तिके होतेभी ठण्डा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको और गुल्मीको, **दर्पनाशक**, लोंग और खांड़, **प्रतिनिधि**, ज़रूरह और चन्दन, **मात्रा**, १तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तकी तीक्ष्णताको खण्डनकर्ता, (२) तृषाको शांतिप्रद, (३) आमाशय और यकृत्की गरमी तथा रक्तप्रकोपको शांतिप्रद, (४) हृदय, यकृत् और रूक्ष आमाशयको बलप्रद, (५) पित्तज अतिसारका बद्धक, (६) व्यर्थमलको अवयवोंपर नहीं गिरनेदेता, (७) यकृत् और आमाशय सम्बन्धी अतिसारको गुणकारक, (८) रक्तप्रदरका रुद्धक है, (निर्विषैल)

(३९४) ज़लपीपल

फारसी, पीपलआबी, **अरबी**, फिल्फिलुल्माय, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**, तीखी और तीक्ष्ण गन्धियुक्त, **पहिचान**, काली मिरच जैसी एक जातिकी मिरच है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डी और रूक्ष, **दर्पनाशक**, ज़ीतूनका तैल, **प्रतिनिधि**, कालीमिरच, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) हृदय और नेत्रोंको बलप्रद, (३) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (४) रुधिरविकार और फोड़े, फुन्सी तथा वक्षस्थलके दाहकी नाशक है, (निर्विषैल)

(३९५) जलखिन्नी

अरबी, सत्रअतियूतिस, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, बादरंजोरियाके समान जलमें ऊगतीहै, एक जातिकी घास है इसमें जड़ नहीं होती, **प्रकृति**,

ठण्डी और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) सिरकाके साथ इसका लेप करे तो व्रणोंको उत्पन्न नहीं होनेदेती, (२) गरमीके शोथको पक्कारक और उसकी ललोईको हरण करनेवाली, (३) मूत्रका दाह और वृक्कके रुधिरके रोधको गुणकारक है, (४) अवयवोंके व्रणोंकी पूरक है, (निर्विषैल)

(३९६) जस्त

संस्कृत, यसद, **फारसी,** रूमीतूतिया, **अरबी,** शिवह, **इंग्रेज़ी,** ज़िंक, **स्वरूप,** काला और स्वच्छ, **स्वाद,** कसेला, **पहिचान,** एक प्रसिद्ध खानिज वस्तु है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** तिल्लीको और वायुगोलाको उत्पन्नकरनेवाला, **दर्पनाशक,** शहद, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इसके पात्र (बर्तन) में खान पान करना हृदय और आमाशयको बलप्रद है, (२) मकोय और सोंफके रसमें घिसकर लेप करे तो शोथको लयकारक है, (३) इसका नेत्रांजन (सुरमा) नेत्रोंके जालोंको और नेत्रके विकारोंको अतिगुणदायक है, (४) पलकोंकी ललोई को हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(३९७) जाफरीका फूल

स्वरूप, लाल और पीला, **स्वाद,** कुछ कडुआ और फीका, **पहिचान,** सुगन्धियुक्त, हिन्दुस्तानमें होनेवाला एक प्रसिद्ध फूल है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता,** शिरःपीड़ाप्रद और वीर्यमें शिथिलता उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक,** कासनी और बादरंजोरिया, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) उष्णता करनेवाला, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) पाचक (४) बद्धक, (५) मूत्रप्रवर्त्तक, (६) वस्तिकी स्नायुको खण्डनकर्ता है, (निर्विषैल)

(३९८) जामन

संस्कृत, जम्बू, **इंग्रेज़ी,** जाम्बूल, **स्वरूप,** ऊदा और काला, **स्वाद,** कुछ मिठासलिये कसेला, **पहिचान,** काले अंगूरसे कुछ बड़ा एक बड़े वृक्षका फल है यह हिन्दुस्तानहीमें होताहै, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता,** दीर्घपाकी और आध्मानको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक,** नमक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पित्तज अतिसारको शांतिप्रद और बद्धक है, (२) उष्णप्रकृतिवालोंके आमाशय और यकृत्‌को बलप्रद, (३) रुधिरविकार और पित्तप्रकोपको हरणकर्ता, (४) ओज और क्षुधाको अधिक उत्पन्नकर्ता, (५) इसके अरक (स्वरस) का सिर्का प्लीहके शोथको लाभप्रद है, (६) पाचक, (७) इसकी मिंगीकी फंकी वीर्यको सांद्रकर्ता और ओजको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(३९९) जामघास

स्वरूप, हरी, **स्वाद,** कड़वी, तीखी और कुछ खारी, **पहिचान,** एक घास है, प्रायः बंगालमें होतीहै और वर्षा ऋतुमें

तर ज़मीनमेंभी होतीहै इसकी जड़ छोटी और प्याज जैसी होतीहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसकी डाली और पत्तोंका सेवन करना जलोदर-को गुणकारक है, (२) कालीमिरचके साथ चनेके बराबर इसकी जड़की गोली बनाकर खावे और ऊपरसे दो ग्रास चावलके खावे तो कैसीही बमन आतीहो बन्द होजावेगी, (३) इसकी पावसेर जड़को महीन करे और इसमें पावसेर घी तथा नीबूके अर्कको खूब मिलावे तो यह व्रण (जखम) के लिये उत्तम मरहम है परन्तु यह एक सप्ताहसे अधिक नहीं ठहर सकती, (निर्विषैल)

(४००) जामफल (सफ़री और अम्बह)

स्वरूप, सफ़ेद, और लाल, **स्वाद**, कच्चा कसेला और पकाहुआ मीठा होताहैं, **पहिचान**, प्रायः हिन्दुस्तानके देशोंमें होनेवाला अमरूद और सेब जैसा एक फल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, शीत और कफप्रकृतिवालोंको, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) चित्तको प्रसन्नताप्रद, (२) हृदयको बलप्रद, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (४) मूत्रप्रवर्तक, (५) अतिसारबद्धक, (६) इसका कच्चा फल बद्धक है, (७) इसके वृक्षकी छालका हिम दस्तोंको बन्द करनेमें अद्भुत प्रभावशाली है, (निर्विषैल)

(४०१) जाही (जुही)

संस्कृत, यूथिका, **फारसी**, यासमन-बर्री, **अरबी**, ज़ियां, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कडुआ और कुछ कसेला, **पहिचान**, सुगन्धियुक्त और चमेलीके समान परन्तु उससे छोटा एक फूल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष तथा किसीके मतमें ठंडा और तर है, **हानिकर्ता**, दाहको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, गुल-रोग़न, **प्रतिनिधि**, दफली, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) नेत्रके रोगोंको गुणकर्ता, (२) मुखकी सूजनको और मुखके दानों (कृमि विशेष) को इसकी कुली लाभकारक है, (३) इसके स्वरसका लेप व्रणको गुणकारक है, (४) इसका इत्र (अतर) मस्तिष्कको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(४०२) जयुल्नहर

अरबी, जयुल्नहर, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, नीलोफर जैसी एक घास है, यह जलके ऊपर होतीहै और इसमें फूल तथा फल नहीं होता, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, स्नायुको, **दर्पनाशक**, खांड, **प्रतिनिधि**, वितवाद, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रक्त-स्रावका रुद्धक, (२) रक्तज अतिसारका बद्धक, (३) तृषाको शांतिप्रद, (४) शोथको लयकर्ता, (५) इसका लेप खुजली और फोड़ोंको लाभकारक है,

(६) व्रणपूरक और व्रणको फैलने नहीं देता, (निर्विषैल)

४०३ जायफल

संस्कृत, जातिफल, **फारसी**, जोज़-बोया, **अरबी**, जोज़बुवा और जोजुत्तीब, **इंग्रेज़ी**, नटगम, **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ और अत्यन्त तीखा, **पहिचान**, एक वृक्षका प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, कलेजा, फेफड़ा और गरम मिज़ाजवालोंको तथा शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, धनियां, शहद और बनफ्सा, **प्रतिनिधि**, विस्वासा, **मात्रा**, ४ माशेसे ९ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नकर्ता, (२) प्रकृतिको मदुकर्ता, (३) किंचित् मद (नशा) कारक, (४) वास्तविक उष्णताका रक्षक, (५) पाचक, (६) आमाशय और आमाशयका मुख तथा यकृत् और ओजको बलप्रद, (७) यकृत्की कठोरता, प्लीहका शोथ और प्रायः शीतके शोथको गुणकारक है, (८) मांसाधिक्यजलोदर (जिस जलोदरमें मांस बढ़जाताहै) को और गठियाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४०४) ज़िमीकन्द (सूरण)

संस्कृत, सूरण, **फारसी**, ज़िमीक़न्द, **इंग्रेज़ी**, एमोर्फोफिलसपेनिक्यूलेटस, **स्वरूप**, ललोईलिये भूरा, **स्वाद**, फीका और खुजलीयुक्त, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध क़न्द है, **प्रकृति**, गरम, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और आध्मानकारक है, **दर्पनाशक**, मांस, दही और सिर्का, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यन्त भोजन करानेवाला, (२) कफविकारको हरणकर्ता, (३) गुल्म और उदरकी पीड़ाको गुणकारक, (४) अल्पाहार, (५) रोधको उत्पन्नकर्ता, (६) बद्धक, (७) हिन्दूलोग इसका अचार डालतेहैं, (निर्विषैल)

(४०५) ज़ीतून

अरबी, ज़ीतून, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कडुआ और कसैला, **पहिचान**, पश्चिमी देशोंमें एक वृक्ष होताहै जोकि हज़ार वर्षतक की उमरवाला होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, अंडीका तेल, **मात्रा**, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरमें गरमीको उत्पन्नकर्ता, (२) मूत्रल, (३) अश्मरी (पथरी) का नाशक, (४) दन्तमूलों (मसूढ़ों) को बलप्रद, (५) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (६) प्रस्वेदप्रवर्तक है, (निर्विषैल)

(४०६) ज़ीरा सफ़ेद

संस्कृत, ज़ीरक, **फारसी**, ज़ीरयेसफ़ेद, **अरबी**, कमूनअबियज, **इंग्रेज़ी**, कम्मिनन्सीड, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, तीखा और तीक्ष्णगन्धियुक्त, **पहिचान**, सौंफ़के समान एक वृक्षका बीज है कि जिसका बीज सोयाके समान होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है,

हानिकर्ता, फेंफड़ेको, दर्पनाशक, कतीरा, प्रतिनिधि, अजमायन और कालाज़ीरा, मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) आमाशय, यकृत् और अन्त्रियोंको बलप्रद, (२) वृक्कको दृढ़कर्ता, (३) गरमीको उत्पन्नकर्ता, (४) वायु और शोथको लयकर्ता, (५) कफ़शोधक, (६) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (७) इसका हिम रतोंधी, आंखका व्रण (ज़ख़म) नखरोग और शिरके रोगोंको लाभकारक है, (८) प्रमेहको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(४०७) ज़ीरा स्याह

संस्कृत, कृष्णजीरक, **फारसी**, ज़ीरयेस्याह, **अरबी**, कमूनअस्वद, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, तीखा और तीक्ष्णगन्धियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, सफ़ेदज़ीरा, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) गरमीको उत्पन्नकर्ता, (२) प्रकृतिको स्वच्छताप्रद, (३) कफ़शोधक, (४) वायु और शोथको लयकर्ता, (५) स्निग्धताका शोषक, (६) स्निग्धताके स्रावका रुद्धक, (७) आमाशयकी स्निग्धताको हरणकर्ता, (८) क्षुधाको उत्पन्नकर्ता, (९) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (१०) रेचक है, (रेचक और निर्विषैल)

(४०८) ज़ूफ़ायख़ुश्क

फारसी, ज़ूफ़ायख़ुश्क, **अरबी**, ज़ूफ़ायाबिस, **स्वरूप**, कालापनलिये हरा, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, एक घास है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, कलेजेको, **दर्पनाशक**, उन्नाव, बबूलका गोंद और खट्टा अनार, **प्रतिनिधि**, सातिर और परसाविशां, **मात्रा**, ९ माशेसे एक तोलेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छताको उत्पन्नकर्ता, (२) कफ़को अतिसार द्वारा शोधनकर्ता, (३) दुर्गंधित अपानवायुका निस्सारक (४) आमाशयके कृमियोंको निकालनेवाला, (५) शोथको लयकर्ता, (६) पक्षवध, जीर्णकास और धांसको गुणकर्ता, (७) फेंफड़ेकी सूजन, वक्षस्थल, पार्श्व, आमाशय और गुलमकी पीड़ाको गुणप्रद, (८) जलोदरको लाभप्रद, (९) कफशोषक है, (निर्विषैल)

(४०९) ज़हर मोहरा

फारसी, ज़हर मोहरा, **अरबी**, फ़ादज़हरमादनी, **स्वरूप**, पिलाई और हरियालीलिये सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, अत्यन्त हलका एक प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति**, समान गुणवाला है, **प्रतिनिधि**, पन्ना और ज़बरजद, **मात्रा**, १ माशे, **गुण**, **कर्म** **प्रयोग**, (१) सम्पूर्ण मनुष्योंको अनुकूल है, (२) विषोंकी दर्पनाशक, (३) दोषोंकी दुर्गंधिताको हरणकर्ता, (४) ओजप्रद, (५) प्राण और उत्तमांग (एज़ाय रईसा) तथा स्नायुओंको बलप्रद,

(६) स्वास्थ्यका रक्षक, (७) महामारीकी वायुको लाभप्रद, (८) हृदयकी व्याकुलता, शोक, अतिसार, वमन और विषूचिकाको गुणकारक है, (९) बालकोंके मलकी हरियालीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(४१०) जौ

संस्कृत, यव, **फारसी**, जो, **अरबी**, शईर, **इंग्रेज़ी**, बिटरवार्लि, **स्वरूप**, पिलोंईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और मीठा, **पहिचान**, एक जातिका प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्ति और आंतोंको, **दर्पनाशक**, घी और गरम मसाला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) लघु, (२) बद्धक, (३) रूक्षताप्रद, (४) मलको पक्वकर्ता, (५) रक्तप्रकोपको शांतिप्रद, (६) पित्त, तृषा और गरमीके ज्वरकी तीक्ष्णताको शांतिप्रद, (७) उरःक्षत, राजयक्ष्मा, पार्श्वशूल, कास और गरमीकी शिरःपीड़ाको गुणकारक है, (८) मूत्रल, (९) इसका यूष बहुतही स्वच्छ होताहै तथा इसमें ओषधित्व और आहारत्व दोनों हैं, (निर्विषैल एक प्रसिद्ध नाज है)

(४११) जौबिरहना

फारसी, जोबिरहना, **अरबी**, शईरुल्इरियां, **स्वरूप**, पिलोंईलिये, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अध्मानको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, सोंफ, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दूधके साथ इसका खाना शरीर और वृक्कको बृंहणकर्ता और दृढ़कर्ता है, (२) इसका हरीरा घीके साथ सेवन करे तो वक्षस्थल, वृक्क और वस्तिका शोधक है, (३) बलप्रद, (४) इसका लेप शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(४१२) जोनरी

संस्कृत, यावनाल, **फारसी**, बज़वार, **अरबी**, बिस्वासह, **स्वरूप**, पिलोंईलिये लाल, **स्वाद**, कडुआ, तीखा और गंधियुक्त, **पहिचान**, जोजके ऊपरका छीलका है, **प्रकृति** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्को और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, चन्दन और गुलाब, **प्रतिनिधि**, जायफल, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) आमाशय और यकृत्के ओजको बलप्रद, (३) शरीरके ओजको बलप्रद, (४) रोधका उद्घाटक, (५) स्निग्धताका शोषक, (६) वायु और आन्तरिक कठोरताको लयकारक, (७) गर्भाशयको बलप्रद, (८) मलादिकको आमाशयपर नहीं गिरनेदेता, (९) स्वच्छताप्रद, (१०) पाचक, (११) वस्तिकी अश्मरीको खंडनकर्ता, (१२) जो स्त्री ऋतुस्नानके पीछे इसके स्वरसमें स्वच्छ वस्त्रको भिगोकर अपनी योनिमें

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

रक्खे तो अवश्यही गर्भवती होवे, (निर्विषैल)

(४१३) जोजुलसर्व

स्वरूप, भूरा, **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ, **पहिचान**, काठ जैसा एक फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्तिको और रोधको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, अंजरूत और अनारकी जड़, **मात्रा**, १ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) रुधिरका रुद्धक, (३) स्नायु, आमाशय,यकृत् प्लीह और अन्त्रियोंको बलप्रद,(४) प्रस्वेद द्वारा स्निग्धताका आकर्षक, (५) स्तम्भनकर्ता, (६) रक्तशोधक, (७) विस्मृतिको लाभप्रद, (८) मुखकी दुर्गंधिको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(४१४) जोशदरबंदी

अरबी, जोशदरबंदी, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**,कड़वी,**पहिचान**,आरमीनियांके देशमें एक घास होती है,इसकी टिकिया बनातेहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और रूक्ष,**प्रतिनिधि**, रसोत और शियाफमामीसा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मलको पक्वकर्ता, (२) नेत्रविकारको गुणप्रद, (३) अंतर्मलको मृदुकर्ता, गरमीके शोथको लाभप्रद, (४) संधियोंके बन्धनोंकी पीड़ाको लाभप्रद, (५) इसका लेप गरमीकी शिरःपीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४१५) जोज़गंदुम (गुलगंदुम)

फारसी जोज़गंदुम और गुलगंदुम, **अरबी**, जोजजन्दुम और मावशेहमुल्अर्ज, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, फीका **पहिचान**, जंगली मेदानोंमें पत्थरोंके ऊपर एक स्निग्धता उत्पन्न होतीहै और वह मिट्टीमें मिलजाती है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, सिकंजवीन, बजूरी और अनारमैखुश, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**,**प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) अश्मरीको खण्डनकर्ता, (४) क्षुधानाशक, (५) मूत्रप्रवर्त्तक, (६) सेवके स्वरसके साथ सेवन करनेसे मुखसे रुधिर आनेको गुणकारक है, (७) शहदके साथ गंजेपनको लाभप्रदहै, (८) यदि इसको शहद औरथोड़े जलमें मिलाकर धूपमें रख देवे तो मद्य (शराब) सेभी अधिक मदकारक है, (निर्विषैल)

(४१६) जंगीदारू

फारसी, जंगीदारू, **अरबी**, इसको लोकन्दरयून, **स्वरूप**, ललोईलिये हरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, इसके पत्ते जड़से लगेहुए होतेहैं, यह बिना डाली और फलकी एक घास है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, जरूर और मस्तगी, **प्रतिनिधि**, ग़ाफिस, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१)

प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) स्वच्छतापद, (३) रोधका उद्घाटक. (४) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक है, (निर्विषैल)

(४१७) जंगरी

स्वरूप, पिलोईलिये, **स्वाद**, खट्टा, मीठा और तीखा, **पहिचान**, नीबूके समान एक प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, २कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, पित्त और कफको अधिक उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, सोंफ **प्रतिनिधि**, मिरच और कबाबचीनी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रुचिकर (२) अत्यंत क्षुधाप्रद, (३) वायुको लयकारक है, (निर्विषैल)

(४१८) जंगाल

फारसी, जंगार, **अरबी**, जंजार, **स्वरूप**, हरियालीलिये नीला, **स्वाद**, कसेला **पहिचान**, जिसको सिर्का और तांबेसे बनातेहैं एक प्रसिद्ध वस्तु है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, घातक और अधिक वमनप्रद है, **दर्पनाशक**, दूध, घी, मक्खन और लिबलिबी वस्तुऐं हैं, **प्रतिनिधि**, शिंगरफ, **मात्रा**, अभक्ष्य है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरके मांसको खानेवाला है, (२) लेखनताप्रद (३) अन्त्रियों (आंतों) को छीलने वाला, (४) व्रणोंको उत्पन्नकर्ता, (५) व्रणको स्वच्छकर्ता, (६) शहद के साथ इसका नेत्रांजन करे तो पलकोंके मलको हरणकर्ता है, (७) यदि मोमरोगनमें मिलाकर घावपर लगादेवे तो दुष्ट मांसको पृथक् करके घावको भरनेवाला है, (निर्विषैल)

(४१९) झरबेरी

संस्कृत, स्वादुकंटक, **फारसी**, सवखद और किनारदश्ती, **अरबी**, गबीरा, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, प्रसिद्ध जंगली बेरहैं जोकि उन्नाब जैसे होतेहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठण्डे और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, पाचनशक्तिको और कासको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, खांड, **प्रतिनिधि**, बेर, **मात्रा**, २० अदद, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) आमाशय और हृदयको बलप्रद, (३) इसका सूखा हुआ चूर्ण बद्धकहै (४) पित्तज वमन और अतिसारको गुणप्रद, (५)इसके वृक्ष की छाल दन्तरोग और मुखपाकको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४२०) झावर (झाऊ)

संस्कृत, झावुक, **फारसी**, गज, **अरबी** तुर्फावासल, **स्वरूप**, कालापनालियेहुए हरा, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, यह नदियोंके कूल (किनारे) पर होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिरको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, गुलनार, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) मलको पककर्ता, (३) शोथ और वायुको लयकर्ता, (४) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (५) यकृत् और प्लीहके कठोर

शोथका नाशक, (६) रुधिरका रुद्धक, (७) झाऊकी लकड़ीके पात्र (बर्तन) में जल पीवे तो विशेषतः प्लीहकी शोथको गुणकारक है, (८) झाऊका हिम रक्तशोधक है, (९) रक्तप्रकोपको शांतिप्रद है (निर्विषैल)

(४२१) झींगा

अरबी, समकुल्रोबियां, **स्वरूप**, सफ़ेद और भूरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक जातिकी मछली है, **प्रकृति**, मलको स्निग्ध करनेवाली और १ कक्षामें ठंडी और तर है, **हानिकर्ता**, आमाशय और आतोंको **दर्पनाशक**, गरममसाला और घी, **प्रतिनिधि**, मछली, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवोंको बलप्रद, (२) ओजको बलप्रद, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) बलप्रद, (५) उष्णप्रकृतिवालों के आमाशयको और यकृत्की तीक्ष्णताको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(४२२) टेसू (ढाक) के फूल

संस्कृत, पलाशपुष्प, **फारसी**, गुलपलह, **स्वरूप**, पीला, काला और लाल, **स्वाद**, फीका और कुछ कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, बद्धक है, **दर्पनाशक**, खाकसी और खारी नमक, **प्रतिनिधि**, बाबूनाके फूल और नाखूना, **मात्रा**, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ, पित्त और रक्तविकारको हरणकर्ता, (२) मूत्रप्रवर्तक, (३) इसके सफ़ेद फूल ओजकेलिये बलप्रद हैं, (४) इसके क्वाथका सेक और भपारा वस्तिकी पीड़ा और वृषणोंकी शोथको लाभप्रद हैं (५) मूत्रल, (६) इसका हिम प्रमेह और शुक्रप्रमेहको लाभप्रद है, (७) इसके रंगमें रंगा हुआ वस्त्र पांडु (पीलिया) को हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(४२३) ठीकरी

संस्कृत, खर्पर, **फारसी**, सिफाल, **अरबी**, ख़ज़फ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, स्नायुको और बद्धक है, **दर्पनाशक**, रोग़नबनफ्सा, **प्रतिनिधि**, कपूर, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका लेप शोथको लयकारक है, (२) इसका मंजन दांतोंको स्वच्छकर्ता है, (३) मसूड़ोंको बलप्रद, (४) मसूड़ोंके रुधिरका रुद्धक, (५) यदि कोरी ठीकरीको रुधिर निकलनेकी जगहपर बांधदेवे तो रुधिर बन्द होजाताहै (निर्विषैल)

(४२४) ढाकका पत्ता

संस्कृत, पलाशपत्र, **अरबी**, बर्गपलह, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, पत्ते और फूल १ कक्षामें गरम और तर हैं, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) क्षुधाप्रद, (२) फोड़े, फुन्सी और वायुको लयकर्ता, (३) गुल्म, अर्श (बवासीर) और पेटके कीड़ोंको गुणप्रद,

(४) इसके फूल बद्धक हैं (५) कफको हरणकर्ता, (६) मूत्रप्रवर्तक, (७) यदि पैर धोनेके जलमें मिलावे तो मस्तकमें परिमाणुओं (भाप) को नहीं चढ़नेदेता, (८) शोथको लयकर्ता, (९) इसके फूलोंके स्वरसकी नस्य आंखके जालेको गुणप्रद है, (१०) इसके फूलके क्वाथसे वृषणोंको सेके तो उनके बढ़जानेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४२५) ढाकका गोंद (चुनियांगोंद)

संस्कृत, पलाशनिर्यास, **फारसी**, हकमकव्वाचपलह, **स्वरूप**, लाल और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और लसयुक्त, **पहिचान**, एक जातिका प्रसिद्ध गोंद है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **दर्पनाशक**, इसको अग्निद्वारा भूनना है, **प्रतिनिधि**, बबूलका गोंद, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वृक्क (गुर्दा) के रोग और बवासीरको लाभप्रद, (२) वीर्यको सांद्र (गाढ़ा) कर्ता, (३) बद्धक, (४) वात और कफनाशक, (५) इसकी राखमें घुलाहुआ जल प्लीह, शोथ और अफ़राकेलिये अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४२६) ढाकके बीज (पलासपापड़ा)

संस्कृत, पलाशबीज, **फारसी**, तुख़्मपहल, **स्वरूप**, पोलयुक्त और भीतरसे भूरे होतेहैं, **स्वाद**, कछ कड़ुआ, **पहिचान**, ढाकके बीज हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके पीनेसे बवासीर और पेटके कीड़े दूर होजातेहैं, (२) इसका तेल ओजको चालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(४२७) ढेंढ़स

संस्कृत, डिंडिश, **स्वरूप**, पिलोईलिये हरा, **स्वाद**, कुछ मीठा और कड़ुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध तरकारी है जोकि विहीके समान गोल होतीहै, **प्रकृति**, गरम, **हानिकर्ता**, आध्मानको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, गरममसाला, **प्रतिनिधि** आंबाहलदी, **गुण, कर्म, प्रयोग**, पित्तको हरणकर्ता, (१) (२) कफको उत्पन्नकर्ता, (३) दीर्घपाकी (४) मांसके साथ ज्वरको लाभप्रद है, (५) सम्पूर्ण कर्मोंमें कद्दूके समान है, (६) मस्तिष्कको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(४२८) तगर (असगंद वाला)

संस्कृत, कालानुसार्य, **अरबी**, असारून, **स्वरूप**, पिलोई लिये, **स्वाद**, कड़ुआ और तीक्ष्णगंधियुक्त, **पहिचान**, एक जातिकी प्रसिद्ध घास है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मुनक्का, **प्रतिनिधि**, खुलंजान और सोंठ, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छकर्ता, (२) उष्णताका वर्द्धक, (३) शोथ और वायुको

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लयकता, (४) मस्तिष्क, आमाशय, यकृत्, स्नायु, प्लीह और वृक्कको बलप्रद, (५) पित्तज और कफजमलको अतिसार द्वारा शोधन करनेवाली (६) जीर्णज्वरको हरणकर्ता, (७) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्तक है,(निर्विषैल)

(४२९) तज

संस्कृत, त्वक्पत्र, **फारसी**, तज, **अरबी**, कुर्फ़ा और सलीख़ा, **स्वरूप**, कुछ लाल और धूरिया, **स्वाद**, कुछ मीठा और तीखा, **पहिचान**, एक वृक्षकी छाल है और किसीकी सम्मतिमें दालचीनीकी छाल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गुर्दा और आंतोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा और ल्हिसोड़े, **प्रतिनिधि**, दालचीनी, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) उष्णताजनक, (३) अंतर्मलको पक्ककर्ता, (४) शीतकी वायु और शोथको लयकर्ता, (५) उत्तमांग अर्थात् हृदय, मस्तिष्क, यकृत् और वृषणोंको बलप्रद, बढ़े दोषोंको छांटनेवाला (७) मूत्रल, (८) दृष्टिको बलप्रद, (९) श्लेष्मा और प्रतिश्यायको हरणकर्ता, (१०) श्वांस और खांसीको गुणप्रद, (११) सिरकाके साथ इसका लेप शोथको लयकारक है, (१२) आमाशयके मुखसे कफको छांटता है, (निर्विषैल)

(४३०) ततिली

अरबी, सुदाब, **स्वरूप**, पत्ते हरे और फूल पीले, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त और कड़वी, **पहिचान**, एक जातिकी घास है जोकि प्रायः गेहूंके खेतोंमें होतीहै और खेतको खराब करदेती है, **प्रकृति**, इसके पत्ते २ कक्षामें गरम और रूक्ष हैं, **हानिकर्ता**, ओज और दृष्टिको तथा शिरःपीड़ाप्रद है, **दर्पनाशक**, अनीसून और सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, सातर और पोदीना, **मात्रा**, १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छकर्ता, (२) वायु और आध्मानको लयकर्ता, (३) मस्तिष्कको बलप्रद, (४) मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको गुणप्रद, (५) वक्षस्थलके रोग, प्लीह, पाण्डु और वातजगुल्मको लाभप्रद, (५) वृक्क और वस्तिकी अश्मरीको खंडनकर्ता, (६) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (७) जलमें पीसकर इसका लेप करे तो सूखी और तर खुजलीको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(४३१) ततिलीके बीज

अरबी, बजरुस्सुदाब, **स्वरूप**, काले, **स्वाद**, कुछ कड़वे, **पहिचान**, ततिली घासके बीज हैं जोकि तीन तीन बीज एक एकमें मिलेहुए होतेहैं **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिरःपीड़ाप्रद और वीर्यको कम करनेवाले, **दर्पनाशक**, कतीरा और शहद, **प्रतिनिधि**, ततिलीके पत्ते, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म**,

प्रयोग, (१) शहदके साथ इसको पीवे तो नींदमें बर्रानेको दूर करे, (२) मिरगी, जलोदर और वातजहिक्का (हिचकी) को लाभप्रद (३) आमाशयकी शीतता और वातजगुल्मको गुणकारक है,(४) दृष्टिको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(४३२) ततिली जंगली

अरबी, खुदाबबर्री, **स्वरूप**, अत्यन्त-हरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, ततिली-के समान यहभी एक घास है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, घातक है, **दर्पनाशक**, वमनकरना, **प्रति-निधि**, विष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसको घरमें रक्खे तो जीव जन्तु और कीड़ा मकोड़ाओंसे संरक्षण कर्ता है, (२) यदि इसकी पत्तीका स्वरस लोहेके शस्त्रमें लगावे तो काई नहीं लगसकती, (३) इसके वृक्षकी छालका लेप मद्यके साथ गंजेपनको गुण-कारकहै, (घातक विष)

(४३३) तपीती

स्वरूप, हरी, **स्वाद**, खट्टी, **पहिचान**, एक जातिकी घास है यह हिन्दुस्तानमें होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मांस और गरममसाला, **प्रतिनिधि**, कुल्फाका शाक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उष्ण-ताको हरणकर्ता, (२) मस्तिष्कमें परि-माणुओंको (भाप) नहीं चढ़नेदेता, (३) कांतिप्रद, (४) आमाशय और यकृत्को बलप्रद, (५) इसका शाक मांसके साथ अत्यन्त स्वादिष्ट और बलप्रद होताहै, (निर्विषैल)

(४३४) तबज़ीक (तमातीर)

अरबी, समाक, **स्वरूप**, कुछ लाल और भूरी, **स्वाद**, खट्टी, **पहिचान**, मसूरके बराबर एक वृक्षका फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष तथा किसीकी सम्मतिमें ३ कक्षामें रूक्ष है, **हा-निकर्ता**, आमाशय और शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, मस्तगी और अनीसून, **प्रति-निधि**, सिर्का, ज़रश्क और अकाकिया, **मात्रा**, १ तोलेसे ५ तोलेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशयके मुखको खरदरा करनेवाला, (२) बद्धक, (३) वमन, हृल्लास और पित्तज अतिसारका बद्धक, (४) अन्त्रियोंकी लेखनता (छीलन) को लाभप्रद, (५) मुखसे रुधिर आनेको और रक्तस्रावको गुणप्रद, (६) बहु-मूत्रताका रुद्धक, (७) उदरके अवयवों-को बलप्रद, (८) भोजनके करतेही जो दस्तोंके द्वारा खाना निकलजाताहै उसको गुणकारकहै, (निर्विषैल)

(४३५) तमाकू

संस्कृत, तमाल, **फारसी**, तंबाकू, **अरबी**, नतन और तम्बाक, **स्वरूप**, हरा और लाल, **स्वाद**, तीखा और असह्य गन्धियुक्त, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध ओषधिका

पत्ता है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, उष्णप्रकृतिवालोंको और हृदय तथा मस्तिष्कको, दर्पनाशक, ताजा दूध, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रूक्षताप्रद, (२) तृषाप्रद, (३) मस्तिष्ककी स्निग्धताका शोषक, (४) कफजधांस, तरखांसी, श्वास और मस्तिष्क सम्बन्धी श्लेष्माको हरणकर्ता (५) इसका धूआं महामारी पवनके विकारको हरणकर्ता है, (६) इसका खाना और पीना वायु और कफको लयकारक है और उनको छांटनेवाला है,(७) इसका हरा पत्ता शोथको और विशेषतः वृषणोंकी शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(४३६) तरबूज़

संस्कृत, कलिंद, फारसी, हिंददानह, अरबी, वित्तीखहिंदी, इंग्रेज़ी, वाटरमेलन, स्वरूप, कालापनालिये हरा और बीज काले होतेहैं, स्वाद, मीठा, पहिचान, एक प्रसिद्ध फल है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और तर, हानिकर्ता, आमाशय, प्लीह और शिरको, दर्पनाशक, शहद और गुड़, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पित्त और रुधिरकी उष्णता तथा तीक्ष्णताको शांतिप्रद,(२)तृषाको शांतिप्रद, (३) मूत्रप्रवर्तक, (४) रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (५) कफको उत्पन्नकर्ता, (६) गरमीके ज्वरको लाभप्रद, (७) सिकंजबीनके साथ पीलियाको लाभप्रद है, (८) इसका जल उष्णप्रकृतिवालोंको प्रसन्नताप्रद है परन्तु आध्मानकर्ता और दीर्घपाकी है, (९) जिसदिन तरबूज़ खावे उस रोज चावल कदापि न खाने चाहिये (निर्विषैल)

(४३७) तरबूज़के बीज

संस्कृत, कालिन्दबीज, फारसी, तुख़्महिंददानह, अरबी, बजरुल्‌बित्तीखहिंदी, स्वरूप, लाल और काला, स्वाद, फीका और कुछ मीठा, पहिचान, प्रसिद्ध हैं, प्रकृति, २ कक्षामें ठण्डा और तर, हानिकर्ता, शीतप्रकृतिवालोंको, दर्पनाशक, शहद, प्रतिनिधि, कद्दूके बीज, मात्रा, ९ माशेसे एक तोलेतक, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) उखड़े मलको स्थिरकर्ता, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) वक्षस्थलकी खुर्खुराहट, गरमीकी खांसी और तृषाको हरणकर्ता, (४) गरमीका ज्वर और मूत्रके दाहको गुणप्रद, (५) वृक्क और वस्तिकी पथरीको निकालताहै (निर्विषैल)

(४३८) तरमराह

फारसी, तरहतेजक, अरबी, जरजीर, स्वरूप, कितनीही जातिका होताहै, किसीके फूल लाल और किसीके पीले इत्यादि होतेहैं, स्वाद, तीखा, पहिचान, एक वृक्ष है कि जिसके पत्ते मूलीके पत्तोंके बराबर होतेहैं कितनीही जातिका होताहै प्रकृति, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, शिरःपीड़ाको उत्पन्नकर्ता और दृष्टिको हरणकर्ता, दर्पनाशक, कासनी और

कुलफा, प्रतिनिधि, तोदरी, मात्रा, ४ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) यकृत् के रोधका उद्घाटक, (२) प्लीहके रोधका उद्घाटक, (३) वीर्य और दुग्धको उत्पन्नकर्ता, (४) पाचक, (५) ओजको संचालनकर्ता, (६) स्वच्छकर्ता, (७) मूत्रल, (८) वायुको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(४३९) तरमराहके बीज

संस्कृत, चन्द्रिका, **फारसी,** तुख़्मतरहतेजक, **अरबी,** बजरुज्जरजीर, **इंग्रेज़ी,** पीलीडीअम्, **स्वरूप,** ललोंईलिये सफ़ेद, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** एक जातिके बीज हैं और छारछार जैसे हव्बुलरशादके बराबर होतेहैं, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** कुष्ठको उत्पन्नकर्ता **दर्पनाशक,** कतीरा और दूध, **प्रतिनिधि,** प्याजके बीज और तोदरी, **मात्रा,** ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (२) ओजको चालनकर्ता, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) कफको वमनद्वारा निकालते हैं, (५) मूत्र और दुग्धप्रवर्तक, (६) वायुको लयकर्ता, (७) इन्होंका लेप कालेदाग, मुखकी मलिनता और श्यामता तथा दादको लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(४४०) ताड़

संस्कृत, ताल, **फारसी,** ताल, **अरबी,** तार, **इंग्रेज़ी,** पालमाइपाम, **स्वरूप,** बाहर लाल और भीतर सफ़ेद, **स्वाद,** दुर्गंधियुक्त कुछ मीठा, **पहिचान,** एक प्रसिद्ध वृक्ष है, **प्रकृति,** कच्चा ठण्डा और तर है तथा पकाहुआ ठण्डा और रूक्ष है एवं ताड़ी स्नायुयौगिक है, **हानिकर्ता,** दीर्घपाकी और आध्मान उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक,** गुड़, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) ओजको बलप्रद, (२) पित्त और रुधिरके विकारको हरणकर्ता, (३) मूत्रप्रवर्तक, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) प्राणवायुको बलप्रद, (६) इसकी ताड़ी मदकारक है, (७) वीर्यको बृंहणकर्ता, (८) बलप्रद, (९) कफके विकारोंको हरणकर्ता, (१०) ताड़ीका सिर्का पाचक है और आमाशयकी पीड़ा तथा प्लीहको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(४४१) तालमखाना

संस्कृत, कोकिलाक्ष, **इंग्रेज़ी,** स्याईनोग्या, **स्वरूप,** भूरा, **स्वाद,** फीका, **पहिचान,** एक वृक्षका बीज है जोकि जलके किनारे तोदरीके समान ऊगताहै, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** उष्णप्रकृतिवालोंको और आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक,** शीतल वस्तु **प्रतिनिधि,** सालममिश्री और मरोड़फली, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) बलप्रद, (२) मनको प्रसन्नताप्रद, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) ओजप्रद, (५) वीर्यवर्धक, (६) वीर्यको गाढ़ा करनेवाला, (७)

स्तम्भनकर्ता, (८) वात और रुधिर विकारको हरणकर्ता, (९) शुक्रमेहको हरणकर्ता, (१०) जलोदरको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(४४२) तांबा

संस्कृत, ताम्र, **फारसी**, मिस, **अरबी**, नहास, **इंग्रेज़ी**, कॉपर, **स्वरूप**, लाल और भूरा, **स्वाद**, अत्यन्त कसेला, **पहिचान**, एक जातिकी प्रसिद्ध खानिज धातु है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **मात्रा**, १ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पक्षवध, अर्दित और प्रायः शीतके रोगोंको लाभप्रद, (२) सिर्काके साथ इसका लेप शोथको लयकारकहै, (३) खुजलीको हरणकर्ता, (४) पित्त और कफके विकारोंको हरणकर्ता, (५) पांडु और कुष्ठको लाभप्रद, (६) खांसी और श्वास (दमा) को लाभप्रद, (७) वमनप्रद, (८) व्रणपूरक है, (निर्विषैल)

(४४३) ताम्रभस्म (जलाहुआ तांबा)

संस्कृत, ताम्रभस्म, **फारसी**, मिससोख्तह, **अरबी**, रोसखतज, **स्वरूप**, मटिया रंगकी, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, तांबेकी राख है जोकि तांबेको जलाकर बनाईजाती है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, बलकी शक्तिको दृढ़कर्ता, **दर्पनाशक**, कतीरा और वबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, तुबालमिस, **मात्रा**, १ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) मांसको गलानेवाली, (३) मांसको स्वच्छकर्ता, (४) व्रणशोधक, (५) व्रणपूरक, (६) नेत्रोंके पर्दोंको कांतिप्रद, (७) दुष्टमांसको लेखनकर्ता, (८) जलोदरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४४४) तारामुखी

अरबी, मरकीशीशा और हजरुल्नूर, **स्वरूप**, लाल, पीला और भूरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, हरएक धातुओंकी खानसे निकलताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और घातक है, **दर्पनाशक**, कतीरा और शहद, **प्रतिनिधि**, अकूलीमियां, **मात्रा**, ४ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) शोथको गुणकर्ता, (३) बद्धक, (४) उष्णताप्रद (५) यदि इसको वालकोंके गलेमें पहिनावे तो वालकोंको सोतेमें जो डर होताहै उससे संरक्षण करनेवाला है, (६) इसका नेत्रांजन नेत्रोंको कांतिप्रद है, (७) नेत्रोंको बलप्रद, (८) मलशोधक, (९) हरतालके साथ इसकी मरहम दुष्टमांसको छेदन करनेवाली है, (१०) व्रणके मलको स्वच्छकर्ता (११) कांतिप्रद, (१२) व्रणपूरक,

(१३) इसकी भस्म प्रायः शीतके रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४४५) तालीसपत्र

संस्कृत, तालीसपत्र, **इंग्रेज़ी**, टेकसमवेकटा, **स्वरूप**, नया ललोईलिये पीला और पुराना काला होताहै, **स्वाद**, कसेला और तीखा, **पहिचान**, जिसकी गंधि केसरकी गंधिके समान होतीहै एक वृक्षका महीन पत्ता है और किसीकी सम्मतिमें महीन छालही है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, जीरा, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अर्दित, पक्षवध, मुखसे रुधिरआना और रुधिरस्रावको गुणकर्ता, (२) प्रायः अवयवोंके स्निग्धताके स्रावको गुणकर्ता, (३) अतिसार और बवासीरको गुणकर्ता, (४) अन्त्रियोंके क्षतको लाभप्रद, (५) सिर्काके साथ इसके काथकी कुल्ली दांतोंकी पीड़ाको लाभप्रद है, (६) इसको मुखमें धारण करे तो मुखके आनेको जोकि सफ़ेद होवे गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(४४६) तिल

संस्कृत, तिल, **फारसी**, कुंजद, **अरबी**, सिमसिम, **इंग्रेज़ी**, सिसेमनेजरसीडम, **स्वरूप**, काला और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और चिकना, **पहिचान**, एक जातिका प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और शिरः पीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, आगसे भूनना और शहद है, **प्रतिनिधि**, अलसीके बीज, **मात्रा**, ५ माशे, ९ माशे और १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रसको संपक्ककर्ता, (२) लघु, (३) रोधका उद्घाटक, (४) अपनी लसके कारण रोधप्रद, (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) स्वर और कण्ठके खुरखुरानेको गुणकर्ता, (७) ओजको बलप्रद, (८) शोथको लयकर्ता, (९) आर्तवप्रवर्तक, (१०) त्वचाको मृदुकर्ता, (११) काले दागोंका नाशक, (१२) इसके फूल आंखके नाखूना (नख) के लिये अनुभूत गुणकारक हैं, (निर्विषैल एक नाज है)

(४४७) तुख़्मबिलसां

फारसी, तुख़्मबिलसां, **अरबी**, हब्ब बिलसां, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, काली मिरचके बराबर बिलसांके बीज हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, ऊदबिलसां और बिलसांकी जड़, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशय और पाचन शक्तिको बलप्रद, (२) आमाशय और अन्त्रियोंकी सर्दी तथा तरीको हरणकर्ता, (३) दोषोंके शोषक, (४) वायु और अफराको लयकर्ता, (५) यकृत् (जिगर) के रोध उद्घाटक, (६) कानोंकी सन-

सनाहट, जलोदर, जांघकी पीड़ा और प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी वातज और कफज रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४४८) तुरंजबीन

फारसी, तुरंजबीन, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, एक बूंटीकी ओस है जोकि जमजातीहै और मीठी होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, तिल्ली और गरम मिज़ाजवालोंको, **दर्पनाशक**, उन्नाव और इमली, **प्रतिनिधि**, शीरखिश्त और लाल खांड, **मात्रा**, ३ तोलेसे ५ तोलेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) कासको मृदुकर्ता और लाभप्रद, (३) पित्तज मलको अतिसार (दस्त) द्वारा निकालनेवाला, (४) दोषोंको चालनकर्ता, (५) वक्षस्थलकी पीड़ा, हल्लास और गरमीके ज्वरोंको गुणकर्ता, (६) कांतिप्रद, (७) तीनों दोषोंको निकालनेवाला है, (निर्विषैल)

(४४९) तुलसी (नाजबू)

संस्कृत, सुरसा, **फारसी**, शाहसिपरम और रेहां, **अरबी**, शाहसफरम, **इंग्रेज़ी**, ओसिमंआलवम्, **स्वरूप**, पिलोईलिये हरी, **स्वाद**, तीखी और तीक्ष्णगन्धियुक्त, **पहिचान**,सुगन्धित और दिखनोट एक गजतककी लंबी गुल्म जातिकी ओषधि है,**प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, धनियां और गुलाब, **प्रतिनिधि**, बादरंजोरिया, **मात्रा**, ४ तोले, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मस्तिष्कके रोधकी उद्घाटक, (२) शोथको लयकर्ता, (३) वायुको हरणकर्ता, (४) हृदयकी व्याकुलता और आमाशयके मांद्यको हरणकर्ता, (५) सांद्र रुधिरके विकारको हरणकर्ता, (६) इसको घरमें रक्खे तो जीव जन्तु, और विशेषतः खटमल तथा जूंओंकी नाशक है, (७) महामारीकी वायुसे संरक्षण करनेवाली है, (निर्विषैल)

(४५०) तुलसीके बीज

संस्कृत, मुरसाबीज, **फारसी**, तुख़्म रेहां, **अरबी**, बजरुल्रेहां, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, लसयुक्त फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, गुलाब और मर्जजोश, **प्रतिनिधि**, कनूचा, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पेचिश (मरोड़ा) केलिये मिश्रीके साथ देनेसे अद्भुत लाभकारक हैं, (२) सूखीधांस, खांसी और वक्षस्थलके खुरखुरानेको अत्यन्त लाभकर्ता, (३) वीर्यको सांद्रकर्ता है, (निर्विषैल)

(४५१) तुलसी जंगली

संस्कृत, बर्बरी, **फारसी**, रेहांदश्ती, **अरबी**, रेहांनुल्बर्री, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त तीखी और कड़वी, तुलसीके समान एक जातिकी ओषधि है, **प्रकृति**,

२ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** फेंफड़ेको और मस्तिष्कको, **मात्रा,** ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शोथको लयकर्ता और बिशेषतः कफज शोथको लाभप्रद है, (२) शीतके रोगोंको गुणकर्ता, (३) इसके पत्तोंका स्वरस कानमें निचोड़े तो दांतोंके कीड़ोंको मारकर निकालनेवाली है, (निर्विषैल)

(४५२) तून

संस्कृत, तूणी, **स्वरूप,** पीला, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** जिसके फूल नीमके फूल जैसे होतेहैं, यह वस्त्र रंगनेके काममें आताहै, एक वृक्ष है, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अत्यन्त बद्धक, (२) ओजप्रद, (३) फोड़े, फुन्सी और प्रायः त्वचाके रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४५३) तूतिया (मोरचूत)

संस्कृत, तुत्थ, **फारसी,** दूदिया, **अरबी,** तूतिया, **स्वरूप,** जंगाली, **स्वाद,** खारापनलिये तीखा, **पहिचान,** एक पथरीला अंग है, यह खानसे निकलताहै और कृत्रिम भी होताहै, **प्रकृति,** ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** वमनप्रद है, यदि पचजावे तो घातक है, **दर्पनाशक,** शहद और अग्निमें भूनना है, **प्रतिनिधि,** नीलाथोथा और शादंज, **मात्रा,** २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मांसको छेदनकर्ता और मांसभक्षक है, (२) अत्यन्त रूक्ष, (३) व्रणको स्वच्छकर्ता, (४) मलको स्वच्छकर्ता, (५) आंखके जालेके काटनेमें अद्भुत प्रभावशाली है (६) खील कियाहुआ वस्तिके क्षत (जखम) को हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(४५४) तूत (सहतूत) मीठा

संस्कृत, तूत, **फारसी,** तूतशीरीं, **अरबी,** तूतहल्व, **इंग्रेज़ी,** मलबेरिफ्रू, **स्वरूप,** सफ़ेद और काला, **स्वाद,** मीठा, **पहिचान,** अंगुलीके बराबर एक प्रसिद्ध लम्बा फल है, **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तर, **हानिकर्ता,** आमाशयको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक,** सिकंजबीन, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) उत्तम रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (२) रोधका उद्घाटक, (३) यकृत् और प्लीहका रुद्धक, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) ओजप्रद, (६) वृक्ककी बसा (चरबी) को बलप्रद, (७) जीभ और कण्ठपर मलको नहीं गिरनेदेता, (८) इसका शरबत कण्ठकी पीड़ाको लाभप्रद है, (९) इसके पत्तोंके काथका गंडूष गलेकी पीड़ा और गलेके भिचनेको गुणकर्ता है, (१०) इसकी कुल्ली दांत और मसूढ़ोंकी पीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४५५) तूत (सहतूत) खट्टा

संस्कृत, अम्लतूत, **फारसी,** तूततुर्शशामी, **अरबी,** तूतहामिज, **स्वरूप,** सफ़ेद और काला, **स्वाद,** खट्टा, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठण्डा और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता,** वक्षस्थलको,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दर्पनाशक, शहद, **प्रतिनिधि**, आलूबुखारा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तनाशक, (२) तृषाको शांतिप्रद, (३) रक्तप्रकोपको शमनकर्ता, (४) मस्तिष्कपर परिमाणुओंको नहीं चढ़नेदेता (५) इसका शरबत श्लेष्माको अत्यन्त गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४५६) तूंबी (तूंमड़ी कड़वी)

संस्कृत, तुंबी, **फारसी**, कद्दूयतल्ख, **अरबी**, करअउल्मुर, **इंग्रेजी**, बोटलगुर्ड, **स्वरूप**, हरा और पीला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, वमन करना और घी पिलाना है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसको खाकर वमन करे तो श्वास और जीर्णकासको गुणकारक है, (२) इसकी नस्य पीलियाको लाभप्रद है, (३) इसका मंजन दांतोंको दृढ़ (मजबूत) कर्ता है, (४) दांतों की पीड़ाको हरणकर्ता, (५) इसकी जड़का लेप शोथको लयकारक है, (उपविष)

(४५७) तेजपात

संस्कृत, पत्रज, **अरबी**, साज़िजहिंदी, **इंग्रेज़ी**, सीनामोमीटमाला, **स्वरूप**, भूरा, हरा और सूखा, **स्वाद**, तीखा और तीक्ष्णगन्धियुक्त, **पहिचान**, सुगन्धियुक्त और चौड़ी एक प्रसिद्ध पत्ती है, किसीकी सम्मतिमें लोंगके पत्ते हैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मस्तगी, **प्रतिनिधि**, बालछड़ और सलीखा, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्राणरक्षक, (२) दोषोंकी रक्षा करनेवाला, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) बृंहणकर्ता, (५) वायुको लयकर्ता, (६) आमाशयको शोधन करनेवाला, (७) उदरके अवयवोंको बलप्रद, (८) इन्द्रियोंको बलप्रद, (९) मूत्रल, (१०) वृक्क और वस्तिकी अश्मरी (पथरी) का नाशक, (११) भ्रम और उन्मादको लाभप्रद, (१२) लारके बहनेको गुणकर्ता, (१३) इसकी धूनी शीघ्रही प्रसव करानेवाली है, (निर्विषैल)

(४५८) तैवाज

स्वरूप, पीला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, चिनारके वृक्षकी छाल जैसी इन्द्रजौके वृक्षकी छाल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, अंजुबार, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शिरःपीड़ा और दस्तोंकी पीड़ाको लाभप्रद, (२) वक्षस्थलकी स्निग्धता और स्निग्धश्लेष्माको हरणकर्ता, (३) नक्सीरके फूटनेको बन्दकरनेवाला, (४) इसकी धूनी रुधिरको रोकनेवाली है, (निर्विषैल)

(४५९) तोदरी सफ़ेद

फारसी, तोदरीसफ़ेद, **अरबी**,

बजरुल्हमहमआबियज, **स्वरूप,** सफ़ेद, **स्वाद,** कुछ कड़वी, **पहिचान,** मसूरसे छोटे और ईसबगोलसे चौड़े एक जातिके बीज हैं, **प्रकृति,** गरम और तर, **हानिकर्ता,** उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक,** ज़रश्क, **प्रतिनिधि,** बहमन सफ़ेद, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) शोथको लयकर्ता, (३) वीर्यको सांद्रकर्ता, (४) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (५) क्षुधावर्धक, (६) शहदके साथ इसकी चटनी लसयुक्त दोषोंकी शोधक है, (निर्विषैल)

(४६०) तोदरी सुर्ख़

फारसी, तोदरी सुर्ख़ अरबी, बजरुल्हमहमएहमर, **स्वरूप,** लाल, **स्वाद,** कड़वी, **पहिचान,** सफ़ेद तोदरीके समान होतीहै, **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता,** उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक,** ज़रश्क, **प्रतिनिधि,** लाल बेहमन, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अत्यन्त क्षुधावर्द्धक, (२) ओजप्रद, (३) ओजके बलको अत्यन्त चालनकर्ता, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) रोधकी उद्घाटक, (६) स्वरको स्वच्छकर्ता और शोधनकर्ता, (७) शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(४६१) तोरई

संस्कृत, धामार्गव, **स्वरूप,** हरी, **स्वाद,** फीकी और कड़वी, **पहिचान,** खीराके समान एक फल है जिसकी कि तरकारी होतीहै, **प्रकृति,** लसयुक्त स्निग्धताके साथ २ कक्षामें ठंडी और तर है, **हानिकर्ता,** आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक,** मांस और सोंठ, **प्रतिनिधि,** चचेंडा, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) प्रकृतिकी गरमीको हरणकर्ता, (३) कच्चे कफको पकानेवाली है, (४) शरीरके पीलापनको हरणकर्ता, (५) जलोदर और प्लीह (तिल्ली) की शोथको गुणकर्ता, (६) अवयवोंको बलप्रद, (७) इसका फल ठण्डा और रूक्ष होताहै, (८) त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) के विकारोंकी नाशक है, (निर्विषैल)

(४६२) तंजबेख़ताई (शाहचीनी)

फारसी, तंजबेख़ताई और शाहचीनी, **अरबी,** शाहचीनी, **स्वरूप,** पिलोंईलिये चंदनी रंगकी, **स्वाद,** कड़वी, **पहिचान,** चीनमें होनेवाली मेंहदीके पत्तोंकी सिर्कामें बनीहुई टिकिया है, **प्रकृति,** स्नायु यौगिक, **हानिकर्त्ता,** फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** कतीरा, **प्रतिनिधि,** जदवार, **मात्रा,** २। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शोथके मलको पक्कर्त्ता और लयकर्त्ता, (२) गरमी और सर्दीके शोथ (सूजन) को लयकर्त्ता, (३) बद्धक, (४) शिरःपीड़ाको लाभकर्ता, (५) रक्तस्रावकी रुद्धक, (६) इसके बारीक चूर्णकी बुर्की नेत्र,

उपस्थ और इन्द्रियोंके क्षतों (जख़म) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४६३) थूहर

संस्कृत, सेहुंड, **अरबी**, जकूमहिजाजी **इंग्रेज़ी**, युफ़ोर्ब्या, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, अत्यन्त कडुआ, **पहिचान**, एक दुधारी ओषधि है जोकि कांटेदार डंडा जैसी होतीहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालों–को और घातक है, **दर्पनाशक**, ताजा दूध, **प्रतिनिधि**, नफ्त, **मात्रा**, ४ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को शोधनकर्ता, (३) दोषोंको स्वच्छकर्ता, (४) प्रवल रेचक है, (५) इसका लेप शीतलाके चिन्होंका नाशक है, (६) इसका दूध ओजप्रद है, (७) मनको प्रसन्नताप्रद है, (विष है)

(४६४) दरमिनह

फारसी, दरमिनह, **अरबी**, खशरक और शीब्र **स्वरूप**, पिलोईलिये, पत्ते भूरे और फूल लाल तथा पीले होतेहैं, **स्वाद**, कडुआ **पहिचान**, सोयाके समान एक औषधि है, पत्ते सुदाबके पत्ते जैसे होते हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिर, आमाशय और स्नायुओंको, **दर्पनाशक**, मस्तगी और बनफसा, **प्रतिनिधि**, आफिस्तीं और वायविडंग, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोधका उद्घाटक, (२) कफशोधक, (३) शोथको लयकर्ता, (४) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (५) उदरके कृमियोंका नाशक, (६) दुष्ट दोषोंको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (७) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (८) मलको संपककर्ता, (९) ओजप्रद, (१०) कूल्हेकी पीड़ा, सन्निपातज्वर, मूत्ररोध और हिक्का (हिचकी) को लाभप्रद, (११) इसकी बुर्की मुखकी खुजलीको गुणकारक है, (१२)अत्यन्त हानि करनेवाला है,(निर्विषैल)

(४६५) दरूंज

फारसी, दरूंज, **अरबी**, दरूंजअक़रबी, **स्वरूप**, कुछ भूरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, गांठदार विच्छूकी आकृतिकी एक जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, सोंफ और बिसबासा, **प्रतिनिधि**, नरकचूर, और लोंग, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ, वात और दुर्गंधित अपानवायुको लयकर्ता, (२) इन्द्रिय और हृदयको बलप्रद, (३) आमाशय, प्लीह और पाचनशक्तिको बलप्रद, (४) प्रकृतिको शांतिप्रद, (५)खांड़के साथ कफजन्य शिरः पीड़ा और वक्षस्थलकी पीड़ाको लाभप्रद, (६) प्रायः कफज और वातज रोगोंको लाभप्रद, (७)रोधका उद्घाटक, (८) प्रायः विषोंका

दर्पनाशक, (६) गर्भस्थितिका रक्षक है (निर्विषैल)

(४६६) दही

संस्कृत, दधि, **फारसी**, जुग़रात और मास्त, **अरबी**, लुबनुल्हामिज़, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ खट्टा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डा और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको और आमाशयको, **दर्पनाशक**, नमक, सोंठ, पोदीना और जीरा, **प्रतिनिधि**, दहीका पानी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्निग्धताका वर्द्धक, (२) तृषाको शांतिप्रद, (३) उष्णप्रकृतिवालोंके ओजको बलप्रद, (४) इसमें मठेसे अधिक आहारत्व है, (५) दीर्घपाकी, (६) रोध करनेवाला (७) यदि दहीके ऊपरकी मलाईको सिरमें मले तो रोग़न (तैल) मगज़कद्दूके समान गुणकारक है, (८) यदि मुखपर मले तो मुखकी रूक्षता, श्यामता और झांईको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(४६७) दांत हाथीका

संस्कृत, हस्तिदन्त, **फारसी**, दंदानपील, **अरबी**, आज, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और तीखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठण्डा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, सनोवरका स्वरस, **प्रतिनिधि**, शाखबुज़, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शहदके साथ इसका बुरादा (चूर्ण) धारणाशक्ति और ज्ञानशक्तिको बलप्रद है, (२) अतिसार और रक्तस्रावका रुद्धक, (३) उचित योगोंके साथ इसका लेप ओजको बलप्रद है, (४) ऋतुस्नानके पीछे मिश्रीके साथ यदि स्त्रीको खिलावे तो गर्भवती होवे, (५) इसके मोहरेको गलेमें पहिने तो मिरगी और बालकोंकी मिरगीको गुणकारक है, (६) इसका नेत्रांजन आंखोंको कांतिप्रद और दृष्टिको बलप्रद है, (अत्यन्त हानिकरनेवाला निर्विषैल)

(४६८) दांतोंन (दंती)

संस्कृत, दन्ती, **फारसी**, बेखबेदंजीरखताई, **अरबी**, अस्लहब्बुस्सलातीन, **स्वरूप**, पिलोईलिये, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, जमालगोटेकी प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, गरम, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यन्त तीखी और गरम है, (२)पाचक, (३) कफ और रक्तविकारको हरणकर्ता, (४) जलोदर और शोथको गुणकर्ता, (५)उदर (पेट) के कीड़ोंकी नाशक है, (निर्विषैल)

(४६९) दाढ़ी (डाढ़ी) बर्गदकी

संस्कृत, वटजटा, **फारसी**, रेशयेवर्गद, **अरबी**, लहय्यतुत्तीस, **स्वरूप**, ललोईलिये पीली, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, बड़के वृक्षकी डालियोंसे प्रायः जड़ जैसी जटा निकलकर पृथ्वीतक आजातीहैं और पृथ्वीमें घुसकर जड़जैसी होजातीहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें

ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, गुर्देको, दर्पनाशक, उन्नाव और वंशलोचन, प्रतिनिधि, रसोत और अकाकिया, मात्रा, ४ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) रुधिरकी रुद्धक, (३) पित्तज और रुधिरज अतिसार और फेंफड़ेके व्रण (जखम) को गुणकर्ता, (४) आमाशयको बलप्रद, (५) इसका हिम क्लीवत्वका उत्पादक है, (६) इसका लेप शोथको लयकर्ता है, (७)व्रणशोधक और पूरक है (निर्बिषैल)

(४७०) दाबह

स्वरूप, पीला, **स्वाद**, फीका, **पहिनाच**, एक ओषधिका अतिकठोर तृण है जोकि कांटेके समान पांवमें चुभजाताहै, **प्रकृति**, ठंडा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मूत्रकृच्छ्रको गुणकर्ता, (२) वस्तिकी अश्मरीको खंडनकर्ता, (३) कफ, पित्त और रुधिरविकारको हरणकर्ता, (४) वस्तिका शूल और तृषाको शांतिप्रद, (५) गुदाके रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४७१) दामन (धामन, धौ)

संस्कृत, धव, **स्वरूप**, पत्ते और डाली हरे होतेहैं, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, बहुतसे कांटेवाला एक वृक्ष है, **प्रकृति**, ठंडा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ, पित्त और रुधिरविकारको हरणकर्ता, (२) बवासीर और शरीरके पीलापनको लाभकारक है (निर्विषैल)

(४७२) दालचीनी

संस्कृत, गुडत्वक्, **फारसी**, दारचीनी, **अरबी**, दारसीनी, **इंग्रेज़ी**, सीनामम, **स्वरूप**, ललोंई लिये, **स्वाद**, तीक्ष्ण गंधियुक्त तीखा और मीठा, **पहिचान**, एक वृक्षकी लकड़ीका प्रसिद्ध बक्कल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्तिको और शिरमें दर्द करनेवाला, **दर्पनाशक**, मस्तगी और कतीरा, **प्रतिनिधि**, कबाबचीनी और तज, **मात्रा**, ४ माशे से ७ माशेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्राणवायुको मृदुताप्रद, (२) रोधकी उद्घाटक, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) हरएक दोषोंको संपक्ककर्ता (५) प्राणवायु और स्नायुओंकी रक्षक, (६) वायुको लयकर्ता, (७) मूत्र और आर्तव प्रवर्तक, (८) ओजको बलप्रद, (९) हृदयकी व्याकुलता, जलोदर और उन्मादको गुणकर्ता,(१०)इसका सफ़ेद तैल शीतके रोग, शीतकी शोथ, शीतकी पीड़ा और शिरःपीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४७३) दुद्धी

संस्कृत, दुग्धिका, **फारसी**, शीरग्याह और सूसपन्द, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, जिसमें दूध निकलता है, एक ओषधि है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और

रूक्ष, हानिकर्ता, फेंफड़ेको, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) कफके विकारोंको हरण-कर्ता, (२) कोढ़, महामारी, प्रमेह और शुक्रमेहको गुणकारक, (३) ओजप्रद, (४) उदरके कृमियोंकी नाशक, (४) खांसीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(४७४) दूध ऊंटनी

संस्कृत, उष्ट्री दुग्ध, **फारसी**, शीरशुतर, **अरबी**, लुबनुल्लफाह, **स्वरूप**, कलोंचीलिये सफ़ेद, **स्वाद**, खारी, **प्रकृति**, रूक्षता-लिये गरम, **हानिकर्ता**, आमाशयकी थैली-में देरीसे उतरनेवाला, **दर्पनाशक**, खांड़, **प्रतिनिधि**, गायका दूध, **मात्रा**, २छटांक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) कांतिकर्ता, (२) मलको सम्पक्ककर्ता, (३)शरीर-को बलप्रद, (४) रोधका उद्घाटक, (५) आंतरिक शोथको लयकर्ता, (६) जलोदर, वमन, श्वास और धांसको गुण-कारक है, (निर्विषैल)

(४७५) दूध बकरी

संस्कृत, छागक्षीर, **फारसी**, शीरबुज, **अरबी**, लुबनुलमागज, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा, **प्रकृति**, कुछ गरमी-लिये ठण्डा और तर, **हानिकर्ता**, शीत-प्रकृतिवालोंको और आध्मान करनेवाला, **दर्पनाशक**, शहद और सोंफ, **प्रतिनिधि**, गायका दूध, **मात्रा**, ४ छटांक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) स्वच्छताप्रद, (२) कांतिप्रद, (३) मुखसे रुधिर आना, खांसी, उरःक्षत, फेंफड़ेका क्षत (जख़म) कण्ठरोग, वस्तिका क्षत और गलेके रोधको गुणकारक है, (४) मूत्रल, (५) उद-रको मृदुकर्ता और समकर्ता, (६) इसका गंडूष विशेषतः गलेके रोगोंको गुणकारक है, (७) उष्णप्रकृतिवालोंको बलप्रद, (८) गरमीके रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४७६) दूध भैंस

संस्कृत, माहिषक्षीर, **फारसी**, शीर-मेशगाव, **अरबी**, लुबनुल्जामूश, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा, **प्रकृति**, शरी-रको भारी करनेवाला और चिकने पदार्थोंके साथ सेवन करनेसे समान गुणवाला है, **हानि-कर्ता**, दीर्घपाकी और गरिष्ठ, **दर्पनाशक**, खांड़, **प्रतिनिधि**, गायका दूध, **मात्रा**, ६ छटांक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शरीरको बृं-हणकर्ता, (२) प्रायः अवयवोंको बल-प्रद, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) रक्तव-र्द्धक, (५) शरीरमें जो दोष प्रबल होताहै उसीमें मिलजाताहै, (६) यदि इसमें कंघईकी लकड़ीको औटाकर दही ज-मावे और मिश्रीके साथ खावे तो बवासी-रको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(४७७) दूध भेड़

संस्कृत, अविक्षीर, **फारसी**, शीरमेश और शीरगोस्फन्द, **अरबी**, लुबनुज्जां, **स्वरूप**, कलोंचीलिये सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और गंधियुक्त, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, पेटमें गुड़गुड़ाहट और

गुल्मको पैदा करनेवाला, **दर्पनाशक**, बादामरोग़न और शहद, **प्रतिनिधि**, स्त्रीका दूध, **मात्रा**, ३ तोले, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मस्तिष्क और ओजको बलप्रद, (२) अन्त्रियोंके क्षत, मुखसे रुधिर आना और मरोड़ा (पेचिश) को गुणकारक है, (३) विषैल ओषधियों–के अपगुणको हरणकर्ता, (४) कामजनक, (५) बादामरोग़न और बबूलके गोंदके साथ खांसी और स्त्रीसंगके अप गुणोंको हरणकर्ता, (निर्विषैल)

(४७८) दूध चमगीदड़

फारसी, शीरशप्परह, **अरबी**, लुबनुल्खिफाश, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, तीखा और कुछ कडुआ, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम है, **हानिकर्ता**, तिल्ली और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, शेरनीका दूध, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यन्त मूत्रल, (२) अत्यंतकांतिप्रद, (३) शरीरमें शीघ्रही असर करनेवाला है इसी कारणसे इसका सेवन करना योग्य है, (४) इसका लिंगके ऊपर लेप करे तो लिंग और ओजको बलप्रद है, (हानिकर्ता निर्विषैल)

(४७९) दूध सूअरनी

संस्कृत, वाराहीक्षीर, **फारसी**, शीरखोक, **अरबी**, लुबनुल्खंजीर, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठण्डा और तर, **हानिकर्ता**, आध्मान करनेवाला दीर्घपाकी और सफ़ेद दागोंको उत्पन्नकर्ता है, **दर्पनाशक**, गुड़, **प्रतिनिधि**, गधीका दूध, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) बलप्रद, (३) उरःक्षत और राजयक्ष्माको लाभकर्ता, (४) त्वचाके रोगोंको उत्पन्नकर्ता, (५) यूरोपवाले इसकी बड़ी प्रशंसा करतेहैं और प्रायः सेवन भी करतेहैं तथा मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवोंको अनुभूत बलप्रद बतातेहैं, (निर्विषैल)

(४८०) दूध शेरनी

संस्कृत, व्याघ्रीक्षीर, **फारसी**, शीरशेर, **अरबी**, लुबनुल्असद, **स्वरूप**, पिलोईलिये, **स्वाद**, खट्टा और तीखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम, **हानिकर्ता**, जख़म करनेवाला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यन्त कांतिप्रद, (२) बहुत शीघ्रही लय होजाताहै, (३) अत्यन्त क्रोधको उत्पन्नकर्ता, (४) प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी शीतरोगोंको गुणकारक है, (उपविष)

(४८१) दूध औरत

संस्कृत, स्तन्य, **फारसी**, शीरज़न, **अरबी**, लुबनुल्बिसा, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, जिसके लड़की होवे उसका गरम और तर तथा लड़केवालीका ठंडा और

तर होताहै, **हानिकर्ता**, जल्दी सड़जाता-है, **दर्पनाशक**, खांड़ और शहद, **प्रतिनिधि**, गधीका दूध, **मात्रा**, २ छटांक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्निग्धताप्रद, (२) मस्तिष्क और ओजको बलप्रद, (३) मूत्रल, (४) मस्तिष्कके रोधका उद्घाटक, (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६) वक्षस्थलकी रूक्षता और सूखी खांसीको गुणकर्ता, (७) इसकी नस्य निद्रानाशक और मस्तिष्ककी रूक्षताको लाभप्रद है, (८) प्रायः मस्तिष्क संबंधी रोगों (उन्माद, मालीखोलिया, संनिपात इत्यादि) को लाभप्रद है (९)उरःक्षत और राजयक्ष्माको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४८२) दूध गाय

संस्कृत, गोक्षीर, **फारसी**, शीरगाव, **अरबी**, लुबनुल्बकर, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मींठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, मलको स्निग्ध करताहुआ समान गुणवाला है, **हानिकर्ता**, प्लीह और उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक**, खांड़ और शहद, **प्रतिनिधि**, बकरीका दूध, **मात्रा**, २–४ और ६ छटांक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पथ्याहार,(२) शीघ्रपाकी,(३) शुक्रको उत्पन्नकर्ता, (४) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (५) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (६) शरीरको बृंहणकर्ता, (७) कांतिप्रद, (८) रोधका उद्घाटक, (९) ओजप्रद, (१०) शोक और भ्रमको हरणकर्ता, (११) हृदयकी व्याकुलताको हरणकर्ता, (१२) उरःक्षत, राजयक्ष्मा और फेंफड़ेके क्षतोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४८३) दूध गधी

संस्कृत, गर्दभीक्षीर, **फारसी**, शीरख़र, **अरबी**, लुबनुल्अम्मा, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृति और कफ प्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, गुलकंद, **प्रतिनिधि**, गायऔर बकरीका दूध, **मात्रा**, १ छटांक और ४ छटांक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्निग्धता (तरी) और शीतता (सर्दी) को उत्पन्नकर्ता, (२) प्रसन्नताप्रद, (३) स्वच्छताप्रद, (४) रोध और रोमकूपोंका उद्घाटक,(५) उष्ण प्रकृतिवालोंके हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (६) उरःक्षत, राजयक्ष्मा और फेंफड़ेके क्षतों (ज़खम) को अत्यन्त गुणकारक, (७) गरमीका ज्वर और गरमीकी खांसीको लाभप्रद, (८) मुखसे रुधिर आना, सांस चलना और हृदयकी व्याकुलताको गुणकर्ता, (९) जलोदर और कार्श्य (दुबलापन) को हरणकर्ता, (१०) यूरोपवाले इसके बहुत गुण वर्णन करतेहैं और प्रायः व्यवहारमें लातेहैं, (निर्विषैल)

(४८४) दूध घोड़ी

संस्कृत, बडवाक्षीर, **फारसी**, शीरअस्प, **अरबी**, लुब्नुल्रुम्माक, **स्वरूप**,

CC0. Gurukul Kangri Collection

सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ खारी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, गुड़गुड़ाहट और आध्मानको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, सौंफ और शहद, **प्रतिनिधि**, ऊंटनीका दूध, **मात्रा**, आधी छटांक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) रोधका उद्घाटक, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) क्षुधा और ओजका वर्द्धक, (५) मूत्रल, (६) वस्तिके क्षत (जख़म) और बहुमूत्रताको गुणकर्ता, (७) आर्तवप्रवर्त्तक (जारीकरनेवाला) (८) गर्भाशयके क्षतोंको लाभप्रद, (९) इसकी बत्तीको गर्भाशयमें रक्खे तो गर्भस्थितिकेलिये सहायक है, (१०) इसका पान करना शीतला (चेचक) को दूर करताहै, (निर्विषैल)

(४८५) दूध गोरखर

फारसी, शीरगोरखर, **अरबी**, लुबनुलहिमारुल्वहशी, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**, सौंफ और शहद, **प्रतिनिधि**, घोड़ीका दूध, **मात्रा**, १ छटांक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) स्वच्छताप्रद, (३) क्षुधा और ओजका वर्द्धक, (४) मूत्रल और कांतिप्रद, (५) अपने प्रभावमें घोड़ीके दूधके समान है परन्तु उससे उष्ण (गरम) अधिक है, (निर्विषैल)

(४८६) दूध हिरनी

संस्कृत, मृगीक्षीर, **फारसी**, शीरआहू, **अरबी**, लुबनुलग़िज़ाल, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**, सौंफ और शहद, **प्रतिनिधि**, गोरखरका दूध, **मात्रा**, १ छटांक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अपने सम्पूर्ण प्रभावोंमें गोरखरके दूधके समान है, (निर्विषैल)

(४८७) देगचून

संस्कृत, ताम्रचूर्ण, **फारसी**, सिफालमिस, **अरबी**, तुबालुल्खास, **स्वरूप**, लाल और चमकीला, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध तांबेका चूर्ण है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अन्त्रियोंमें व्रण और लेखनताको उत्पन्नकर्ता, **मात्रा**, १।। माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कांतिप्रद, (२) स्वच्छताका वर्द्धक, (३) मरोड़ाको गुणकर्ता, (४) व्रण (जखम) के फैलनेको दूर करनेवाला, (५) तर और सूखी खुजली, को लाभप्रद, (६) जख़म और आंखके जालेको गुणकर्ता, (७) वृथामलको और दुष्टमलको शोधनकर्ता, (८) कफजमलको अतिसार द्वारा शोधनकरनेवाला, (९) अशुद्धका व्यवहार उचित नहींहै (निर्विषैल)

(४८८) देवदारु (चीढ़)

संस्कृत, देवदारु, **फारसी**, देवदार, **अरबी**, शजरतुज्जिन, **इंग्रेज़ी**, पाइन्सदेवदार, **स्वरूप**, लकड़ी कुछ लाल और पत्ते हरे होतेहैं, **स्वाद**, कड़ुआ, तीक्ष्ण गन्धियुक्त और तीखा, **पहिचान**, बहुत बड़ा और लम्बा तथा सीधा १ वृक्ष है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **प्रतिनिधि**, कतीरा और बादामरोग़न, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मलको पक्ककर्ता, (२) शीत और वायुके शोथको लयकर्ता, (३) पीड़ाको शांतिप्रद, (४) वृक्क और वस्तिकी अश्मरी (पथरी) को खण्डनकर्ता, (५) पक्षवध, अर्दित, संन्यास और स्तम्भको गुणप्रद, (६) इसकी लकड़ीके क्वाथ (काढ़े) में बैठे तो गुदाके व्रणों (जखम) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४८९) दोंनामरुआ

संस्कृत, दमनक, **फारसी**, मर्जंगोश, **अरबी**, मर्जंजोश, **स्वरूप**, फूल सफ़ेद और बीज काले तथा पत्ते हरे होतेहैं, **स्वाद**,कड़ुआ, **पहिचान**, तीक्ष्ण गन्धियुक्त एक ओषधि है कि जिसकी पत्ती अमरूदके पत्तेके बराबर होतीहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, वृक्क और वस्तिको, **दर्पनाशक**, कासनी और कुलफा, **प्रतिनिधि**, आफ़िस्तीं और कलोंजी, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) शोथको लयकर्ता, (३) रोधका उद्घाटक, (४) कांतिप्रद, (५) स्निग्धताका आकर्षक, (६) वस्ति और वृक्ककी अश्मरीको खंडनकर्ता, (७) अर्दित और वातज शिरःपीड़ाको गुणकर्ता, (८) मस्तिष्ककी स्निग्धताको शोधनकर्ता, (९) वक्षस्थलकी पीड़ा, श्वास, वातजगुल्म, यकृत्, प्लीहका रोध और जलोदरको गुणकारकहै, (१०) मस्तिष्कका शोधक, (११) इसकी नस्य सरेकमां पक्षवध और अतिनिद्राको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४९०) दंदाना

स्वरूप, कुछ लाल और पीला, **स्वाद**, कड़ुआ और कुछ मीठा, **पहिचान**, जिसके पत्ते कोकिनारके समान होतेहैं एक ओषधिका बीज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष,**हानिकर्ता**, वक्षस्थलको, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, अंडीके बीज, **मात्रा**, ३ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफज अंतर्मलको अतिसार द्वारा शोधन करनेवाला, (२) बालकोंके शीतरोगको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४९१) धतूरा

संस्कृत, धत्तूर, **फारसी**, तातूरह, **अरबी**, जोजुल्मासल, **इंग्रेज़ी**, इस्टेमुनियम्, **स्वरूप**, हरा और काला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, एक बहुत छोटे कांटेवाले झाड़का प्रसिद्ध कांटेदार फल है, इसका झाड़ बैगनका झाड़ जैसा होताहै,

प्रकृति, ४ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अत्यन्त मादक, उन्माद और चिन्ताजनक है, **दर्पनाशक**, सोंफ, कालीमिरच और शहद, **प्रतिनिधि**, तफाह और बज़रुल् बनिज है, **मात्रा**, ३। रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) अवयवोंमें और विशेषतः मस्तिष्कमें अत्यन्त शिथिलताप्रद, (२) अत्यन्त मादक, (३) अत्यन्त निद्राप्रद, (४) पित्तज रुधिरकी तीक्ष्णता और शिरःपीड़ाको शांतिप्रद, (५) शोथके अंतर्मलको पक्कर्ता, (६) स्निग्धताको शोषण करनेवाला (७) स्तम्भनकर्ता, (८) इसके पत्तोंका लेप अवयवोंको गुणप्रद है, (३। रत्तीसे अधिक घातक है)

(४९२) धनियां

संस्कृत, धान्यक, **फारसी**, कश्नीज, **अरबी**, कज़बुरह, **इंग्रेज़ी**, कॅरीएन्डर, **स्वरूप**, दाना भूरा और पत्ते हरे होते हैं, **स्वाद**, सुगंधियुक्त फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वीर्यका ह्रास करनेवाला और विस्मृति तथा भ्रमको उत्पन्न करनेवाला है, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन, शहद और सफर, **प्रतिनिधि**, काहूके बीज और पोस्त, **मात्रा**, ९ माशेसे १ तोलेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नताप्रद, (२) मस्तिष्क और हृदयको बलप्रद, (३) मस्तिष्कमें परिमाणुओंके चढ़नेको दूर करनेवाला, (४) हृदयकी व्याकुलता और भ्रमको गुणकर्ता, (५) आमाशयको बलप्रद, (६) अतिसारका बद्धक, (७) शुक्रमेहको लाभप्रद, (८) निद्राप्रद, (९) हरा धनियां वृथामलको पक्कर्ता है, (१०) पित्तको शांतिप्रद, (११) इसकी कुल्ली मुखके प्रकोपको और कण्ठकी पीड़ाको हरणकरनेवालीहै, (१२)प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(४९३) धनह फिरंग

फारसी, धनहफिरंग, **अरबी**, धनिज, **स्वरूप**, हरा और मोरका रंगजैसा चमकीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसके नग बनायेजातेहैं एक प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अंत्रियोंमें व्रणोंको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, फिरोजा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) विषोंका दर्पनाशक, (२) इसका नेत्रांजन दृष्टिको बलप्रद है, (३) इसकी नस्य मिरगीको गुणकारक है, (४) सिर्काके साथ इसका लेप दाद, कालेदाग़ और सफ़ेद दाग़ोंको लाभप्रद है, (घातक विषहै खाना उचित नहीं है)

(४९४) धमाहा

स्वरूप, हरा, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति**, समान गुणवाला, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, आफिस्तीं, **गुण, कर्म, प्रयोग**,

(१) ज्वरकी गरमी, शिरका घूमना, जलोदर और शुक्रमेहको लाभप्रद, (२) श्वासको गुणकर्ता, (३) रक्तशोधक, (४) तृषाको शांतिप्रद, (५) आमाशय और यकृत्को बलप्रद है, (निर्विषैल)

(४९५) धावा (धाय)

संस्कृत, धातकी, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, कुछ कसेला, **पहिचान**, जिसके फूल व्यवहारमें आतेहैं एक हिन्दुस्तानी वृक्ष है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष है, **मात्रा**, ४॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) उदरके कृमियोंका नाशक, (३) क्षुधाप्रद, (४) अतिसारका बद्धक, (५) इसके क्वाथ (काढ़े) में बैठना कांचके निकलनेको दूर करता है, (६) प्रमेह और शीघ्र स्खलित होनेको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(४९६) धायके फूल

संस्कृत, धातकी पुष्प, **इंग्रेज़ी** आसली-आटोमेन्टोजा, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, कफको उत्पन्नकर्ता, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके सब तरहके फूल अतिसारको गुणकारक हैं, (२) क्षुधाको लाभप्रद हैं, (निर्विषैल)

(४९७) नकछिकनी

संस्कृत, छिकनी, **फारसी**, बेख़गावज़वां, **अरबी**, कुंदश और ऊदुल्अत्तास, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त कड़वी और तीखी, **पहिचान**, बिरंजासिफके समान एक ओषधि है जिसके चूर्णको सूंघनेसे बहुतसी छींकें आतीहैं **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको और व्याकुलता तथा मूर्च्छाप्रद है, **दर्पनाशक**, कतीरा और दूध, **प्रतिनिधि**, मैनफल और कालीमिरच, **मात्रा**, ३ रत्ती **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यन्त छींक लानेवाली, (२) हिक्का (हिचकी) को लाभप्रद, (३) मस्तिष्क सम्बन्धी रोग और सरेकमाको गुणप्रद, (४) जोड़ोंको लाभप्रद, (५) आंतोंके उतरनेको गुणप्रद, (६) इसका तेल नाकमें डालेतो मस्तकके कफको शोधन करनेवाली है, (७) वायुको लयकर्ता, (८) स्वच्छताप्रद, (९) सफ़ेददाग़, कालेदाग़, सीप, झाईं, मुखकी म्लीनता और खुजलीको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(४९८) नख

संस्कृत, नख, **फारसी**, नाख़ूनबिरियां, **अरबी**, अज़फारुत्तीब, **स्वरूप**, ललोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त फीका, **पहिचान**, नाख़ूनके समान एक द्रव्य है सिंध नदके किनारेसे लाते हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अंत्रियोंमें लेखनता करनेवाला और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और गिले-

CC0. Gurukul Kangri Collection

अरमनी, प्रतिनिधि, चिरायता, मात्रा, २ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वृथामलको दूर करनेवाला, (२) सांद्र दोषोंको लघु और स्वच्छकर्ता, (३) यदि गीला होवे तो अपस्मार, सन्यास और हृदयकी व्याकुलताको गुणप्रद है, (४) शीत और यकृत्की पीड़ाको तथा आमाशय और गर्भाशयकी पीड़ाको लाभप्रद, (५) यकृत्को बलप्रद, (६) बवासीरको गुणप्रद, (७) इसकी धूनी अपस्मार (मिरगी) सन्यास, गर्भाशयका भिचना और आर्तवके रुकनेको विशेषतः गुणप्रदहै, (निर्विषैल)

(४९९) नफत

स्वरूप, सफ़ेद और काली, **स्वाद**, तीक्ष्ण गंधियुक्त कुछ कड़वी, **पहिचान**, पृथ्वीसे जुफ्त कीरके समान एक चिकनाई निकलतीहै यदि उसकी रक्षा न करी जावे तो हवाके लगनेसे उड़जाती है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्, फेंफड़ा और वृक्कको, **दर्पनाशक**, अस्पगोलका लुआब और कतीरा, **प्रतिनिधि**, जाउशीर, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोमकूप और रोधकी उद्घाटक, (२) शीघ्र प्रवेश होनेवाली, ओजको अधिक पैदा करनेवाली, (३) वायुको अत्यन्त लय करनेवाली, (४) उदरके कृमियोंकी नाशक, (५) इसकी बत्ती आर्त्तवप्रवर्त्तक है और शीतरोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५००) नमाम

अरबी, सीब्ज और नमामुल्मुल्क, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, सुगंधियुक्त तीखा, **पहिचान**, तुलसीके झाड़ोंमें एक घास होतीहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्पनाशक**, बनफ्शा, **प्रतिनिधि**, पोदीना और बादरूज, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) उदरके कृमियोंका नाशक, (३) मूत्रल, (४) स्वच्छताप्रद, (५) हृदयको बलप्रद, (६) मरेहुए गर्भको ज़ोरसे निकालनेवाला, (७) वमन और हृल्लासको शांतिप्रद, (८) यकृत्, प्लीह, शोथ और वक्षस्थलकी पीड़ाको लाभकर्ता, (९) सिर्काकेसाथ, ततैय्या और बिच्छूके डंकको अनुभूत गुणकारकहै (१०) वृक्क और वस्तिकी पथरीको खंडनकर्ता, (११) हिचकी और मरोड़ाको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(५०१) नमक साम्हर

संस्कृत, शाकंभरीयलवण, **फारसी**, नमकसाम्हर, **अरबी**, मलहउल्अबकर, **स्वरूप**, कुछ धूलियारंगका सफ़ेद, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, कृत्रिम बनायाहुआ प्रसिद्ध नमक है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **मात्रा**, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) वायुको लयकर्ता, (३) कफ़ज मलको हरणकर्ता,

(४) पाचक, (५) तृषाको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(५०२) नमक लाहौरी

संस्कृत, सैंधवलवण, **फारसी**, नमकसंग, **अरबी**, मलहअंदरानी, **इंग्रेज़ी**, क्लोराइड्ऑफसोडियम्, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बुद्धिको बलप्रद, (२) पिच्छल कफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (३)अजीर्ण और खट्टी डकारोंको हरणकर्ता, (४)नेत्ररोगोंकी औषधोंमें इसका प्रयोग कियाजाता है, (९) पेटके फूलनेको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५०३) नमक शीशा

फारसी, नमकशीशा, **अरबी**, मलहउल्ज़िजाज, **स्वरूप**, ललोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, बहुत खारी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण कर्म**, **प्रयोग**, (१) पाचक, (२) स्वच्छताप्रद, (३) इसका नेत्रांजन (सुरमा) नेत्रोंके जालेको और नेत्रोंकी अंधेरीको गुणकारक है, (४) नखरोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५०४) नमककाला

संस्कृत, सौवर्चललवण, **फारसी**, नमकस्याह, **अरबी**, मलहसवद, **इंग्रेज़ी**, ब्लेकसॉल्ट, **स्वरूप**, कालापनालिये चमकीला, **स्वाद**, गंधियुक्त बहुत खारी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वातजमलको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (२) कफशोधक, (३) वायुको हरणकर्ता, (४) क्षुधाप्रद, (९) अजीर्णको हरणकर्ता, (६) खट्टी डकार और अफराको लाभप्रद, (७) सौंफ और नरकचूरके साथ उदरकी पीड़ाको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५०५) नमकखारी

संस्कृत, औषरकलवण, **फारसी**, नमकशोर और बोरेअर्मनी, **अरबी**, मलहउलअजीन और बोदकहव, **इंग्रेज़ी**, कार्बोनिटऑफसोडा, **स्वरूप**, धूलिया, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, लोनियां मिट्टीसे बनाहुआ एक लवण है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रुधिरको बढ़ानेवाला, (२) वायुको हरणकर्ता, (३) अत्यंत पाचक, (४) क्षुधाप्रद, (९) रोमकूपोंका उद्घाटक, (६) शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(५०६) नरगिस

फारसी, नरगिस, **अरबी**, नरजिस और सनोवर, **स्वरूप**, रंगबिरंगा, **स्वाद**, अत्यन्त सुगन्धियुक्त फीका, **पहिचान**, जिसके पत्ते, डाली, जड़ और बीज प्याज़के समान होतेहैं एक ओषधिका फूल है,

प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरममिज़ाजवालोंको, **दर्पनाशक**, नीलोफ़र और कपूर, **प्रतिनिधि**, सेवतीका फूल और खेरीका फूल, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) शरीरके भीतरकी स्निग्धताको आकर्षण करनेवाला और सुखानेवाला, (३) इसके फूलोंका सूंघना प्रतिश्याय (जुकाम) और नज़लाको लाभप्रद है, (४) मास्तिष्कके रोधका उद्घाटक है क्योंकि यह बलवान् लयकारक वस्तु है, कुछ हकीमोंका यह कथन है कि यदि इसको सदैव (हमेशा) सूंघाकरे तो शीतकालमेंभी प्रतिश्याय और नज़ला नहीं होता, (५)इसकी जड़ आमाशय और गर्भाशयकी दुष्ट स्निग्धताको शोधनकर्ता है, (६) उदरके कृमियोंका नाशक, (७) पीड़ाको शांतिप्रद, (८) ओज वर्द्धक है, (निर्विषैल)

(५०७) नरसल

संस्कृत, नल, **फारसी**, नें, **अरबी**, कसब, **इंग्रेज़ी**, इंडियनटोबोका, **स्वरूप**, गीला हरा और सूखा पीला होताहै, **स्वाद**, फीका और कुछ मीठा, **पहिचान**, एक प्रकारका छोटी जातिका बांस है यह भीतरसे पोला होताहै, **प्रकृति**, ठंडा और किसीके मतम गरम है, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) आंखोंको बलप्रद, (२) रक्तप्रकोप और पित्तप्रकोपको हरणकर्ता, (३) योनिकी स्निग्धताको शोधनकर्ता, (४) मूत्रल, (५) इसकी जड़ कांतिप्रद है, (६) शोथको लयकर्ता, (७) सब प्रकारकी गठिया और संधिपीड़ा (जोड़का दर्द) को गुणकारक है, (८) इसकी कोंपल मूत्रको पीला करतीहै, (९) मुखसे रुधिरके आनेको गुणकर्ता, (१०) खांसी और आतिशकको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(५०८) नाखूना

फारसी, गयाहकेसर, **अरबी**, अकलेलुल्मुल्क, **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, अर्धचन्द्राकार नखके समान एक ओषधिका फल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृषणोंको, **दर्पनाशक**, शहद मुनक्का और अंजीर, **प्रतिनिधि**, बाबूना और मेथी, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शीतके शोथको लयकर्ता, (२) मलको पक्कर्ता, (३) बद्धक, (४) रूक्षताप्रद, (५) स्वच्छताप्रद, (६) कठिनशोथको मृदुकर्ता, (७) अवअवोंको बलप्रद, (८) इसका क्वाथ (काढ़ा) आमाशयकी पीड़ा, यकृत् और प्लीहको गुणकारक है, (९) प्लीह और गुदाके रोगोंको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५०९) नागदस

स्वरूप, काला, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, बिलकुल सांपके समान एक लकड़ी है जिसको कि हिन्दुस्तानके फ़क़ीर

अपने पास रखतेहैं, **प्रकृति**, ठंडी, **हानिकर्ता**, बद्धक है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) बलप्रद, (३) कफके विकारोंको हरणकर्ता, (४) प्रमेहको गुणप्रद, (५) पित्तको हरणकर्ता, (६) सर्पके विषका दर्पनाशक है, (निर्विषैल)

(५१०) नागदौन

संस्कृत, नागदमनी, **फारसी**, मारचोबह, **अरबी**, हलियून और ऊदुलुह्य्यतो, **स्वरूप**, पिलोंईलिये हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, जंगलमें होनेवाली दुतरफी चित्तीयुक्त भूरे पत्तोंकी एक प्रसिद्ध ओषधि है, इसकी परीक्षामें कुछ हकीमोंके मतांतरभेदभी हैं, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, अधिक सेवन करनेसे मस्तक और संधियोंको हानिप्रद है, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, सरसों, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पेटमें कियेहुए आहारको सड़ानेवाली है, (२) मूत्रल, (३) स्वच्छताप्रद, (४) रोधकी उद्घाटक, (५) फोड़ा और फुन्सियोंको हरण करनेवाली, (६) प्रस्वेद और मूत्रकी दुर्गंधिको हरण करनेवाली, (७) यदि आरम्भमेंही सेवन कीजावे तो नेत्रोंमें जलके उतरनेको गुणप्रद है, (८) जलोदर, पार्श्वशूल और फुप्फुसकी पीड़ाको गुणप्रद, (९) यकृत् और प्लीहके रोधकी उद्घाटक, (१०) वृक्कको शोधन करनेवाली, (११) अश्मरीको खंडन करनेवाली, (१२) आमाशयकी पिच्छलता और कफको वमनद्वारा हरण करनेवाली, (१३) प्रकृतिको मृदु करनेवाली, (१४) ओजको चालन करनेवाली है, (निर्विषैल)

(५११) नागदौनके बीज

फारसी, तुख़्म नारचोबह, **अरबी**, बजरुल्हिलियून, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, नीलके बीजोंके समान गोल, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशय और मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, शकाकुल और तोदरी, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (२) स्वच्छताप्रद, (३) यकृत् और प्लीहके रोधके उद्घाटक, (४) मूत्रल, (५) ओजको बलप्रद, (६) शोथ और वायुको लयकर्ता, (७) वृक्क और वस्तिकी अश्मरीको खण्डनकर्ता हैं, (निर्विषैल)

(५१२) नागरमोथा

संस्कृत, मुस्तक, **फारसी**, मुश्कजमीं, **अरबी**, सादकोफी, **इंग्रेज़ी**, साइपेरसरोटंडस, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त तीखा और कड़ुआ, **पहिचान**, लम्बी और गोल एक प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ा, कंठ और स्वरको, दर्प-

नाशक, खांड़ और अनसून, **प्रतिनिधि**, दालचीनी, बालछड़ और मरमकी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) मूत्रल, (३) अश्मरी (पथरी) का नाशक, (४) रोधका उद्घाटक, (५) मुख और शरीरकी दुर्गंधिको हरणकर्ता, (६) बुद्धिवर्द्धक, (७) ओजको संचालनकर्ता, (८) आमाशय और स्नायुओंको बलप्रद, (९) वायुको हरणकर्ता, (१०) पाण्डु (पीलिया) और हृदयकी व्याकुलताको गुणकर्ता, (११) इसका मंजन दांतोंको दृढ़ करने वाला है, (१२) इसके रंगेहुए वस्त्र मनको प्रसन्नताप्रद और ओजको बलप्रद हैं (निर्विषैल)

(५१३) नागेसुर

स्वरूप, पीला, **स्वाद**, अत्यंत फीका, सुगंधियुक्त, **पहिचान**, जिसकी सुगंधि सब सुगंधियोंसे तीखी है एक बड़े वृक्षका फूल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम यकृत् और वस्तिको, **दर्पनाशक**, कासनीकेबीज और वंशलोचन, **प्रतिनिधि**, बालछड़ और नारियल, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रक्तशोधक, (२) अतिसारके द्वारा पित्तका रेचक, (३) स्वच्छताप्रद, (४) शीतप्रकृतिवालोंके हृदयको बलप्रद, (५) आमाशयके परिमाणुओंको मस्तिकमें नहीं चढ़ने देता, (६) आमाशय, यकृत् और अन्त्रियोंको बलप्रद, (७) रक्तस्रावका रुद्धक, (८) प्रस्वेदकी दुर्गंधिको हरणकर्ता, (९) इसका फूल पित्त और कफको हरण करनेवाला है (१०) विषके दर्पका नाशक, (११) बवासीरको लाभप्रद, (१२) इसका इत्र मस्तिष्कको बलप्रद है, (१३) वृक्कशूलको गुणकारक है (निर्विषैल)

(५१४) नानकुलाग़

अरबी, खुब्बाज़ी, **स्वरूप**, कालोंचीलिये सफ़ेद, **स्वाद**, बेस्वाद, **पहिचान**, जिसको खेरो कहतेहैं एक ओषधिका गोल बीज है, इसका फूल छोटा और बैगनी रंगका तथा झाड़ ख़तमीके समान होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, आमाशयके मांद्यको, **दर्पनाशक**, इसीके फलोंका स्वरस, **प्रतिनिधि**, ख़तमी, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) मलको पक्कर्ता और निकालनेवाला (३) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (४) मूत्रल, (५) अन्त्रियोंमें चिपककर रोधको उत्पन्नकर्ता, (६) अंत्रियोंमें फिसलन (लिबलिवापन) को उत्पन्नकर्ता, (७) दुग्धवर्द्धक (८) शोथको लयकर्ता, (९) खांसी और वक्षस्थल (छाती) के खुरखुरानेको गुणकर्ता, (१०) इसकी जड़, डाली और बीज प्रभावमें समानही हैं, (११) इसके पत्तोंका लेप अंगोंके टूटजानेको गुणकारक है (निर्विषैल)

(५१५) नारियल (खोपरा)

संस्कृत, नारिकेर, **फारसी**, नारगील, **अरबी**, नारजील, **इंग्रेज़ी**, कोकोनट, **स्वरूप**, बाहरसे कलोंचीलिये लाल और भीतरसे सफ़ेद, **स्वाद**, सुस्वादु और मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और रोधप्रद, **दर्पनाशक**, खांड़, मिश्री और खट्टे फल, **प्रतिनिधि**, चिलगोजा, पिस्ता और बादाम, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) वीर्यको सांद्र (गाढ़ा) कर्ता, (३) शुद्धरुधिरको उत्पन्नकर्ता, (४) वक्षस्थल (सीना) को मृदुकर्ता, (५) देरमें पचनेवाला (६) शरीरको बृंहणकर्ता, (७) वृक्कको बृंहणकर्ता और बलप्रद, (८) वास्तविक उष्णता (असली गरमी) को बलप्रद, (९) पक्षवध, उन्माद, अवयवोंका ऐठना और मालीखोलियाको गुणकर्ता,(१०) यकृत्‌के मांद्यको हरणकर्ता, (११) प्रातःकाल मिश्रीके साथ एक तोला खावे तो दृष्टिको बलप्रद है, (१२) विशेषतः नेत्रविकारको गुणकारक है, (१३) इसका तैल शरीरको मृदुकारक है और केशोंका वर्द्धक है, (१४) शिरःपीड़ाको लाभप्रद, (१५) बृंहणताप्रद, (१६) इसके तैलको शिरमें डालनेसे मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवोंके स्वास्थ्यकी रक्षा होतीहै, (निर्विषैल)

(५१६) नारियल दरियाई

संस्कृत, सामुद्रिकनारिकेर, **फारसी**, नारगीलदरयाई, **अरबी**, नारजीलबहरी, **स्वरूप**, सफ़ेद और पुराना पीला होताहै, **स्वाद**, फीका और कठोर, **पहिचान**, एक सामुद्रिकफल है जो कि कद्दूके बराबर होताहै, इसका वृक्ष बड़ा विस्तृत होताहै, **प्रकृति**, स्नायुयौगिक और गरम तथा रूक्ष, **मात्रा**, ५ जौसे १ माशे तक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसको गुलाबजलमें घिसकर देवे तो विषूचिका (हैजा) वमन (रद्द) और हल्लास (उबकाई) को अत्यन्त गुणकारक है (२) वास्तविक उष्णताके बलको शांतिप्रद और संतोषप्रद है, (३) प्रायः विषोंका दर्पनाशक है, (४) दुष्टदोषोंको लाभप्रद, (५) तृषाको अत्यन्त शांतिप्रद, (६) महामारीकी वायुकी हानिको हरणकर्ता (७) सांप और बिच्छूके विषको हरणकर्ता, (८) जिस अंगको बिच्छू अथवा और कोई कीड़ा काटे उस अंगपर इसको पीसकर लेप करदेवे तो पीड़ा और दुःखको कम करनेवाला है और विषको हरणकरनेवाला है, (निर्विषैल)

(५१७) नारंगी

संस्कृत नारंग, **फारसी**, किस्मेंअज़नारंज, **इंग्रेज़ी**, ओरेंज, **स्वरूप**, बाहर ललोंईलिये और गूदा पीला होताहै, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त मीठा और खट्टा, **पहिचान**, नीबूके समान फांकवाला एक

हिन्दुस्तानी प्रसिद्ध फल है इसके बीज कद्दूके बीज जैसे होतेहैं, **प्रकृति**, ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, वक्षस्थल और स्नायुओं-को, **दर्पनाशक**,नमक और गुड़, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्त और रुधिरकी तीक्ष्णता (तेज़ी) को शांतिप्रद, (२) प्रसन्नताप्रद, (३) जिस आमाशयमें उष्णता होवे उस आमाशयको बलप्रद है, (४) वमन हल्लास और जीमचलानेको हरणकर्ता, (५) स्निग्ध आहार और मोहनभोगके अपगुणको हरणकर्ता, (६) इसके सुखायेहुए छीलकोंका उबटना चेहरेकी स्याही, झाई, और मुहासोंको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५१८) नाड़ीका शाक

संस्कृत, कालशाक, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक घास है जो कि तालाब इत्यादिके ठहरे जलमें होतीहै इसके पत्ते लम्बे और डाली पोली होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**, नमक और उर्द, **प्रतिनिधि**, गांडलका शाक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) व्यर्थ असंपक रसको उत्पन्नकर्ता, (२) लघु है, (३) वायु और शोथको लयकर्ता, (४) वातजदुष्ट दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (५) अपानवायुका अत्यन्त निस्सारक है (६) आमाशयमें मांद्यको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(५१९) नारदेन

अरबी, सम्बुलरूमी, **स्वरूप**, भूरा और रूखा, **स्वाद**, कुछ सुगन्धियुक्त कडुआ, **पहिचान**, एक रूमी घास है कि जिसके पत्तोंसे बीज और डाली लगेहोतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा और शहद, **प्रतिनिधि**, हिन्दी सम्बुल, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका पान (पीना) पक्षवध, अर्दित और पीलियाको गुणकारक है, (२) आमाशयपर मलको नहीं गिरनेदेता, (३) मूत्र और आर्त्तवप्रद, (४) शोथको लयकर्ता, (५) इसका नेत्रांजन (सुरमा) पलकोंके बालोंको जमानेवाला है, (६) इसके क्वाथ (काढे) में बैठे तो यकृत्, वृक्ककी पीड़ा और प्रायः गर्भाशयके रोगोंको गुणकारक है, (७) गरम मल्हमोंमें मिलाईजातीहै, (निर्विषैल)

(५२०) नासपाती

संस्कृत, अमृतफल, **फारसी**, नाशपाती, **स्वरूप**, पीली और भूरी, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त मीठी, **पहिचान**, अमरूदके बराबर १ एक फल है इसका गूदा कुछ कठोर होता-है, **प्रकृति**, मीठी समान गुणवाली और खट्टी ठंडी और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, गुल्मको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, मायुल्असल, **प्रतिनिधि**, बिही, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी और आध्मानकर्ता, (२)

सांद्र रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) अवयवोंको बलप्रद, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) प्रसन्नताप्रद, (६) वर्द्धक, (७) कांतिप्रद, (८) उष्ण (गरम) यकृत्को बलप्रद है (निर्विषैल)

(५२१) निर्बिसी

फारसी, जवदार, **अरबी**, जदवार, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, सनोवरके समान एक प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अंत्रियोंमें व्रणोंको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, धनियां, दूध और कतीरा, **प्रतिनिधि**, जर्नवाद, **मात्रा**, २। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको प्रसन्नताप्रद, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) उदरके अवयव और दृष्टिको बलप्रद, (४) विष्टम्भकी उद्घाटक, (५) स्वच्छताप्रद, (६) शोथ और विस्फोटकको लयकर्ता, (७) शरीरको बृंहणकर्ता, (८) क्षुधावर्द्धक, (९) ओजवर्द्धक, (१०) ओजको चालनकर्ता, (११) मूत्रप्रवर्तक, (१२) श्लेष्मा और नेत्रोंमें जलके उतरनेको दूर करनेवाली, (१३) आधासीसीको गुणप्रद, (१४) वृक्कशूलमें अद्भुत प्रभावशाली है, (१५) प्रायः विषोंका दर्पनाशक है, (१६) मिरगीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(५२२) निसोथ

संस्कृत, त्रिवृत्, **फारसी**, तुरबुद, **इंग्रेजी**, टरबीथरूट, **स्वरूप**, सफेद, पीली और काली, **स्वाद**, अत्यन्त कड़वी, **पहिचान**, जिसके पत्ते लोवियाके समान होते-हैं एक वृक्षकी जड़ है, इसको बंगालेमें पतोहरी कहतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अन्त्रियोंको और अवयवोंमें रुक्षताप्रद, **दर्पनाशक**, बादामरोग़नसे चिकनी करनाहै, **प्रतिनिधि**, शारीकून और कालादाना, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ और पतली स्निग्धताको अतिसार (दस्त) द्वारा निकालनेवाली, (२) दग्ध (जलेहुए) पुरुषोंके दोषोंको निकालनेवाली, (३) मस्तिष्क, आमाशय, यकृत् और गर्भाशयके कफको शोधन करनेवाली, (४) रोधकी उद्घाटक, (५) पक्षवध, अर्दित और स्नायुके रोगोंको लाभप्रद, (६) वक्षस्थलकी पीड़ाको गुणप्रद, (७) स्निग्ध कासको लाभप्रद, (८) काबिली हरड़के साथ अपस्मार, उन्माद और मालीखोलियाको लाभप्रद, (९) जांघकी पीड़ाको गुणप्रद, (१०) सोंठके साथ इसका प्रभाव बलवान् होजाताहै, (११) काली निसोथसे बचना चाहिये क्योंकि वह विष होतीहै, (इसका काला वक्कल विष है)

(५२३) निशास्ता

संस्कृत, गोधूमसार, **फारसी**, निशास्ता, **अरबी**, निशाय, **स्वरूप**, सफेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**; गेहूंका प्रसिद्ध

सत्त है, प्रकृति, १ कक्षामें ठण्डा और रूक्ष, हानिकर्ता, रोधप्रद और वीर्यनाशक, दर्पनाशक, मिठाई और लौंग, प्रतिनिधि, भीगेहुए चांवल, मात्रा, १ तोला, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मलको पक्वकर्ता, (२) बद्धक, (३) अन्त्रियोंमें चिपककर रोधको उत्पन्नकर्ता, (४) स्निग्धताका शोषक, (५) व्रणपूरक, (६) रक्तस्रावका रुद्धक और बद्धक, (७) कण्ठ और वक्षस्थलकी खुरखुराहटको हरणकर्ता, (८) गरमीकी खांसी और वक्षस्थलकी पीड़ा तथा उरःक्षतको गुणकारक है, (९) केसरके साथ इसका लेप झाईको लाभप्रद है, (१०) इसका हरीरा मस्तिष्कको बलप्रद है और कफको पकानेवाला है, (निर्विषैल)

(५२४) निवाड़ीका फूल

संस्कृत, वासन्तीपुष्प, फारसी, गुलनिवाड़ी, स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीका, पहिचान, एक सुगन्धित पुष्प है कि जिसका झाड़ दो तीन गज लम्बा होताहै, प्रकृति, ठण्ठा, हानिकर्ता, स्नायुओंको, दर्पनाशक, शहद, प्रतिनिधि, गुड़हल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) तीनों दोषोंको हरणकर्ता, (२) मस्तिष्कको बलप्रद, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) गरमीके ज्वरोंको लाभप्रद, (५) गरमीकी शिरःपीड़ाको गुणकारक, (६) इसका सूंघना श्लेष्माको पैदा करनेवाला है, (७) इसका लेप विशेषतः शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(५२५) नील

संस्कृत, नीली, फारसी, नील, अरबी, नीलज, इंग्रेज़ी, इंडीगो, स्वरूप, नीला, स्वाद, बसादा और कडुआ, पहिचान, एक घास है कि जिसके स्वच्छ स्वरसको नील कहतेहैं, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, प्लीहको और विस्मृतिजनक, दर्पनाशक, मुलहटीका सत्त, प्रतिनिधि, लालचन्दन और गूगल, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) रूक्षताप्रद, (३) प्लीहकी पीड़ाको हरणकर्ता, (४) वातरक्त और जलोदरको गुणप्रद, (५) केशोंको दृढ़ और काले करनेवाला, (६) व्रणका शोषक और पूरक, (७) बालोंका प्रसिद्ध केशरंजन (खिजाव) है, (८) इसका लेप हल्लासको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५२६) नीलम

संस्कृत, नीलमणि, फारसी, याकूतकबूद, स्वरूप, नीला और चमकीला, स्वाद, फीका, पहिचान, जिसके नग बनायेजातेहैं एक बहुत क़ीमती प्रसिद्ध रत्न और पत्थर है, प्रकृति, १ कक्षामें ठण्डा और २ कक्षामें रूक्ष, प्रतिनिधि, लालमणि, मात्रा, ३ रत्ती, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शीतलाप्रद, (२) प्रकृति-

को मृदुकर्ता, (३) विशेषतः नेत्रोंको बलप्रद, (४) विषके विकार, फोड़ा और फुंसियोंको हरणकर्ता, (९) अवयवोंको बलप्रद और रूक्षताको उत्पन्नकर्ता है,

(५२७) नीलोफर (नीलोफल)

फारसी, नीलोफर **अरबी**, करनवुल्‌माय, **स्वरूप**, बाहर सफ़ेद और भीतरसे पीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जलके पास होनेवाली एक ओषधिका प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, वस्ति और ओजको, **दर्पनाशक**, मिश्री और शहद, **प्रतिनिधि**, खतमी, **मात्रा**, १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (२) गरमीको शांतिप्रद, (३) गरम और तीक्ष्ण श्लेष्मा, खांसी, वक्षस्थलकी रूक्षता और खुरखुराहटको गुणकारक है, (४) इसके फूलका सूंघना उष्णप्रकृतिवालोंके हृदय और मस्तिकको बलप्रदहै, (५) निद्राप्रद, (६) गरमीकी शिरःपीड़ाको शांतिप्रद, (७) इसकी जड़ गरम और रूक्ष है, (८) अतिसार और अन्त्रियोंके व्रणको गुणकारक है (९) वीर्यवर्द्धक है (निर्विषैल)

(५२८) नीलाथोथा

संस्कृत, तुत्थ, **फारसी**, तूतियासब्ज, **अरबी**, तूतियायअखजर, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध कृत्रिमखा निजवस्तु है, **प्रकृति**, ३ कक्षा में गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, मांसको उपाड़नेवाला और घातक है, **दर्पनाशक**, गायका घी और वमन कराना है, **प्रतिनिधि**, सुहागा, **मात्रा**, १ माशेसे अधिक घातक विष होजाताहै, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वदको मृदुकर्ता, (२) प्रायः व्रणोंका नाशक है, (३) खुजलीको लाभप्रद, (४) कफशोधक, (५) उदरके कृमियोंका नाशक, (६) आंखकेजाले और कीचड़ों का नाशक है, (१ माशा घातकविष है)

(५२९) नीलोफरके बीज

फारसी, तुख्मनीलोफर, **अरबी**, वज़रकरनवुल्‌माय, **स्वरूप**, वाहर ललोंई-लिये काली और भीतरसे सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडे और रूक्ष, **हानिकर्ता**, ओजको मंद करनेवाले, **दर्पनाशक**, मिश्री और शहद, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वीर्यवर्द्धक, (२) नीलोफरके बीजोंको जलमें पीसकर पीवे तो स्निग्धताके स्रावको रोकनेवाले हैं, (३) इनका लेप रक्तस्राव और वस्तिशूलको गुणकारक है, (४) आर्तव प्रवर्तक हैं (निर्विषैल)

(५३०) नीलकंठी

स्वरूप, फूल नीला होताहै, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, जिसके पत्ते मध्यम कदके होतेहैं एक ओषधि है, **प्रकृति**, गरम और तर, **प्रतिनिधि**, ब्रह्मदंडी,

मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रक्तशोधक, (२) मूत्रल, (३) त्वचाके रोगोंको गुणप्रद, (४) उपदंश और रुधिरविकारको गुणकर्ता, (५) कीचड़ और वातरक्तको विशेषतः गुणकारक है (निर्विषैल)

(५३१) नीम

संस्कृत, निम्ब, **फारसी**, नीब, **इंग्रेज़ी**, निम्बट्री, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, अत्यन्त कड़ुआ और कुछ मीठासलिये और कड़ुआ होताहै, **पहिचान**, जिसके पत्ते कुछ लम्बे नोकदार, आरा जैसे होतेहैं और फल खिन्नी जैसा होताहै, हिन्दुस्तानमें होनेवाला एक बड़ा वृक्ष है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर तथा किसीके मतमें १ कक्षामें ठंडा और तर है, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) अंतर्मलको पक्क और समपक्ककर्ता, (३) बाहिर्मलको पक्ककर्ता, (४) इसका पीना वायुको लयकारक है, (५) इसके सर्वांगका पान अद्वितीय रक्तशोधक है, (६) कोढ़ और सफ़ेद दागोंको लाभप्रद, (७) खुजली, फोड़े और फुंसियोंको गुणकारक है, (८) पित्त, कफ और वायुको हरणकर्ता, (९) इसका मद जो कि ग्रीष्मऋतुमें इसकी पींड़से टपकता है उसका पान करे तो रुधिरका शोधक है, (१०) कोढ़, उपदंश (आतिशक) और प्रायः त्वचाके रोगोंको लाभप्रद, (११) इसकी दांतोंन दांतोंको स्वच्छकारक और दृढकारक है, (१२) दृष्टिवर्द्धक, (१३) इसकी छालको घिसकर मुहासे और दानोंपर लगावे तो अद्भुत प्रभाव दिखलातीहै, यह हिन्दुस्तानकी अद्वितीय औषधि है, (निर्विषैल)

(५३२) नोंसादर (नोंसद्दर)

संस्कृत, नृसार, **फारसी**, नोशादर, **अरबी**, नोशादर, **इंग्रेज़ी**, आमोनियम्क्लोरीडम्, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ खारी और ठंडा, **पहिचान**, शोराके समान १ कृत्रिम खानिज वस्तु है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, १ तोलासे अधिक घातक है, **दर्पनाशक**, वमन करना, दूध, घी और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, बूरा अरमनी है, **मात्रा**, ६ रत्ती, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छकर्ता, (२) लघुताप्रद, (३) आंतरिक शरीरसे स्निग्धताकी आकर्षक, (४) रोमकूपोंके रोधकी उद्घाटक, (५)रक्तस्रावकी रुद्धक, (६)इसका पीना प्लीहकी शोथको गुणकारक है, (७) कफशोधक, (८) वायुको हरण करनेवाली है, (निर्विषैल)

(५३३) पाखानबेद

संस्कृत, पाषाणभेद, **फारसी**, गोशाह, **अरबी**, खब्तियाना, **इंग्रेज़ी**, आयरीशास्युडोकोरस, **स्वरूप**, लाल और कुछ काला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, एक बिलस्तके बराबर एक प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**,

२ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, उरःस्थल और उष्ण प्रकृतिवालोंको, दर्पनाशक, इस्कूलोकन्दरयून, प्रतिनिधि, असारून, जरावन्द और मदहरज, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) वर्द्धक, (२) स्वच्छताप्रद, (३) कांतिप्रद, (४) शोथ इत्यादिको लयकर्ता, (५) रोधका उद्घाटक, (६) मलशोधक, (७) शीतकी पीड़ा, पसलियोंकी पीड़ा और आमाशयकी पीड़ाको शांतिप्रद, (८) मूत्रप्रवर्त्तक, (९) पांडु, प्रमेह और शुक्रमेहको गुणकारक, (१०) ओजको बलप्रद, (११) सिरकाके साथ इसका लेप पांडुको लाभकारक है, (१२) बावलेकुत्तेके विषका और प्रायः सम्पूर्ण विषोंका दर्पनाशक, है (निर्विषैल)

(५३४) पतंग

संस्कृत, रक्तसार, **फारसी**, बुक्म, **अरबी**, बुक्म, **इंग्रेज़ी**, सीसालपीनीआसापम्, **स्वरूप**, अत्यन्त लाल, **स्वाद**, तीक्ष्ण गंधियुक्त मीठा और कडुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध लाल लकड़ी है कि जिससे वस्त्र रंगेजातेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, १ तोलाकी मात्रासे घातक है, **दर्पनाशक**, शीतल वस्तु और वमन कराना, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी (बुर्की) व्रण और पुराने घावोंकी पूरक है, (२) रक्तस्रावकी रुद्धक, (३) व्रणकी स्निग्धता और स्रावको सुखानेवाला, (४) मुखके रूपको शोधन करनेवाली, (५) इसका पीना कफ, रुधिरविकार, फोड़े और फुन्सियोंको हरण करनेवाला है, (६) इसके रंगेहुए वस्त्र ओजको बलप्रद हैं, (विष और घातक है,)

(५३५) पथरी

फारसी, संगदान और चुनियहदान, **अरबी**, काविजह, **स्वरूप**, लाल और भीतरसे पीला होताहै, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम, **हानिकर्ता**, गुल्मप्रद और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, सिर्का और नमक, **प्रतिनिधि**, मस्तगी, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्याहार, (२) हृदयकी व्याकुलताको हरणकर्ता, (३) यकृत्को बलप्रद, (४) शुद्ध रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (५) इसके भीतरका छिलका आमाशयकी पीड़ा, गुड़गुड़ाहट और मरोड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५३६) पथरी फोड़ी

संस्कृत, शिलापुष्प, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, पत्थरोंपर ऊगनेवाली एक ओषधि है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **मात्रा**, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वृक्क और वस्तिकी अश्मरीको खंडनकर्ता, (२) अत्यंत मूत्रप्रवर्तक है, (निर्विषैल)

(५३७) पनसटकी (पनछिटकी)

स्वरूप, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, मंहदीके पत्तोंके समान पत्तेवाली एक ओषधि है **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके फल और पत्तोंको पीसकर जलोदरवालेके पेटपर अथवा किसी शोथपर बांधे तो लाभकारक हैं, (२) मूत्रल, (३) इसका पीना शरीरकी स्निग्धताके बढ़नेको और शीघ्र प्रसव होनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५३८) पन्ना

संस्कृत, गारुत्मत, **फारसी**, जमुर्रद, **इंग्रेज़ी**, इमिरल्ड, **स्वरूप**, हरा और चमकीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध खानिज रत्न है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, कस्तूरी, **प्रतिनिधि**, मूंगा और ज़बरजद, **मात्रा**, २ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नताप्रद, (२) वास्तविक उष्णता, प्राण, हृदय, मस्तिष्क, यकृत् और आमाशयको बलप्रद, (३) मिरगी, उन्माद, हृदयकी व्याकुलता, जलोदर, पांडु, मूत्रकृच्छ्र और कोढ़को हरणकर्ता, (४) इसका नेत्रांजन दृष्टिको बलप्रद है, (५) कीड़ोंके विषका दर्पनाशक है, (१ रत्तीसे अधिक विष है)

(५३९) पनवार (चकोंड़)

स्वरूप, पत्ते हरे और फूल पीले, **स्वाद**, तीखा, **पहिचान**, जिसके बीज मोठके समान होतेहैं एक ओषधिहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अंत्रियोंको, **दर्पनाशक**, मठा, **प्रतिनिधि**, बाबची, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको लयकर्ता, (२) स्निग्धताका आकर्षक, (३) नीबूके स्वरसके साथ इसका लेप सफ़ेद दाग़ और दाद तथा सूखी और तर खुजलीको गुणकारक है, (४) इसका सेवन महामारीके रोग और वातरोगोंसे बचनेवाला है, (निर्विषैल)

(५४०) पनीर

फारसी, पनीर, **अरबी**, जुब्न, **स्वरूप**, पिलोंई लिये सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ खारी, **पहिचान**, दूधको फाड़कर बनाते-हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, शीत प्रकृतिवालोंको और क्षुधा-को हरण करनेवाला है, **दर्पनाशक**, शहद, पोदीना और सातर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) आमाशय, अन्त्रि और वृक्कको बलप्रद, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) दीर्घपाकी, (४) शुद्धदोषोंको उत्पन्न करनेवाला है (निर्विषैल)

(५४१) पनीरमाया (चस्ताचाक)

फारसी, पनीरमायह, **अरबी**, अल्फखह, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और कुछ खारी, **पहिचान**, प्रायः दूधवाले पशुओं-के आमाशयसे निकलताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष **हानिकर्ता**, आमायश और अंत्रियोंको, **दर्पनाशक**, ज़र-

श्क और शहद, मात्रा, १ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) आमाशय और वृक्कको बलप्रद, (२) अतिसारका बद्धक, (३) नक्सीर और प्रदरका रुद्धक, (४) स्वच्छताप्रद, (५) स्निग्धताको लयकर्ता, (६) उदर और गर्भाशयकी पीड़ाको गुणकर्ता, (७) विषसे पिघली वस्तुको जमानेवाला, (८) जमीहुई वस्तुको पिघलानेवाला (९) मुर्दारसंगके अवगुणको हरणकर्ता (१०) हरएक पशुका पनीरमाया अपने प्रभावमें उसही पशुकी प्रकृतिके अनुकूल है, (निर्विषैल)

(५४२) पपीता (अरंड ख़र्बूजा)

स्वरूप, हरा, पीला और लाल, **स्वाद**, कच्चा कडुआ और पकाहुआ मिठासलिये कुछ बेस्वाद होताहै, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फल है कि जिसके वृक्षमें अरंडके जैसे पत्ते होतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृति और कफप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, खांड़, **प्रतिनिधि**, हिंदी अंजीर, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मुखसे रुधिरआना, गरमीकी बवासीर, हृदय और आमाशयके दाहको गुणकारक है, (२) इसका दूध दादपर लगानेसे लाभहोता है, (३) इसका फल उपदंश (आतिशक) को गुणप्रद है, (४) इसके पकेहुए फलका और कच्चे फलका अचार प्लीहके रोगको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५४३) पपीता पपीह

फारसी, पपीतह, **स्वरूप**, भूरा और काला, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध बीज है कि जिसका फल आलूके समान होताहै और बीज त्रिकोण होतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्ण प्रकृतिवालोंको और आक्षेपप्रद है, **दर्पनाशक**, हरी कासनी, **प्रतिनिधि**, दरयाई नारियल, **मात्रा**, १ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) विषको हरणकर्ता और विषका दर्पनाशक, (२) विषूचिका (हैजा) को अत्यन्त गुणकारक है, (३) यदि गुलाबजलके साथ पीसकर दियाजावै तो तत्क्षण (फौरन) रद्द और दस्तोंको बन्द करताहै, (४) आर्त्तवप्रवर्त्तक, (५) श्वास, जलोदर, वायु और गठियाको लाभप्रद है, (उपविष)

(५४४) पपोयन

स्वरूप, हरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें होनेवाली एक प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके पत्ते शोथको लयकारक हैं, (२) इसकी जड़को जलमें पीसकर लगावे तो व्रण (जखम) और नाड़ीव्रण (नासूर) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५४४) परवल

संस्कृत, पटोल, **इंग्रेज़ी**, ट्रिकोसेंथिस-

कुकुमेरिना, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ और फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फलशाक है कि जिसकी बेल कांटेदार होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, उष्ण प्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, धनियां, **प्रतिनिधि**, खीरा और ककड़ी, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शीघ्रपाकी, (२) ओजप्रद, (३) क्षुधावर्द्धक, (४) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (५) खांसी, रुधिरविकार, पित्तविकार, ज्वर और फोड़ा, फुन्सियोंको लाभप्रद है, (६) उदरके कृमियोंका नाशक, (७) इसका शाक मांसके साथ स्वादिष्ट होताहै, (निर्विषैल)

(५४५) प्याज

संस्कृत, पलांडु, **फारसी**, प्याज, **अरबी**, बुसिल, **इंग्रेज़ी**, एलियम्, **स्वरूप**, लाल और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और तीखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, मलको स्निग्ध करताहुआ ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्ण प्रकृतिवालोंको और तृषा तथा विस्मृतिप्रद है, **दर्पनाशक**, सिर्का, नमक और शहद, **प्रतिनिधि**, कांदर और करासशामी, **मात्रा**, १ तोलेसे २ तोलेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोध और रोमकूपोंका उद्घाटक, (२) क्षुधा वर्द्धक, (३) पाचक, (४) ओजको बलप्रद, (५) यदि स्निग्ध (चिकने) मांसके साथ पकाकर खावे तो महामारीकी वायुके अपगुणको नष्टकर्ता है, (६) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (७) वायुको लयकर्ता, (८) नेत्र विकारको गुणकारक है, (९) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (१०) इसको पकाकर लेप करे तो शीतकी शोथको पक्ककर्ता है, (११) खट्टी डकारोंको नष्टकर्ता, (१२) जल और वायुके अपगुणको नष्टकर्ता है (निर्विषैल)

(५४६) प्याज़के बीज

संस्कृत, पलांडुबीज, **फारसी**, तुख़्मप्याज, **अरबी**, बज़रुल्बुसिल, **स्वरूप**, काले, **स्वाद**, कुछ कड़वे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्ण प्रकृतिवालोंको, **प्रतिनिधि**, शलगमके बिज, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उष्ण प्रकृतिवालोंके ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (२)रोधका उद्घाटक,(३)क्षुधाप्रद, (४) इसका लेप बालोंको प्रकटकर्ता है, (५) कालेदाग़ोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५४७) पाखर

संस्कृत, प्लक्ष, **इंग्रेजी**, फाइकसबिरेंस, **स्वरूप**, हरा और भूरा **स्वाद**, बेस्वाद, **पहिचान**, जिससे दूध निकलताहै एक बहुत बड़ा सघन वृक्ष है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) फोड़े, फुन्सियोंको और कुछ अवयवोंकी सूजनको तथा

कफविकारको गुणकारक है, (२) इसका फल पित्तनाशक है, (३) इसका मुरब्बा प्लीहकेलिये अनुभूत गुणकारक है, (४) इसका दूध दुःखित अवयवोंमें मलको नहीं गिरनेदेता, (५) दोषोंको लयकारक, (६) इसका फल मूर्च्छित हृदयको बलप्रद है, (७) क्षुधाप्रद, (८) पित्तनाशक है, (निर्विषैल)

(५४९) पान

संस्कृत, ताम्बूल, **फारसी**, तम्बोल, **अरबी**, फान, **इंग्रेज़ी**, बीटललीफ, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, यह एक बेलका पत्ता है, इसकी अनेक जाति हैं कि जिन्होंमें पुरुष और स्त्री जाति भी होतीहै, **प्रकृति**, समानगुणवाला, बंगला पान २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, प्रातःकालमें उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, इलायची, कत्था और सुपारी, **प्रतिनिधि**, लौंग, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) हृदय, मस्तिष्क, आमाशय, धारणाशक्ति और बुद्धिको बलप्रद, (३) आनन्दप्रद, (४) रोमकूप और विबन्धका उद्घाटक, (५) मूत्रल, (६) मलशोधक, (७) झूंठी तृषाको शांतिप्रद, (८) स्वर और कंठशोधक, (९)इसके चबानेसे दांतोंकी पीड़ा(दर्द)और दुर्गंधि दूर होजातीहै, (१०) मुखकी स्निग्धताको शोधनकर्ता, (११) ओजको बलप्रद, (१२) क्षुधाप्रद है, (निर्विषैल)

(५५०) पापड़ी नमक (पापड़खार)

फारसी, बूरयेअरमनी, **अरबी**, बूरक, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, हलका और जालीदार एक जातिका नमक है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशयको और मूर्च्छाप्रद है, **दर्पनाशक**, मस्तगी और बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, नमक, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) स्वच्छताप्रद, (३) त्वचाको उपाड़नेवाला, (४) रुधिरको त्वचाकी तरफ खींचनेवाला, (५) गुल्मको हरण करनेवाला, (६) ओजको चालनकर्ता, (७) उदरके कृमियोंका नाशक, (८) पिच्छलकफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (९) शहदके साथ इसका नेत्रांजन (सुरमा) दृष्टिकी उष्णताको गुणकारक है, (१०) चमेलीके तेलके साथ इसकी मालिश लिंगेंद्रियको बलप्रद है और ओजको चालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(५५१) पारा

संस्कृत, पारद, **फारसी**, सीमाब, **अरबी**, जीबक, **इंग्रेज़ी**, मर्क्यूरी, **स्वरूप**, स्वच्छ और सफ़ेद, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध पतला खानिज द्रव्य है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**,

CC0. Gurukul Kangri Collection

मुख और स्नायुओंको, **दर्पनाशक**, दूध और चिकनेयूष, **प्रतिनिधि**, पिघलाहुआ शीशा, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मांसके साथ सेवन करनेसे शरीरके स्वास्थ्यको स्थिर करनेवाला, (२) स्नायु, पाचकशक्ति और ओजको बलप्रद, (३) तर खुजलीको गुणप्रद, (४) व्रण और उपदंशको गुणप्रद, (५) इसका धूआं कम्पको उत्पन्नकर्ता है, (६) इसकी भस्म कुष्ठको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(५५२) पालक

संस्कृत, पालक्या, **फारसी**, अस्पानाख, **अरबी**, अस्फानाख, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, बेस्वाद, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध पत्रशाक है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, मांस और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, कुल्फा और कद्दू, **मात्रा**, ३ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) मलोंको गिरनेसे रोकनेवाला, (३) शीघ्रपाकी, (४) आमाशयका दाह, तृषा और गरमीके ज्वरको गुणप्रद, (५) वृक्क और वस्तिकी पथरीको खंडनकर्ता, (६) मूत्ररोधको गुणप्रद, (७) उष्णप्रकृतिवालोंको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(५५३) पालकके बीज

संस्कृत, पालक्याबीज, **फारसी**, तुख़्मअस्पानाख, **अरबी**, बज़रुल्अस्फानाख, **इंग्रेज़ी**, स्पाईनेज, **स्वरूप**, पिलोईलिये भूरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, पालकके प्रसिद्ध बीज हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, प्लीहको, **दर्पनाशक**, गिलेमख़तूम, **प्रतिनिधि**, कुलफाके बीज, **मात्रा**, ७ माशेसे ९ माशेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) हृदयशूल, उदरके अवयवोंकी पीड़ा और गरमीके ज्वरको गुणप्रद, (२) मूत्रप्रवर्त्तक, (३) तृषा और आमाशयके दाहको शांतिप्रद, (४) इसका स्वरस राजयक्ष्मा और उरःक्षतकेलिये अनुभूत गुणकारक है, (५) मूत्ररोधको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(५५४) पालकजुही

स्वरूप, हरी और भूरी, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, जिसके पत्ते पालकसे लम्बे और चौड़े होतेहैं एक ओषधि है, **प्रकृति**, गरम और तर, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके पत्तोंके स्वरसका लेप कालेदाग़, दाद और चेहरेकी श्यामता (स्याही) को गुणकारक है, (२) इसकी जड़के छीलकेको एक तोले लोंग और काले ज़ीरेके साथ अथवा एक जवा लहसनके साथ अथवा जल और सिर्कामें पीसकर लगावे तो दाद और कालेदाग़ोंको अनभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५५५) पाह

स्वरूप, अनेक तरहका, सफ़ेद होताहै,

स्वाद, फीका, **पहिचान,** पत्थरकी जातिमें एक काली वस्तु है, यह गुजरातमें उत्तम और अधिक उत्पन्न होताहै, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) योनिकी स्निग्धताको हरणकर्ता, (२) रक्तप्रदरका रुद्धक, (३) इसका लेप नेत्रविकारको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५५६) पित्तपापड़ा

संस्कृत, पर्पट, **फारसी,** शाहतरह, **अरबी,** शाहतरिज, **इंग्रेज़ी,** जस्टिसया-प्रोकंवेन्स, **स्वरूप,** कालापनलिये हरा, **स्वाद,** कडुआ और कुछ तीखा, **पहिचान,** एक प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति,** शेखकी संमतिमें १ कक्षामें ठंडा और तर है तथा स्नायुओंको जोड़नेवाला है, **हानिकर्ता,** फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** कासनी, **प्रतिनिधि,** सनाय और बड़ी हरड़, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) यकृत् और प्लीहके रोधका उद्घाटक, (२) यकृत् और आमाशयको बलप्रद, (३) वात, पित्त और कफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (४) रक्तशोधक, (५) सूखा पित्तपापड़ा जीर्णज्वर और वातजरोगोंको गुणकारक है (६) पांडुको हरणकर्ता (७) इसके पत्तोंका स्वच्छ स्वरस आमाशय और क्षुधाको बलप्रद है, (८) प्रकृतिको मृदुकर्ता है, (निर्विषैल)

(५५७) पित्तपापड़ेके बीज

संस्कृत, पर्पटबीज, **फारसी,** तुख़्म-शाहतरह, **अरबी,** बजरुल्शाहतरिज, **स्वरूप,** काले, **स्वाद,** कड़वे, **पहिचान,** प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति,** उष्णतालिये समान गुणवाले, **दर्पनाशक,** कासनी और पीलीहरड़, **प्रतिनिधि,** सनाय, **मात्रा,** ७ माशेसे ९ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) आमाशय और अन्त्रियोंके शोधक, (२) मलको बांधकर निकालनेवाले, (३) रुधिर, पित्त और वातशोधक, (४) क्षुधाप्रद, (५) पांडुको लाभप्रद, (६) प्रायः वातज रोगोंको गुणदायक है, (निर्विषैल)

(५५८) पिघारा

स्वरूप, भूरी, **स्वाद,** कसेली और कड़वी, **पहिचान,** एक बड़ी जड़ है, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि,** असगंध, **मात्रा,** ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) कफ, रुधिरविकार, प्रमेह, अवयवोंका शोथ, आमवात और जांघकी पीड़ाका नाशक है, (निर्विषैल)।

(५५९) पियाबांसा

संस्कृत, सहचर, **स्वरूप,** हरा, **स्वाद,** कडुआ और तीखा, **पहिचान,** एक हिन्दुस्तानी प्रसिद्ध झाड़ है, **प्रकृति,** ठंडा और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) ज्वर और श्वासको हरणकर्ता, (२) शहदके साथ सेवन करे तो नकसीर और मुखसे रुधिरके आनेको रोकनेवाला, (३) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (४) कफशोधक,

(९) क्षुधाप्रद, (६) इसकी कुली दांतोंकी पीड़ाको गुणकारक है, (७) इसकी जड़ खांसीमें काम आतीहै और गुणदायक है, (निर्विषैल)

(५६०) पियारांगा

स्वरूप, ललोईलिये पीला, **स्वाद**, कड़वा, **पहिचान**, एक जड़ है जोकि हिन्दुस्तानकी पूर्वदशामें होतीहै, **प्रकृति**, मलको स्निग्ध करताहुआ २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **मात्रा**, १ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) शिरःपीड़ाको लाभप्रद, (३) केश, अपस्मार, रतोंधी, आंखोंकी ललोई, कानकी पीड़ा, दांतोंकी पीड़ा और श्वासको हरणकर्ता, (४) श्वासको गुणप्रद, (९) इसका पीना शीतके रोगोंको बहुत गुणकारक है, (६) गुल्म और उदरकी पीड़ाको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(५६१) पिस्ता

फारसी, पिस्ता, **अरबी**, फिस्तक, **स्वरूप**, बाहर ललोईलिये हरा और भीतरसे हरा, **स्वाद**, सुस्वादु और मिठासलिये फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध विलायती मेवा है, **प्रकृति**, कुछ स्निग्धतालिये २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **दर्पनाशक**, सिकंजवीन और आलूबुखारा, **प्रतिनिधि**, बादाम, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१)बुद्धि, धारणाशक्ति, हृदय, आमाशय और ओजको बलप्रद, (२) हृदयकी व्याकुलता, वमन और जीमिचलानेको हरणकर्ता, (३) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) वृक्ककार्श्य और यकृत्की सरदीको हरणकरता है (निर्विषैल)

(५६२) पिस्ताका छीलका

फारसी, पोस्तपिश्ता, **अरबी**, आल्फिस्तककशर, **स्वरूप**, कुछ ललोईलिये गदला, **स्वाद**, फीका और कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२)मुखके आने (पाक) को लाभप्रद,(३)वमन और हिक्का(हिचकी) को हरणकर्ता, (४) रोध और आंतोंको बलप्रद, (९) मसूढ़ा, हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (६) मुखको सुगंधित करताहै, (निर्विषैल)

(५६३) पीतल

संस्कृत, पित्तल, **फारसी**, बिरंज, **अरबी**, ब्रास, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक जातिकी प्रसिद्ध धातु है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, स्नायुओंको, **प्रतिनिधि**, तांबा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायु और कफके विकारोंको हरणकर्ता, (२) पांडुको लाभप्रद, (३) प्लीहकी शोथको गुणप्रद, (४) इसके पात्रोंको खानेपीनेमें व्यवहार करनेसे मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवोंको लाभ होताहै, (९) वक्षस्थलको हानिकारक है, (निर्विषैल)

(५६४) पीपल

संस्कृत, पिप्पल, **फारसी**, दरख़्तलजा, **इंग्रेज़ी**, पोप्लरलीटंड, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, जिसकी हिन्दूलोग पूजा करते हैं एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध वृक्ष है, **प्रकृति**, इसके पत्ते और छाल ठंडे और रूक्ष हैं तथा किसीके मतमें गरम और रूक्ष हैं, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी छालका लेप शोथको लयकारक है, (२) नाड़ीव्रण (नासूर) को गुणप्रद, (३) इसके पत्तेभी नासूरको लाभकारक हैं, (४) व्रणपूरक, (५) इसके पत्ते जो कि स्वयं ही सूखकर गिरजाते हैं उनको गरमागरम जलमें डालकर पीवे तो जीमिचलानेको और रद्दको गुणप्रद है, (६) इसकी जड़की छाल स्तम्भनकर्ता है, (७) वीर्यको सांद्रकर्ता, (८) कमरको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(५६५) पीपरामूल

संस्कृत, पिप्पलीमूल, **फारसी**, फिलफिलमूयह, **अरबी**, असुलुल्फिल्फिल्, **इंग्रेज़ी**, पाईपररूट, **स्वरूप**, काला और भूरा, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और दृष्टिको तथा वीर्यको क्षयकारक है, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद और शहद, **प्रतिनिधि**, मीठा बालछड़ और करतमके बीजकी मिंगी, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका चबाना मुखकी स्निग्धताको शोधन करनेवाला है, (२) कफको हरणकर्ता, (३) पाचक, (४) क्षुधाप्रद, (५) आमाशयकी गरमीको बलप्रद, (६) गुल्म, आक्षेप, प्लीहकीशोथ और शीतकी शोथको लाभप्रद, (७) शोथको लयकर्ता, (८) रोधका उद्घाटक, (९) वीर्यके क्षय होनेपरभी अत्यन्त विषयशक्ति प्रद है, (निर्विषैल)

(५६६) पीपल (पीपली)

संस्कृत, पिप्पली, **फारसी**, फिलफिलदराज, **अरबी**, दारफिलफिल, **इंग्रेज़ी**, लाँगपेपर, **स्वरूप**, भूरापन लिये काली, **स्वाद**, अत्यन्त तीखी और कुछ कड़वी, **पहिचान**, सहतूतके समान एक लताका प्रसिद्ध फल है, **हानिकर्ता**, शिरको और शिरःपीड़ाप्रद है, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद और चन्दन, **प्रतिनिधि**, सोंठ और नरकचूर, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) यकृत् और प्लीहके रोधको खण्डनकर्ता, (३) आहारपाचक, (४) आमाशय और कमरको बलप्रद, (५) उदरके अवयवोंमें गरमीको उत्पन्नकर्ता, (६) ओजको चालनकर्ता, (७) मूत्र और आर्तवप्रवर्त्तक, (८) गर्भको गिरानेवाली है, (निर्विषैल)

(५६७) पीलू

संस्कृत, पीलु, **फारसी**, दरख़्तमि-

स्वाक, अरबी, ईराक, इंग्रेज़ी, मस्टर्ड-ट्रीऑफ्स्कीपचर, **स्वरूप**, हरा, पीला और लाल, **स्वाद**, कुछ खारी और तीखा, **पहिचान**, मथुरा इत्यादि देशोंमें होनेवाला एक प्रसिद्ध वृक्ष है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशयमें लेखनताप्रद, **दर्पनाशक**, कतीरा और अस्पगोल, **प्रतिनिधि**, केवड़ा और चन्दन, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) शोथको लयकर्ता, (३) कफशोधक, (४) रोमकूपोंका उद्घाटक, (५) ओजको बलप्रद, (६) अतिसारवर्द्धक, (७) गर्भाशयके शोथको लयकर्ता, (८) बवासीर, खुजली और कोढ़को लाभप्रद, (९) इसकी छाल पित्त और कफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (१०) जलोदरको गुणप्रद, इसकी दांतोंन दांतोंको स्वच्छकर्ता और दृढ़कर्ता है तथा मसूड़ोंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(५६८) पेठा

संस्कृत, कूष्मांड, **फारसी**, कदूयरूमी, **अरबी**, मोहद्दिबह, **इंग्रेज़ी**, पंपकीन, **स्वरूप**, बाहर हरा और भीतर सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, नमक, मिरच और खांड, **प्रतिनिधि**, लोकी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शुद्ध दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (२) हृदय, यकृत् और आमाशयकी उष्णताको शांतिप्रद, (३) गरमीकी हृदयव्याकुलताको गुणप्रद, (४) वीर्यको अधिक उत्पन्नकर्ता, (५) बृंहणताप्रद, (६) उरःक्षत और राजयक्ष्माको लाभप्रद, (७) इसका मुरब्बा हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद है, (८) मनको अधिक प्रसन्नताप्रद, (९) उष्णताको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(५६९) पेठाके बीज

संस्कृत, कूष्मांडबीज, **फारसी**, तुख्मकदूयशीरीं, **अरबी**, बजरुल्मेहदियह, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडे और २ कक्षामें तर हैं, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, सोंफ, **प्रतिनिधि**, कद्दूके बीज, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कुपित दोषोंको और पित्तको तथा रक्तप्रकोप, यकृत्की उष्णता और तृषाको शांतिप्रद, (२) मूत्रप्रवर्तक, (३) खांसी और प्रायः वस्तिके रोगोंको हरणकर्ता, (४) उरःक्षत और राजयक्ष्माको लाभप्रद, (९) इसका तैल मस्तिष्ककी रूक्षता और अनिद्राको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५७०) पेवसी

फारसी, जवक और फलह, **अरबी**, लबा, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**,

...Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

रोधप्रद, **दर्पनाशक,** शहद और मीठी वस्तु, **प्रतिनिधि,** पनीर, **गुण,कर्म,प्रयोग,** (१) शरीरको बृंहणकर्ता, (२) उष्ण-प्रकृतिवालोंके ओजको चालनकर्ता, (३) बद्धक, (४) गुल्मको उत्पन्नकर्ता, (५) दुष्ट और पिच्छलदोषोंको उत्पन्नकर्ता, (६) दूधको जमानेवाली है, (निर्विषैल)

(५७१) पोदीना

संस्कृत, रोचिनी, **फ़ारसी,** पोदीनह, **अरबी,** पोतंज, **स्वरूप,** हरा, **स्वाद,** कुछ कडुआ और तीक्षणगन्धियुक्त तीखा, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** ओज, आंत और वृक्कको, **दर्पनाशक,** कतीरा और मुलहटीका सत्त, **प्रतिनिधि,** गन्दना, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) स्वच्छताप्रद, (२) वक्षस्थल और वृक्कके मल (फोक) को शोधनकर्ता, (३) कुबड़ापन और हिचकीको गुणकर्ता, (४) वायुको लयकर्ता, (५) मूत्र और प्रस्वेद-को निकालनेवाला, (६) गर्भको गिरनेसे रोक-नेवाला, (७) इसके सूंघनेसे मूर्च्छा दूर होजातीहै, (निर्विषैल)

(५७२) पोदीना पहाड़ी

संस्कृत, पर्वतीयरोचिनी, **फारसी,** पो-दीनहकोही, **अरबी,**फोतंजजबली, **स्वरूप,** सफ़ेदीलिये हरा, **स्वाद,** तीक्ष्णगन्धियुक्त, अत्यन्त तीखा, **पहिचान,** पोदीनाके समान एक पर्वती ओषधि है, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** फेंफ-ड़ेको, **दर्पनाशक,** पोदीना, **प्रतिनिधि,** आकाशबेल और सातिर, **मात्रा,** ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शरीरमें अ-त्यन्त उष्णताप्रद, (२) मूत्र, आर्त्तव और दुग्धको अत्यन्त पैदा करनेवाला, (३) रोधको खण्डनकर्ता, (४) वक्षस्थल और फेंफड़ेका शोधक, (५) यकृत्, आ-माशय और प्लीहको बलप्रद, (६) वृक्क-को बलप्रद, (७) मुखसे रुधिरके आने-को रोकनेवाला, (८) कफको अति-सारद्वारा शोधनकर्ता, (९) गुल्मको लाभप्रद, (१०) सिर्काके साथ इसका लेप कफज शोथको लयकारकहै, (११) फोड़ोंको सुखानेवाला है, (निर्विषैल)

(५७३) पोस्त

संस्कृत, खसतिल, **फारसी,** कोकनार, **अरबी,** अबुनास, **इंग्रेज़ी,** पोपीसीड, **स्वरूप,** मटियारंगलिये सफ़ेद, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,**२ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें रूक्ष है, **हा-निकर्ता,** फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** मस्तगी और खांड, **प्रतिनिधि,** अफीम, **मात्रा,** ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अवयवोंको शिथिलकर्ता, (२) मलको पक्कर्ता, (३) अतिसारबद्धक, (४) विशेषतः रुधिरज और पित्तज अतिसारका बद्धक, (५) आमाशय और बस्तिके दाहको हरणकर्ता, (६) निद्राप्रद, (७)

खांसी और वक्षस्थलके रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५७४) पोई

संस्कृत, पोतकी, **इंग्रेज़ी**, रेडमलवार-नाइटभ्शोट, **स्वरूप**, बेंगनी और हरा, **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, जिसके पत्ते पानके समान होतेहैं एक बेल है कि जिसका शाक होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, कफको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, खांड़, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) निद्राप्रद, (२) वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (३) कंठ और स्वरको मृदुकर्ता, (४) गरमीके ज्वरको नष्टकर्ता, (५) आगके जलेहुएको गुणप्रद, (६) लिंगेन्द्रिय पर लेप करनेसे स्तम्भनकर्ता है, (निर्विषैल)

(५७५) फर्फ़्यून (फर्बयून)

अरबी, लुबनबनफसा, और हाफिज़अत्फाल, **स्वरूप**, पिलोईलिये भूरा, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त तीखा और कड़वा, **पहिचान**, एक ओषधिका जमाहुआ दूध है कि जिसको बर्बरदेशके पहाड़ोंसे लातेहैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और वृषणोंको, **दर्पनाशक**, मुलहटीका सत्त, बबूलका गोंद और घृत, **प्रतिनिधि**, जन्दबेदस्तर और माजरयून, **मात्रा**, ३ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कांतिप्रद, (२) मृदुताप्रद, (३) कफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (४) स्नायुओंके कफज मलको हरणकर्ता, (५) कफशोधक, (६) अर्दित, पक्षवध, स्तम्भ, कम्प, पादहर्ष, अपस्मार, संन्यास, निद्रामें घिग्घीबंधना, जलोदर और गुल्मको लाभप्रद, (७) आर्त्तवप्रवर्त्तक, (८) जिसके एकदफ़े बच्चा पैदा हुआहोवे एसी स्त्रीके दूधमें घिसकर इसकी नस्य लेवे तो विशेषतः अर्दितको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५७६) फालसा

संस्कृत, परूषक, **फारसी**, पालसह, **अरबी**, फालसह, **स्वरूप**, लाल और काला, **स्वाद**, मीठा और खट्टा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, अनीसून और गुलकन्द, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृदय, आमाशय और गरम यकृत्को बलप्रद, (२) पित्तजअतिसार, वमन, हिचकी और तृषाको हरणकर्ता, (३) ज्वरकी गर्मी, वक्षस्थलका दाह, आमाशयका दाह, मूत्रका दाह और प्रमेहका नाशक है, (४) इसका स्वरस आमाशयको बलप्रद है, (५) हृदयकी व्याकुलता और धड़कनको हरणकर्ता, (६) गरमी तृषाको शांतिप्रद, (७) इसकी जड़के छीलकेको टुकड़ेर करके रात्रिको जलमें भिगोदेवे और प्रातःकालही उस हिमको पानकरे तो प्रमेह और मूत्रके दाहको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५७७) फिटकरी

संस्कृत, स्फटिका, **फारसी**, जाकसफ़ेद, **अरबी**, ज़ाजअबियज़ और शवयमानी, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ खारी और कसेली, **पहिचान**, बिल्लौरके समान स्वच्छ एक प्रसिद्ध खानिज वस्तु है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको और आतोंको, **दर्पनाशक**, घी और दूध, **प्रतिनिधि**, नोसद्दर और काला नमक, **मात्रा**, १ माशा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) बद्धक, (३) कांतिप्रद, (४) फिटकरी १ माशे और मिश्री ४ माशे दोनोंको पावसेर दूधके साथ पीवे तो वृक्क, वस्ति और लिंगेन्द्रियके शिरके क्षत (ज़खम) तथा वृक्क और वस्तिकी पथरीको गुणकारक है, (५) इसकी बत्तीको गन्दनाके स्वरसके साथ गर्भाशयमें रक्खे तो गर्भाशयसे रुधिरके आनेको लाभप्रद है, (६) आंखके जालेको और नेत्रोंके दूखनेको लाभकारक है, (७) दूधके साथ पीवे तो चोटकी धमकको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(५७८) फिंदक

फारसी, फिंदक, **अरबी**, बुन्दक, **स्वरूप**, बाहर भूरा, भीतर सफ़ेद और पीला, **स्वाद**, मीठा और चिकना, **पहिचान**, एक पर्वती वृक्षका फल है कि जिसकी मिंगी बादामके समान होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशयको और अधोवायुको पैदा करनेवाला, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और खांड़, **प्रतिनिधि**, अखरोट और सनोवरके बीज, **मात्रा**, १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) आंतोंको बलप्रद, (३) मस्तिष्कको लाभप्रद, (४) शहदके साथ खांसीको लाभप्रद है, (५) वृक्कके कार्श्यको हरणकर्ता, (६) ठंडे श्लेष्माको पक्ककर्ता, (७) प्रमेहको लाभप्रद, (८) बालोंके गिरनेको लाभप्रद, (९) इसका तैल सरदीकी खांसी, वक्षस्थल और यकृत्‌की पीड़ाको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(५७९) फिरोजा

फारसी, फीरोज़ह, **अरबी**, फीरोजज, **स्वरूप**, हरा, बेंगनी और चमकीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसके प्रायः नग बनायेजातेहैं एक प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, पन्ना, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) प्राणवायुको बलप्रद, (३) दृष्टिकी शक्ति, हृदय, मस्तिष्क और आमाशयको बलप्रद, (४) अतिसार और अन्त्रिक्षतका नाशक, (५) हृदयकी व्याकुलताको लाभप्रद, (६) वृक्ककी पथरीको खण्डनकर्ता, (७) नेत्रके रोगोंको लाभप्रद, (८) इसको गलेमें पहिने तो

विशेषतः हृदयको बलप्रद है, (९) भयको हरणकर्ता, (१०) शत्रुओंको जितानेवाला है, (निर्विषैल)

(५८०) फीलगोश

फारसी, फीलगोश, **अरबी**, फीलगोल और इज़्नुल्फील, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी और कसेली, **पहिचान**, एक ओषधि है कि जिसके स्वरसको पकाकर रसौत बनातेहैं, **प्रकृति**, भारी और २ कक्षामें गरम तथा रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्को और पिच्छलदोषोंको पैदा करनेवाली, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, आफिस्तीं **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) लसयुक्त सांद्रदोषोंकी शोधक, (३) रोधकी उद्घाटक, (४) कांतिप्रद, (५) नेत्रोंको स्वच्छकर्ता और लाभप्रद, (६) इसका चुआव (टपका) आंखके मांड़ेको गुणकारक है, (७) क्षतोंको उत्पन्नकर्ता, (८) इसकी फलीके स्वरसको लिंगेन्द्रियके शिरपर टपकावे तो अत्यन्त मूत्रल है, (९) मूत्रके रोधको लाभप्रद, (१०) अश्मरीको खण्डनकर्ता, (११) शहदके साथ इसका लेप ओजको संचालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(५८१) फूंट

फारसी, खयारदश्ती, **अरबी**, किशायुल्बर, **स्वरूप**, हरा और पीला, **पहिचान**, ककड़ीजैसा लम्बा एक प्रसिद्ध फल है, यह वर्षा और गरमियोंमें होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, अध्मानकर्ता और बहुतही जल्दी सड़नेवाला है, **दर्पनाशक**, सफ़ेद गुड़ और गरम पदार्थ, **प्रतिनिधि**, कच्चा ख़रबूज़ा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (२) कफज्वरको उत्पन्नकर्ता, (३) मस्तिष्क सम्बन्धी रोधका उद्घाटक, (४) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (५) मूत्रल है, (निर्विषैल)

(५८२) फूलफली

स्वरूप, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, एक प्रकारकी ओषधि है जोकि पतले पत्तोंकी छत्तादार होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, वक्षस्थलके अवयवोंको, **दर्पनाशक**, मिश्री, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) वीर्यवर्द्धक, (३) वीर्यको सांद्रकर्ता, (४) प्रमेह और शुक्रमेहको लाभप्रद, (५) मूत्रके दाहको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५८३) फूलआंवला

स्वरूप, पिलोईलिये हरा, **स्वाद**, कडुआ और कसेला, **पहिचान**, बिलकुल आंवलेका वृक्षजैसी एक ओषधि है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, कालीमिरच, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका स्वरस नासूर और बड़े बड़े

व्रणोंका पूरक है, (२) नमकके साथ इसका लेप खाजको गुणकारक है, (३) चोटको अत्यन्त गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५८४) बकायन

संस्कृत, महानिंब, **फारसी**, आजाद-दरख़्त, **अरबी**, बान, **इंग्रेज़ी**, मेलियाए-झेडरेक, **स्वरूप**, पत्ते हरे और फूल पीला होताहै, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, एक-जातिका बड़ा वृक्ष है कि जिसकी लकड़ी नरम होती है और फल बहुत कम होताहै, एक जातिका नीम है, व्रजमें बहुत होता है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत् और आमाशयको, **दर्पनाशक**, सौंफ, **प्रतिनिधि**, सलीखा और बकायनके फल, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रोमकूपोंका उद्घाटक, (२) वायुको लयकर्ता, (३) मूत्रल, (४) कोढ़, सफ़ेददाग़, कंठमाला, शोथ, व्रण और त्वचाके रोगोंको लाभप्रद, (५) रक्तशोधक, (६) इसका लेप शोथको लयकारक है, (७) इसका मंजन दातोंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(५८५) बकायनके फल

संस्कृत, महानिंबफल, **फारसी**, बार-दरख़्तआजाद, **अरबी**, हब्बुल्बान और समरुल्बान, **इंग्रेज़ी**, मेलियाएग्येडरेक, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, चिकना और कडुआ, **पहिचान**, गोल होतेहैं, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत् और आमाशयको, **दर्पनाशक**, सौंफ, **प्रतिनिधि**, बिस्वासा और मजीठ, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) यकृत्के रोधके उद्घाटक, (२) कफ और वातको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (३) शोथको लयकर्ता, (४) रक्तशोधक, (५) प्लीहकी पीड़ाको लाभप्रद, (६) बवासीर, यकृत्की कठोरता और सूखी तथा तर खुजलीको हरणकर्ता है,(७) इन्हींका तैल स्नायुओंकी ऐंठनको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५८६) बकन

स्वरूप, हरा, **पहिचान**, हिंदुस्तानमें एक ओषधि होतीहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**,**प्रयोग**, (१) इसके पत्तोंको पीनेसे बदबूसे उत्पन्नहुआ ज्वर, कफज्वर और सरदीकी खांसी दूर होतीहैं, (२) मूत्ररोध, प्रमेह और पथरीको हरणकर्ता, (३) इसका लेप शोथको लयकारक है, (४) फोड़ोंको पकानेवाली, (५) रक्तशोधक है, (निर्विषैल)

(५८७) बखुरमरियम

अरबी, बखुरमरियम, **स्वरूप**, भूरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, एक ओषधिकी जड़ है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गुदाको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, कंदश, **मात्रा**, ७ माशे,**गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रोधकी उद्घाटक, (२) वायुको लयकर्ता, (३) स्निग्ध-

ताको आकर्षण करनेवाली, (४) मूत्र, आर्तव, प्रस्वेद और दुग्धप्रवर्तक, (५) यकृत्‌के रोधको खंडनकर्ता, (६) पीलियाको गुणप्रद, (७) इसकी जड़ शीघ्रही प्रसव करानेवाली है (८) इसके बीज कांतिप्रद हैं (निर्विषैल)

(५८८) बच्छनाग

संस्कृत, वत्सनाभ, **फ़ारसी**, जेहर, **अरबी**, बीश, **स्वरूप**, ऊपर काला और भीतरसे कुछ सफ़ेदीलिये, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, निर्बिसी जैसी एक पर्वती वृक्षकी जड़ है, इसकी कुछ जातोंको संखिया कहतेहैं, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, घातक है, **दर्पनाशक**, निर्बिसी और दायुलिमस्क, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शुद्ध कियाहुआ कोढ़, सफ़ेददाग़ और श्वासको गुणकारक है परंतु इसके सेवनमें बहुत ध्यान रखनाचाहिये, (बलवान् घातक विष है)

(५८९) बच (गुड़बच)

संस्कृत, वचा, **फ़ारसी**, अगरतुर्की, **अरबी**, विज, **स्वरूप**, ललोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, तीखी, **पहिचान**, गांठोंदार एक जड़ है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिरको और रुधिरको, **दर्पनाशक**, सौंफ और सिकंजवीन, **प्रतिनिधि**, ज़रावंद, लौंग और रेवन्दचीनी, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) कांतिप्रद, (३) ओजप्रद, (४) कफशोधक, (५) वायुको लयकर्ता, (६) मस्तिष्कको कफज स्निग्धतासे शोधनकर्ता, (७) पक्षवध, इंद्रियोंकी विकलता, स्तम्भ और हकलानेको गुणकारक है, (८) आमाशय और मस्तिष्ककी स्निग्धताको शोषण करनेवाला, (९) स्नायु और आमाशयको बलप्रद, (१०) यकृत्‌को बलप्रद, (११) शीतप्रकृति, नेत्रके रोग और दातोंकी पड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५९०) बजियार

स्वरूप, कालापनलिये हरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, एक बहुत बड़ा वृक्ष है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, ओजनाशक है, दर्पनाशक, सनोबरके बीज, **प्रतिनिधि**, बोजीदां, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) स्वच्छताप्रद, (३) पिच्छल कफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (४) कोढ़, सफ़ेद दाग़, गुदाके कीड़े, शुक्रमेह और रक्तविकारको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(५९१) बड़हल

स्वरूप, जिसका फल ललोईलिये पीला होताहै और मिंगी लाल तथा सफ़ेद होतीहै, एक फल है, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त, **पहिचान**, इसका वृक्ष बहुत बड़ा होताहै और पत्ते बादामके वृक्षजैसे होतेहैं, **प्रकृति**, कच्चा १ कक्षामें ठंढा और तर है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

तथा पकाहुआ गरम और तर होताहै, हानिकर्ता, आध्मानकर्ता और ओजको घटानेवाला, दर्पनाशक, सिकंजवीन, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) कच्चा गरिष्ठ है, (२) कफको उत्पन्नकर्ता, (३) पित्तको हरणकर्ता, (४) पकाहुआ हृदय और आमाशयको बलप्रद है, (५) इसके बीजोंको बालकोंकी माताके दूधके साथ सेवन करावे तो बालकोंकी प्रकृतिको मृदुकारक है, (६) इसका दूध बालकोंके-लिये रेचक है, (७) कफज्वरको-उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(५९२) बथुआ

संस्कृत, वास्तूक, **फारसी**, सलमह, **अरबी**, कतफ, **इंग्रेज़ी**, ह्वाइटगुजफुट, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, फीका और बेस्वाद, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध शाक है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और वायुको उत्पन्न-कर्ता, **दर्पनाशक**, गरम मसाला, **प्रतिनिधि**, पालक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शीघ्रपाकी, (२) शुद्ध दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (३) उष्णप्रकृतिवाले यकृत्के अनुकूल है, (४) उष्णप्रकृतिवालोंको अनुकूल है, (५) प्यासको शांतिप्रद, (६) इसके पत्तोंका स्वरस रोधका उद्घाटक है, (७) मूत्रल, (८) शोथको लयकर्त्ता, (९) पथरीको तोड़ता है, (निर्विषैल)

(५९३) बथुएके बीज

संस्कृत, वास्तूकबीज, **फारसी**, तुख़्म-सलमह, **अरबी**, वज़रुल् कतफ, **स्वरूप**, काले, **स्वाद**, फीके, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, गुलाब, और कंद, **प्रतिनिधि**, पालकके बीज, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रोधका उद्घाटक, (२) रेचक, (३) मलको लयकर्ता, (४) मलको शोधनकर्ता, (५) जलोदर, पीलिया, मूत्रकृच्छ्र, वृक्क और अंत्रियोंकी निर्बलताको गुणकारक है, (६) ओजप्रद, (७) विशेषतः ओजको चालनकर्ता है, (निर्विषैल)

(५९४) बनौला (कपास)

संस्कृत, कार्पासबीज, **फारसी**, पुम्बा-दाना, **अरबी**, हब्बुल्कुतन, **इंग्रेज़ी**, काटन्, **स्वरूप**, बाहर सफ़ेद और भीतरसे काला होताहै, **पहिचान**, रुई (कपास) के भीतर एक प्रसिद्ध बीज होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्प-नाशक**, ख़मीरा, बनफ्सा और सफ़ेद कंद, **प्रतिनिधि**, कत्तमके बीज, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) स्तम्भनकर्ता, (३) मलको लयकर्ता, (४) उदर और वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (५) गरमीकी खांसीको हरणकर्ता, (६) गर्भाशयके बंद होनेको गुणकर्ता, (७) वीर्यको सांद्रकर्ता, (८) दूध और घीको

उत्पन्नकर्ता, (९) इसकी मिंगीका पीना ओजको चालनकर्ता है, (१०) इसका तैल लिंगेन्द्रियपर मले तो कामोत्पादक है, (११) इसके तैलका मलना झाई, कालेदाग़, चिनमिनाहट और व्रणको हरण-करनेवाला है, (१२) यदि इसके पत्तोंको मठामें उबालकर आंखके ऊपर बांधे तो आंखोंके दूखनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(५९५) बनियाला

स्वरूप, कुछ लाल और भूरा, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त खट्टा, **पहिचान**, आलूके समान एक फल है, प्रायः बंगालमें उत्पन्न होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, ज्वरप्रद और कफप्रकृतिवालोंको हानिकारक है, **दर्पनाशक**, शहद और नमक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तको शांतिप्रद, (२) पित्तप्रकृतिवालोंको हितकारक है (निर्विषैल)

(५९६) बनपोस्ता

फारसी, मायबसुर्ख़, **अरबी**, ओतामूनी, **स्वरूप**, फूल लाल, हरा और पीला होताहै, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, पोश्तके समान एक जातिकी ओषधि है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दोषोंको लयकर्ता, (२) नेत्रके-क्षतोंको शोधनकर्ता, (३) मुखकी सूजनको और लारके बहनेको गुणकारक है (निर्विषैल)

(५९७) बनफूशा

फारसी, बनफ़ूशह, **अरबी**, बनफ्सज और फरफीर, **स्वरूप**, कालापनलिये हरा, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, एक पर्वती ओषधि है कि जिसके पत्ते और फूल काममें आतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें तर है तथा किसीकी संमतिमें २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, हृदयको दुबला करनेवाला और व्याकुलताप्रद है, **दर्पनाशक**, मुलहटीकासत्त, गुलाबके फूल और बिही है, **प्रतिनिधि**, नीलोफर और खुब्बाजी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तजमलको अतिसारद्वारा सुगमतासे शोधनकर्ता, (२) तृषा, रुधिरकी गरमी, वक्षस्थल और कंठके खुरखुरानेको शांतिप्रद, (३) शोथको लयकर्ता, (४) वस्तिके दाहको हरणकर्ता, (५) खांसीको लाभप्रद, (६) निद्राप्रद है, (निर्विषैल)

(५९८) बंबूल (कीकर)

संस्कृत, बब्बूल, **फारसी**, मुगीलां, **अरबी**, अम्मगीलां और समरह, **इंग्रेज़ी**, एकश्याट्री, **स्वरूप**, पत्ती हरी और फूल पीला तथा फली सफ़ेदीलिये हरी होतीहै, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और कसेला होताहै, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध कांटेवाला वृक्ष है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, मस्तिष्क, आमाशय और गुदाको, **दर्पनाशक**, बनफ्सा, कतीरा और बिही, **प्रतिनिधि**, पलास, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्निग्धमल (फोक) को रोकनेवाला,

(२) दुःखित अवयवोंपर मलको नहीं गिरनेदेता, (३) इसका पीना गरम हृदय और व्याकुलताको गुणकारक है, (४) आंतरिक अवयवोंको बलप्रद, (५) इसके पत्तोंका क्वाथ अतिसारको बांधनेवाला है, (६) रोधका उद्घाटक, (७) इसकी छाल, पत्ते और फूलका चूर्ण तथा गोंद वीर्यका पतलापन, शीघ्र स्खलितहोना और शुक्रमेहका नाशक है, (८) इसके बीस-तोले पत्तोंका क्वाथ बलवान् रेचक है और वमनप्रद है (निर्विषैल)

(५९९) बबूलका गोंद

संस्कृत, बब्बूलनिर्यास, **फारसी**, समग़अरबी, **स्वरूप**, ललोईलिये पीला, **स्वाद**, कुछ मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष तथा किसीके मतमें समान गुणवाला है, **हानिकर्ता**, आमाशय और गुदाको, **दर्पनाशक**, कतीरा, बिहीदाना और ढाकका गोंद, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) नसोंके मुखपर चिपककर रोधको उत्पन्नकर्ता, (२) वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (३) बद्धक, (४) आमाशयको बलप्रद, (५) अन्त्रियोंको बलप्रद, (६) वक्षस्थलकी पीड़ा, कंठका खुरखुराना, वक्षस्थल और फेंफड़ेका खुर-खुराना तथा पार्श्वशूलको गुणकारक है, (७) स्वरशोधक, (८) लेखनताको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६००) बरमदंडी

संस्कृत, ब्रह्मदंडी, **स्वरूप**, कालापन-लिये हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, हिंदु-स्तानमें होनेवाली एक प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी, किसीके मतमें १ कक्षामें गरम है, **प्रतिनिधि**, मुंडी और नीलकंठी, **मात्रा**, ७माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रक्तशोधक, (२) व्रणको लाभप्रद, (३) वीर्यस्रावको हरणकर्ता, (४) बुद्धि और धारणा-शक्तिको बलप्रद, (५) सफ़ेददाग़ और प्रायःत्वचाके रोगोंको हरणकर्ता, (६) मुखके रूपका शोधक है, (निर्विषैल)

(६०१) बरगद (बड़)

संस्कृत, वट, **फारसी**, दरख्तरेशा, **अरबी**, जातुजायब, **स्वरूप**, पत्ती हरी और डाली भूरी तथा फल लाल होताहै, **स्वाद**, कुछ मीठा और फीका, **पहिचान**, जिसकी डालियोंमेंसे जटा निकलकर पृथ्वीमें घुस-जाती हैं और जड़ जैसी होजाती हैं, एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध वृक्ष है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृति-वालोंको और ओजको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, दम्मुलअखवेन, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अति-सारका बद्धक, (२) वायु, पित्त-विकार, फोड़े और फुन्सियोंको हरणकर्ता, (३) इसका दूध शोथको लयकारक है, (४) ओजप्रद, (५) बवासीर और वीर्यकी द्रवताका नाशक, (६) शीघ्र स्खलित होना, शुक्रमेह और स्वप्नमें वीर्यके स्रावको

CC0. Gurukul Kangri Collection

हरणकर्ता, (७) उत्तमांगको बलप्रद, (८) स्तम्भनकर्ता है, (निर्विषैल)

(६०२) बरफ

संस्कृत, हिम, **फारसी,** बरफ, **अरबी,** सलज, **इंग्रेज़ी,** स्नो, **स्वरूप,** चमकीला और सफ़ेद, **स्वाद,** फीका, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** ३ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष है, किसीकी सम्मतिमें २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता,** शीतप्रकृति वालोंकी अंत्रियोंको, **दर्पनाशक,** लोंग और शहद, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) विक्षिप्ततापद, (२) गरमीकी अन्त्र-पीड़ाको शांतिप्रद, (३) पाचनशक्ति और आमाशयको बलप्रद, (४) गरमीका ज्वर, सूखी और तर खांसीको हरणकर्ता, (५) यदि कंठके भीतर जोक चिपकजावे तो उसको निकालदेतीहै, (६) यदि मस्तक (माथे) पर बांधी जावे तो नकसीरको बन्द करनेवाली है, (निर्विषैल)

(६०३) बरयाला (खिरैटी)

संस्कृत, बला, **स्वरूप,** सफ़ेदीलिये हरी और पीली, **स्वाद,** कड़वी और तीखी, **पहिचान,** एक प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति,** गरम और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इसके पत्तोंको जलमें पीसकर पीवे तो प्रमेह, शुक्रमेह और पथरीको गुणकारक है, (२) इसके पत्तोंका स्वरस सांपके काटे-हुएको लाभप्रद है, (३) इसके पीले पत्ते शोथको लयकारक हैं, (४) पीड़ाको शांति-प्रद है, (निर्विषैल)

(६०४) बरही

फारसी, सर्वतुर्किस्तानी, **अरबी,** जर्नब, **स्वरूप,** पिलोईलिये हरी, **स्वाद,** सुगंधि-युक्त, कड़वी, **पहिचान,** जिसके पत्तोंसे नीबू जैसी गंधि आतीहै एक ओषधि है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हा-निकर्ता,** उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक,** धनियां और चंदन, **प्रतिनिधि,** दालचीनी, और कबाबचीनी, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) दोषोंको स्वच्छकर्ता, (२) मनको प्रसन्नकर्ता, (३) आमाशय, यकृत् और उत्तमांगको बलप्रद, (४) स्वरको शोधनकर्ता, (५) खांसी और श्वासकी नाशक, (६) स्नायुके रोगोंको लाभप्रद, (७) मूत्रको लाभप्रद, (८) ओजप्रद है, (निर्विषैल)

(६०५) बहेड़ा

संस्कृत, बिभीतक, **फारसी,** बलेला, **अरबी,** बलेलज, **इंग्रेज़ी** बेलरिकमाइराबो-लम, **स्वरूप,** पिलोईलिये भूरा, **स्वाद,** कसेला, **पहिचान,** हरड़के समान एक प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता,** गुदाको, **दर्पनाशक,** खांड़ और शहद, **प्रतिनिधि,** आंवला और काली हरड़, **मात्रा,** १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) स्वच्छताप्रद, (२) बद्धक, (३) आमा-शयको बलप्रद, (४) क्षुधाप्रद, (५) विशेषतः वातज मलको अतिसारद्वारा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

शोधनकर्ता, (६) पित्तजमलका रेचक, (७) जीर्णातिसार, शिरःपीड़ा और बवासीरको लाभप्रद, (८) नेत्र और मस्तिष्कको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(६०६) बाकला

फारसी, बाकला, **अरबी**, बाकला, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक अंगुलीके बराबर प्रसिद्ध फली होतीहै, इसके भीतरसे बीज निकलते हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, बुद्धिको बिगाड़नेवाली और शरीरमें भाफको उत्पन्न करनेवाली, **दर्पनाशक**, घी, नमक और इसका छीलना है, **प्रतिनिधि**, लोबिया, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) अंतर्मलको पक्वकर्ता, (३) आमाशयकी थैलीमें शीघ्रही उतरताहै, (४) खांसीको शांतिप्रद, (५) अंत्रियोंके क्षत (जख़म) का पूरक, (६) जीर्णातिसारकी बद्धक, (७)ओजको बलप्रद, (८) कंठमालाको लयकर्ता, (९) काले दागोंको हरणकर्ता, (१०)झाईकी नाशक है, (निर्विषैल)

(६०७) बाजरा

फारसी, गावरस, **अरबी**, जावरस, **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध अनाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, किसीके मतमें २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, अधोवायुको उत्पन्नकर्ता, तृषाप्रद, रोधप्रद, वातरक्तकर्ता और गरिष्ठ है, **दर्पनाशक**, घी, दूध, और खांड़, **प्रतिनिधि**, चांवल और कलोंजी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शरीर, कमर, आमाशय और ओजको बलप्रद, (२) अधिक स्निग्धताको शोषणकर्ता, (३) बद्धक, (४) रूक्षताप्रद, (५) शीघ्रपाकी, (६) इसकी रोटी पित्तज अतिसारकी बद्धक है, (७) मूत्रल, (८) कच्चे गर्भको गिरानेवाला, (९) इसकी पोटलीसे सिरको सेके तो सर्दीकी शिरःपीड़ाको गुणकारक है, (१०) आमाशयका अफरा और बवासीरकी पीड़ाको लयकर्ता, (११) सिर्काके साथ इसका लेप शीतकी शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल एक नाज है)

(६०८) बांदा

संस्कृत, बन्दाक, **अरबी**, खरकतां, **इंग्रेज़ी**, लोरेंथससलोंगिफोलियम्, **स्वरूप**, हरा और लाल, **स्वाद**, कसेला और बेस्वाद, **पहिचान**, एक ओषधि है जोकि पुराने वृक्षोंकी शाखाओंपर अनेक तरहसे ऊगतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, किसीके मतमें १ कक्षामें ठंडी और रूक्ष है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायु, कफ और फोड़े, फुंसियोंको हरणकर्ता, (२) विषके विकारको हरणकर्ता, (३) इसके क्वाथसे कुल्ली करे तो दन्तमूल (मसूढ़ों) के शोथको और दांतोंकी पीड़ाको दूर करताहै, परन्तु जिस वृक्षका बांदा होगा उसके कर्मभी वैसेही होंगे, (निर्विषैल)

(६०९) बादियानखताई

स्वरूप, सफ़ेदीलिये भूरा, **स्वाद**, कुछ मीठा और तीखा, **पहिचान**, एक प्रकारका सुगन्धियुक्त छोटा फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, स्नायुओंको, **दर्पनाशक**, इसको भूनाना है, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) रोधको खंडनकर्ता, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) पाचनशक्तिको बलप्रद, (५) आहारकी गरिष्ठता और अपानवायुका नाशक, (६) अन्त्रियोंकी पीड़ाको हरणकर्ता, (७) कफको लयकर्ता, (८) मूत्रप्रवर्त्तक, (९) श्लेष्माको लाभप्रद, (१०) तृषाप्रद, (११) शिरःपीड़ाको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(६१०) बादाम मीठा

संस्कृत, मिष्टवाताद, **फारसी**, बादामशीरीं, **अरबी**, लोजुल्हल्व, **इंग्रेज़ी**, स्वीटअलाँड, **स्वरूप**, बाहर लाल और भीतर सफ़ेद होताहै, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, किसीके मतमें समान गुणवाला है, **हानिकर्ता**, अन्त्रियोंको और गरिष्ठ तथा दीर्घपाकी है, **दर्पनाशक**, खांड़, **प्रतिनिधि**, चिलगोजा, **मात्रा**, १ तोलासे ३ तोलेतक **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) विबंधका उद्घाटक, (२) शरीरकशक्ति और मस्तिष्कका रक्षक, (३) कांतिप्रद, (४) दृष्टिको बलप्रद, (५) प्रकृति और कण्ठको मृदुकर्ता, (६) वक्षस्थलके अनुकूल है, (७) शुक्रल, (८) रूक्ष कास, वस्ति और प्रमेहको लाभप्रद, (९) शरीरको बृंहणकर्ता, (१०) ओजप्रद, (११) गुल्मको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६११) बादाम कड़ुआ

संस्कृत, तिक्तवाताद, **फारसी**, बादामतल्ख, **अरबी**, लोजुल्मुर, **स्वरूप**, बाहर लाल और भीतर सफ़ेद, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, अंत्रियोंको, **दर्पनाशक**, खांड़, मिश्री और मीठे बादामका तेल, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) स्वच्छताप्रद, (३) पिच्छल दोषोंके नष्ट और शुद्ध करनेमें अद्वितीय है, (४) शिरकी पीड़ा, सूखी और तर खांसी, वक्षस्थल और फेंफड़ेके शोथको गुणकारकहै, (५) यकृत्के रोग और पीलियाको लाभप्रद, (६) पथरीको खंडनकर्ता, (७) शहदकेसाथ घिसके खावे तो बावले कुत्तेके काटेहुएको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६१२) बालजवास

फारसी, बादआवुर्द, **अरबी**, शोकतुल्बेजह, **स्वरूप**, जिसके बीज हरे और झाड़ हरे होतेहैं, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके बीज कर्रकेबीजजैसे होतेहैं, कांटेदार

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऊंटकटेराजैसी एक औषधि है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, आफिस्तीं, **प्रतिनिधि**, पित्तपापड़ा, **मात्रा**, ६माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) सांद्रकफ और वातको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (२) आमाशयको बलप्रद, (३) रोधका उद्घाटक, (४) मूत्रप्रवर्तक, (५) झूंठे मलको लयकर्ता, (६) दांतोंकी पीड़ाको हरणकर्ता, (७) कफज और वातज जीर्णज्वरका नाशक है, (८) मूत्ररोधको लाभप्रद, (९) जलोदर और पादांगुलि पीड़ाको लाभप्रद, (निर्विषैल)

(६१३) बावची (बाकची)

फारसी, अबलूगुज, **इंग्रेज़ी**, एसक्यूलंटलफाकुर्शो, **स्वरूप**, चपटा और गोल एक प्रसिद्ध बीज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता और व्रणप्रद है, **दर्पनाशक**, सोंफ और घी, **मात्रा** २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अंतर्मलको मृदुकर्ता, (२) क्षुधाप्रद, (३) सफ़ेद और कालेदाग़,खुजली, कोढ़ और रक्तविकारको खाने और लगानेसे गुणकारक है, (४) कफज्वरको लाभप्रद, (५) कृमिनाशक, (६) मूत्रमार्गके क्षतोंको शोधनकर्ता है,(निर्विषैल)

(६१४) बाबूना

फारसी, बाबूना, **अरबी**, बाबूंज, **स्वरूप**, पीला और भूरा, **स्वाद**, सुगंधियुक्त फीका, **पहिचान**, जिसके प्रायः फूल काममें आते हैं, एक बूंटी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिर और कंठको भारी करनेवाला तथा शिरःपीड़ाप्रद है, **दर्पनाशक**, नीलोफरका फूल और शर्वतअनार, **प्रतिनिधि**, बिरंजासिफ और नाखूना, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्नायुओंमें उष्णताप्रद, (२) शोथको लयकर्ता, (३) यकृत्‌का विबंध और नसोंके मुखके रोधका उद्घाटक, (४) प्राणोंमें स्वच्छताको उत्पन्नकर्ता, (५) मूत्र, प्रस्वेद, आर्तव और दुग्धप्रवर्तक, (६) अश्मरी (पथरी) को खंडनकर्ता, (७) गुल्म, वस्तिशूल, पांडु और रूक्ष कासको गुणकर्ता, (८) इसका लेप शोथको मृदुकर्ता है, (९) इसका नेत्रांजन आंखोंसे पानीके उतरनेको लाभप्रद है, (१०) दृष्टिबलको गुणकर्ता, (११) इसके फूलोंका तेल स्नायुओंको मृदुकर्ता और बलप्रद है, (निर्विषैल)

(६१५) बाभिनी

अरबी, हरून, **स्वरूप**, अनेक तरहकी होतीहै, **पहिचान**, छपकलीके समान एक जीव है जोकि एक दिनमें कितनेही रूप बदलताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, कुष्ठप्रद है, **मात्रा**, अभक्ष्य है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके हृदयको गलेमें पहिने तो शीतज्वरको

CC0. Gurukul Kangri Collection

लाभप्रद है, (२) इसके रुधिरका नेत्रांजन दृष्टिवर्द्धक है, (३) इसकी बीट आंखके जालेको और खुजलीको लाभप्रद है (४) झाईको गुणकरक है, (निर्विषैल)

(६१६) बारतंग हरी

फारसी, बारतंगसब्ज, **अरबी,** लिसानुलूहमल, **स्वरूप,** हरी, **स्वाद,** कड़वी, **पहिचान,** जिसके पत्ते बकरीकी जीभके समान होतेहैं. एक ओषधि है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता,** फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** बनफ्सा, शहद और मस्तगी, **प्रतिनिधि,** बाग़की हमाजके पत्ते, **मात्रा,** ९ तोले, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१)इसका स्वरस सम्पूर्ण आंतरिक अवयव और शिरके अवयवोंके रुधिरका रुद्धक है, (२) कांतिप्रद, (३) दुःखित अवयवोंपर मलको नहीं गिरनेदेता, (४) वद्धक, (५) यकृत्‌को बलप्रद, (६) यकृत्‌के रोधका उद्‌घाटक, (७) इसका स्वरस राजयक्ष्मा, उरःक्षत और प्रमेहको गुणकारक है, (८) इसका अर्क रुद्धकशक्तिको बलवान् करनेमें अद्वितीय है, (निर्विषैल)

(६१७) बारतंगके बीज

फारसी, तुख़्मबारतंग, **अरबी,** बजरुल्लिसानुलूहमल, **स्वरूप,** कालापनलिये हरे, **स्वाद,** कड़वे, **पहिचान,** एक प्रकारके छोटे २ गोल बीज हैं, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडे और रूक्ष, **हानिकर्ता,** मस्तिष्क और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** बनफ्सा, शहद और मस्तगी, **प्रतिनिधि,** बाग़की हमाजके बीज, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) तृषाको शांतिप्रद, (२) प्रमेहको लाभप्रद, (३) सन्निपात, वमन, ज्वर और उरःक्षतको लाभप्रद, (४) अन्त्रियोंको बलप्रद, (५) मरोड़ाको हरणकर्त्ता, (६) नसोंमें रोधको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(६१८) बाल

संस्कृत, केश, **फारसी,** मूय, **अरबी,** शेअ्र, **स्वरूप,** काले, भूरे और सफ़ेद, **पहिचान,** प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति,** ठंडे और रूक्ष, **हानिकर्ता,** सम्पूर्ण आन्तरिक अवयवोंको बिगाड़नेवाले और वमनप्रद हैं, **मात्रा,** अभक्ष्य हैं, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) जलेहुए व्रणोंमें लगावे तो व्रणोंको सुखानेवाले, (२) यदि शहदके साथ सेवन करे तो मुखपाकको गुणकारक हैं, (३) रूमीजफ्तके साथ शिरके घावोंको गुणकारक हैं, (४) मुर्दासंगके साथ सूखी और तर खुजलीको लाभप्रद हैं, (५) ज़ीतूनके तेलके साथ आगके जलेहुएको लाभप्रद हैं, (६) इन्होंको सिर्का अथवा जलमें पीसकर लगावे तो फोड़े, फुन्सी और तिल्लीको लाभप्रद हैं, (७) इन्होंकी पिसीहुई बुर्की कांचके निकलनेको गुणकारक है, (उपविष)

(६१९) बालंगा

फारसी, तुख़्मबालंगा, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, लसयुक्त फीका, **पहिचान**, एक जातिके बीज हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, किसीकी सम्मतिमें १ कक्षामें ठंडे और तर हैं, **हानिकर्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, मिश्री और रेवासका स्वरस, **प्रतिनिधि**, तुलसी और रेशम, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृदयको बलप्रद, (२) हृदयकी व्याकुलता और विक्षिप्तताको गुणकारक हैं, (३) रक्तातिसार और आमाशय सम्बन्धी अतिसारके लिये गुलाबजलके साथ अत्यन्त गुणकारक हैं, (४) यदि खांड़के साथ सेवन करे तो पेचिश और मरोड़ाको हरणकर्ता हैं,(९)तृषाको रोकनेवाले हैं, (निर्विषैल)

(६२०) बालछड़ (जटामांसी)

फारसी, सुम्बुलहिंदी, **अरबी**, सुम्बुलुत्तीब, **इंग्रेज़ी**, नार्डोस्टीक्टस,**स्वरूप**,पिलोईलिये काला, **स्वाद**, तीक्ष्ण गन्धियुक्त तीखा, **पहिचान**, विना फल और फूलके एक पर्वती ओषधि है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्पनाशक**, कतीरा और वंशलोचन, **प्रतिनिधि**, जराकस और तेजपात, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मस्तिष्क, यकृत्, आमाशय और रुद्धकशक्तिको बलप्रद, (२) दोषोंका उद्घाटक, (३) पथरीको खंडनकर्ता, (४) हृदयकी व्याकुलता (हौलादिली) का नाशक, (५) आमाशय और वक्षस्थलकी स्निग्धताको शोषणकर्ता, (६) मांस, जलोदर और पीलियाको लाभप्रद, (७) प्रायः आंतरिक शोथको गुणकारक है, (८) मुखको सुगन्धितकर्ता, (९) यदि इसका नेत्रांजन (सुरमा) लगायाजावे तो दृष्टिको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(६२१) बालूत

अरबी, बलूत, **स्वरूप**, पीला और सफ़ेद, **स्वाद**, एक तरहका खट्टा और एक तरहका मीठा होताहै, **पहिचान**, एक फल है कि जिसके वृक्षोंमें एक वर्ष बालूत और एक वर्ष माजू होताहै, इसकी बोंड़ी काममें आतीहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधप्रद और वातल है, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) अतिसार, रक्तस्राव और मूखसे रुधिर के आनेको रोकनेवाला, (३) अन्त्रियोंके क्षत, अन्त्रिलेखनता, हृदयकी व्याकुलता और जीमिचलानेको लाभप्रद, (४) मूत्रल, (५) यह भुलभुलायाहुआ कुछ शर्बतोंके साथ ओजप्रद है, (६) ओजको चालनकर्ता, (७) शरीरको बलप्रद, (८) कुछ विषोंका दर्पनाशक, (९) इसकी राखका चूर्ण बच्चोंके मुखपाकको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६२२) बालू (रेत—धूर)

संस्कृत, धूलि, **फारसी**, रेग, **अरबी**, रमल, **इंग्रेज़ी**, सेंड, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **प्रतिनिधि**, राख, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्निग्धताको आकर्षण करनेवाली,(२) जलोदरके-लिये बांधनेसे और दवानेसे गुणकारक है, (३) इसकी बत्ती आर्त्तव और गर्भस्थितिकी नाशक है, (४) यदि बेस्वाद और दुर्गंधियुक्त जलके घड़ेमें डालदेवे तो जलको उत्तम और सुस्वादु करदेतीहै, (निर्विषैल)

(६२३) बायबिडंग

संस्कृत, विडंग, **फारसी**, बिरंगकाबुली, **अरबी**, बिरंजकाबुली, **इंग्रेज़ी**, बेब्रेंग्, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कड़वा और तीखा, **पहिचान**, काली मिरचके समान १ प्रासिद्ध फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अन्त्रियोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा और मस्तगी, **प्रतिनिधि**, टरमस और कमीला, **मात्रा**, १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ, वात और सांद्र तथा पिच्छल दोषोंको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (२) मलकी स्निग्धताको शोधनकर्ता, (३)आमाशयको लाभप्रद, (४) अन्त्रियोंके कीड़ोंको थैली सहित निकालदेताहै, (निर्विषैल)

(६२४) बांस

संस्कृत, वंश, **फारसी**, नय, **अरबी**, कसब, **इंग्रेज़ी**, बंबूकेन, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, कितनी ही तरहका होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी जड़ स्वच्छताप्रद है, (२) यदि इसको जलाकर और पीसकर चमेलीके तेलके साथ गजचर्म और सिरके दादमें लगावे तो गुणकारक है, (३) इसके पत्तोंका अर्क़ शहदकेसाथ पीवे तो खांसीको लाभप्रद है, (४) इसके पत्तोंका काथ आर्तव और प्रसूति समयके रुधिरस्रावका शोधक है, (५) इसकी जड़का हिन्दूलोग अचार डालतेहैं यह स्वादिष्ट होताहै (निर्विषैल)

(६२५) बिच्छू

फारसी, कझदुम, **अरबी**, अक़रब, **स्वरूप**, अनेक प्रकारका होता है, **पहिचान**, डंकदार एक विषैल कीड़ा है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, इसकी राख फेंफड़ेको नुकसान पहुंचातीहै, **दर्पनाशक**, गिलेअरमनी, **प्रतिनिधि**, कछुआ, **मात्रा**, २ माशे, परन्तु यहां राखसे मतलब है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके तेलका मर्दन (मालिश) पक्षवध, अर्दित, स्तम्भ और गठियाको गुणकारक है, (२) इसकी राख वृक्क और वस्तिकी अश्मरी (पथरी) को खंडन करनेवाली है, (३) इसकालेप (तिला) ओजप्रद है, (निर्विषैल)

Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

(६२६) बिजौरा

संस्कृत, बीजपूर, **फारसी**, तरंज, **अरबी**, उतरज, **इंग्रेज़ी**, साइट्रसमेडीका, **स्वरूप**, ललोईलिये पीला, **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, इसका छीलका २ कक्षामें गरम और रूक्ष है तथा जीरा ठंडा और तर है एवं बीज गरम और रूक्ष हैं, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, बनफ्सा और अंजीरका शरबत, **प्रतिनिधि**, नीबू और नारंगीका स्वरस, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) हृदयको बलप्रद, (३) **बद्धक**, (४) पित्तज वमनको शांतिप्रद, (५) पित्त प्रकोपको शांतिप्रद, (६) हृदयकी व्याकुलता, तृषा और पित्तज अतिसारको हरणकर्ता, (७) क्षुधाप्रद, (८) प्राणवायुको स्वच्छकर्ता, (९) पित्तज परिमाणुओं (अबखरों) को नहीं चढनेदेता, (१०) इसके बीज बिच्छूके काटेहुएको गुणकारक हैं, (११) इसका मुरब्बा अत्यंत स्वादिष्ट होताहै और सर्व कर्मोंमें बलवान् है, (१२) इसक स्वरस उत्तम होताहै, (निर्विषैल)

(६२७) बिजौरेका छीलका

फारसी, पोश्ततरंज, **अरबी**, कशरुल्उतरज़, **स्वरूप**, ललोईलिये पीला, **स्वाद**, कड़वासालिये सुगंधियुक्त तीखा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत् और मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, शहद और बनफ्सा, **प्रतिनिधि**, नीबूका छीलका, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको स्वच्छताप्रद, (२) बद्धक, (३) रक्तपित्तको शोधनकर्ता, (४) पित्तज वमनको शांतिप्रद, (५) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (६) आंतोंकी उष्णताको शांतिप्रद, (७) वायुको लयकर्ता, (८) आमाशयके आध्मान(अफरा) को लयकर्ता है (निर्विषैल)

(६२८) बिरंजासिफ

फारसी, बूयमादरां, **अरबी**, बिरंजासिफ, **स्वरूप**, पत्ते हरे, पीले, सफ़ेद और भूरे तथा सुगंधियुक्त होतेहैं, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, जिसके फूल सोआके समान चित्र विचित्र होतेहैं, एक पर्वती ओषधि है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता** वृक्कको, **दर्पनाशक**, अनीसून, **प्रतिनिधि**, बाबूना और आफिस्तीं, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) रोमकूपोंका उद्घाटक, (३) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (३) पथरीको खंडनकर्त्ता, (४) आमाशयके कृमियोंका नाशक, (५) शोथको लयकर्ता, (६) विशेषतः गर्भाशयके शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(६२९) बिल्लौर

फारसी, बिल्लौर, **अरबी**, इजरुल्बिल्लौर, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, बेस्वाद,

पहिचान, एक जातिका काचजैसा पत्थर है, प्रकृति, ठंडा और रूक्ष, गुण, कर्म, प्रयोग, इसका नेत्रांजन (सुरमा) खाज, रक्तस्राव और नेत्रकी सफ़ेदीको गुणकारक है, (२) बच्चोंको कण्ठमें धारण करावे तो बच्चोंके कम्पको और नींदमें चोंकनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६३०) बिलाईकंद(वाराहीकंद)

संस्कृत, विदारीकन्द, **इंग्रेज़ी**, आई-पोमियाडिजिहेडा, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, तीखा और कडुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध पर्वती कन्द है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, पित्तप्रकोपप्रद, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) क्षुधाप्रद, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) ओजप्रद, (४) वायु और कफके विकारोंको हरणकर्ता, (५) प्रमेह और पेटके कीड़ोंको हरणकर्ता, (६) इसकी हरयाली अत्यन्त भोजन करानेवाली है, (७) कुष्ठनाशक, (८) इसका लेप शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(६३१) बिलाईलोटन(बिल्लीलोटन)

फारसी, तरहगुर्बह और बादरंगोरियह, **अरबी**, बादरंजोरियह, **स्वरूप**, कालापनलिये हरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, जिसको बिल्ली बहुत चाहतीहै एक बूंटी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, पसलियोंको, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, अबरेशम, **मात्रा**, १० माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृदय, मस्तिष्क और इंद्रियोंको तथा तीव्र बुद्धिवालोंको और आमाशयको बलप्रद, (२) मनको प्रसन्नकर्ता, (३) मस्तिष्कसम्बन्धी रोधकी उद्घाटक, (४) दोषोंको स्वच्छ करनेवाली, (५) नीदमें घिग्घी बँधजानेको और प्रायः कफज तथा वातज रोगोंको गुणकारक है, (६) हृदयकी व्याकुलता और चित्तभ्रमको लाभप्रद, (७) इसका लेप हृदयको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(६३२) बिसखपरा

फारसी, दलवअस्पत, **अरबी**, जन्दकोका, **स्वरूप**, हरा, **पहिचान**, जिसके पत्ते सांठके समान चौड़े और लम्बे होतेहैं एक ओषधि है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, किसीके मतमें इसका फूल २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, बद्धक और अधोवायुको उत्पन्न करनेवाला, **प्रतिनिधि**, रतवह, **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अन्तर्मलको मृदुकर्ता, (२) कफ और पित्तके विकारोंको तथा फोड़ोंको नाशकर्ता, (३) रक्तशोधक, (४) क्षुधाप्रद, (५) प्रायः अवयवोंके शोथको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६३३) बिहीदाना

फारसी, बिहीदाना, **अरबी**, सफ़रजल, **स्वरूप**, पीला और सफ़ेद, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त मीठा, **पहिचान**, एक बिलायती मेवा है जोकि ताजी और तरही काममें आतीहै,

प्रकृति, समान गुणवाली है और १ कक्षामें ठंडी तथा २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, रोध और गुल्मको उत्पन्न करनेवाली, **दर्पनाशक**, शहद और अनीसून, **प्रतिनिधि**, अमरूद, और सेब, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रसन्नताप्रद, (२) आमाशय, हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (३) मस्तिष्क संबंधी कंठस्थ प्राणोंको अत्यंत प्रसन्नताप्रद, (४) चित्तभ्रम और हृदयकी व्याकुलताको हरणकर्त्ता, (५) बद्धक, (६) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (७) सूखी खांसीको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६३४) बिहीदाना (बिहिदाना)

फारसी, बिहीदानह और बिहिदानह, **अरबी**, हब्बुल्सफरजल, **स्वरूप**, कालापनलिये लाल, **स्वाद**, लसयुक्त फीका, **पहिचान**, बिहीके प्रसिद्ध बीज हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडे और तर, **हानिकर्ता**, आमाशयको और शिथिलता तथा आलस्यप्रद, **दर्पनाशक**, सोंफ और खांड़, **प्रतिनिधि**, अस्पगोल, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका लुआब (लस) कण्ठके खरखरानेको और गरमीकी सूखी खांसीको गुणप्रद है, (२) आमाशयकी उष्णताको शांतिप्रद, (३) जाड़ेका ज्वर, दाह और जीभकी रूक्षता (खुश्की) को हरणकर्ता, (४) उरःक्षतके घावोंको गुणकर्ता, (५) अन्त्रियोंकी लेखनताको और प्रायः पित्तज रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६३५) बीरबहुट्टी

संस्कृत, वीरवधू, **फारसी**, बीरबहुट्टी, **अरबी**, किरमउरूसक, **स्वरूप**, अत्यंतलाल, **पहिचान**, पहिलीही वर्षामें होनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गर्भको गिरानेवाली, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, केंचुआ, **मात्रा**, १ नग, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफजरोग, पक्षवध और आर्दितको गुणकर्ता, (२) इसका लेप ओजको बलप्रद और स्तम्भनकर्ता तथा लिंगको स्थूल करनेवाला है, (३) इसका तेल अत्यंत बलप्रद है, (निर्विषैल)

(६३६) बुकन

स्वरूप, हरी, **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें होनेवाली एक ओषधि है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके पत्तोंको पीनेसे मलेरियाका ज्वर, कफज्वर और सरदीकी खांसी दूर होतीहै, (२) मूत्ररोध, प्रमेह और पथरीको हरणकर्ता, (३) इसका लेप शोथको लयकारक है, (४) फोड़ोंको पकानेवाली, (५) रक्तशोधक है, (निर्विषैल)

(६३७) बूदारचमड़ा

फारसी, चिर्मबूदार, **अरबी**, बुल्गार, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, खाया नहीं जाता, **पहिचान**, एक जातिका प्रसिद्ध चमड़ा है, **हानिकर्ता**, ओजको, **दर्पनाशक**, मस्तगी, **प्रतिनिधि**, जलाहुआ रेशम, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) यह जलायाहुआ

व्रणपूरक है, (२) इसके पात्र (बरतन) में जल पीवे तो विशेषतः हृदयकी व्याकुलताको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(६३८) बूंट

फारसी, नखूदसब्ज़, **अरबी**, हमसअखजर, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, सुस्वादु और फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध कच्चे चने हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडे और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आध्मानकर्ता, **दर्पनाशक**, निमक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रुधिर, कफ और पित्तवर्द्धक, (२) शरीर और ओजको बलप्रद, (३) स्तम्भनकर्ता, (४) मुखकी दुर्गंधिको हरणकर्ता, (५) बूंटोंका अचार उत्तम होताहै, (६) शहदमें पकेहुए शरीर और ओजको बलप्रद हैं, (निर्विषैल)

(६३९) बूंटीशेखफरीद

स्वरूप, हरी, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, १ प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति**, ठंडी और किसीकी संमतिमें गरम, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफज्वरको लाभप्रद, (२) पेटकी पीड़ाको लाभप्रद, (३) टूटी हड्डीको जोड़नेवाली, (४) ओजको चालन करनेवाली है, (निर्विषैल)

(६४०) बैगन

संस्कृत, वृंताक, **फारसी**, वादंगान, **अरबी**, वादंजान, **इंग्रेज़ी**, ब्रिजिल, **स्वरूप**, ऊदा और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फलशाक है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वातजनक और बवासीर तथा गुल्मको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, मांस, घी और सिर्का, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशयको बलप्रद, (२) रोधका उद्घाटक, (३) कठोरताको मृदुकर्ता, (४) मूत्रल, (५) गरमीकी पीड़ाको शांतिप्रद, (६) शीघ्रपाकी, (७) अत्यंत मलोत्पादक, (८) बैगनके डांठरेको घिसकर बवासीरपर लगावे तो बवासीरको गुणप्रद है, (९) इसको काटकर आमाहलदीके साथ मसलकर चोटको सेके तो चोटको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६४१) बैत

संस्कृत, वेतस्, **फारसी**, हजां, **अरबी**, हरजां, **स्वरूप**, पीला, हरा और लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जलके किनारेपर होनेवाला एक प्रसिद्ध झाड़ है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, रूक्षताप्रद, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, हारसिंगार, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पथरीको खंडनकर्ता, (२) दुःखित अवयवोंपर मलको नहीं गिरनेदेता, (३) शोथको लयकर्ता, (४) इसके स्वरसको पीनेसे रुधिरस्राव बंद होताहै, (निर्विषैल)

(६४२) बेदमुश्क(बहरामज)

अरबी, खलाफबलखी, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, तीक्ष्ण गंधियुक्त तीखा, **पहिचान**, जिसके पत्ते सदाबेदके समान कोमल और चौड़े होतेहैं, एक वृक्ष है, **प्रकृति**,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

१ कक्षामें ठंडा और तर, प्रतिनिधि, नीलोफरका अर्क़, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) दोषोंको लयकर्ता, (२) स्वच्छताप्रद, (३) मस्तिष्क संबंधी रोधका उद्घाटक, (४) गरमीकीपड़ाको शांतिप्रद, (५) हृदय (दिल) पेटके अवयव और ओजको बलप्रद, (६) सब कामोंमें इसका अर्क़ अधिक बलवान् है और अर्क़ही अधिकतर प्रचलित है, (निर्विषैल)

(६४३) बेदसादह

अरबी, खलाफ, **स्वरूप**, हरा और सफ़ेद, **स्वाद**, तीक्ष्ण गंधियुक्त कड़ुआ, **पहिचान**, बेदमुश्कके समान एक वृक्ष है, प्रायः जो नहरोंके किनारे होताहै वह उत्तम है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यदि गीला होवे तो कमरकेलिये हानिकारक है, **दर्पनाशक**, गुलाब और खांड़, **प्रतिनिधि**, नीलोफर और महदीकेफूल, **मात्रा**, इसीका स्वरस ७ माशेसे ५ तोलेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको स्वच्छताप्रद, (२) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (३) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (४) हृदयकी व्याकुलता, तृषा, वमन, ज्वर और दोषदग्धजज्वरको हरणकर्ता, (५) रक्तातिसारका बद्धक, (६) इसका अर्क़ सब कामोंमें उत्तम है, (निर्विषैल)

(६४४) बेर

संस्कृत, कर्कंधू, **फारसी**, कुनार, **इंग्रेज़ी**, झिझिफस, **स्वरूप**, हरा, लाल और पीला, **स्वाद**, खट्टा और मीठा, **पहिचान**, एक कांटेदार वृक्षका प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, मस्तिष्क, आमाशय और शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और गुलकंद, **प्रतिनिधि**, सेव, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शीघ्रपाकी, (२) शुद्धरसको उत्पन्नकर्ता, (३) अनुपयोगी गरमीको शमनकर्ता, (४) खट्टा बेर मस्तिष्कपर परिमाणुओंको नहीं चढ़नेदेता, (५) पित्त और तृषाको हरणकर्ता, (६) इसका स्वरस यकृत्के रोधका उद्घाटक है, (७) अन्त्रि और आमाशयके कृमियोंका नाशक, (८) इसकी लकड़ीका बुरादा (चूर्ण) रक्तस्रावका रुद्धक है, (९) अन्त्रिके क्षत (जख़म) और अतिसारको लाभप्रद, (१०) इसके पत्तोंका लेप पित्तज (गरम) शोथको पक्कारक है, (११) पत्तोंके काथसे संवाहनकर्म (जलमें पैर देना) करे तो मस्तिष्कमें परिमाणुओं (अबखरों) को नहीं चढ़नेदेता, (निर्विषैल)

(६४५) बेल

संस्कृत, बिल्व, **इंग्रज़ी**, बेगालकिंस, **स्वरूप**, बाहर हरा और पीला तथा भीतरसे पीला और लाल होताहै, **स्वाद**, सुगंधि और लसयुक्त मीठा, **पहिचान**, खर्बूजाके बराबर एक प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें

CC0. Gurukul Kangri Collection

रूक्ष, हानिकर्ता, रोधप्रद और बवासीरको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, खांड़, **मात्रा**, १ तोलासे २ तोलातक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृदय, यकृत् और आमाशयको बलप्रद, (२) बद्धक, (३) जीर्णातिसार (पुरानेदस्तों) का बद्धक, (४) आम और स्निग्धताको हरणकर्ता, (५) विशेषतः विष्टम्भ (कब्ज) का नाशक है, (६) इसका लेप त्वचामें दानोंको उत्पन्न करनेवाला है, (७) शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(६४६) बेहमन सफ़ेद

स्वरूप, सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, लसयुक्त १प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, उन्नाव और कतीरा, **प्रतिनिधि**, तोदरी और इंद्रजौ, **मात्रा**, ९माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) शरीरको बृंहण (मोटा) कर्ता, (३) उष्णताको अधिक उत्पन्नकर्ता, (४) हृदयको बलप्रद, (५) वायुको लयकर्ता, (६) कफको लयकर्ता, (७) हृदयकी व्याकुलता और पीलियाको हरणकर्ता, (८) वृक्क और वस्तिकी पथरीको नष्टकर्ता, (९) व्रणोंको शोधन करनेवाली है, (निर्विषैल)

(६४७) बेहमनसुर्ख़

स्वरूप, लाल **स्वाद**, फीकी अथवा कुछ मीठी, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, २कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, नीचेके अंगोंको, **दर्पनाशक**, उन्नाव और अनीसून, **प्रतिनिधि**, मूसली और इंद्रजौ, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) हृदय और मास्तिष्कको बलप्रद, (२) ओजप्रद, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) रक्तशोधक, (५) हृदयकी व्याकुलताको हरणकर्ता, (६) वायुको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(६४८) बोल

संस्कृत, गंधरस, **अरबी**, मरमकी, **इंग्रेज़ी**, मिरडा, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीका और कडुआ, **पहिचान**, जिसकी लकड़ीके नेजा बनतेहैं, एक वृक्षका गोंद है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और वस्तिको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, एलुआ और कडुआ कूठ, **मात्रा**, १॥। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्वच्छताप्रद, (२) अंतर्मलको शोषणकर्ता, (३) वायुको लयकर्ता, (४) शीतके शोथको लयकर्ता, (५) बद्धक, (६) यदि इसकी नस्य (नास) लीजावे तो मस्तिष्ककी शोधक है, (७) मूत्रल, (८) रेचक, (९) अन्त्रियोंमें पिच्छलता (फिसलन) को उत्पन्नकर्ता, (१०) उदरके कृमियोंको हरणकर्ता, (११) वृक्कशूल, सन्धिबन्धनोंकी पीड़ा, धांस, खांसी, वात और कफज आमातिसार (पेचिश)

को लाभप्रद है, (१२) अतिसार और ठंडे विषको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६४९) बोजीदां

फारसी, बोजीदां, **अरबी**, मुस्तअ्जलह, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा, **पहिचान**, एक कठोर और लंबी जड़ है कि जिसके ऊपर रेखा होतीहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृषणोंको, **दर्पनाशक**, शहद और राई, **प्रतिनिधि**, बेहमन और बच्छनाग, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) ओजको चालनकर्ता, (३) गठिया और पैरकी अंगुलीकी पीड़ाको लाभप्रद, (४) यकृत् और प्लीहके रोधकी उद्घाटक, (५) आमाशयको झूंठे मलसे शोधनकर्ता, (६) गर्भको गिरानेवाली, (७) जलोदरको गुणप्रद, (८) उदरके क्रमियोंकी नाशक, (९) ठंडे विषोंकी दर्पनाशक, (१०) बवासीरको लाभप्रद, (११) पित्तजमलको अतिसार द्वारा शोधनकर्ता है, (निर्विषैल)

(६५०) बंदाल

स्वरूप, हरा, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, अमरूदके समान एक फल है, यह सूखाही काममें आताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) जलोदरको लाभप्रद है, इसका भारतवासियोंने अनुभव किया है, (२) सर्दी, धांस और श्वास (दमा) को गुणकारक है, (३) यदि इसके बीजोंको खांड़के साथ सेवन करे तो आर्त्तवप्रवर्त्तक है, (निर्विषैल)

(६५१) बंडा

स्वरूप, बाहरसे कलौंचीलिये भूरा और भीतरसे सफ़ेद होताहै, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, शकरकंदके समान एक प्रसिद्ध कंदशाक है, एक प्रकारका अरबीका भेद है, **प्रकृति**, गरम, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और कंठको खुरखुराताहै, **दर्पनाशक**, नमक, खटाई और कालीमिरच, **प्रतिनिधि**, आलू, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) वातरक्तको लाभप्रद, (३) पित्तविकारको हरणकर्ता, (४) मूत्रकृच्छ्रको गुणप्रद, (५) उष्णता और तृषाका नाशक, (६) हृदयको प्रसन्नताप्रद है, (निर्विषैल)

(६५२) बंसलोचन

संस्कृत, वंशलोचन, **फारसी**, तबाशीर, **अरबी**, तबाशीर, **स्वरूप**, सफ़ेदीलिये नीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, ओज और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, उन्नाव, मस्तगी और केसर, **प्रतिनिधि**, कुल्फाके बीज, कासनी और सफ़ेद चंदन, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रसन्नताप्रद, (२) हृदय, यकृत् और आमाशयको बलप्रद, (३) आमाशयका दाह और

तृषाको शांतिप्रद, (४) पित्तजवमन और रक्तातिसारको हरणकर्ता, (५) स्निग्धताको शोषण करनेवाला, (६) हृदयकी व्याकुलता और गरमीके ज्वरको हरणकर्ता, (७) इसके चूर्णका मंजन मुखके दानोंको और ज्वरको तथा मुखपाकको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६५३) भटकटैया (बड़ीकटेरी)

संस्कृत, कंटकारी, **फारसी**, बादंगानदश्ती, **अरबी**, बादंजानबर्री और हदक, **स्वरूप**, पत्ते कांटेदार हरे, फूल पीला, सफ़ेद और बैंगनी तथा फल पीला होताहै, **स्वाद**, सर्वांग कड़वी होतीहै, **पहिचान**, एक गजतकका लम्बा बेंगनके समान एक प्रसिद्ध झाड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, व्याकुलताप्रद, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन, प्रतिनिधि, अशतरखार, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके फलका लेप कफज शोथको लयकारक है और लाभप्रद है, (२) इसके खानेसे खांसी और श्वास दूर होतीहै, (३) उदर (पेट) के कीड़ोंकी नाशक, (४) विक्षिप्ततापद, (५) पाचक, (६) इसके पत्ते बवासीरको लाभकारक है, (७) इसकी जड़का चूर्ण लाल शक्कर और गायके दूधके साथ बलवान् स्तम्भनकर्ता है, (निर्विषैल)

(६५४) भांग

संस्कृत, भंगा, **फारसी**, बंग, **अरबी**, कनब और वरकुलखयाल, **इंग्रेजी**, क्यानाबीसइंडिका, **स्वरूप**, हरी और खरदरी, **स्वाद**, तीखी और कड़वी, **पहिचान**, प्रायः हिन्दुस्तानमें होनेवाली एक प्रसिद्ध रूखड़ी है, इसके पत्ते काममें आतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिरःपीड़ाप्रद, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) स्तम्भनकर्ता, (२) विक्षिप्ततापद, (३) वीर्यको शोषणकर्ता, (४) मस्तिष्क संबन्धी प्राणोंको गदला करनेवाली, (५) मदकर्ता, (६) आमाशयकी स्निग्धताको आकर्षण करनेवाली, (७) शोथको लयकारक है, (किसीकी सम्मतिमें विष है)

(६५५) भांगके बीज

संस्कृत, भंगाबीज, **फारसी**, तुख्मबंग, **अरबी**, बजरुल्कनब, **स्वरूप**, सफ़ेदी लिये नीले, **स्वाद**, कड़वे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशयको, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मूत्रल, (२) स्तम्भनकर्ता, (३) वीर्यको शोषणकर्ता, (४) ओजको खंडनकर्ता, (५) दृष्टिको मंद करनेवाले, (६) उदरमें विष्टम्भताप्रद, (७) मदकारक हैं, (निर्विषैल)

(६५६) भिंडी

अरबी, बामियाह और बामियह, **स्वरूप**, हरी और बीज काला होताहै, **स्वाद**, लसयुक्त फीकी, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध तरकारी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी

और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको और कफको पैदा करनेवाली, **दर्पनाशक**, गरम मसाला, **प्रतिनिधि**, खतमीके बीज और अब्बासीका फूल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शीघ्रपाकी, (२) पित्तको हरणकर्ता, (३) वीर्यको उत्पन्नकर्ता और सांद्रकर्ता, (४) अन्त्रियोंकी लेखनता, शुक्रमेह और प्रमेहको गुणकारक है, (५) ओजको बलप्रद, (६) इसकी जड़का चूर्ण प्रमेहको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(६५७) भिलाया (वा)

संस्कृत, भल्लातक, **फारसी**, बलादर, **अरबी**, हब्बुल्कम और हब्बुल्कलब, **इंग्रेज़ी**, मार्किंगनट, **स्वरूप**, ताजे हरे और सूखे काले होतेहैं, **स्वाद**, अत्यन्त कड़वे, **पहिचान**, एक पर्वती वृक्षका कुछ लंबा और गोल फल है, इसके बीजकी मिंगी बादामकी मिंगीजैसी होतीहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, संनिपातप्रद और उन्मादकारक है, **दर्पनाशक**, ताजा नारियल, सफ़ेद तिल और जौ, **प्रतिनिधि**, बिल्सांकातेल और फिंदक, **मात्रा**, १। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) गरमीको उत्पन्नकर्ता, (२) वायुको लयकर्ता, (३) दोषोंको स्वच्छकर्ता, (४) त्वचामें व्रणोंको उत्पन्नकर्ता, (५) शीतके रोग जैसे पक्षवध, अर्दित, कम्प और मूत्रकृच्छ्रको लाभप्रद, (६) ओजको बढ़ानेवाला, (७) वायु और मस्सोंको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६५८) भुसी गेहूंकी

फारसी, सबूस, **अरबी**, नखालह, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्को, **दर्पनाशक**, निशास्ता, **प्रतिनिधि**, जौका आटा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और कफको लयकर्ता, (२) मलसे दोषोंको शुद्धकर्ता, (३) कांतिप्रद, (४) वक्षस्थल और उदरको मृदुकर्ता, (५) वक्षस्थलके खुरखुरानेको और पुरानी खांसी, धांस, अपानवायु और अफराको गुणकारक है, (६) नमकके साथ इसका लेप रोमकूपोंका उद्घाटक है, (७) वायुको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(६५९) भोंफली

स्वरूप, हरी, **स्वाद**, कड़वी और तीखी, **पहिचान**, महीन पत्तोंकी घासजैसी एक बूंटी है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) शुक्रको उत्पन्नकर्ता और सांद्रकर्ता, (३) प्रमेहको लाभप्रद, (४) वीर्यके स्रावको गुणप्रद है, (निर्विषैल)

(६६०) भं(भां)गरा

संस्कृत, भृंगराज, **फारसी**, जमर्दर, **अरबी**, हजीज, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें होनेवाली एक प्रसिद्ध रूखड़ी है, **प्रकृति**,

२ कक्षामें गरम और रूक्ष, प्रतिनिधि, बेदंजीरके पत्ते, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसके पत्तोंका स्वरस दृष्टि और ओजको बलप्रद है, (२) कफज स्निग्धताको और प्लीहकी कठोरताको तथा कुष्ठ (कोढ) और गुल्मको गुणकारक है, (३) इसके काढ़ेकी कुल्ली मुखके रोग और दांतोंकी पीड़ाको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६६१) मक्खी

संस्कृत, मक्षिका, **फारसी,** मगस, **अरबी,** जुबाब, **स्वरूप,** काली, भूरी और लाल, **स्वाद,** बुरे स्वादकी, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** बहुतसी वमन करानेवाली, **दर्पनाशक,** छोटी इलायची, **प्रतिनिधि,** मच्छर, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) गुड़में लपेटकर सूक्ष्म पांडुरोगी (पीलिया-वाले) को लगातार ग्यारह दिन खिलावे तो गुणकारक है, (२) इसकी बीट जोकि रस्सी इत्यादिमें जमीहुई होतीहै जलमें पीसकर कानमें डाले तो कानकी पीड़ाको अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६६२) मक्खन

संस्कृत, नवनीत, **फारसी,** मस्कह, **अरबी,** जुब्द, **स्वरूप,** कुछ पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद,** सुस्वादु और चिकना, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता,** आमाशयके मुखको मंदा और शिथिल करनेवाला तथा क्षुधाको हरण करनेवाला है, **दर्पनाशक,** शहद, खांड, नमक और बद्धक द्रव्य हैं, **प्रतिनिधि,** ताज़ा दूध, **मात्रा,** ५ तोलेसे ८ तोलेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (३) शरीरको बृंहणकर्ता, (४) रोधका उद्घाटक, (५) स्वरशोधक, (६) फेंफड़ेका प्रांत (इर्द गिर्द) कंठका खुरखुराना, सूखी खांसी और वाह्य तथा आंतरिक शोथको गुणकारक है, (७) दोषोंको मूत्र-द्वारा निकालनेवाला, (८) शहदके साथ पार्श्वशूल और फेंफड़ेकी पीड़ाको गुणकारक है, (९) इसको शरीरपर मर्दन (मलना) करे तो त्वचाको मृदुकारक है, (१०) खांड और खसखस (पोस्त) के साथ सेवन करनेसे अत्यंत बृंहणताप्रद है, (११) इसको शरीरपर मले तो विशेषतः आहारके समान गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६६३) मकड़ीका जाला

फारसी, अब्रकाकिया, **अरबी,** नसजुल्अन्कबूत, **स्वरूप,** भूरापनलिये सफ़ेद, **पहिचान,** जिसको मकड़ी अपने मुखके ल्वावसे बनातीहै, प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** उत्तमांगोंको, **दर्पनाशक,** बादामरोग़न, **प्रतिनिधि,** इस्फंज, **मात्रा,** अभक्ष्य है, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) संपूर्ण अवयवोंके रक्तस्रावका रुद्धक और बद्धक, (२) इसको

Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गलेमें तावीज बनाकर पहिने तो ज्वरको गुणकारक है, (३) नक्सीरको रोकनेवाला है, (निर्विषैल)

(६६५) मकोयके फल

संस्कृत, काकमाची, **फारसी**, रोबाहतरीक, **अरबी**, अम्बुसअ्लब, **इंग्रेज़ी**, नाइटसेड, **स्वरूप**, लाल और सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कड़वे और ताजे मीठे होतेहैं, **पहिचान**, एक बूंटीके मटरजैसे फल हैं, **प्रकृति**, ठंडे और रूक्ष, किसीके मतमें गरम हैं, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, शहद और गुड़, **प्रतिनिधि**, काकनज, **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मलको पक्क और समपक्वकर्ता, (२) मलको निकालनेवाली, (३)दोषोंको स्वच्छताप्रद, (४) बद्धक, (५) गरमी और तृषा (प्यास) को शांतिप्रद, (६) शोथ और वायुको लयकर्ता, (७) गरमीके शोथको लाभप्रद, (८) अन्त्रियोंको शोधन करनेवाली, (९) मूत्रल, (१०) रेचक है, (निर्विषैल)

(६६६) मकोय सब्ज (हरी)

संस्कृत, काकमाचीशाक, **फारसी**, तरहरोबाहतरीक, **अरबी**, अतराफअनबुसअ्लब, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, सूखी मकोय, **मात्रा**, १ तोलासे ५ तोलातक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका स्वरस बाह्य और आन्तरिक शोथको लयकारक है, (२) आमाशय और यकृत्का शोथ तथा पीड़ाको लाभप्रद, (३) मलको निकालनेवाली, (४) आमाशयके दाहको लाभप्रद, (५) पित्तज और तिक्त (कड़वे) दोषोंको अतिसारद्वारा निकालतीहै, (६) जलोदर, पीलिया और गरमीके गुदाशोथको गुणकारक है, (७) इसके पत्तोंका लेप शोथको लयकारक है, (८) इसका गंडूष गलेका जिकड़जाना, तालुशोथ और कंठकी पीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६६७) मकोय्या जंगली

स्वरूप, ऊदा, **स्वाद**, चाश्नीयुक्त, **पहिचान**, गज़भरका लंबा और कांटेदार एक वृक्षका गोल फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, खांसी करनेवाला, **दर्पनाशक**, खशखाशका शर्वत, **मात्रा**, २० नगसे ५० नगतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पित्त और रुधिरकी तीक्ष्णताको हरणकर्ता, (२) तृषाको शांतिप्रद, (३) बद्धक और आध्मान कारक है, (निर्विषैल)

(६६८) मखाना

स्वरूप, काला और सूखा सफ़ेद होताहै, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसका वृक्ष नीलोफरके समाम होताहै एक प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति** १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, गरिष्ठ है, **प्रति-**

निधि, खांड, मात्रा, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरके अवयवोंको बलप्रद, (२) वीर्यवर्द्धक, (३) वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (४) रक्तप्रकोपको हरणकर्ता, (५) अतिसार, प्रमेह और वीर्यकी द्रवताका नाशक है, (निर्विषैल)

(६६९) मचूकां

स्वरूप, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, एक वनस्पतिकी जड़ है, इसका क्षुप गोल पत्तेवाला सघन होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अपनी बद्धक और रेचक शक्तिसे रेवन्दचीनीके समान है, (२) गठिया, वृक्कशूल (दर्दगुर्दा) और गुल्मकेलिये गुणकारक है, (३) प्रायः धातुओंकी भस्म करनेमें मिलाईजातीहै, (निर्विषैल)

(६७०) मछली बाम

फारसी, मारमाही, **अरबी**, मारमाहीज़ज, **स्वरूप**, कालोंचीलिये, **स्वाद**, लस और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, सांपजैसी एक मछली है, इसके ऊपर बहुत लुआब होताहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) वायुको लयकर्ता, (३) इसको हाथमें लेनेसे रुधिरकी चाल रुकजातीहै, (४) वृद्ध मनुष्योंकेलिये उत्तम आहार है, (५) पीठके दर्दको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६७१) मछली झींगा

फारसी, माहीरोबियां, **अरबी**, रोबियां, **स्वरूप**, सफ़ेदीलिये, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त मीठी, **पहिचान**, जिसकी पूंछ आराकेसमान लंबी होतीहै, सिंधनदमें होनेवाली एक मछली है और यह सिरके रास्तेसे बीट करतीहै, **प्रकृति**, ताजी २ कक्षामें गरम और तर तथा १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, वातल है, **दर्पनाशक**, बादामरोग़न और खांड़, **प्रतिनिधि**, रेगमाही, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) उत्तम रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) वीर्यवर्द्धक, (४) वृक्क और गर्भाशयको उष्ण (गरम) करनेवाली, (५) अंडाकी ज़र्दीके साथ ओजको उत्पन्नकर्ता, (६) ओजको चालनकर्ता, (७) सुखाईहुईका नेत्रांजन (सुरमा) काली मिरचके साथ नक्तांध्य (रतोंधी) को गुणकारक है, (८) शहदके साथ धुंधको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(६७२) मछली रोहू

संस्कृत, रोहित, **फारसी**, शबूत, **स्वाद**, कुछ दुर्गंधियुक्त रूखी, **पहिचान**, १ जातिकी प्रसिद्ध मछली है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, हिल्सा बंगाली मछली, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओज और मस्तिष्कको बलप्रद, (२) सांद्र (गाढ़ा) रुधिरको उत्पन्नकर्ता, (३) रसको ज्यादा उत्पन्न करनेवाली, (४)

Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

यदि दूधके साथ सेवन कीजावे तो ओजको बलप्रद है, (५) इसके दांतोंका चूर्णभी ओजप्रद है, (निर्विषैल)

(६७३) मछली रेतकी (रेगमाही)

फारसी, रेगमाही, **अरबी**, समकुल्रमल और समकुलसैदा, **स्वरूप**, पीली, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त नमकीन और फीकी, **पहिचान**, रेतमें रहनेवाली एक मछली है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, इसका फेन ३ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, इसीको नमक लगाकर सुखाना है अथवा सूखीहुई लेनी चाहिये, **प्रतिनिधि**, सालबमिश्री, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके अंडेकी ज़र्दीके साथ इसके फेनको सेवन करे तो अत्यंत कामोत्पादक है, (२) बहुधा वैद्यभी इसको अत्यंत कामवर्द्धक बतातेहैं, (३) प्रभावशाली होनेसे पुरुषजातिको विशेष गुणकारक है, (४) इसके सेवनकी उत्तम रीति यह है कि इसको ३।। माशे पीसकर जलयुक्त मद्यमें डालकर पीवे, परंतु इसको अधिक पाकोंके साथ सेवन करतेहैं,हकीमोंके मतमें सोलनामक सोताकी जोकि वातूक नामक ग्राममें होतीहै वह उत्तम है, (निर्विषैल)

(६७४) मछलीका अंडा

संस्कृत, मत्स्यगर्भ, **फारसी**, तुख़्म माही, **अरबी**, बेजुस्समक, **स्वरूप**, सफ़ेद और पीला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, अत्यंत कफ पैदा करनेवाला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) स्वाभाविक गरमीको उत्पन्नकर्ता, (४) प्रमेहको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६७५) मछेछी

संस्कृत, मत्स्याक्षी, **स्वरुप**, पत्ते हरे और लाल तथा फूल पीला होताहै, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें जलाशयके समीप होनेवाली छोटी २ पत्तियोंकी छत्तादार एक रूखड़ी है, **प्रकृति**, ठंडी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उदरकी वद्धक, (२) कोढ़को गुणकर्ता, (३) त्वचाके रोग, उपदंश (आतिशक) उपदंशकी चट, सूखी और तर खुजलीको गुणकारक है, (४) उदरके कृमियोंकी नाशक,(५) प्रमेहको लाभप्रद है (निर्विषैल)

(६७६) मँजीठ

संस्कृत, मंजिष्ठा, **फारसी**, रोनास, **अरबी**, फोह और अर्कुस्सयागीन, **इंग्रेज़ी**, मेडररूट, **स्वरूप**, कलोंचीलिये लाल, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, एक जड़ है कि जिसको औटाकर कपड़े रंगतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिर और वस्तिको तथा पेशाबको लाल करनेवाली है, **दर्पनाशक**, कतीरा और अनीसून, **प्रतिनिधि**, कबाबा और

सलीखा, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**,(१) रोधकी उद्घाटक,(२) मूत्रको लाल करनेवाली, अथवा स्वाभाविक स्वच्छ मूत्रप्रद है, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) शीतके रोग, स्नायुके रोग, पक्षवध, अर्दित और पांडुरोगको गुणकारक है, (५) यकृत् और प्लीहको गुणकर्ता, (६) दाद और त्वचाके चिह्नोंको लाभप्रद, (७) रक्तातिसारकी वर्द्धक है, (निर्विषैल)

(६७७) मटर काबिली

संस्कृत, कलाय, **फारसी**, जलबान, **अरबी**, खलज, **इंग्रेज़ी**, फील्डपी, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध अनाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रक्तातिसार-प्रद, **दर्पनाशक**, शहद, गुलाब और गेरू, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) रक्तवर्द्धक, (३) प्रायः अवयवोंके शोथको हरण-कर्ता, (४) कफविकार नाशक, (५) रोधकी उद्घाटक, (६) कांतिप्रद, (७) वक्ष-स्थल, और फेंफड़ेको शोधन करनेवाली, (८) मूत्रल, (९) कठोरताको लयकर्ता, (१०) वातल है, (निर्विषैल)

(६७८) मिट्टी बागस्तानी

फारसी, गिलबागस्तानी, **अरबी**, तीनबागस्तानी, **स्वरूप**, धूलिया, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, सुगंधियुक्त एक मिट्टी है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधप्रद और स्वरूपको बिगाड़नेवाली, **दर्पनाशक**, इसको जलसे धोडालना है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसकी सुगंधि जलमें डालनेसे तीव्र होजातीहै और मनको प्रसन्न करतीहै, (२) सूखी बागस्तानी मिट्टी रुधिर (खूनका बहना) को बन्द करतीहै, (निर्विषैल)

(६७९) मिट्टी मुलतानी

फारसी, गिलमुल्तानी, **अरबी**, तीन मुल्तानी और खुरासानी, **स्वरूप**, पिलोई-लिये, **स्वाद**, मिट्टीजैसा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधप्रद, **प्रतिनिधि**, करफ्स, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वमनको शांतिप्रद, (२) बिषूचिकाको गुणप्रद, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) श्लेष्माको लाभप्रद, (५) सुगंधियुक्त होनेसे मस्तिष्कको बलप्रद है, (६) रोमकूपोंको रोकनेवाली, (७) उपदंशवालोंको इसका लेप गुणकारक है, (८) शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(६८०) मिट्टी खरिया

संस्कृत, खटिका, **फारसी**, गिल-सफ़ेद, **अरबी**, तीनुल् अबिजय, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, सुगंधि-युक्त एक प्रसिद्ध मिट्टी है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, मुलतानी मिट्टी,

गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शिरके बालोंके मैलको छांटतीहै, (२) पुराने ज़ख़म और फोड़ोंको भरनेवाली, (३) गरमीकी शोथ (सूजन) को इसका लेप गुणकारक है, (४) प्रायः मरहमोंमें मिलाईजातीहै, (निर्विषैल)

(६८१) मट्टी सिरसफा (सिर धोनेकी)

फारसी, गिलसरशूय, **अरबी,** तीनुल्फारसी, **स्वरूप,** कुछ पीली, **स्वाद,** फीकी, **पहिचान,** चिकनी और कठोर पुर्तदार एक मिट्टी है, **प्रकृति,** ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता,** फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** आवसरतानात, **मात्रा,** ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) फेंफड़ेकी पीड़ा (दर्द) को लाभकर्ता, (२) शोथको लयकर्ता, (३) रोमकूपोंकी रुद्धक है, (निर्विषैल)

(६८२) मनभिना

फारसी, गंदुमदीवाना, **अरबी,** शलीम, **स्वरूप,** भूरा, **स्वाद,** कड़ुआ, **पहिचान,** जौसे बारीक और छोटा एक बीज है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** स्वरको बिगाड़नेवाला, **दर्पनाशक,** घी और ताजा दूध, **प्रतिनिधि,** जन्दकोकी, **मात्रा,** ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अवयवोंको शिथिल और निश्चलकर्ता, (२) स्वरको बिगाड़नेवाला, (३) विष्टंभी, (४) अंडेकी सफ़ेदीकेसाथ कठोरताको लयकर्ता और मृदुकर्ता, (५) इसका लेप शरीरके भीतरके कांटे और झिल्लीको खींचनेवाला है, (६) इसका तैल दाद और त्वचाके रोगोंको गुणकारक है, (७) उपदंश (आतिशक) की चटोंको लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(६८३) ममीरा

फारसी, मामीरांचीनी, **स्वरूप,** पीला, **स्वाद,** कड़ुआ, **पहिचान,** गांठदार बारीक हल्दीकी जातिकी एक प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** वृक्कको, **दर्पनाशक,** शहद, **प्रतिनिधि,** हलदी, **मात्रा,** ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२)शोथको लयकर्ता, (३) रोधका उद्घाटक, (४) मूत्रल, (५) मस्तिष्कको शोधनकर्ता, (६) त्वचामें व्रणोंको उत्पन्नकर्ता, (७) पीलियाको लाभप्रद, (८) नेत्ररोगोंको लाभप्रद, (९) इसका नेत्रांजन (सुरमा) अंधेरी और धुन्धको गुणकारक है, (१०) सिर्काके साथ सफ़ेददाग, व्यंग (झाई) और मुखकी श्यामताको लाभप्रद है, (११) आंखके जालेको काटनेवाला, (१२) इसकी जड़को पीवे तो वायुको लयकारक है, (१३) विशेषतः पांडुको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६८४) मरोरफली

फारसी, गश्तवरगश्त और पेचक,

अरबी, अलतवाअलतवा, स्वरूप, भूरी, स्वाद, कुछ कड़वी, पहिचान, रस्सी-जैसी बलदार एक औषधिकी फली है, प्रकृति, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, ओज और दूधको, दर्पनाशक, सनोवरके बीज, प्रतिनिधि, एलुआ, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) पिच्छल कफको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (४) हिन्दीमें इसके वृक्षोंको बिजार कहतेहैं, (५) कांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(६८५) मलाई

संस्कृत, संतानिका, **फारसी**, सरशीर, **अरबी**, मशीमादवावा, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, सुस्वादु और चिकनी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठण्डी और तर, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, क़ंद और खांड़, **प्रतिनिधि**, मक्खन, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) गरिष्ठ, (२) शरीरको बलप्रद और बृंहणकर्ता, (३) खांड़के साथ ओजको बलप्रद, (४) शुक्रल, (५) वातजमलको मृदु और समपक्ककर्ता, (६) स्नायुओंकी रूक्षताको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(६८६) मसूर

संस्कृत, मसूरिका, **फारसी**, नेवसुर्ख़, विसुक और मरजूनक, **अरबी**, अदस, **इंग्रेज़ी**, लेटिल्, **स्वरूप**, बाहर काली और भीतरसे लाल होतीहै, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध अनाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, इसका छीलका बद्धक है, **हानिकर्ता**, ओज और दृष्टिको तथा बवासीर और कोढ़को पैदा करनेवाली, **दर्पनाशक**, घी और सिर्का, **प्रतिनिधि**, उर्द और बाकला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वातल (२) रक्तप्रकोपको शांतिप्रद, (३) रुधिरको सांद्रकर्ता, (४) आध्मानप्रद, (५) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (६) दीर्घपाकी, (७) आर्तवप्रवतर्क, (८) इसका गंडूष गलेका बैठजाना, गलेकी पीड़ा और मुखपाकको गुणकारक है, (९) अनिष्टप्रद और दुःस्वप्न दिखानेवाली है, (१०) घिग्घीको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(६८७) मस्तगी

फारसी, कन्दरूमी, **अरबी**, मस्तगी और अलकरूमी, **स्वरूप**, पीली और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, दुर्गंधियुक्त और कडुआ, **पहिचान**, एक वृक्षका प्रसिद्ध गोंद है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, कन्दर और बित्मका गोंद, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) कांतिप्रद, (४) बद्धक, (५) स्नायु, उत्तमांग, आमाशय, यकृत, वृक्क और पाचनशक्तिको बलप्रद, (६) मस्तिष्ककी स्निग्धता और कफको शोधन-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कर्ता, (७) ओजको चालनकर्ता, (८) मुखसे रुधिरके आनेको लाभप्रद, (९) उदरके अवयवोंकी पीड़ा और शोथको गुणकारक है,(१०)सम्पूर्ण स्नायुके रोगोंको लाभप्रद, (११) मरोड़ा और जीमिचलानेको गुणप्रद, (१२) इसका मंजन दांत और मसूढ़ोंको दृढ (मज़बूत) कारक है, (निर्विषैल)

(६८८) महुआ

संस्कृत, मधूक, **फारसी,** गुलचकां, **इंग्रेज़ी,** इलूपाट्री, **स्वरूप,** फूल सफ़ेद और फल हरा होताहै, **स्वाद,** मीठा और फल कड़ुआ होताहै, **पहिचान,** एक बड़ा वृक्ष है, इसका तेल घीजैसा होताहै, इसके फूल बहुत कामोंमें आतेहैं, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** सिरमें दर्द करनेवाला, **दर्पनाशक,** धनियां, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) वायु और कफको हरणकर्ता, (२) इसके फूल दूध और वीर्यको बढ़ानेवाले हैं, (३) कफ और वायुके विकारोंको हरणकर्ता, (४) इसके बीज शीतकी पीड़ाको लाभप्रद हैं, (५) इसके बीजोंको जलमें पीसकर बत्ती बनाकर पिचुक्रिया करे तो गर्भको गिरानेवाला है,(६) इसके फूल और कुचला दोनोंको पीसकर सांपके काटेपर लेप करे तो सांपके विषको दूर करनेवाला है, (निर्विषैल)

(६८९) माई छोटी

फ़ारसी, बादगर और गज़बार, **अरबी,** अजवह और समरुल्असल, **स्वरूप,** ललोंईलिये भूरी, **स्वाद,** कड़ुआ, **पहिचान,** चनेसे कुछ बड़ा झाऊका एक फल है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता,** मस्तक और वक्षस्थलको, **दर्पनाशक,** कद्दूके बीज और दोकू, **प्रतिनिधि,** अनारका गूदा और माजू, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) बद्धक, (२)स्निग्धताको शोधनकर्ता, (३)खांड़केसाथ हांपनेको और खांसीको गुणकारक है, (४) यकृत्मांद्य, उदरके अवयव और अतिसारको लाभप्रद, (५) मुखसे रुधिरके आनेको और रुधिरके बहनेको गुणकारक है, (६) सिर्काके साथ इसका लेप तिल्लीको लाभप्रद है, (७) इसका मंजन मसूढ़ा और दांतोंको मजबूत करनेवाला है, (८) मुखके दानोंको गुणप्रद, (९) इसका गंडूषभी दांतोंकी पीड़ाका नाशक है, (निर्विषैल)

६९० माई बड़ी

फ़ारसी, कजमाज़िज, **अरबी,** समरतुल्तुरफा, **स्वरूप,** ललोंईलिये भूरा, **स्वाद,** कड़ुआ, **पहिचान,** छोटी माईसे बड़ा झाऊका एक तिकोंना फल है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता,** मस्तकको, **दर्पनाशक,** दोकू, **प्रतिनिधि,** माजू, **मात्रा,** ७ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मलको पक्वकर्ता, (२) प्लीहकी शोथको लयकर्ता, (३) बद्धक, (४)

अतिसार (दस्त) की बद्धक, (५) गर्भाशयकी स्निग्धताको शोधनकर्ता, (६) फेंफड़ेके जख़मको गुणप्रद, (७) इसका गंडूष तालू और वक्षस्थल (सीने) के रोगोंको गुणकारक है, (८) यह जलाईहुई मुर्दारसंग और धोयेहुए घीकेसाथ गंजापन और सिरके दानोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६९१) मांगमोर

पहिचान, एक घास है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इसके पत्ते कड़वे तैलमें जलायेहुए गठिया और जोड़ोंके दर्दको गुणकारक हैं, (निर्विषैल)

(६९२) माजू

फारसी, माजू, **अरबी,** अफस, **स्वरूप,** कालापनलिये भूरा, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** बेरके बराबर चपटा और गोल एक वृक्षका फल है, **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता,** वक्षस्थल और तालुएको, **दर्पनाशक,** कतीरा और बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि,** बड़ी हरड़ और अनारका छीलका, **मात्रा,** ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) जीर्णातिसार (पुराने दस्त) का बद्धक, (२) गर्भाशयकी स्निग्धताको शोषणकर्ता, (३) इसका हिम नक्सीरका रुद्धक है, (४) नेत्ररोगोंको लाभप्रद, (५) इसका मंजन मसूढ़ा और दांतोंको बलप्रद है, (६) मुखपाकको गुणकर्ता, (७) इसका लेप मलको पक्वकर्ता है, (८) पसली और वृक्क (गुर्दा) की पीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६९३) मालकांगनी

संस्कृत, ज्योतिष्मती, **इंग्रेज़ी,** सिलास्टसपंनिक्युलेटा, **स्वरूप,** ललोंईलिये भूरा, **स्वाद,** कुछ कड़वी, **पहिचान,** चनासे कुछ लंबे एक बूंटीके प्रसिद्ध बीज हैं, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता,** उष्णप्रकृतिवालोंको और जवान मनुष्योंको, **प्रतिनिधि,** काले तिल और शहद, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मस्तिष्कको बलप्रद, (२) धारणाशक्ति, बुद्धि, आमाशय और ओजको बलप्रद, (३) गठियाको गुणप्रद, (४) जांघकी पीड़ा, पसलीका दर्द, मस्तिष्क सम्बन्धी स्नायुके रोग, पक्षवध और अर्दितको इसका तैल गुणकारक है, (५) कफ और वायुके विकारोंको हरणकर्ता, (६) इसके तैलको हथेलीमें मले तो दृष्टिको तीव्र करनेवाला है, (७) कमरकी पीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६९४) महूदाना

फारसी, महूदाना, **अरबी,** कायमबिल्ज़ात, **स्वरूप,** फूल पीला और पत्ते हरे होतेहैं, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** तीन बीजवाला एक दुधारी घासका फल है जोकि एक झिलीमें बंद होताहै, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,**

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

फेंफड़ा, आमाशय और गुदाको, **दर्पनाशक**, कतीरा और अनीसून, **प्रतिनिधि**, जमालगोटा, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफज अंतर्मलको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) गुल्म (वायुगोला) को लाभप्रद, (४) गठियाको गुणप्रद, (५) गाढ़े कफको छांटनेवाला, (६) केवल पित्तकोभी निकालनेवाला है, (निर्विषैल)

(६९५) माहियाना

फारसी, महियानह, **अरबी**, समनात, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम प्रकृति और वात प्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, सोंठ, काहूके बीज और खटाई, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) आमाशयकी स्निग्धताको शोषणकर्ता, (२)सब प्रकारके कफको छांटनेवाला, (३)दोषोंको स्वच्छताप्रद, (४)मुखकी दुर्गंधिका नाशक, (५) पक्षवध, शीतके रोग और पसलीके दर्दको लाभप्रद, (६) पाचनशक्तिको बलप्रद, (७) क्षुधाका उद्घाटक, (८) आमाशयको बलप्रद, (निर्विषैल)

(६९६) माहीजोहरह

फारसी, सकुस्समक और माहीजोहरिज, **स्वरूप**, पिलोईलिये, **स्वाद**, तीखा, **पहिचान**, एक दुधारी औषधिकी महीन छाल है, किसीकी संमतिमें फली है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आंतोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा और निशास्ता **प्रतिनिधि**, बोजीदां और ईरसा, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सब प्रकारका कफ और गाढ़े दोषोंको अतिसार द्वारा शोधनकर्ता, (२) वायुको लयकर्ता, (३) गठिया, पैरकी अंगुलीकी पीड़ा और जांघकी पीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६९७) मिरचकाली

संस्कृत, मरिच, **फारसी**, फ़िलफ़िलस्याह और फ़िलफ़िल गिर्द, **अरबी**, फिलफ़िलस्सोदाय, **इंग्रेज़ी**, व्ल्याकपीपर, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, चरपरा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और वक्षस्थल तथा तालुएको हानिकारक है, **दर्पनाशक**, घी और शहद, **प्रतिनिधि**, पीपल और सोंठ, **मात्रा** ४ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) स्निग्धताको सुखानेवाली, (३)दोषोंको स्वच्छताप्रद, (४) उष्णताप्रद, (५) कफशोधक, (६) धारणाशक्तिको बलप्रद, (७) स्नायु, आमाशय, यकृत् और पाचनशक्तिको बलप्रद, (८) आहारोंको स्वच्छकर्ता, (९) कुष्ठ (कोढ़) को गुणकर्ता, (१०) वायुको हरणकर्ता, (११) वमन (कै) के द्वारा विषोंको निकालनेवाली, (१२) सरदीके रोग और सम्पूर्ण मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६६८) मिरचलाल

अरबी, फिलफिलएहमर, **स्वरूप**, लाल, पीली और कच्ची हरी होतीहै, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वस्ति, फेंफड़ा और आमाशयको, **दर्पनाशक**, घी और शहद, **प्रतिनिधि**, कालीमिरच, **मात्रा**, २ माशेतक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यंत तीक्ष्णताप्रद, (२) रुधिरको जलानेवाली, (३) पित्तको उत्पन्नकर्ता, (४) रोध और रामकूपोंकी उद्घाटक, (५) कफको छांटनेवाली, (६) मस्तिष्कको शोधनकर्ता, (७) शोथको लयकर्ता, (८) त्वचाको लाल और गरम करतीहै, (९) स्नायुओं (मोटीनसों) के ऐंठनेको और कफजपीड़ाको लाभप्रद है, (१०) ओजको घटानेवाली है, (निर्विषैल)

(६६९) मिश्री (मिसरी)

संस्कृत, सिता, **फारसी**, कन्दुल्कन्द, **अरबी**, नवातुज्जलाव, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**: अत्यंत मीठी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, समान गुणवाली, **दर्पनाशक**, खट्टे मुरब्बे, **प्रतिनिधि**, खांड़ और तबरजद, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) कांतिप्रद, (३) गरम जलकेसाथ आवाजके भरभरानेको और खांसीको गुणकारक है, (४) इसकी सलाई बनाकर आंखमें फेरे तो आंखके जालेको और नाखुना (नख) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७००) मुचकुन्द

संस्कृत, मुचुकुंद, **स्वरूप**, फूल सफ़ेद और पत्ते हरे, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, हिन्दुस्तानमें ५ गज़तकका एक झाड़ होताहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके फूल व्यवहारमें आतेहैं, (२) पीड़ाको शांतिप्रद, (३) कफ और खांसीको लाभप्रद, (४) वायुको हरणकर्ता, (५) इसका हलुआ अत्यंत गुणदायक है और बवासीरके रुधिरको रोकनेवाला है, (निर्विषैल)

(७०१) मुंडी

संस्कृत, मुंडी, **इंग्रेज़ी**, स्फिरैंथस्इंडिकम, **स्वरूप**, लाल और पीली, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, एक छत्तादार बूंटी है कि जिसके फल और फूल मटरजैसे गोल होतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, बिही, **प्रतिनिधि**, सरफोका, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उत्तमांग, हृदय, मस्तिष्क, स्नायु और प्राणोंको बलप्रद, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) स्वच्छताप्रद, (४) रोधकी उद्घाटक, (५) हृदयकी व्याकुलता, शोथ, दाने, गिलटियां, तर और सूखी खुजलीको तथा प्रायः वातजरोगोंको गुणकारक है, (६) इसकी फंकी दृष्टि और ओजको बलप्रद है, (७) अत्यन्त मूत्रल,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

(८) कुछदिन इसके तीन नगोंको साबितही निगले तो आंखोंकेलिये अनुभूत गुण, कारक है, (निर्विषैल)

(७०२) मुनक्का

संस्कृत, द्राक्षा, **फारसी**, मवैज, **अरबी** जबीब, **इंग्रेजी**, ग्रेपरोक्सिस्, **स्वरूप**, काला और लाल, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, गरम प्रकृतिवालोंको और रुधिर वृक्कको तथा स्वच्छताप्रद है, **दर्पनाशक**, किशमिश और आबखुश, **मात्रा**, १० दाने, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) पित्तकी तीक्ष्णता और उष्णताको शमनकर्ता, (२) कफशोधक, (३) दोषोंको पक्व और समपक्वकर्ता, (४) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (५) वायुको लयकर्ता, (६) आमाशय और अंत्रियोंको स्वच्छकर्ता, (७) शरीरको बृंहणकर्ता, (८) यकृत् और शीतप्रकृतिवालोंके ओजको बलप्रद, (९) फुफ्फुस (फेंफड़ा) प्रांतके अनुकूल है, (१०) इसका लेप पशुओंकी चरबीके साथ शोथको लयकारक है,(११)यह भुनीहुई गरमागरम, खांसीको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७०३) मुनक्काके बीज

संस्कृत, द्राक्षाबीज, **फारसी**, दानयेमवैज, **अरबी**, हब्बुजबीब, **स्वरूप**, कलोंचीलिये भूरे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडे और २ कक्षामें रूक्ष हैं, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्पनाशक**, उन्नाव, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) आध्मानकर्ता, (३) स्निग्धताके बढ़नेको और आमाशय तथा अंत्रियोंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(७०४) मुर्दारसंग (मुर्दासंग)

फारसी, मुर्दारसंग, **अरबी**, मुर्दारसंज, **स्वरूप**, चमकीला और सुनहरा तथा पीला होताहै, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, कोई ठंडा कहतेहैं, **हानिकर्ता**, ७ माशे खानेसे घातक है, **दर्पनाशक**, वमनकराना, घी और बादाम रोग़न है, **प्रतिनिधि**, अकलीमिया, **मात्रा**, १ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) मांसको खानेवाला, (३) शोथको लयकर्ता, (४) रूक्षताप्रद, (५) बद्धक, (६) अतिसारबद्धक, (७) यदि शरीरके भीतर क्षतोंके कारण अथवा अंत्रियोंकी लेखनताके कारणसे दस्त होवें तो उनको लाभप्रद है, (८) इसका लेप प्रायः औषधियोंकी तीक्ष्णताको शांतिप्रद है, (९) खुजली और प्रायः त्वचाके रोगोंमेंभी प्रचलित है, (१०) सूखी मँहदी, कबीला और धोये हुए घीकेसाथ सिरके दानोंको और गंजापनको गुणकारक है, (घातक विष)

(७०५) मुलीम

स्वरूप, भूरी, **स्वाद**, कड़वी और तीखी, **पहिचान**, कालापनलिये एक हिंदुस्तानी जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम

और रूक्ष, हानिकर्ता, फेंफड़ेको, दर्प-नाशक, मक्खन, मात्रा, अभक्ष्य है, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) व्रणके कृमियोंकी नाशक, (२) इसके पत्तोंका स्वरसभी कृमियों (कीड़ों) का नाशक है, (३) यदि नांकके बांसेमें कीड़ोंके पड़नेसे सिरमें पीड़ा होवे तो इसको नांकमें डालनेसे लाभ होताहै, (उपविष)

(७०६) मुलहटी

संस्कृत, मधुयष्टी, **फारसी**, बेखमेहक, **अरबी**, अस्लुस्सूस, **इंग्रेज़ी**, लिकरीसरूट, **स्वरूप**, पीली और भूरी, **स्वाद**, कुछ मीठी, **पहिचान**, एक वृक्षकी प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, वृक्क और प्लीहको, **दर्पनाशक**, उन्नाव, कतीरा और गुलाबके फूल, **मात्रा**, ६ माशेसे ९ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सांद्र दोषोंको द्रवकर्ता और समपक्ककर्ता, (२) (३) आमाशयके दाहको शांतिप्रद, (४) स्निग्धताको अतिसारद्वारा शोधनकर्ता, (५) स्नायुओंको बलप्रद, (६) वक्ष-स्थल और तालुको मृदुकर्ता, (७) वक्ष-स्थलके रोग, खांसी, श्वासका रुकना और हांपनेको गुणकारक है, (८) बिना छीलेहुए इसका व्यवहार करना उचित नहींहै क्योंकि इसके ऊपर सर्प लिपटा रहताहै, (निर्विषैल)

(७०७) मुआबादल

फारसी, अब्रमुर्दह, **अरबी**, इस्फंज, **स्वरूप**, पिलोईलिये काला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला, जलको खींचनेवाला, नरम और जालेदार एक प्रसिद्ध द्रव्य है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उदरके अवयवोंको, **दर्पनाशक**, अंगूरका स्वरस, **प्रतिनिधि**, जलाहुआ कागज़, **मात्रा**, १।। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) रूक्षताप्रद, (३) नये पुराने और गहरे व्रण तथा फोड़ोंको सुखानेवाला, (४) रक्तस्रावका रुद्धक, (५) जलायाहुआ और सूखा नेत्रविकार और दृष्टिको बलप्रदहै, (६) तालूमें कांटे के चुभनेको और जोंकके चिपकजानेको चुल्लू २ (घूंट २) पीनेसे गुणकारक है, परन्तु इसको इस प्रकार पीवै कि प्रथम ओखलीमें कूटडालें और पीछे जलमें घोल-कर पीजावे, (निर्विषैल)

(७०८) मुश्कदाना

फारसी, मुश्कदानह, **स्वरूप**, काला और भूरा, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त फीका और कुछ तीखा, **पहिचान**, भिंडीके बीजोंके समान जिसका छीलका होताहै एक वृक्षके बीज हैं, **प्रकृति**, ठंडे और किसीकी सम्मतिमें गरम हैं, **हानिकर्ता**, शिरः पीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, भिंडीके बीज, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म**,

प्रयोग, (१) मुखके रोग और जीभकी जड़ताको हरणकर्ता, (२) आमाशयकी गरिष्ठता और वायुनाशक, (३) इसके पत्ते और डाली प्रमेह, वीर्यका स्राव और वीर्यकी द्रवताकेलिये गुणकारक हैं, (निर्विषैल)

(७०६) मुश्कतरामशीअ्

स्वरूप, हरा, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त तीखा, **पहिचान**, एक जातिका पोदीना है, **प्रकृति**, २ कक्षामें रूक्ष और ३ कक्षामें गरम, **हानिकर्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, सुपारी और सिर्का, **प्रतिनिधि**, पोदीना, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मूत्र और अत्यन्त आर्तवप्रवर्त्तक, (२) गुल्मके रोधका उद्घाटक, (३) शहदके साथ ओजप्रद है, (४) आमाशयको बलप्रद, (५) रोग़न बिलसांकेसाथ इसकी बत्तीको गर्भाशयमें धारण करे तो गर्भाशयकी पीड़ाको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(७१०) मुहार (सनाय-सौनामुखी)

संस्कृत, स्वर्णपत्री, **फारसी**, सनायमक्की, **अरबी**, सनाय, **इंग्रेज़ी**, टिनेवेलीसिना, **स्वरूप**, ताजी हरी और सूखी पिलोईलिये हरी होतीहै, **पहिचान**, महंदीके पत्तोंसे बड़े एक ओषधिके पत्ते हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, व्याकुलता, ग्लानि और मरोड़ाको उत्पन्न करनेवाली है, **दर्पनाशक**, बादामरोग़न, बनफ्सा और गुलाबकी पत्ती, **प्रतिनिधि**, निसोथ और बड़ी हरड़, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफज, वातज और पित्तज मलको अतिसार द्वारा निकालनेवाली, (२) दग्ध (जलेहुए) दोषोंको निकालनेवाली, (३) मस्तिष्कके कफको शोधनकर्ता, (४) श्वास, हांफना, गुल्म और पादांगुलि पीड़ाको गुणप्रद, (५) तर और सूखी खुजली, गठिया और पसलीके दर्दको लाभप्रद है परन्तु खुश्की करतीहै (निर्विषैल)

(७११) मूंग

संस्कृत, मुद्ग, **फारसी**, बनोमाश, **अरबी**, माश और मज, **इंग्रेज़ी**, ग्रीन, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, खटाई, **प्रतिनिधि**, बाकला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रोगीकेलिये उत्तम गुरु आहार है, (२) दीर्घपाकी, (३) शुद्ध दोषोंको उत्पन्नकर्ता, (४) रसको सम्पक्व करनेवाला, (५) आमाशयकी थैलीमें देरीसे उतरतीहै और अफरा करती है, (६) स्नायुओंको बलप्रद, (७) तीक्ष्णपित्तको शांतिप्रद, (८) सिर्काके साथ इसका लेप झांईको शोधनकर्ता है, (९) छातीकी पीड़ा और चोटको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection

(७१२) मूंगा

संस्कृत, प्रवाल, फारसी, मिरजां और मिरगां, अरबी, कोरल, स्वरूप, लाल, स्वाद, फीका, पहिचान, समुद्रमें जलके भीतर एक घास होतीहै, उसकी लाल लकड़ीको काटकर बनायाजाताहै, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, हानिकर्ता, शिर और वस्तिको, दर्पनाशक, कतीरा और अनीसून, प्रतिनिधि, दम्मुल्अखवेन और कहरुब्वा, मात्रा, ४ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) रोधकी उद्घाटक, (२) शहदके साथ पक्षवध, अर्दित और कम्पको गुणकारक है, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) यकृत् और प्लीहको शोधनकर्ता, (५) मूत्रल, (६) रक्तातिसारको बांधनेवाली, (७) विशेषतःबालकोंको घोटकर पिलावे और कण्ठमें पहिनावे तो बालकोंका नींदमें चोंकना और डरकर रोनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७१३) मूंगाकी जड़

संस्कृत, प्रवालमूल, फारसी, बेख़मिरजां, अरबी, बिसुद, स्वरूप, सफ़ेद, लाल और काला, स्वाद, फीका, पहिचान अनेक मतभेदसे अनेक तरहकी कहीजातीहै, कोई तो एक सामुद्री जीवका शरीर है ऐसा कहतेहैं और कोई समुद्रका पत्थर तथा कोई मूंगाकी जड़ही कहतेहैं, प्रकृति, १ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष है, हानिकर्ता, वृक्कको और हृल्लासप्रद है, दर्पनाशक, कतीरा, प्रतिनिधि, कहरुब्वा, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) रूक्षताप्रद, (३) हृदयको प्रसन्नताप्रद, (४) रुधिरको रोकनेवाली, (५) उन्माद, मालीख़ोलिया, हृदयकी व्याकुलता और नेत्रविकारको गुणप्रद, (६) मुखसे रुधिरके आनेको लाभप्रद, (७) यकृत्के रुधिरको जोकि अतिसारद्वारा आताहै उसको गुणकारक है, (८)अन्त्रियोंके क्षत (ज़ख़म)को लाभप्रद, (९) इसकी भस्म कत्थाकेसाथ मुखपाक और मुखके दानोंको गुणकारक है, (१०) इसका नेत्रांजन (सुरमा) दृष्टिको बलप्रद है, (११) इसका चूर्ण शहदके साथ कुष्ठको अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७१४) मूंज

संस्कृत, मुंज, स्वरूप, हरा, स्वाद, फीका, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसके काथका गंडूष मुखप्रकोप, दन्तमूल (मसूढ़ा) के रोग, कागकी शोथ और पीड़ाको गुणकारक है, (२) इसका पीना क्षुधाका उद्घाटक है, (३) रक्तज और वातज अर्श (ख़ूनी, वादी बवासीर) वृक्क और वस्तिका शूल तथा लिंगेन्द्रियकी पीड़ाको गुणप्रद, (४) इसकी धूनी बवासीरको लाभप्रद है, (५) तमाकूकी तरह हुक्कामें रखकर धूम्रपान

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

करे तो हिक्का(हुचकी)को दूर करनेवाला है (६) सोंठके साथ इसका लेप चहरेकी झांई और स्याहीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७१५) मूशली सफ़ेद

संस्कृत, तालमूली, **फारसी**, मूसली सफ़ेद, **इंग्रेज़ी**, हाइपोक्सिस आर्चिओइडिस, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, सतावरके समान एक हिन्दुस्तानी वृक्षकी प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, काली मूसली **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्त और गरमीको हरणकर्ता, (२) शरीरको दृढ़कर्ता और बृंहणकर्ता, (३) ओजको चालनकर्ता, (४) वीर्यको बढ़ानेवाली और गाढ़ा करनेवाली, (५)पीलिया और कफ़ज विषूचिका (हैज़ा) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७१६) मूसली स्याह

संस्कृत, श्यामतालमूली, **फारसी**, मूसली स्याह, **स्वरूप**, भूरापनलिये काली, **स्वाद**, कुछ लसयुक्त कड़वी और फीकी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रतिनिधि**, सफ़ेद मूसली, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (२) शरीरको दृढ़कर्ता और बृंहणकर्ता, (३) बहुमूत्रता और आमवात (गठिया) को गुणप्रद, (४)श्वास और हांपनेको गुणप्रद, शुक्रमेहको हरणकर्ता,(५)वीर्यको सांद्रकर्ता है, (निर्विषैल)

७१७ मूल (पुहकरमूल)

संस्कृत, पुष्करमूल, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, छूंछदार एक प्रसिद्ध जड़ है, **प्रकृति**, गरम, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) क्षुधाप्रद, (२) कफ और वायुके विकारोंको हरणकर्ता, (३) अवयवोंकी शोथको लयकर्ता, (४) श्वासका रोध और पार्श्वशूलको गुणप्रद, (५) शरीरके शीतको हरणकर्ता, (६) शीतप्रकृतिवालोंके हृदयको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(७१८) मूली

संस्कृत, मूलक, **फारसी**, तुर्ब, **अरबी**, फजल, **इंग्रेज़ी**, रेडीश, **स्वरूप**, पत्ते हरे और जड़ सफ़ेद होतीहै, **स्वाद**, तीक्ष्णतालिये मीठी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, अफरा करनेवाली, **दर्पनाशक**, नमक और जीरा, **प्रतिनिधि**, शलगम, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आहारको पाचनकर्ता,(२) दीर्घपाकी(देरमें पचनेवाली) (३) बवासीरको लाभप्रद, (४) इसकी पकाईहुई तरकारी मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक है, (५) वृक्क और वस्तिकी पथरीको तोड़कर निकालनेवाली, (६) पुरानी खांसी और सांद्ररसको हरण करनेवाली,(७) यकृत्के रोधकी उद्घाटक,(८) पीलियाको लाभप्रद (९) कफको छांटनेवाली, (१०) वातल, (११) आमाशयको बिगाड़ने-

CC0. Gurukul K...

वाली, (१२) इसके खानेसे जूंए बहुत पैदा होतेहैं, (निर्विषैल)

(७१९) मूलीके बीज

संस्कृत, मूलकबीज, **फारसी**, तुख्म-तुर्ब, **अरबी**, बजरुल्फजल, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, तीखे और कड़वे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्क और यकृत्को, **प्रतिनिधि**, हब्बुल्रशाद, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) वायु और शोथको लयकर्ता, (३) वातल, (४) ओजप्रद, (५) वमनप्रद,(६) यकृत्की शीतशोथको और प्लीहकी शोथको गुणप्रद,(७)मुख(चहरे)की श्यामता, झाईं और काले दागोंको दूर करनेवाले, (८) मुखके रूपको शोधनकरनेवाले, (९) सिरके बालोंको गिरानेवाले हैं, (निर्विषैल)

(७२०) मेथीके बीज

संस्कृत, मेथिकाबीज, **फारसी**, तुख्मशमलीत, **अरबी**, बजरुल्हलबह, **इंग्रेज़ी**, फेनुग्रीक, **स्वरूप**, ललाईलिये पीले, **स्वाद**, कड़वे, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम प्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, अलसी, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (४) वायुको हरणकर्ता, (५) शीतरोगोंको जैसे कि अपस्मार (मिरगी) अर्दित, पक्षवध और गठिया इत्यादिको गुणप्रद, (६) इन्होंका लेप शोथको लयकारक है,(७)कानकी पीड़ा(कानके दर्द) को लाभप्रद हैं, (निर्विषैल)

(७२१) मेथीका साग

संस्कृत, मेथिकाशाक, **फारसी**, तरहशमलीत, **अरबी**, बुकलतुल्हलबह, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ सुगंधियुक्त कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गरम प्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, खटाई और घी, **प्रतिनिधि**, शलगमका शाक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके पत्ते अंतर्मलको पक्व और समपक्वकर्ता हैं (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) वायु और शोथको लयकर्ता, (४) मूत्रल, (५) शीतके रोग, कमरकी पीड़ा और प्लीहके शोथको लाभप्रद, (६) गर्भाशयकी पीड़ा और वस्तिके शीतको गुणप्रद, (७) सिर्काकेसाथ इसका लेप बाह्य और अभ्यंतरिक शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(७२२) मैदालकड़ी

अरबी, मगास और कल्ज, **स्वरूप**, बाहरकाली और भीतरसे पिलोंईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, एक वृक्षकी प्रसिद्ध जड़ है, **हानिकर्ता**, वस्तिको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, बालछड़ और अकरकरा, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) शोथ और वायुको लय-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कर्त्ता, (२) बद्धक, (३) स्नायुओंको बलप्रद, (४) ऐंठेहुए अंगको और ओजको बलप्रद, (५) शरीरको बृंहण-कर्त्ता, (६) शिरके रोगोंको लाभप्रद, (७)वमन(कै)और पेटकी पीड़ाको गुणप्रद, (८) अवयवोंके टूटनेको और चोटको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७२३) मैनफल

संस्कृत, मदनफल, **फारसी**, जोजुल्कै, **इंग्रेज़ी**, रेन्डीआड्यूमेटोरम्, **स्वरूप**, पिलोंईलिये लाल, **स्वाद**: कड़ुआ, **पहिचान**, जंगली अंजीरके समान एक फल है, इसके बीज बिहीदानेजैसे होतेहैं, इसका गूदा काममें आताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष,**हानिकर्त्ता**,यकृत्को, **दर्पनाशक**, गोंद और मुलहटीका सत्त, **प्रतिनिधि**, बूरा और राई, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ़को छांटनेवाला, (२) रेचक (दस्तावर) (३) मस्तिष्कसंबन्धी रोगोंको गुणकर्त्ता, (४) स्नायुके रोगोंको लाभप्रद, (५) पक्षवध, अर्दित, खांसी, श्वास, हांपनी, कोढ़ और फोड़े फुन्सियोंको लाभकारक है, (६) वायु और पेटके अफराको लयकारक है, (७) इसके स्वरसमें कपड़ेको भिगोकर योनिमें रक्खे तो योनिको संकुचित करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७२४) मैनसिल

संस्कृत, मनःशिला, **अरबी**, जरनेखएहमर, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, फीकी और दुर्गंधियुक्त,**पहिचान**, गंधककीतरह खानोंसे पैदा होनेवाली एक वस्तु है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्त्ता**, दोषोंको सड़ानेवाली, **दर्पनाशक**, बड़ी हरड़का बक्कल, **मात्रा**, १ माशा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथ और प्रकृतिको मृदुकर्त्ता, (२) कफ़, रक्तविकार और विषकी नाशक, (३) सर्दीकी खांसीको गुणप्रद, (४) स्वरशोधक, (५) मेदाको हरणकर्त्ता, (६) इसका लेप सूखी और तर खुजलीको गुणप्रद है (निर्विषैल)

(७२५) मंहदी

संस्कृत, रंजिनी, **फारसी**, हिना, **अरबी**, हिना, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी और कसेली, **पहिचान**, चार पांच गज़का एक झाड़ होताहै, इसके पत्ते और फल काममें आतेहैं, इसके सूखे पत्ते बाल, हाथ और पैर इत्यादि रंगनेके काममें आतेहैं, **प्रकृति**, ठंडी और बद्धक तथा नसोंको जोड़नेवाली है, **हानिकर्त्ता**, तालु और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा और लुआबदार वस्तु, **प्रतिनिधि**, मुंडी, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रक्तशोधक, (२) त्वचाके रोग (खालकी बीमारी) कोढ़, आतिशक और ताऊनको लाभप्रद है, (३) आमाशय, यकृत्, प्लीह, मूत्रमार्ग, वस्ति और गर्भा-

शयके रोगोंको गुणप्रद, (४) पीलियाको गुणप्रद, (५) वृक्क और वस्तिकी पथरीको खंडनकर्ता, (६) मूत्रकृच्छ्रको लाभप्रद, (७) इसके पत्तोंके काढ़ेकी कुली मुंहके आनेको गुणकारक है, (८) इसका लेप सूजन और छालोंकी जलनको दूर करनेवाला है, (९) इसके फूलको कपड़ोंमें रखनेसे कीड़ा नहीं लगसकता, (निर्विषैल)

(७२६) मोचरस

संस्कृत, मोचरस, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, लसयुक्त फीका, **पहिचान**, सैमरके वृक्षका प्रसिद्ध गोंद है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, शरीरमें रूक्षताप्रद, **दर्पनाशक**, खांड और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, अनारका छीलका, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) गरिष्ठ, (२) पेटको गुंभ करनेवाला, (३) स्तम्भनकर्ता, (४) वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (५) आतिसार (दस्त) और आर्तवका रुद्धक, (६) कच्चे मलको छांटताहै, (७) रुधिर, पित्तके विकार और अवयवोंके दाह (जलन) को हरणकर्ता, (८) पारद सेवनसे पैदाहुए मुखके प्रकोपका नाशक, (९) इसके द्वारा भिगोयाहुआ कपड़ा गर्भाशयमें रक्खे तो गर्भाशयकी आर्द्रताको शोषण करनेवाला है, (१०) दांतोंके मंजनमें इसका योग करे तो हिलतेहुए दांतोंको दृढ़ करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७२७) मोती

संस्कृत, मौक्तिक, **फारसी**, मूर्वारीद और दुर, **अरबी**, लूलू, **इंग्रेज़ी**, पर्ल, **स्वरूप**, चमकीला और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध क़ीमती रत्न है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **दर्पनाशक**, मूंगा, **प्रतिनिधि**, सफ़ेद और चमकीला सीप, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रसन्नताप्रद, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) अवयवोंको और विशेषतः उत्तमांगको बलप्रद, (४) स्नायु और प्राणोंको बलप्रद, (५) मुखसे रुधिरके आनेको गुणकर्ता, (६) रक्तस्रावका रुद्धक और बद्धक, (७) पित्तज अतिसार और रुधिरज अतिसारका बद्धक, (८) आर्तवका रुद्धक, (९) अर्श (बवासीर) को हरणकर्ता, (१०) हृदय, यकृत्, आमाशय और वृक्कके रोगोंको गुणकर्ता, (११) रोधका उद्घाटक, (१२) इसका नेत्रांजन (सुरमा) नेत्रके विकार, धुंध, जाला, मांड़ा और नाखुनाको गुणकारक है, (१३) बिना पीसेहुए इसका सेवन किसी प्रकार उचित नहींहै,

(७२८) मौंठ

संस्कृत, मकुष्ठ, **फारसी**, माशहिंदी, **स्वरूप**, ललोईलिये, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध अनाज है, **प्रकृति**,

२ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अत्यन्त अधोवायुको उत्पन्न करनेवाली, **दर्पनाशक**, गायका दूध, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शीघ्रपाकी, (२) वद्धक, (३) पेटमें गुड़गुड़ाहट करनेवाली, (४) रक्तशोधक, (५) लघु आहार, (६) नेहरुआको गुणप्रद, (७) इसकी जड़ नशा करनेवाली है, (८) शोथको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(७२९) मौम

संस्कृत, सिक्थक, **फारसी**, मोंम, **अरबी**, शमअ्, **स्वरूप**, पीला और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, चिकना और बेस्वाद, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, आमाशयको और भूंखको कम करनेवाला, **दर्पनाशक**, बिनोला और शहद, **प्रतिनिधि**, बाकलाका चून, **मात्रा**, १॥। माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (३) स्नायुओंको मृदुकर्ता, (४) दर्दको शांतिप्रद, (५) इसका मलना चोटकी धमकको हरणकर्ता है, (६) आंतरिक व्रण (भीतर घाव) और पुराने दस्तोंको लाभकर्ता, (७) छाती और पसलीके दर्दको और उरःक्षतको लाभकर्ता, (८) इसकी धूनी अवयवोंके दर्दको लाभप्रद है, (९) यदि कुछ दिन लगातार चनेकी बराबर इसकी गोली खाया करे तो ओजको चालन करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७३०) मोमयाई

फारसी, मोमयाई, **अरबी**, अरकुज्जब्बाल और हाफिजुल् अजसाद, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, पर्वती वृक्षोंकी एक चिकनाई है जिसको कि औटाकर जमातेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और प्लीहको, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और माउल्असूल, **प्रतिनिधि**, हजरुल्यहूद, **मात्रा**, एक जौ अथवा दो जौके बराबर है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्राण, हृदय, स्नायु और आन्तरिक अवयवोंको बलप्रद, (२) प्रसन्नताप्रद, (३) ठंडे मलको लयकर्ता, (४) वाह्य अवयवोंको बलप्रद, (५) स्निग्धताको शोषणकर्ता (६) ओजवर्द्धक, (७) रोधकी उद्घाटक, (८) कांतिप्रद, (९) कफजशोथको लयकर्ता, (१०) इसको दूध और घीमें मिलाकर खावे और लगावे तो अंग भंग— होना, भीतरी चोट और व्रण इन सबको दूर करनेवाली है, (निर्विषैल)

मोलसरी (७३१)

संस्कृत, बकुल, **स्वरूप**, जिसका फूल छोटा और सफ़ेद तथा फल खिन्नीके बराबर लाल होताहै, **पहिचान**, एक हिंस्तानी प्रसिद्ध वृक्ष है, इसके फल बहुत काममें आतेहैं, **प्रकृति**, इसका फल २

कक्षामें ठंडा और रूक्ष है तथा फूल १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, यकृत्को और अफरा करनेवाला, **दर्पनाशक**, घी, **प्रतिनिधि**, बबूलकी फली, **मात्रा**, ६ माशेसे एक तोलातक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसके फल और बीज वीर्यको रोकनेवाले हैं (२) स्तम्भनकर्ता (३) वीर्यस्राव और वायुको हरणकर्ता, (४) बद्धक, (५) उदर (पेट) को गुंम करनेवाला, (६) इसके फूलका स्वरस शिरकी पीड़ाको गुणकारक है, (७) इसकी छालका स्वरस आमाशय, हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद है, (८) इसके स्वरसकी नस्य मस्तिष्कको बलप्रद और प्रसन्नताप्रद है, (९) इसके फूलोंका मंजन दांतोंके दर्दको शांतिप्रद है, (१०) मसूढ़ोंको दृढकर्ता, (११) इसके फूलोंको सुहागा और गुलाबजलमें पीसकर लेपकरे तो दादको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७३२) मंड़ुआ

संस्कृत, मरुवक, **फारसी**, मंडुआ, **स्वरूप**, बाहर लाल और भीतरसे सफ़ेद होताहै, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, काकनजैसा एक अनाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अफरा करनेवाला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी, (२) रोधको उत्पन्नकर्ता, (३) अल्पाहार, (४) अत्यंत गुरु, (५)गंवार और गोमांस भक्षियोंका आहार है, (६) इसकी पोटलीका सेक शोथको लयकारक है, (७) मकड़ीके विषको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(७३३) यशब

फारसी, संगयशम, **अरबी**, हजरुल्यश्फह, **स्वरूप**, अनेक तरहका, सफ़ेदी लिये पीला एक पत्थर है, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, चमकदार एक कीमती पत्थर है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, पुखराज, **मात्रा**, १ माशा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) हृदय और आमाशयको बलप्रद (२) हृदयकी व्याकुलता और विस्वासाको अत्यन्त गुणकर्ता, (३) मस्तिष्कको बलप्रद, (४) प्रायः मस्तिष्क संबंधी रोगोंको लाभकर्ता, (५) अपस्मार (मिरगी) को लाभप्रद, (६) आन्तरिक जमेहुए रुधिरको पिघलानेवाला, (७) भीतरे व्रण (जख़म) को गुणप्रद, (८) अपने पास रखनेसे हृदयकी व्याकुलता और विस्वासाको अद्भुत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७३४) याकूत (मानिक)

संस्कृत, माणिक्य, **फारसी**, याकूत, **अरबी**, याकूत, **इंग्रेज़ी**, रूबी, **स्वरूप**, चमकीला और लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, कठोर और चमकीला एक कीमती प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति**, समान गुणवाला, **दर्पनाशक**, पन्ना, **प्रतिनिधि**, तामड़ा, **मात्रा**,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

३ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) रूक्ष-तापद, (२) हृदय और उत्तमांग (रईसा) को बलप्रद, (३) प्रायः विषोंका दर्पनाशक, (४) हृदयकी व्याकुलता और बिस्वासाको हरणकर्ता, (५) रक्तस्रावको रोकनेवाला, (६) रक्तशोधक, (७) अपस्मार (मिरगी) को दूर करनेवाला, (८) महामारीकी वायुके विकारोंको हरणकर्ता, (९) वास्तविक उष्णता और दृष्टिके बलका रक्षक, (१०) भीतरे जमेहुए रुधिरको फाड़नेवाला, (११) रुधिरको लय करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७३५) रतालू

स्वरूप, ललोईलिये भूरा और पिलोईलिये भूरा, **स्वाद,** कुछ मीठा और फीका, **पहिचान,** ज़िमीक़ंदके समान एक प्रसिद्ध क़ंदशाक है, **प्रकृति,** ठंडा और तर, **हानिकर्ता,** दीर्घपाकी, **दर्पनाशक,** मांस और गरम मसाला, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पित्त और गरमीका नाशक, (२) वीर्य और शरीरकी शक्ति तथा ओजको बढ़ानेवाला, (३) बृंहणताप्रद, (४) बद्धक शक्तिके होतेभी प्रकृतिको मृदुकर्ता और वायुको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(७३६) रतनजोत

फारसी, नश्कार और धोचोंबह, **अरबी,** अब्रूखिलसाय, **स्वरूप,** पत्ते काले और जड़ लाल होतीहै, **स्वाद,** कड़वी, **पहिचान,** जिसके पत्ते काहूके पत्तेजैसे होतेहैं एक रूखड़ी है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** मस्तिष्कको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक,** रोग़नबनफसा और रोग़न मगजकद्दू, **प्रतिनिधि,** अक़हवां, **मात्रा,** ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पित्तज तिक्त दोषोंको लयकर्ता, (२) पक्षवधको लाभप्रद, (३) अतिसारका बद्धक, (४) आर्तवप्रवर्तक, (५) पथरीका नाशक, (६) पीलिया और जीर्णज्वरको गुणकर्ता, (७) इसका लेप प्लीह और शोथको गुणप्रद है, (८) सफ़ेद दाग़, झांई, मुखकी श्यामता (स्याही) और कंठमालाको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७३७) रस पौंड़े (ऊख) का

फारसी, अफशुर्दहनैशकर, **अरबी,** उसारयेकसबुश्शकर, **स्वरूप,** गदला और सफ़ेद, **स्वाद,** अत्यन्त मीठा, **पहिचान,** ऊखको दबाकर स्वरस निकालतेहैं, प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** गरम और तर, **हानिकर्ता,** अफरा करनेवाला और कफ तथा पित्तको प्रकट करनेवाला, **दर्पनाशक,** दूध, **प्रतिनिधि,** खिजूरका स्वरस, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) अहारपाचक, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) इसमें पकेहुए चांवल शरीरको बृंहणकर्ता हैं, (४) प्रकृतिको आनन्दप्रद, (५) यदि इसमें एक पत्ती जौकी मिलावे तो अनेक दस्त आतेहैं, (निर्विषैल)

(७३८) रसौत

संस्कृत, रसांजन, **फारसी,** हजुजहिन्दी,

इंग्रेज़ी, इक्सट्रेक, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, अत्यंत कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, कोई समान प्रकृतिवाली और कोई गरम कहतेहैं, **हानिकर्ता**, तिल्लीको, **दर्पनाशक**, अनीसून और मस्तगी, **प्रतिनिधि**, फोफिल और चंदन, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) मलको पक्कर्ता, (३) शीत,शोथ और आंतरिक शोथको लयकर्ता, (४) अतिसार, दैहिक स्निग्धताका स्राव और प्रस्वेदके स्रावको रोकनेवाली, (५) मुखसे रुधिरका आना, मूत्र मार्गका क्षत, हलीमक, प्लीहका शोथ और यकृत्की पीड़ाको गुणकारक है, (६) इसका लेप शोथको लयकारक है, (७) नेत्रविकारको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७३६) रसकपूर

संस्कृत, रसकपूर, **स्वरूप**, सफ़ेद, **पहिचान**, शिंगरफकी तरह खानसे निकलनेवाली एक प्रसिद्ध वस्तु है, कोई सफ़ेद शिंगरफही कहतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उत्तमांगोंको, **दर्पनाशक**,गायका दूध, **प्रतिनिधि**, जमालगोटा, **मात्रा**, १रत्ती, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मसूरिका (चेचक) अत्यन्त खुजली और उपदंश (आतिशक) को गुणकर्ता, (२) शहदकेसाथ शीघ्रही वीर्यके स्खलित होनेको लाभप्रद, (३) विना शोधन कियेहुए इसका खाना उचित नहींहै, (४) तैलके साथ इसका लेप त्वचाके रोगोंका नाशक है, (निर्विषैल परंतु अधिक मात्रासे घातक है)

(७४०) रहेश

पहिचान, एक प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी ओषधी है, **प्रकृति**, गरम, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रेचक, (२) वायुको हरणकर्ता, (३) यकृत् और प्लीहके रोग तथा जलोदरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७४१) रांगा

संस्कृत, बंग, **फारसी**, अर्ज़ीर, **अरबी**, रसासुल्अबियज, **इंग्रेज़ी**, टीन, **स्वरूप**, चमकीला और सफ़ेद, **स्वाद**, कसेला और फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, घातक है, **दर्पनाशक**, वमन करना और शहद, **प्रतिनिधि**, सुर्मा, **मात्रा**, २ रत्ती, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका नेत्रांजन (सुरमा) आंखोंकी ललोई, पलकोंकी ललोई और कीचड़ोंको हरणकर्ता है, (२)गुलरोग़नके साथ गुदाकी सूजन, बवासीर और खुजलीको लाभप्रद है, (३) इसकी भस्म प्रमेहको गुणकारक है, (घातक विष है,)

(७४२) राई

संस्कृत, राजिका **अरबी**, खर्दल, **इंग्रेज़ी**, मस्टर्डसीडम्, **स्वरूप**, सफ़ेद,काली और लाल, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, त्वचामें व्रणोंको पैदा करनेवाली और मदकारक है, **दर्पनाशक**, कासनी और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सलगमके बीज और हरमल, **मात्रा**, ६॥ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजप्रद, (२) ओजको बलप्रद, (३) आनंदप्रद, (४) उदरके कृमियोंकी नाशक,(५) कांतिप्रद, (६) आमाशय और पाचनशक्तिको बलप्रद, (७) रक्तशोधक,(८) ठंडे श्लेष्माको शांतिप्रद, (९) वायुको लयकर्ता,(१०) अधोवायुको निकालनेवाली और लयकर्ता,(११)मूत्रल,(१२)कफज सन्निपात, पक्षवध, स्तम्भ, कम्प और सन्यासको गुणप्रद, (१३) तैलके साथ लिंगेंद्रियपर इसका लेप करें तो ओजको चालनकर्ता है, (१४) शहदकेसाथ धांस और यकृत्‌की पीड़ाको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७४३) राजईनर

स्वरूप, पिलोईलिये, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, एक हिन्दुस्तानी प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति**, ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, बद्धक, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ और पित्तविकारको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(७४४) रानीफूल (मोतिया, मोगरा)

स्वरूप, सफेद, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फूल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्त और राजयक्ष्माकी उष्णताको शांतिप्रद, (२) हिक्का (हुचकी) का नाशक, (३) इसका सूंघना हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद है, (४) इसके तैलको जलमें डालकर शरीर पर मले तो खाज और खुजलीको दूर करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७४५) राब

संस्कृत, फाणित, **फारसी**, अफशुर्देहमुकव्विमनेशर, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, गन्नेके रसकी पहिली गाढ़ी चाश्नी है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, खटाई, **प्रतिनिधि**, गुड़, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (२) तीनों दोषों (पित्त, वात और रुधिर, यह यूनानी मत हैं) को उत्पन्न करनेवाला, (३) अत्यंत पसीना लानेवाला, (४) रक्तशोधक है, (निर्विषैल)

(७४६) रामतुलसी

अरबी, फिरंजमुश्क, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, एक जातिकी हिन्दुस्तानी प्रसिद्ध तुलसी है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, बनफ्शह और सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, लोंग और बादरंजोरिया, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मस्तिष्कके रोधकी उद्घाटक, (२) नाकके नथनोंको स्वच्छकर्ता, (३) हृदय, यकृत् और आमाशयको बलप्रद, (४) आहारपाचक, (५) शोथको लयकर्ता, (६) हृदयकी व्याकुलता, सोदावी विस्वासा और कफज बिस्वासेको लाभप्रद है, (७)

क्षुधावर्द्धक, (८) पेचिश (मरोड़ा) और मसूढ़ोंकी पीड़ाको शांतिप्रद, (९) दांतोंको दृढ़ करनेवाली है, (निर्विषैल)

(७४७) रायतंज

अरबी, रायतंज, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद और काला, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, सनोवरका प्रसिद्ध गोंद है, पतला गाढ़ा और जमाहुआ तीन तरहका होताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, सूजन करनेवाला, **दर्पनाशक**, कलगाके रसका फाड़, **प्रतिनिधि**, अलकुल्बित्म, **मात्रा**, ६। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अंडेकी ज़र्दीकेसाथ श्वास और सूखी धांसको गुणकर्ता, (२) शुक्रमेह और वीर्यके पतलेपनको हरणकर्ता, (३) डाढ़के नीचे इसको दबावे तो तरखांसीको लाभप्रद है, (४) तमाकूकी तरह इसका धूम्रपान करे तो फेंफड़ेके क्षत (ज़ख़म) खांसी और धांसकेलिये अद्भुत लाभकारक है, (निर्विषैल)

(७४८) राल

संस्कृत, शालनिर्यास, **फारसी**, लालमगरवी, **अरबी**, कीर और कीकहर, **इंग्रेज़ी**, रेजीन, **स्वरूप**, सफ़ेदीलिये पीली और काली, **स्वाद**, दुर्गन्धियुक्त, कड़वी, **पहिचान**, दो तरहकी होतीहै एक तो सालके वृक्षका गोंद है और दूसरी खानोंसे निकलतीहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको और आमाशयको, **दर्पनाशक**, शहद और पोस्तके बीज, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) व्रणपूरक, (४) मलको शोधनकर्ता, (५) मलको पक्वकर्ता, (६) अपस्मार (मिरगी) सूखी धांस और श्वासको लाभप्रद, (७) जलोदरको गुणप्रद, (८) पुराने फोड़े और घावोंको इसका मरहम गुणकारक है, (९) इसका लेप व्रण और खुजलीके चिन्हों (निशान) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७४९) रासन (रायसन)

संस्कृत, रास्ना, **फारसी**, ज़ंजबीलशामी, **स्वरूप**, ललोईलिये, चमकीली, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त तीखी, **पहिचान**, सोंठकी तरह एक औषधीकी जड़ है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाप्रद है, **दर्पनाशक**, खट्टाअनार, ख़मीरा और बनफ्शह, **प्रतिनिधि**, ईरसा और बच, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) हृदय, आमाशयका मुख, पाचनशक्ति, ओज और वस्तिको बलप्रद, (३) मिरगी, मालीख़ोलिया, वेहशत और संतापको हरणकर्ता, (४) यकृत्के रोधकी उद्घाटक, (५) वायुको लयकारक है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

(७५०) रीठा

संस्कृत, अरिष्टक, **फारसी**, फिंदकहिन्दी, **अरबी**, बुन्दकहिन्दी, **इंग्रेज़ी**, सोपबेरीसोपनट, **स्वरूप**, बीज कालापनलिये भूरे होतेहैं, **स्वाद**, कड़ुआ, कसेला और तीखा, **पहिचान**, वमनप्रद, **दर्पनाशक**, सिकंबीन और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, ख़र्बूजाकी जड़, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) आमाशय और पाचनशक्तिको बलप्रद, (२) स्नायुओंको बलप्रद, (३) अवयवोंका ऐंठना, अर्दित, पक्षवध और अपस्मार (मिरगी) को गुणप्रद, (४) ओजप्रद, (५) गर्भाशयकी पीड़ाको हरणकर्ता, (६) यदि इसको जलमें पीसकर नस्य लेवे तो आधासीसीकी पीड़ा (दर्द) को लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७५१) रुद्राक्ष

संस्कृत, रुद्राक्ष, **स्वरूप**, पत्ती हरी और फल भूरा होताहै, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध वृक्ष है कि जिसके सूखे फलोंकी हिन्दूलोग माला बनातेहैं, **प्रकृति**, गरम और तर, कोई ठंडा कहतेहैं, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अवयवोंको बलप्रद, (२) दोषोंके विकार को हरणकर्ता, (३) ओजप्रद, (४) कृमिनाशक, (५) छोटे बालकोंके रोग, खांसी और प्रसूतको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७५२) रुदंती

संस्कृत, रुद्रदंती, **स्वरूप**, हरियालीलिये भूरी, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, एक बूटी है कि जो तराईमें ऊगती है, इसके पत्ते चनेके पत्तेजैसे होतेहैं, इसके ऊपर चींटी बहुत रहतीहैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अफरा करनेवाली, **दर्पनाशक**, मिश्री, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरको बलप्रद, (२) बृंहणताप्रद, (३) क्षुधावर्द्धक, (४) पाचनशक्ति और ओजको बलप्रद, (५) मस्तिष्क और उदरसंबंधी अवयवोंको हानिकारक है, (निर्विषैल)

(७५३) रूपामक्खी

संस्कृत, तारमाक्षिक, **फारसी**, चिर्कनुकरह, **अरबी**, अक्लीमायफिज्जह और खब्सुल्फिज्जह, **स्वरूप**, कालापनलिये सफ़ेद, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधप्रद, **दर्पनाशक**, बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, मुर्दारसंग, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दैहिक स्निग्धताको शोषणकर्ता, (२) दृष्टिकी शक्तिको बलप्रद, (३) शिरके रोग, नेत्रके क्षत, नखरोग और मोतियाबिन्दको गुणप्रद, (४) प्लीह (तिल्ली) की कठोरताको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(७५४) रेवन्दचीनी

संस्कृत, पीतमूली, **फारसी**, बेखर-

वास, अरबी, रावन्द, इंग्रेज़ी, रुवर्व, **स्वरूप,** कालापनलिये लाल, **स्वाद,** तीक्ष्ण गंधियुक्त तीखी और कड़वी, **पहिचान,** शलग़मकीतरह रेवासकी जड़ है, **प्रकृति,** मलमें गरमी पैदा करनेवाली, गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता,** वृद्ध और बालकोंको तथा नीचेके अंगोंको, **दर्पनाशक,** उन्नाव और बंबूलका गोंद, **प्रतिनिधि,** गुलाबके फूल और सेंमरकी जड़, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) रूक्षताप्रद, (२) दोषोंको स्वच्छकर्ता, (३) मलको समपक्वकर्ता, (४) गाढ़े और पतले दोषोंको अतिसार (दस्त) द्वारा निकालतीहै (५) मूत्र और आर्तव प्रवर्तक, (६) रोधकी उद्घाटक, (७) वृथामलसे अंत्रियों (आंतों) को शोधनकर्ता, (८) आध्मान और वायुको लयकर्ता, (९) शीतरोगको गुणकर्ता, (१०) पांडुके रोधका उद्घाटक है, (निर्विषैल)

(७५५) रेशयेवाला

फारसी, रेशयेवाला, **अरबी,** मू, **स्वरूप,** पिलोईलिये भूरा, **स्वाद,** कुछ कड़वा और तीक्ष्णगंधियुक्त, **पहिचान,** सोयाकेसमान एक ओषधी है, **प्रकृति,** आध्मानकर्ता और २ कक्षामें स्निग्धतालिये गरम, रूक्ष है तथा ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता,** प्लीहको, **दर्पनाशक,** अजमोद और शहद, **प्रतिनिधि,** जायफल और बालछड़, **मात्रा,** ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) बद्धक, (२) गरमीको बढ़ानेवाली, (३) प्राणोंको स्वच्छताप्रद, (४) रोध और रोमकूपोंकी उद्घाटक, (५) निद्राप्रद, (६) इसके हिमका सेवन श्लेष्माके रोधको और गिरनेकी चोटको गुणकारक है, (७) स्वरशोधक, (८) स्नायुके रोग, सन्धियोंकी पीड़ा, आमाशय, यकृत्, प्लीह, वृक्क, वस्तिका मांद्य और वस्तिकी पीड़ाको गुणकारक है, (९) वायु, आमाशय और गर्भाशयके आध्मानको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(७५६) रैबास

फारसी, रैवास, **अरबी,** रैबास, **स्वरूप,** पत्ते हरे और फूल लाल होताहै, **स्वाद,** खट्टा और कुछ मीठा, **पहिचान,** चुकंदरके समान एक ओषधि है, **प्रकृति,** ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता,** वक्षस्थल और ओजको तथा गुल्मप्रद है, **दर्पनाशक,** शहद और तरंजका मुरब्बा, **प्रतिनिधि,** हमाज और तरंत, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पित्तकी तीक्ष्णता (तेजी) का नाशक, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) उष्णप्रकृतिवालोंका आमाशय, यकृत् और उदरके अवयवोंको बलप्रद, (४) पित्तका दाह और पित्तकी वमनको शांतिप्रद, (५) इसका शर्बत उन्माद, वेहशत और दाहको लाभप्रद है, (६) गरमीके ज्वरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(७५७) रोग़न(तेल)बादाम

संस्कृत, वातादतैल **फारसी,** रोग़न-बादाम, **अरबी,** दुहनुल्लोज़, **स्वरूप,** सफ़ेद, **स्वाद,** कुछ मीठा, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** समान गुणवाला, **हानिकर्ता,** निर्बल अंत्रियोंको, **दर्पनाशक,** मस्तगी, **प्रतिनिधि,** पोश्तका तेल, **मात्रा,** ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) निद्राप्रद (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) मास्तिष्कको स्निग्धताप्रद, (४) स्वरशोधक, (५) रेचक ओषधियोंका दर्पनाशक, (६) आमाशय और स्नायुओंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(७५८) रोग़न बिलसां

फारसी, रोग़नबिलसां, **अरबी,** दुहनुल्बिल्सां, **स्वरूप,** सफ़ेद, **स्वाद,** बेस्वाद और कड़ुआ, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक,** दूध, **प्रतिनिधि,** नारियल अथवा ज़ीतूनका तेल, **मात्रा,** ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मस्तिष्क, स्नायु, आमाशय और गर्भाशयको बलप्रद, (२) आमाशय और यकृत्की कठोरताको मृदुकर्ता, (३) वृक्क और वस्तिकी पथरीका नाशक, (४) मस्तिष्क सम्बन्धी शीतरोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७५९) रोग़न भिलावा

संस्कृत, भल्लातकतैल, **फारसी,** रोग़न बलादर, **अरबी,** दुहनहब्बुल्फहम, **स्वरूप,** कालापन लिये, **स्वाद,** कड़ुआ, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** त्वचाको, **प्रतिनिधि,** ज़ीतूनका तेल, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) तीनों दोषों (वात, पित्त, कफ) को छांटताहै, (२) कुष्ठ (कोढ़) को लाभप्रद, (३) पेट और गुदाके कीड़ोंका नाशक, (४) त्वचामें व्रण करनेवाला और दाग़ करनेवाला, (५) प्रायः शीतकी पीड़ा (सर्दीके दर्द) को गुणकर्ता, (६) विशेषतः(ख़ासकर) संधिपीड़ा (जोड़के दर्द) को अत्यंत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७६०) रोग़न रेंडी (अरंड अंड)

संस्कृत, एरंडतैल, **फारसी,** रोग़नबेदअंजीर, **अरबी,** दुहनुल्खुरूअ्, **इंग्रेज़ी,** कास्ट्रायल, **स्वरूप,** सफ़ेद, **स्वाद,** बेस्वाद और फीका, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** गरम और तर, **हानिकर्ता,** आमाशयके मुखको, **दर्पनाशक,** भुनेहुए चना, **प्रतिनिधि,** ज़ीतूनका तेल, **मात्रा,** १ तोलेसे ३ तोलेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) आमाशयमें स्वच्छताप्रद, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) स्वास्थ्यका रक्षक, (४) आनन्दको उत्पन्नकर्ता, (५) अंत्रियोंके रोधको दूर करनेवाला, (६) रेचक, (७) जलोदरको गुणकर्ता, (८) वृषणों (फोतों) का शोथ (सूजन) कमर और वृक्कके गुल्मको गुणकारक है, (निर्विषैल)

CC0, Gurukul Kangri Collection

(७६१) रोग़न खशखाश

संस्कृत, खसबीजतैल, **फारसी**, रोग़न खशखाश, **अरबी**, दुहनुल्खशखाश, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, अफरा करनेवाला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) निद्राप्रद, (२) शिरःपीड़ाको शांतिप्रद, (३) मस्तिष्कको बलप्रद, (४) गरम और तर खांसीको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७६२) रोग़न अलसी

संस्कृत, अतसीतैल, **फारसी**, रोग़नकतां, **अरबी**, दुहनुल्कतां, **स्वरूप**, कुछ पीला, **स्वाद**, हीकदार कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) क्षुधाप्रद, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) कफविकारको हरणकर्ता, (४) मूत्रल, (५) दृष्टिको बलप्रद, (६) अन्त्रियोंके व्रण और अंत्रियोंकी लेखनताको गुणप्रद, (७) इसका मर्दन (मालिश) दाद और शरीरकी रूक्षताको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(७६३) रोग़न पेड़

संस्कृत, देवदारुतैल, **फारसी**, रोग़नदेवदार, **अरबी**, दुहनुल्शजरतुज्जिन, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, गांधियुक्त कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) फोड़े और फुन्सीयोंको लाभप्रद, (२) वातरक्त, आमवात (गठिया) खुजली और कुष्ठको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(७६४) रोग़न ज़ीतून

फारसी, रोग़नज़ीतून, **अरबी**, दुहनुल्ज़ीत, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, दूध और शहद, **प्रतिनिधि**, अंडीका तेल, **मात्रा**, ३ माशेसे ४ तोलेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्नायुओंकी सर्दीको हरणकर्ता और बलप्रद, (२) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (३) शोथको लयकर्ता, (४) उदरके कृमियों (कीड़ों) का नाशक, (५) अन्त्रियोंके शूल (मरोड़ा) को गुणकर्ता, (६) इसका लेप और मर्दन शीतकी पीड़ाको लाभप्रद है, (७) व्रणको शीघ्रही भरनेवाला है, (निर्विषैल)

(७६५) रोग़न सरसों

संस्कृत, सर्षपतैल, **फारसी**, रोग़नसरशफ, **अरबी**, दुहनुल्हर्फ, **स्वरूप**, पिलोईलिये, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, आमाशयको, **दर्पनाशक**, खटाई और दही, **प्रतिनिधि**, सफ़ेद तिलीका तेल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) स्नायुयोंको बलप्रद, (२) शरीरको बृंहण और दृढ़कर्ता, (३) शीतज और कफज रोगों-

Haridwar. Digitized by eGangotri

स्नायुओंकी ऐंठनको गुणकारक है, (५) इसका लेप शीतके मलको लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(७६६) रोग़न चमेली

फारसी, रोग़न यासन, **अरबी**, दुहन यासमीं, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, मक्खन, **प्रतिनिधि**, ज़ीतूनका तेल, **मात्रा**, २॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) उदरके कृमियोंका नाशक, (२) गुदाके कीड़ोंका नाशक, (३) कोढ़ और खुजलीको लाभप्रद, (४) कानके रोगोंको गुणकर्ता, (५) चमेलीके फूलोंमें बसाहुआ तेल सिरमें डाले तो मस्तिष्क सम्बंधी अवयवोंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(७६७) रोग़न काहू

फारसी, रोग़न काहू, **अरबी**, दुहनुल् खस, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, बादाम रोग़न, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कठोरताको मृदुकर्ता, (२) मस्तिष्कको स्निग्ध (तर) रखताहै, (३) निद्राप्रद, (४) मालीख़ोलिया और मिरगीको गुणकर्ता, (५) मद्यकी मत्तता (मस्ती) को हरणकर्ता, (६) प्रायः पृष्ठ (पीठ) के गरम रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७६८) रोग़न कर्र(ड़)

फरसी, रोग़न तुख़्ममास्फ़र, **अरबी**, दुहनुल्हब्बुल्कर्तम, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, तीखा और कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और दृष्टिको, **प्रतिनिधि**, ज़ीतूनका तेल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायु और कफके विकारोंको हरणकर्ता, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३) कफका वर्द्धक, (४) आमाशयके दाहको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(७६९) रोग़न अख़रोट

फरसी, रोग़न चारमग़ज़, **अरबी**, दुहनुल्लोज, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको गरिष्ठ है, **प्रतिनिधि**, बादाम रोग़न, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) वायुके विकार, कफ और पित्तके विकारोंको हरणकर्ता, (२) ओजको बलप्रद, (३) केशों(बालों) को बलप्रद, (४) कफको अधिक उत्पन्नकर्ता, (५) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (६) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (७) प्रसन्नताप्रद है, (निर्विषैल)

(७७०) रोग़न अगर

फारसी, रोग़न अगरहिन्दी, **अरबी**, दुहनुलूऊद, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, सुग-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digiti...

न्धियुक्त कुछ कड़ुआ, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, गरम, प्रतिनिधि, देवदारुका तेल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका मर्दन (मालिश) स्नायुओंको दृढ़कारक है, (२) गठिया और खुजलीको गुणकर्ता, (३) पेटके कीड़ोंका नाशक, (४) इसका लेप ओजको चालनकर्ता है, (५) ओजकी शक्तिको अधिक करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७७१) रोग़न पलास

फारसी, रोग़न तुख़्मपलह, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कड़ुआ और कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम, **प्रतिनिधि**, महुआ और गिल्लूका तेल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ और पित्तके विकारोंको हरणकर्ता, (२) उदरके कृमियोंका नाशक, (३) इसका मर्दन(मालिश) अवयवोंके दाहको हरणकर्ताहै, (४) शीतके शोथ (सर्दीकी सूजन) को लयकर्ता है, (निर्विषैल)

(७७२)रोग़न खीरा और ककड़ी

फारसी, रोग़न तुख़्म ख़यारेन, **अरबी**, दुहनुल् बज़रुल्क़साय, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठण्डा और तर, **हानिकर्ता**, स्नायुओंको, **प्रतिनिधि**, काहूका तेल **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) गरमीके शोथको लयकर्ता, (४) प्रायः गरमीके रोगोंको गुणकारक है, (५) मस्तिष्क-सम्बन्धी अवयवोंके अनुकूल है, (६) कफको उत्पन्नकर्ता है, (निर्विषैल)

(७७३) रोग़न तुख़्म पेठा

फारसी, रोग़न तुख़्म कदूयरूमी, **अरबी**, दुहनुल् बज़रुल् मोहदबह, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठण्डा और तर, **दर्पनाशक**, रोग़न काहू, **प्रतिनिधि**, रोग़न मग़ज़कद्दू, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मस्तिष्कमें स्निग्धता (तरी) को उत्पन्नकर्ता, (२) शरीरको स्निग्ध रखताहै, (३) रूक्षताको हरणकर्ता, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) निद्राप्रद, (६) मालीख़ोलिया, अनिद्रा और स्नायुओंकी ऐंठनको गुणकर्ता, (७) नथनोंकी रूक्षता (खुश्की) को दूर करताहै, (निर्विषैल)

(७७४) रोग़न मग़ज़ कद्दू

फारसी, रोग़न मग़ज़कदूयशीरीं, **अरबी**, दुहनहब्बुल्करअ्, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ठण्डा और तर, **दर्पनाशक**, रोग़न काहू, **प्रतिनिधि**, रोग़न काहू, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शरीरको तर रखताहै, (२) मस्तिष्क (दिमाग़) में तरीको उत्पन्नकर्ता, (३) बलप्रद, (४) शरीर, दोनों नथने और कानकी रूक्षता (खुश्की) को दूर करताहै, (५) निद्राप्रद, (६) शरीरको बृंहण (मोटा) कर्ता, (७) पीनेसे, सूंघनेसे, टपकानेसे और लगानेसे मालीख़ोलिया

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

अतिनिद्रा, स्नायुओंकी ऐंठन, कानकी पीड़ा, सूखी खांसी और राजयक्ष्माको गुणकर्ता है, (८) प्रायः कठोरताको मृदुकर्ता, (९) शोथको लयकर्ता, (१०) ओजप्रद है, (निर्विषैल)

(७७५) रोग़न तिली (मीठा तेल)

संस्कृत, तैल, **फारसी**, रोग़न कुंजद, **अरबी**, दुहनुस्समसम्, **स्वरूप**, पिलोईलिये सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, समान गुणवाला, किसीके मतमें गरम है, **हानिकर्ता**, आमाशयको और पित्तको पैदा करनेवाला है, **दर्पनाशक**, क़न्द, **प्रतिनिधि**, रोग़न काहू और बादामरोग़न, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सम्पूर्ण अवयवोंको बलप्रद, (२) स्वास्थ्यका रक्षक, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (४) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (५) शरीरको मृदुकर्ता, (६) कांतिप्रद, (७) शरीरकी रूक्षता (खुश्की) और स्नायुओंकी रूक्षताको हरणकर्ता, (८) कफके विकारोंको हरणकर्ता, (९) वीर्यको अधिक उत्पन्नकर्ता, (१०) क्षुधावर्द्धक, मूत्रप्रवर्तक, (११) कर्णशूल (कानका दर्द) व्रण, क्षत, चोट और पीड़ाको गुणकर्ता, (१२) आगसे जलेहुएको लाभकर्ता, (१३) लिंगेन्द्रियके क्षतोंको गुणकर्ता, (१४) सम्पूर्ण तेलोंसे यह तैल उत्तम है, (निर्विषैल)

(७७६) रोग़न गुल्लू (महुआ)

फारसी, रोग़न महुआ, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और कसेला, **पहिचान**, महुएकी मिंगीका प्रसिद्ध जमाहुआ तेल है, **प्रकृति**, ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, नेत्रोंको और कफको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, नारियलका तेल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ और पित्तके विकारोंको हरणकर्ता, (२) अवयवोंके दाहको लाभकर्ता, (३) बृंहणताप्रद, (४) त्वचाकी रूक्षताको हरणकर्ता, (५) प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७७७) रोग़न मालकांगनी

संस्कृत, ज्योतिष्मती तैल, **फारसी**, रोग़न मालकंगनी, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, गरम और तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **प्रतिनिधि**, तिलीका तेल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओज, मस्तिष्क और धारणाशक्तिको बलप्रद, (२) गठिया, कमर और कूल्हेकी पीड़ाको लाभकर्ता, (३) इसका मर्दन (मालिश) ओजको बलप्रद और चालनकर्ता है, (४) स्नायुओंकी ऐंठन और प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धीरोग जैसे अर्दित, पक्षवध इत्यादिको गुणकर्ता, (५) हथेलीमें इसकी मालिश (मलना) करे तो दृष्टिबलको बलिष्ठकर्ता है, (निर्विषैल)

(७७८) रोग़न गिरी अम्बह

फारसी, रोग़न तुख़्मअम्बह और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रोग़न खिस्तयेअम्बह, अरबी, दुहनहब्ब-अम्बज, स्वरूप, कलौंचीलिये, स्वाद, कसेला, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ठंडा और तर, कोई रूक्ष कहतेहैं, हानिकर्ता, रोध करनेवाला, दर्पनाशक, नमक, प्रतिनिधि, तिलीका तेल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) आमाशयको बलप्रद, (२) पित्तको उत्पन्नकर्ता, (३) कफ और वायुके विकारोंको हरणकर्ता, (४) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (५) आगके जलेहुएपर लगावे तो अत्यंत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७७९) रोग़न नीम

संस्कृत, निम्बतैल, फारसी, रोग़न-खिस्तये नीब, अरबी, दुहनुल् नीब, स्वरूप, कलौंचीलिये, स्वाद, दुर्गंधियुक्त, कड़ुआ, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, आमाशय और यकृत्को, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) आहार पाचक, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) कफ-विकारको हरणकर्ता, (४) उदरके कृमियोंका नाशक, (५) मूर्च्छाको हर-णकर्ता, (६) कोढ़, कमरकी पीड़ा और गठियाको गुणकारक है, (७) नाड़ीव्रण (नासूर) का पूरक है, (८) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (९) व्रणको गुण-कर्ता, (१०) दृष्टिबल और ओजका वर्द्धक है, (निर्विषैल)

(७८०) रोग़न नारियल

संस्कृत, नारिकेर तैल, अरबी, दुह-नुल् नारजील, स्वरूप, जमाहुआ, सफेद, घीजैसा, स्वाद, फीका और कुछ कड़ुआ, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ठंडा और तर, हानिकर्ता, आमाशयको, प्रतिनिधि, महुआका तेल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (३) मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको गुणकर्ता, (४) शरीरकी रूक्षता-को हरणकर्ता, (५) शरीरको बृंहणकर्ता, (६) बालोंको बढ़ानेवाला और काले करने-वाला है, (निर्विषैल)

(७८१) रोग़न बाबूना

फारसी, रोग़न बाबूना, अरबी, दुहनुल् बाबूंज, स्वरूप, कुछ लाल, स्वाद, कसेला और कड़ुआ, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, गरम और तर, हानि-कर्ता, सिरमें दर्द करनेवाला, दर्पनाशक, नीलोफरका तेल, प्रतिनिधि, मालकांगनीका तेल, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शोथको लयकर्ता, (२) चोट और पीड़ाको गुणकर्ता, (३) कमरकी पीड़ा, गठिया, कूल्हे और जांघकी पीड़ाको गुणकर्ता, (४) विशेषतः वृषणोंकी शोथको लाभप्रद है, (५) मस्तकके रोगोंको गुणदायक है, (निर्विषैल)

(७८२) रोग़न गरजन

अरबी, दुहनुल् करजन, स्वरूप, लाल, स्वाद, कड़ुआ, पहिचान, बंगालमें

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होनेवाले एक वृक्षकी जड़का तैल है, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** आमाशयको और मस्तकमें दर्द करनेवाला, **प्रतिनिधि,** देवदारुका तैल, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) शोथको लयकर्ता, (२) दादको गुणकर्ता, (३) इमारतकी रंगतके काममें आताहै, (४) खाया नहीं जाता, (५) चोट इत्यादिमेंभी लगायाजाताहै, (निर्विषैल)

(७८३) रोहिनी

संस्कृत, मांसरोहिणी, **स्वरूप,** हरा, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** एक प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी औषधि है, **प्रकृति,** गरम और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) आमाशयके कीड़ोंको निकालनेवाली, (२) गलेके रोगोंको गुणकर्ता, (३) हृदयकी व्याकुलता और धड़कनेको गुणप्रद, (४) प्रायः हृदय (दिल) के रोगोंको लाभप्रद, (५) कफ और पित्तके विकारोंको हरणकर्ता, (६) खांसी, श्वास (सांस) और ज्वरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७८४) रोहिस (सौंधिया) तृण

संस्कृत, कतृण, **स्वरूप,** हरा, **स्वाद,** कडुआ, **पहिचान,** अजखरजैसी एक औषधि है, **प्रकृति,** ठंडी, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) हृदयकी गरमी और आमाशयके दाह (जलन) को दूर करतीहै, (२) प्रायः अवयवोंके दाहको लाभप्रद, (३) श्वासके संकोच (तंगी) को और खांसीको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७८५) लखोट (लुकाट)

स्वरूप, पीला, **स्वाद,** पकाहुआ चाश्नीदार मीठा और कच्चा खट्टा होताहै, **पहिचान,** गुलाबजामनजैसा एक प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति,** ठंडा और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) पित्त और रुधिरकी तीक्ष्णताको दूरकरनेवाला है, (२) प्रायः पित्तज और रुधिरज रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७८६) लछमना (लछमनी) लक्ष्मणा

फारसी, सगशिकन और मोहरेग्याह, **अरबी,** वेरोजुस्सनम और असतुल्लफाहउल्बर्री, **स्वरूप,** सफ़ेद और भूरी, **स्वाद,** तीक्ष्णगंधियुक्त कड़वी, **पहिचान,** एक जंगली वृक्षकी जड़ है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता,** हृदयके प्राणोंको, **दर्पनाशक,** दालचीनी और शहद, **प्रतिनिधि,** धतूरा, **मात्रा,** २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इसकी जड़की छाल रूक्षताप्रद है, (२) अवयवोंको शिथिल और सुन्न करनेवाली, (३) केसरकेसाथ पीनेसे संधियोंकी पीड़ा (जोड़का दर्द) को गुणकर्ता, (४) शहदके साथ पित्तको वमनकेद्वारा निकालतीहै, (५) इसको गलेमें पहिने तो मिरगीकेलिये लाभप्रद है, (६) इसके मदका

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सेवन शरीरके दर्दको शांतिप्रद है, (७) दुःखित अवयवोंके छेदन (काटना) के समय इसको पिलातेहैं कि जिससे रोगी सुन्न होजाताहै और दुःख प्रतीत नहीं होता, (निर्विषैल)

(७८७) लजालू (छुईमुई)

संस्कृत, लज्जालू, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कसेला और कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, जंगली और नदियोंके किनारोंपर होनेवाली दो तरहकी होतीहै, इसके पत्ते बंबूलजैसे होतेहैं, इन दोनोंमें एक छाया पड़नेसे और दूसरी स्पर्श करनेसे कुम्हलाजाती है, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडी और तर, **हानिकर्ता**, प्लीहको, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, दफलीके पत्ते, **मात्रा**, अभक्ष्य है, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) कफ और स्वच्छवातको अतिसारद्वारा निकलतीहै, (४) यदि गरमीसे आर्तव रुकजावे तो उसको निकालनेवाली है, (५) प्रसवकालमें लाभप्रद, (६) गरमीके रोधकी उद्घाटक, (७) उपदंश, श्लीपद और कुष्ठको पिलानेसे और खिलानेसे गुणकारक है, (८) इसके स्वरसकी पट्टी पुराने व्रण (जख़म) और नाड़ीव्रण (नासूर) को गुणकारक है, (९) इसके स्वरससे पारेकी उत्तम भस्म तयार होतीहै, (निर्विषैल)

(७८८) लहसन

संस्कृत, लशुन, **फारसी**, शीर, **अरबी**, सोम, **इंग्रेज़ी**, गार्लीक, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, प्याजजैसी एक ओषधिकी जड़ है, **प्रकृति**, अन्नकी दर्पनाशक, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अधिक सेवन करनेसे आंखोंको बिगाड़नेवाली, **दर्पनाशक**, कतीरा, धनियां और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, प्याज, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) कांतिप्रद, (३) आमाशयकी स्निग्धताको शोषणकरनेवाली, (४) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (५) स्वरशोधक, (६) कंठशोधक, (७) धांस, श्वास और स्नायुके रोगोंको लाभकर्ता, (८) पक्षवध, अर्दित और कम्पको गुणकर्ता, (९) सर्दीकी कर्णपीड़ाको लाभकर्ता, (१०) स्वास्थ्यकी स्थितिकर्ता, (११) इसका लेप बाहरी और भीतरी त्वचामें व्रण (जख़म) करनेवाला है, (१२) इसका पाक ओजको बलप्रद है, (१३) पथरीकी नाशक है, (निर्विषैल)

(७८९) लिहसोड़ा

संस्कृत, श्लेष्मान्तक, **फारसी**, सपिस्तां, **अरबी**, सफिस्तां और दबिक, **स्वरूप**, कच्चा हरा और पकाहुआ गुलाबी होताहै, **स्वाद**, कच्चा फीका और पकाहुआ कुछ मीठा होताहै, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फल है, इसका शाकभी होताहै, **प्रकृति**, समान गुणवाला, **हानिकर्ता**, आमाशय

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

और यकृत्को, दर्पनाशक, उन्नाव और गुलाबके फूल, प्रतिनिधि, खतमी, मात्रा, २० दाने, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) पेट और छातीको नरम करनेवाला, (२) कंठके खुरखुरानेको और शोथको लाभप्रद, (३) पित्तजमलको अतिसारद्वारा निकालताहै, (४) कफज और रुधिरजमलको छांटनेवाला, (५) पित्त, रुधिरकी तीक्ष्णता (तेजी) और प्यासको शमनकर्ता, (६) मूत्रके दाह (पेशाबकी चिनक) को दूर करनेवाला, (७) आंतोंकी लेखनता और गरमीके ज्वरको गुणकर्ता, (८) श्वास, सूखी खांसी और छातीके दर्दको लाभकर्ता, (९) इसकी कोंपलें बहुमूत्रता और प्रमेहको लाभकारक हैं, (निर्विषैल)

(७६०) लहसन जंगली

संस्कृत, वनलशुन, **फारसी**, सीरदश्ती, **अरबी**, इस्कंदरयून, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, लहसनसे कुछ छोटी होतीहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और आंतोंको, **दर्पनाशक**, धनियां और खट्टा अनार, **प्रतिनिधि**, जंगलीप्याज, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायु और शोथको लयकर्ता, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) प्लीहके रोगोंको लाभकर्ता, (४) जलोदरको गुणकर्ता, (५) मूत्र और आर्तवकी अत्यंत प्रवर्तक, (६) त्वचामें व्रण करनेवाली है, (निर्विषैल)

(७६१) लाई

फारसी, कुंजदह, **अरबी**, अंजरूत और कोहलबाशी, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, जिसको अरबीमें सायका कहतेहैं एक कांटेदार वृक्षका गोंद है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता** आंतोंको, **दर्पनाशक**, बंबूलका गोंद और बादामरोगन, **प्रतिनिधि**, निशास्ता और एलुआ, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) शोथको लयकर्ता, (३) वायुको लयकर्ता, (४) रोधका उद्घाटक, (५) रूक्षताप्रद, (६) कफज मलको अतिसारद्वारा निकालता है, (७) व्रणपूरक, (८) पिच्छलता (लस) के कारण आंत और नसोंके मुखमें चिपककर रोधप्रद है, (९) गर्भको गिरानेवाला, (१०) बृंहणताप्रद, (११) आमाशयके कृमियोंका नाशक, (१२) त्वचाके चिह्नोंका नाशक, (१३) गठिया और व्रणसे खूनके बहनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७६२) लाख

संस्कृत, लाक्षा, **फारसी**, लाक, **अरबी**, लक, **इंग्रेज़ी**, सेललाक, **स्वरूप**, पिलाई लिये लाल, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, पुराने वृक्षोंसे निकलतीहै, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, तिल्ली और छातीको,

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दर्पनाशक, मस्तगी, **प्रतिनिधि**, रेवतचीनी और वंशलोचन, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) शोथको लयकर्ता, (३) दोषोंको शोधनकर्ता, (४) यकृत् और प्लीहके रोधकी उद्घाटक, (५) पक्षवध, खांसी, धांस, जलोदर और पीलियाको गुणकर्ता, (६) वृक्कके मांद्यको लाभकर्ता, (७) यकृत्को बलप्रद, (८) वायुको लयकर्ता, (९) शरीरको कृश करनेवाली, (१०) ओजको बलप्रद, (११) स्तम्भनकर्ता है, (निर्विषैल)

(७९३) लागयह

स्वरूप, कलोंचीलिये, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, एक दुधारी ओषधिका दूध है, इसके पत्ते गोल और पीले तथा फूल पीला होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आंतोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, फरासियून और महमूदह, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बलवान् रेचक, (२) अत्यंत वमनप्रद, (३) जलोदरको गुणकर्ता, (४) पीले पित्तको और दग्ध (जलेहुए) दोषोंको निकालनेवाला, (५) अपने प्रभावमें महमूदहके समान है, (६) जिस तालाबमें मछलियां होवें उस तालाबमें डालदेवे तो मछलियां मरकर ऊपर तैरनेलगतीहैं, (निर्विषैल किसीकी संमतिमें उपविष है)

(७९४) लाजवर्द

फारसी, लाजवर्द, **अरबी**, लाजवर्द, **स्वरूप**, सुनहरी बूंददार जंगाली, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति**, धुलाहुआ १ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, विना धुलाहुआ २ कक्षामें गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, आमाशयको, मूर्च्छा और व्याकुलताप्रद, **प्रतिनिधि**, अरमनी पत्थर, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कांतिप्रद, (२) दोषोंको शोधनकर्ता, (३) वातज मलको अतिसारद्वारा निकलताहै, (४) सांद्रदोषोंको निकालताहै, (५) मालीखोलिया, वृक्कशूल, बेहशत, संताप और वातजरोगोंको गुणकर्ता, (६) बद्धक, (७) मनको प्रसन्नताप्रद, (८) हृदयको बलप्रद, (९) नेत्रके रोग अर्थात् अक्षिपाक, अश्रुपाताधिक्य, जाला और मांड़ा इत्यादिको गुणकर्ता, (१०) उचित योगोंके साथ इसकी सलाई विशेषतः नेत्ररोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(७९५) लाल

संस्कृत, माणिक्य, **फारसी**, लाल, **अरबी**, लालबदुख्शां, **इंग्रेज़ी**, रूबि, **स्वरूप**, लाल और चमकीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक उत्तमोत्तम प्रसिद्ध क़ीमती पत्थर है, **प्रकृति**, कुछ गरमीलिये समानगुणवाला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्राणोंको प्रसन्नताप्रद, (२) हृदय,

...Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मस्तिष्क और शक्तिको बलप्रद, (३) स्नायु और दृष्टिको बलप्रद, (४) याकूत-एहमरसे अधिक प्रभावशाली है, (५) रक्तस्रावको दूर करनेवाला, (६) बवासीरके रुधिरका रुद्धक, (७) सम्पूर्ण वातज रोगोंको गुणकर्ता, (८) प्रायः विषोंका दर्पनाशक है, (निर्विषैल)

(७९६) लाला

फारसी, लालह, **अरबी**, शकायकने-श्रमा, **स्वरूप**, लाल और पीला, भीतरसे कुछ काला होताहै, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, जिसका झाड़ अफीमजैसा होताहै, एक दिखनौट ओषधिका फूल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्क और वस्तिको, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद,(२) रोध और रोमकूपोंका उद्घाटक, (३) इसका सुखाया हुआ फूल उदरके अवयवोंकी पीड़ाको गुणकारक है,(४) प्रायः अवयवोंकी पीड़ाको लाभप्रद, (५) इसके चूर्णको दूधके साथ पीवे तो मूत्र, आर्त्तव और दुग्धप्रवर्त्तक है, (६) ओजप्रद, (७) स्तम्भनकर्ता, (८) अवयवोंमें कुछ शिथिलता करनेवाला है, (निर्विषैल)

(७९७) लाल (लहालरा) साग

फारसी, कुशतह और हज़ारबंदक,**अरबी**, असीउल्लराई, **स्वरूप**, ऊदा और लाल, **स्वाद**, कुछ मीठा, **पहिचान**, कितनेही तरहका होताहै, एक प्रसिद्ध शाक है, **प्रकृति**, १ कक्षामें रूक्ष और ३ कक्षामें ठंडा, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, चंदन, अंजीर और शरबत बनफ्शह, **प्रतिनिधि**, चौलाई, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) मलको पक्वकर्ता, (३) रक्तस्रावका रुद्धक, (४) मुखसे रुधिरके आनेको गुणकर्ता, (५) रुधिरकी वमनको रोकनेवाला, (६) रक्तातिसारका बद्धक, (७) पुराने पित्तातिसारका बद्धक, (८) आर्त्तवका रुद्धक, (९) बाह्य और आभ्यन्तरिक उष्णताको शांतिप्रद, (१०) गुल्मको गुणकर्ता, (११) इसका लेप आमाशयके दाहको शांतिप्रद है, (१२) आमाशयको शीतल करनेवाला, (१३) इसके पत्तोंका स्वरस कानकी पीड़ाको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(७९८) लींमू (नींबू) काग़ज़ी

संस्कृत, निंबु, **फारसी**, लींमू काग़ज़ी, **अरबी**, लीमूं हामिज़, **इंग्रेज़ी**, लेमन्स, **स्वरूप**, पीला, कच्चा हरा होताहै, **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध खट्टा फल है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें तर, किसीकी सम्मतिमें २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, स्नायु, वक्षस्थल और ओजको, **दर्पनाशक**, उन्नाव और खांड़, **प्रतिनिधि**, नारंगी, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) यकृत्को बलप्रद, (२) दाह और तृषाको हरणकर्ता, (३) पीलिया, जीमिचलाना और पित्तजवमनको गुणकर्ता, (४)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दोषोंका शोधक, (५) पित्तज्वरको लाभकर्ता, (६) महामारीकी वायुके विकारोंको और कीड़े, मकोड़ोंके विषको हरणकर्ता, (७) नमक और काली मिरचकेसाथ विषूचिका (हैज़ा) को गुणकर्ता, (८) जस्तके बर्तनमें नीबूके स्वरसके साथ चाकसूको पीसकर व्यवहार करे तो नेत्र विकार (आंखोंका दूखना) को गुणकारक है, (९) इसकी नस्य श्लेष्माको दूर करनेवाली और रोकनेवाली है, (निर्विषैल)

(७९९) लींमू मीठा (मिट्ठा)

संस्कृत, मिष्टनिम्बु, **फारसी**, लींमूशीरीं, **अरबी**, लींमूहल्व, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, पित्ती उभारनेवाला, **दर्पनाशक**, नींबू, **प्रतिनिधि**, बिजौरा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) गरमी और प्यासको शांतिप्रद, (२) आमाशय और हृदयको बलप्रद, (३) प्रसन्नताप्रद, (४) रुधिरकी गरमी और तेजीको दूर करनेवाला, (५) हृदयकी व्याकुलता और धड़कनको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८००) लींमू (नींबू) के बीज

संस्कृत, निम्बुबीज, **फारसी**, तुख़्मलींमू, **अरबी**, बजरलींमू **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, ठंडे और रूक्ष, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कके अवयवोंको, **दर्पनाशक**, सौंफ, **प्रतिनिधि**, बार्तंग, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) अतीसारके बद्धक, (३) विशेषतः भुनेहुए वमनके रुद्धक हैं, (४) काली मिरच और पिसेहुए नमककेसाथ पीवे तो प्यास और बच्चोंकी प्यासको गुणकारक हैं, (५) अजीर्णको लाभप्रद हैं, (निर्विषैल)

(८०१) लीली

स्वरूप, पीली, **स्वाद**, सुगंधियुक्त, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी ओषधि है, **प्रकृति**, गरम और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग**,(१)विशेषतः बवासीरके रुधिरको बंद करतीहै, (२) इसके बीजोंकी गिरी (मिंगी) आंखकी बिमारियोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८०२) लौंग

संस्कृत, लवंग, **फारसी**, मेहक, **अरबी**, करनफल, **इंग्रेज़ी**, कलव्ज, **स्वरूप**, काली, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त तीखी, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फूल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्क और आंतोंको, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, दालचीनी और जावित्री, **मात्रा**, १ माशेसे ४ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) प्राणोंको बलप्रद, (३) आभ्यन्तरके अवयव, मस्तिष्क, बुद्धि और स्मरणशक्तिको बलप्रद, (४) ओजवर्द्धक, (५) शीतकी शिरःपीड़ाको हरणकर्ता,

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(६) पक्षवध, अर्दित, सन्यास और श्लेष्माको गुणकर्ता, (७) मस्तिष्क-सम्बन्धी सब रोगोंको लाभकर्ता, (८) रोधकी उद्घाटक, (९) इसका नेत्रांजन (सुरमा) आंखोंको बलप्रद और दृष्टिको तीव्र करनेवाला है,(१०) नेत्ररोग, मस्तक-के रोग और नाड़ीव्रणको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८०३) लोध पठानी

संस्कृत, लोध, **इंग्रेज़ी**, सिंह्लोकोसरा-सीमोसा, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, एक हिन्दुस्तानी वृक्ष-की प्रसिद्ध छाल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वद्धक, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) नेत्रोंको बलप्रद, (२) कफके विकारोंको हरणकर्ता, (३) आर्तवका रुद्धक, (४) वीर्यको सांद्रकर्ता, (५) ओजको बलप्रद, (६) बहुधा पौष्टिक पाकोंमें प्रयोग किया-जाताहै, (निर्विषैल)

(८०४) लोनियाका साग

संस्कृत, लोणी, **अरबी**, बुक्लतुलह-मका, **स्वरूप**, ललोईलिये हरा, **स्वाद**, खारी और खट्टा, **पहिचान**, कुल्फाकी जातिका बिना बोये ऊगनेवाला एक प्रसिद्ध साग है, **प्रकृति**, हरा, ठण्डा और रूक्ष, सूखाहुआ गरम और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, प्लीहको और अफरा करनेवाला, **दर्पनाशक**, मस्तगी और पोदीना, **प्रतिनिधि**, कुलफा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदु-कर्ता, (२) कफका वर्द्धक, (३) पित्त और रुधिरके प्रकोपको शांतिप्रद, (४) प्यास और गरमीको शांतिप्रद, (५) यकृत् और आमाशयकी गरमीको हरणकर्ता, (६) गरमीके ज्वरको हरणकर्ता, (७) इसके पत्तोंको मिरचके साथ पीवे तो नक-सीर और मूत्रमें रुधिरके आनेको गुण-कारक है, (निर्विषैल)

(८०५) लोबान (लुबान)

फारसी, दरखशखक, **अरबी**, जर्व, **स्वरूप**, पिलोईलिये भूरा, **स्वाद**, सुगं-धियुक्त कडुआ, **पहिचान**, लोवानकीतरह एक वृक्षका सूखा गोंद है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, काहूका स्वरस, **प्रतिनिधि**, हब्बुल्बित्म और मस्तगी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण कर्म, प्रयोग**, (१) आमाशय और ओजको बलप्रद, (२) क्षुधाका उद्घाटक, (३) वायुको लयकर्ता, (४) आम और कफको छांटनेवाला, (५) पेटको गुम्म करनेवाला, (६) सर्दीकी खांसीको गुणकर्ता, (७) इसकी कुली और मंजन दांतोंकी पीड़ाको गुणकारक हैं, (८) इसकी लकड़ीके चूर्ण-की बुर्की रक्तस्रावको गुणकारक है, (९) इसका तैल स्नायुओंको बलप्रद है, (१०) दादको गुणकर्ता, (११) इसकी धूनी कमर और संधिपीड़ा (जोड़ोंका दर्द)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को लाभकारक है, और कीड़ोंको भगातीहै, (निर्विषैल)

(८०६) लोबिया (चौरा)

संस्कृत, राजमाष, **फारसी**, लोबिया और लोबह, **अरबी**, फरीका, **स्वरूप**, पिलोईलिये, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसकी फली एक बिलस्तसेभी कुछ लंबी होतीहै एक प्रसिद्ध अनाज है, इसकी फलियोंका शाक स्वादिष्ट होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तर है, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और अफरा करनेवाला, **दर्पनाशक**, सोंफ, नमक और जीरा, **प्रतिनिधि**, बाकला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) शोथको लयकर्ता, (३) मूत्रल, (४) वक्षस्थल और फेंफड़ेको मृदुकर्ता, (५) वीर्य और रोधको उत्पन्नकर्ता, (६) ओजवर्द्धक, (७) शरीरको बृंहणकर्ता, (८) प्रसूत समयके रुधिरस्रावका शोधक, (९) शीघ्रही प्रसव करानेवाला, (१०) वृक्कशूलको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८०७) लोहा

संस्कृत, लोह, **फारसी**, आहन, **अरबी**, हदीद, **इंग्रेज़ी**, आयर्न, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, खानोंमें होनेवाली एक प्रसिद्ध धातु है, इसकी खानें पहिले हिन्दुस्तानमेंभी थीं, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, मक्खन, **प्रतिनिधि**, रांगा और जस्त, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) अर्शज वायुको लाभप्रद, (३) आमाशयको बलप्रद, (४) स्तम्भनकर्ता, (५) ओजप्रद, (६) इसका केशरंजन (ख़िज़ाब) बालोंको अत्यंतही काले करताहै, (७) फौलादी लोहेका बुझायाहुआ जल अवयवोंको कठोर करनेवाला है, (८) पित्त और रुधिरप्रकोपकी गरमीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(८०८) लोहेका मैल (मंडूर)

संस्कृत, मंडूर, **फारसी**, चर्कआहन और अरेम आहन, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, अत्यंत कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा और शहद, **प्रतिनिधि**, अंडेका छीलका, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यंत रूक्षताप्रद, (२) आमाशय, हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (३) मुखसे रुधिर आनेको गुणकर्ता, (४) आर्तवप्रवर्तक, (५) बवासीर और तिल्लीको लाभप्रद, (६) (७) शोथको लयकर्ता, (८) ओजवर्द्धक, (९) स्वरशोधक,(१०)मूत्रकृच्छ्रको लाभप्रद, (११) आंत और वस्तिके व्रणको गुणकर्ता, (१२) इसकाभी केशरंजन (ख़िज़ाब) उत्तम होताहै, (१३)विना भस्मकिये इसका खाना उचित नहींहै, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(८०६) लोहचून

फारसी, सिकाल आहन, **अरबी**, तुबालुल्हदीद, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, रेतजैसा लोहेका बुरादा है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अतिसार और रुधिरका बद्धक, (२) आमाशयके विगड़नेसे जो दस्त होतेहैं उनको गुणकारक है, (३) ओजके मांद्यको लाभप्रद, (४) उचित ओषधियोंकेसाथ बवासीरको गुणकर्ता, (५) इसका केशरंजन (ख़िज़ाब) उत्तम होताहै, (निर्विषैल)

(८१०) बरफ रिंगीलदान

फारसी, बरफ रिंगीलदान, **अरबी**, लाजन, **स्वरूप**, ललोईलिये काला, **स्वाद**, सुगंधियुक्त कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, एक पर्वतीवृक्षकी लसयुक्त चिकनाई है, इसकी टिकिया बनाकर लातेहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और व्याकुलताप्रद, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) मलकोपक और समपक्ककर्ता, (३) शोथ और वायुको लयकर्ता, (४) मूत्र, आर्तव और दुग्धप्रवर्तक, (५) आमाशय और यकृत्को वलप्रद, (६) हिक्का (हिचकी) को हरणकर्ता, (७) शीतकी पीड़ाको गुणकर्ता, (८) शीघ्रही प्रसव करानेवाला, (९) असाध्य व्रणोंको भरनेवाला, (१०) इसकी बत्ती गर्भाशयके भिचजानेको और कठोरताको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८११) वर्स

फारसी, वर्स, **स्वरूप**, ललोईलिये पीला, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके बीज तिलके समान होतेहैं, मुसल्मानी देशमें होनेवाला एक वृक्ष है, यह बीस वर्ष पीछे फटजाताहै और इसमेंसे जटाजैसी निकल पड़ती हैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मस्तगी, केशर और शहद, **प्रतिनिधि**, केशर, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) प्रायः विषोंका दर्पनाशक, (२) शरीरको बलप्रद, (३) मनको अत्यंत प्रसन्नताप्रद, (४) हृदयकी व्याकुलता और काले दागोंको लाभकर्ता, (५) दुर्गंधित अपान वायुको लयकर्ता, (६) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (७) ओजको बलप्रद, (८) ओजको चालनकर्ता, (९) वृक्क और वस्तिकी पथरीका नाशक, (१०) इसका लेप मुखकी स्याही, झाईं और काले दागोंको हरणकर्ता है, (११) सीपको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(८१२) शकरतिगाल (यनहांगिलाफहेवान)

अरबी, शकरतीग़ाल, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, रेशमजैसा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक कीड़ेका जाला है, वह कीड़ा अपने ऊपर इसको बुनता है और इसमें जो छिद्र होताहै उसकी रास्ता निकलजाताहै, प्रकृति, गरमी और तरीलिये समान गुणवाला है, **हानिकर्ता**, अधिक सेवन करनेसे मूर्च्छाप्रद है, **दर्पनाशक**, नीबू और मिश्री, **प्रतिनिधि**, मिश्री, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (२) छातीकी खुरखुराहटको लाभप्रद, (३) दोषोंकी गरमी और जलनको शांतिप्रद, (४) नरखरेकी जलन, सूखी खांसी और स्वर (आवाज़) के भरभरानेको लाभकर्ता, (५) कंठ (गले) की खुश्की और आमाशयकी पीड़ा तथा शरीरकी खुश्कीको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(८१३) शकर सफ़ेद

संस्कृत, शर्करा, **फरसी**, शकर, **अरबी**, शकर अबियज, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उरःक्षतवालोंको और उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, अनारका स्वरस और वंशलोचन, **प्रतिनिधि**, कन्द, **मात्रा**, ३ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृति, कंठ और वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (२) वक्षस्थलकी स्निग्धताको स्वच्छकर्ता, (३) नसोंके भीतर जल्दी प्रवेश करतीहै, (४) अत्यंत रुधिरोत्पादक, (५) ओजको बलप्रद, (६) इसकी धूनी प्रतिश्याय (ज़ुकाम) नाशक है और मस्तिष्कके रोधकी उद्घाटक है, (निर्विषैल)

(८१४) शकरकंद

स्वरूप, सफ़ेद और लाल, **स्वाद**, सुस्वादु और मीठी, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध कन्द है, **प्रकृति**, मलको चिकना करनेवाली, गरम और तर है, **हानिकर्ता**, बद्धकता, आध्मान और रोध करनेवाली, **प्रतिनिधि**, गुड़, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बृंहणताप्रद, (२) नसोंके मुखपर चिपककर रोधप्रद है, (३) विशेषतः वक्षस्थल और फुप्फुसको बलप्रद, (४) वीर्यको उत्पन्नकर्ता और सांद्रकर्ता, (५) मस्तिष्कको बलप्रद, (६) किसीने ओजको चालन करनेवालीभी कहीहै, (निर्विषैल)

(८१५) शबरम

स्वरूप, हरी और लाल, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, जिसके बीज मसूरजैसे होतेहैं, नरसलजैसा गांठदार एक झाड़ है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशय और यकृत्को, **दर्पनाशक**, मक्खन और गायका घी, **प्रतिनिधि**, माज़रयून, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ और वातको अतिसार (दस्त) द्वारा निकालनेवाली, (२) प्रत्येक दोषोंको शरीरके भीतरसे खींचकर मूत्रकेद्वारा निकालनेवाली है, इसके व्यवहारमें

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है, (निर्विषैल परन्तु घातक है,)

(८१६) शबूय

अरबी, खरेखरामी, **स्वरूप**, सफ़ेद, पीली और बेंगनी, **स्वाद**, फीका और कड़ुआ, **पहिचान**, सुगन्धियुक्त एक फूल है, इसकी परीक्षामें अनेक मतान्तर हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम, रूक्ष, **हानिकर्ता**, वर्द्धक और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, बादामरोग़न, गुलरोग़न और सिर्का **प्रतिनिधि**, नरगिस, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (३) कांतिप्रद, (४) स्निग्धताको सुखानेवाला, (५) हिक्का (हिचकी) को शांतिप्रद, (६) मूत्र और आर्तवप्रवर्तक, (७) मृतगर्भको जरायु (जेर)सहित निकालनेवाला, (८) आंखके जालेको इसका लेप गुणकारक है, (९) इसकी नस्य कफ और दुष्टवायुको मस्तिष्कसे निकालनेवाली है, (१०) इसका तैल शीतप्रकृतिवालोंके मस्तिष्कको बलप्रद है और शोधनकर्ता है, (निर्विषैल)

(८१७) शमशाद

अरबी, बक्स, **स्वरूप**, पत्ते हरे, फूल सफ़ेद और बीज काले होतेहैं, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके पत्ते अगरजैसे होतेहैं एक झाड़ है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **मात्रा**, ३ माशेसे ५ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मेंहदीकेसाथ इसके पत्तोंका शिरमें लेप करे तो बालोंको बलप्रद है, (२) शिरःपीड़ाको हरणकर्ता (३) इसके पत्तोंके काथसे गुदाको सेके तो कांचके निकलनेको गुणकारक है, (४) इसके बीज बलवर्द्धक हैं, (५) आमाशय और अन्त्रियोंकी स्निग्धताको सुखानेवाला, (६) मुखके झागोंका रुद्धक है, (७) इसके फूलोंका स्वरस हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद है, (८) पित्तकी गरमीको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(८१८) शरीफा (सीताफल)

फारसी, सीताफल, **स्वरूप**, बाहर हरा और भीतर सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, एक पर्वती वृक्षका फल है, जिसका छीलका गांठ २ जैसा उठाहुआ होताहै, **प्रकृति**, मलको चिकना करनेवाला, गरम और तर, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी, फोड़ा और अफरा करनेवाला, **दर्पनाशक**, खटाई, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (२) रुधिरमें कफ और वातको उत्पन्नकर्ता, (३) खूनको गाढ़ा करनेवाला, (४) उष्णताप्रद, (५) आमाशयको दुष्ट और गरम करनेवाला, (६) वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (७) ओज और हृदयको बलप्रद, (८) हृदयकी व्याकुलताको लाभप्रद, (९) इसके बीज पेटके कीड़ोंको मारतेहैं, (१०) मठाकेसाथ इसका लेप दादको गुणकारक है, (निर्विषैल)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(८१९) शलग(ज)म

फारसी, शलगम, **अरबी**, शलजम, **स्वरूप**, लाल और सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा और तीखा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध कन्द है, इसका शाक होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और अफरा, करनेवाली, **दर्पनाशक**, मांस और खटाई, **प्रतिनिधि**, चुकन्दर और गाजर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दीर्घपाकी, (२) कासको हरणकर्ता, (३) वक्षस्थलको मृदुकर्ता, (४) रोधप्रद, (५) उदरको मृदुकर्ता, (६) दृष्टिको बलप्रद, (७) क्षुधावर्द्धक, (८) ओजप्रद, (९) अश्मरी (पथरी) को खंडनकर्ता, (१०) अत्यन्त मूत्रल है, (निर्विषैल)

(८२०) शलग(ज)मके बीज

फारसी, तुख़्मशलजम, **अरबी**, बजरुश्शलजम, **स्वरूप**, काला और लाल, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, मूलीके बीजजैसे होतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें तर, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, गाजरके बीज, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजवर्द्धक, (२) अत्यन्त क्षुधावर्द्धक, (३) मूत्रप्रवर्तक, (४) सम्पूर्ण कर्मोंमें शलगमके समान हैं परन्तु प्रभावशाली अधिक हैं, (निर्विषैल)

(८२१) शाहदाना (शादाना)

फारसी, शादंज और सुजरुद्दम, **स्वरूप**, अनेक तरहका, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, मटरजैसा दाने २ होतेहैं, **प्रकृति**, धुलेहुए ठंडे और रूक्ष, विना धुलेहुए १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशय और वस्तिको, **दर्पनाशक**, कतीरा और ज़रश्क, **प्रतिनिधि**, रसौत, दम्मुलअखवेन और मिकनातीस, **मात्रा**, १॥। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) बद्धक, (३) मलको पक्कर्ता, (४) मृदु है, (५) व्रणपूरक, (६) दृष्टिको बलप्रद, (७) बुद्धिको तीव्रकर्ता, (८) मूत्रके रोधको लाभकर्ता, (९) रुधिरका रुद्धक, (१०) गुदाके फटनेको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८२२) शाल (साल) शालून

संस्कृत, शाल, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कडूआ, **पहिचान**, एक बहुत बड़ा हिंदुस्तानी वृक्ष है, **प्रकृति**, गरम, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ज्वर, श्वास, तीनों दोष (बात, पित्त, कफ)को हरणकर्ता, (२) जीमचलानेको रोकनेवाला, (३) अतिसारका बद्धक, (४) ओजवर्द्धक, (५) रूक्षताको लाभप्रद, (६) अवयवोंको बलप्रद, (७) जीर्णज्वर और शोथको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(८२३) शाहपसन्द

स्वरूप, पीला और भूरा, **स्वाद**, कुछ खट्टा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध मेवा है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, शिरःपीड़ा और व्याकुलताप्रद, **दर्पनाशक**, आलूबुखारा, **प्रतिनिधि**, जलापा, **मात्रा**, १ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) बलवान् रेचक, (२) तीनों दोषों (वात, पित्त, कफ) को निकालनेवाला, (३) पेटके कीड़ोंको मारनेवाला है, (निर्विषैल)

(८२४) शीरखिश्त

संस्कृत, यवासशर्करा, **फारसी**, शीरखिश्त, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, मीठा, **पहिचान**, एक विलायती वृक्षका गोंद है जोकि ओसके लगनेसे सफ़ेद और मीठा होजाताहै, कोई सिर्फ ओसही है ऐसा कहतेहैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें समान गुणवाली और गरम, **हानिकर्ता**, अधोवायु, अफरा और गुड़गुड़ाहटको पैदा करनेवाला, **दर्पनाशक**, सोंफ और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, नीबू, **मात्रा**, ९ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कांतिकर्ता, (२) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (३) तीनों दोष (वात, पित्त, कफ) और विशेषतः पित्तको अतिसारद्वारा निकालनेवाला, (४) यकृत् और आमाशयको बलप्रद, (५) हृदय, आमाशय और यकृत्की गरमीको शांतिप्रद, (६) खांसी, कंठ और वक्षस्थलके खुरखुरानेको गुणकर्ता, (७) प्रायः ज्वरोंको लाभप्रद है, (८) वीर्यको द्रव (पतला) करनेवाला है, (निर्विषैल)

(८२५) शीशम (सीसम)

संस्कृत, शिंशिपा, **अरबी**, सासम, **इंग्रेज़ी**, ब्लाकवुड्, **स्वरूप**, लकड़ी लाल होतीहै, **स्वाद** कुछ कडुआ, **पहिचान**, एक बड़ा वृक्ष है इसकी लकड़ी वज़नदार और बहुत मज़बूत होतीहै, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) रक्तशोधक, (२) कुष्ठ और सफ़ेद दाग़को हरणकर्ता, (३) प्रायः त्वचाके रोग, दांत और फोड़ोंको गुणकर्ता, (४) अवयवोंका दाह और उपदंश (आतिशक) को लाभप्रद, (५) पेटके कीड़ोंको मारनेवाला, (६) इसकी बाल कत्थाकेसाथ मुखपाक (मुंहआने) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८२६) शेहद (सहत)

संस्कृत, मधु, **फारसी**, शेहद, **अरबी**, असल, **स्वरूप**, पीला सफ़ेद और लाल, **स्वाद**, अत्यंत मीठा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, एक प्रकारकी मक्खियोंका उगाल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको और गरम प्रकृतिवालोंको तथा शिरःपीड़ाप्रद है, **दर्पनाशक**, अनार, धनियां और सिर्का, **प्रतिनिधि**, दोशाव अंगूरी और खुरमायजैद, **मात्रा**, २ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वच्छकर्ता, (२) रोधका उद्घाटक, (३) लसयुक्त कफको छांटनेवाला, (४) व्यर्थ स्निग्धताको हरणकर्ता, (५) जलोदर, स्तम्भ और सब प्रकारकी वायुका नाशक है, (६) मूत्र, आर्तव और दुग्धका अत्यंत प्रवर्तक, (७) वस्ति और वृक्ककी पथरीको खंडनकर्ता, (८) आमाशय और यकृत्को बलप्रद, (९) मस्तक और वक्षःस्थलको साफ करनेवाला, (१०) जालीनूसकी सम्मतिमें शीतरोगोंकेलिये इससे उत्तम और कोई वस्तु नहींहै, (११) यदि शहदमें कुछ जलकी बूंदें और थोड़ा कलमीशोरा मिलाकर कानमें डाले तो कानके भिनभिनानेको और धमधमानेको अत्यंत अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल, स्वास्थ्यरक्षक)

(८२७) शोरा (सोरा)

संस्कृत, सुवर्चिका, **फारसी**, शोरा, **अरबी**, अबकर, **इंग्रेज़ी**, नाइटरसॉल्टपिटर, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खारी और ठंडा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, गुंर्दो और नरखरेको, **दर्पनाशक**, कतीरा और शहद, **प्रतिनिधि**, नमक इन्द्रानी, **मात्रा**, १॥ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रोधको खोलनेवाला, (२) कफको छांटनेवाला, (३) शरीरके व्यर्थ मलको छांटनेवाला, (४) अत्यंत गरमी और तेजीके साथ दस्तावर है, (५) नमकसे अधिक प्रभावी है, (६) खांडकेसाथ अत्यंत मूत्र और आर्तवप्रवर्तक है, (७) प्लीह, कमरकी पीड़ा और वातजगुल्म (वायुगोला) को गुणकर्ता, (८) केलेके साथ लगातार एक माशे खायाकरे तो प्लीहकी शोथको अनुभूत लाभप्रद है, (उपविष)

(८२८) शोकरां

अरबी, शोकरां, **स्वरूप**, भूरी, **स्वाद**, कड़वी और तीखी, **पहिचान**, एक ओषधिकी जड़ है, जिसके फूल सोयाके फूलजैसे गुच्छादार होतेहैं, किसीकी सम्मतिमें मोंठकी जड़ है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें ठंडी और ३ कक्षामें रूक्ष है, **हानिकर्ता**, घातक है, **दर्पनाशक**, वमनकराना, **प्रतिनिधि**, बज़रुल्बनज, **मात्रा**, १ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अवयवोंको शिथिल और ढीला करतीहै, (२) स्तम्भनकर्ता, (३) निद्राप्रद, (४) इसका लेप गरमीकी पीड़ा, शोथ, गुहेरी वातरक्त और उपदंशको गुणकारक है, (५) इसके पत्ते और बीजोंका लेप स्तनों (छाती) को लम्बे, चौड़े नहीं होने देता, (अभक्ष्य घातकविष है)

(८२९) सकमूनिया (मेहमूदह)

स्वरूप, भूरा और सफ़ेद, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, कुछ काले रंगका एक ओषधिका जमाहुआ दूध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हानिकर्ता, हृदय, आमाशय और यकृत्को तथा मूर्च्छाप्रद है, **दर्पनाशक**, कतीरा, सेब और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, पीला एलुआ और पीली हरड़, **मात्रा**, ४ रत्ती, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) मूत्रल, (४) रोधका उद्घाटक, (५) विशेषतः पित्तजमलको अतिसारद्वारा निकालनेवाला, (६) सम्पूर्ण रेचक द्रव्योंको बलवान् प्रभावशाली करनेवाला, (७) आमाशयके कीड़ोंको निकालनेवाला, (८) आंतोंके कीड़ोंको निकालनेवाला, (९) (१०) वातजरोगोंको लाभप्रद है परन्तु अमरूद अथवा बिहीमें सुलभुलाये विना इसका व्यवहार उचित नहींहै, (निर्विषैल और अत्यन्त हानिकर्ता)

(८३०) सकन्कूर

फारसी, सकन्कूर, **अरबी**, इस्कन्कूर, **स्वरूप**, लाल और पीला, **स्वाद**, फीका और खारी, **पहिचान**, जिसको हिंदीमें रेह कहतेहैं एक जीव है, **प्रकृति**, ताज़ा गरम और तर तथा सूखाहुआ २ कक्षामें गरम और रूक्ष होताहै, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, शहद और मसूर, **प्रतिनिधि**, सालबमिश्री और गाजर, **मात्रा**, १–२–३ तोले, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका मांस ओजको बलप्रद है, (२) ओजको अत्यन्त चालनकर्ता, (३) अत्यन्त वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (४) पक्षवध, अर्दित, कम्प, पादहर्ष, पादांगुलिपीड़ा और आमवातको गुणकर्ता है, (निर्विषैल)

(८३१) स्कन्दफला

स्वरूप, पीला, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, घातक है, **दर्पनाशक**, वमन कराना, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) व्रणपूरक, (३) खुजलीको लाभकर्ता है, (निर्विषैल)

(८३२) सज्जीखार

संस्कृत, सर्जिका, **फारसी**, अशख़ार और कलया, **अरबी**, कलीमास्फर और शिब, **स्वरूप**, भूरी और सफ़ेद, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध खार है, **प्रकृति**, विषत्वलिये ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, घी, दूध और वमन कराना, **मात्रा**, एक जौके बराबर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) अंगोंको स्वच्छताप्रद, (३) मांसको खानेवाली, (४) अपने कर्ममें नमकसे अत्यन्त बलवान् है, (५) धुलीहुई सज्जी आमाशयको बलप्रद है, (६) पाचक, (७) क्षुधावर्द्धक, (८) कफको अत्यन्त छांटनेवाली, (९) यदि वमन किसी वस्तुसे बंद न होवे तो सज्जीके सेवन करानेसे बन्द होजातीहै, (१०) प्लीहकी शोथको

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लयकर्ता, (११) सुरमाके साथ आंखके जालेको काटकर बाहर निकालदेतीहै, (घातक विष)

(८३३) सतावर

संस्कृत, शतावरी, अरबी, शकाकुल, स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीकी, पहिचान, अत्यन्त लसयुक्त एक प्रसिद्ध कन्द है, प्रकृति, मलको चिकना करतीहुई २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, शिरःपीड़ाप्रद, दर्पनाशक, शहद, प्रतिनिधि, सफ़ेद बेहमन, मात्रा, ७ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (३) आमाशय, यकृत् और वृक्कको गरम करनेवाली, (४) कफको छांटनेवाली, (५) दूधको अधिक उत्पन्नकर्ता, (६) दूधको गाढ़ा करनेवाली, (७) सब प्रकारके मेह और प्रमेहोंको गुणकर्ता, (८) पादांगुलिपीड़ा, गठिया और बवासीरको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(८३४) सत्त सिलाजीत

संस्कृत, शिलाजतुस्वत्व, स्वरूप, सफ़ेद, स्वाद, फीका और कुछ कड़ुआ, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, हानिकर्ता, उष्णप्रकृतिवालोंको, दर्पनाशक, घी, प्रतिनिधि, नागरमुरका इत्र, मात्रा, १ रत्ती, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) ओज, वृक्क और वस्तिको बलप्रद, (२) मेह और शुक्रमेहको गुणकर्ता, (३) शरीरको दृढ़कारक है, (निर्विषैल)

(८३५) सदासुहागन

स्वरूप, पत्ती हरी और फूल लाल होताहै, स्वाद, कुछ कड़ुआ और तीखा, पहिचान, आकीकुल्बरके झाड़के समान एक झाड़ है, प्रकृति, ठंडा, गुण, कर्म प्रयोग, (१) विषके विकार, पित्त और रुधिरके विकारोंको हरणकर्ता, (२) जलोदरको लाभप्रद, (३) इसकी ४ माशे पत्तियोंको जलमें भिगोकर पीवे तो प्रमेहको गुणकारक है, (४) अपने ल्हसके कारण आंतोंमें फिसलनको उत्पन्न करनेवाली, (५) इसके पत्तोंका स्वरस कानकी पीड़ाको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(८३६) सन

संस्कृत, सण, फारसी, लावना, स्वरूप, सफ़ेद और भूरा, स्वाद, फीका, पहिचान, प्रसिद्ध है, प्रकृति, ठंडा, हानिकर्ता, दीर्घपाकी और अफरा करनेवाला, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) इसका शाक गरिष्ठ और बद्धक है, (२) इसके फूल जननसमयके रुधिरस्रावके रुद्धक हैं, (३) इसके सूतका बुनाहुआ कपड़ा रूक्षताप्रद है, (निर्विषैल)

(८३७) सनोबर

स्वरूप, हरा, स्वाद, कड़ुआ, पहिचान, सर्वकी जातिका एक बहुत दिखनौट झाड़ है, जिसके फल छोटे, बड़े सब तरह

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के होतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और आर्तव तथा आंतोंकी ऐंठनको, **दर्पनाशक**, कतीरा, गरम जल और तिलीका तेल, **मात्रा**, २॥। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसके पत्ते और छालका पीना कण्ठकी पीड़ा और फेंफड़ेके व्रण (जख़म) को लाभप्रद है, (२) नक्सीरें और व्रणके रुधिरको बन्द करताहै परन्तु व्रण ताजा होनाचाहिये, (३) शहदके साथ यकृत्के रोग और शोथ तथा यकृत्के बढ़नेको गुणकर्ता, (४) सूखाहुआ केवल ठंडे जलके साथ दस्तोंको बंद करनेवाला है, (५) पेटको गुम्म करताहै, (६) इसकी सूखीहुई बुर्की चोटके व्रणोंको शीघ्र (जल्द) भरलातीहै, (७) इसकी धूनी जरायु (झिल्ली) समेत गर्भको गिरानेवाली है, (८) आर्तवप्रवर्तक है, (निर्विषैल)

(८३८) सफ़ेदा काशग़री

फारसी, सफ़ेदाब, **अरबी**, अस्फेदाज, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, कसेला और खारी, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, कंठको रोकनेवाला और घातक, **दर्पनाशक**, वमन कराना और अत्यन्त चिकने यूषोंका पान करना, **प्रतिनिधि**, मुर्दारसंग, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) नेत्रोंको स्वच्छताप्रद, (२) पुराने घावोंको सुखानेवाला, (३) तर और सूखी खुजलीको लाभकर्ता, (४) अंडेकी सफ़ेदीकेसाथ गुदाके फटनेको गुणकर्ता, (५) दुष्ट मांसको छेदनकर्ता, (६) व्रणपूरक, (७) इसका सुरमा नेत्रकी पीड़ाको गुणकारक है, (८) आंखोंके दूखनेको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(८३९) समन्दरफल

संस्कृत, इज्जल, **स्वरूप**, ललोंईलिये काला, **स्वाद**, कसेला और कड़ुआ, **पहिचान**, हरड़के बराबर एक हिन्दुस्तानी फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **मात्रा**, आधाफल, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्रमेह और शुक्रमेहको लाभप्रद, (२) यदि बूरा, नमक और अजमायनके साथ चूर्ण बनाकर गुनगुने जलकेसाथ खावे तो उदरकी पीड़ाको गुणकारक है, (३) यदि दहीके साथ खावे तो दस्तको बन्द करताहै, (४) यदि लड़कीवाली स्त्रीके दूधमें घिसकर नस्य लेवे तो मस्तिष्कके सब कफको निकालदेता है, (५) यदि जलमें घिसकर नाकमें डाले तो आधासीसीके दर्दको लाभ करनेवाला है, (६) यदि इसके छिलकेका और जड़का लेप करे तो हाथ और पैरकी सूजनको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(८४०) समन्दरफेन

संस्कृत, समुद्रफेन, **फारसी**, कफदरिया, **अरबी**, जब्दुलबेहर, **इंग्रेज़ी**,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कटलफीसबोन, **स्वरूप**, जालीदार सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, तीखा और खारी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको और स्वरको, **दर्पनाशक**, लसयुक्त चीज़ें और बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, अरमनी बूरा, **मात्रा**, खाया नहींजाता, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका लेप कालेदाग़, चहरेकी स्याही और झाईको दूर करताहै, (२) कफकी सूजनको लय करताहै, (३) जलोदरको लाभकर्ता, (४) पथरीको तोड़नेवाला, (५) वमन (रद्द) को बन्द करनेवाला, (६) आंखके जालेको काटनेवाला, (७) दृष्टि और दांतोंको कान्तिप्रद, (८) सिर्केकेसाथ खुजलीको लाभकर्ता, (९) इसकी भस्म कम तीव्र होतीहै, इसकाही सेवन करना उचित है, (उपविष)

(८४१) समंदरसोख

स्वरूप, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध द्रव्य है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, अफरा करनेवाला, **दर्पनाशक**, दूध और खांड़, **प्रतिनिधि**, सिरवालीके बीज, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) मूत्रका दाह, प्रमेह और वीर्यके पतलेपनको लाभप्रद, (२) ओज और मस्तिष्कको बलप्रद, (३) वीर्यको उत्पन्नकर्ता, (४) स्तम्भनकर्ता, (५) जलायाहुआ नाड़ीव्रण (नासूर) को गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८४२) समंदरलोन

संस्कृत, सामुद्रलवण, **फारसी**, नमकदरिया, **अरबी**, मलेहउल्मुहीत, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **प्रतिनिधि**, खारी नमक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) क्षुधावर्द्धक, (२) पाचक, (३) अधोवायुको अत्यन्त निकालनेवाला, (४) रेचक, (५) रोमकूपोंमें प्रवेश करनेवाला, (६) क्षारोंका प्रतिनिधि है, (निर्विषैल)

(८४३) सरेश

फारसी, सरेशम, **अरबी**, अरी, **स्वरूप**, काला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, बेस्वाद, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधप्रद, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और मायुल्असूल, **प्रतिनिधि**, मछलीका सरेश, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शिरा (नस) ओंके मुखमें चिपककर रोधप्रद, (२) रूक्षताको उत्पन्नकर्ता, (३) उरःक्षत और आन्तरिक दुष्टव्रणों (भीतरे ख़राब जख़म) को लाभकर्ता, (४) व्रणको बन्द करनेवाला, (५) इसका लेप शोथको लयकारक है, (निर्विषैल)

(८४४) सरेश मछली

फारसी, सरेशममाही, **अरबी**, अरी-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उस्समक, **स्वरूप**, सफ़ेद और काला, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, कड़ुआ और बेस्वाद, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, रोधप्रद, **दर्पनाशक**, मायुल्असूल, **प्रतिनिधि**, जुफ्तरूमी, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उरःक्षतको लाभप्रद, (२) इसका लेप गालोंके फटनेको और सफ़ेद दाग़ोंको गुणकारक है, (३) खुजली, दाद और वृषणोंकी शोथको गुणकर्ता, (४) सिर्काके साथ नखों (नाख़ून) के सड़जानेको और सफ़ेद होजानेको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(८४५) सरफोका

संस्कृत, शरपुंखा, **इंग्रेज़ी**, टेफरोसियापरपुरिया, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, चिरायतेके समान एक ओषधि है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **प्रतिनिधि**, मुंडी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रक्तशोधक, (२) आमाशयकी उद्घाटक, (३) मूत्रल, (४) वातज्वर, यकृत् और प्लीहके रोग तथा फोड़े, फुन्सियोंको लाभप्रद है, (५) पीठके फोड़े और आतिशकको गुणकर्ता, (६) इसका स्वरस प्रायः विषोंका दर्पनाशक है, (निर्विषैल)

(८४६) सर्व

फ़ारसी, सर्व, **अरबी**, अरअर, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, इसके पत्ते कड़ुए और तीखे होतेहैं, **पहिचान**, अनेक तरहका एक वृक्ष है, इसमें फल बहुत थोड़ा जहां तहां लगताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, इसके फूल गरम और तर हैं, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रतिनिधि**, अंजरूत, **मात्रा**, २। माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) बद्धक, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) रक्तस्राव (ख़ून बेहना) को बन्द करनेवाला है, (४) दोषोंकी दुर्गंधिको हरणकर्ता, (५) इसका क्वाथ मूत्रकृच्छ्र, आंतोंके क्षत और वस्तिसे व्यर्थ मलके वहनेको गुणकर्ता, (६) इसकी चटनी पुरानी खांसीके लिये अनुभूत गुणकारक है, (७) आमाशय (मेदा) को बलप्रद है, (निर्विषैल)

(८४७) सरसों

संस्कृत, सर्षप, **फारसी**, सरशफ, **अरबी** हुर्फ, **इंग्रेज़ी**, सिनाफिसआल्वा, **स्वरूप**, लाल, काली और पीली, **स्वाद**, कड़वी और तीखी, **पहिचान**, जिसका तेल बहुत वर्तावमें आताहै एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशय और वृक्कको, **दर्पनाशक**, कासनी और शहद, **प्रतिनिधि**, अलसी और राई, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ऊपरकी स्निग्धताको सुखानेवाली, (२)

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वायुको अत्यन्त लयकर्ता, (३) उदरके कृमियोंकी नाशक, (४) कफके विकारोंको हरणकर्ता, (५) खुजली और जांघकी पीड़ाको गुणकर्ता, (६) ओजको चालनकर्ता, (७) मूत्रप्रवर्त्तक, (८) मलको समपक्कर्ता, (९) शोथको लयकर्ता, (१०) इसका उबटना शरीरका मैल, श्यामता और झाईको अत्यन्त शोधनकर्ता है, (११) इसके पत्ते मूत्रकृच्छ्र और खुजलीको गुणकारक हैं, (निर्विषैल)

(८४८) सिलाजीत

संस्कृत, शिलाजतु, **इंग्रेज़ी**, आसफेल्ट, **स्वरूप**, ललोईलिये, काला, **स्वाद**, फीका और कुछ कड़वा, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, घी, **मात्रा**, ४ रत्ती, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दोषोंके विकारको हरणकर्ता, (२) श्वास और शुक्रमेहको लाभप्रद, (३) जलोदरको लाभकर्ता, (४) कठोर शोथ, राजयक्ष्मा और बुढ़ापेको गुणकर्ता, (५) पेटके कीड़ोंको मारनेवाला है, (निर्विषैल)

(८४९) सिलारस

संस्कृत, सिल्हक, **अरबी**, मीअ्सायला, **इंग्रेज़ी**, लिक्विड्एम्बर, **स्वरूप**, सुगंधियुक्त, फीका, **पहिचान**, जिसको अबहर कहतेहैं बिहीके समान एक वृक्ष है, इसके गोंदको अथवा दूधको सिलारस कहतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ४ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मस्तगी, **प्रतिनिधि**, जन्दबेदस्तर और चमेलीके तेल, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) अवयवोंको बलप्रद, (३)मलको समपक्कर्ता, (४) कफजमलको अतिसारद्वारा निकालनेवाला, (५) खांसी, प्रतिश्याय, (ज़ुकाम) छाती और फेंफड़ेकी पीड़ा (दर्द) वृक्क और कमरकी पीड़ा तथा जलोदरको लाभप्रद, (६) वस्तिकी पथरीको खण्डनकर्ता, (७) संधियोंकी पीड़ा (जोड़के दर्द) और गठियाको गुणकारक है, (उपविष)

(८५०) साखू (साल)

फारसी, साल, **अरबी**, साज, **इंग्रेज़ी**, शोरियारोबस्ट, **स्वरूप**, लकड़ी लाल, पत्ते हरे और फल काला होता है, **स्वाद**, कडुआ और कसेला, **पहिचान**, बहुत बड़ा एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्को, **दर्पनाशक**, उन्नाव, **मात्रा** ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसका बुरादा (चूर्ण) प्यासको शांतिप्रद है, (२) आमाशयके दाहको लाभप्रद, (३) शहदकेसाथ पित्तज और कफज मलको निकालताहै, (४) इसका लेप शोथको लयकारक है (५) इसका बक्कल उदरका वर्द्धक है, (६)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इसके बुरादेकी धूनी महामारी पवनकी शोधक है, (७) मच्छड़ इत्यादिको मारनेवाला है, (निर्विषैल)

(८५१) सागूदाना (साबूदाना)

स्वरूप, सफ़ेद **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध द्रव्य है जोकि सरसोंसे कुछ बड़ा दाने २ जैसा होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और तर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) सम्पूर्ण अंगोंको बलप्रद, (२) ओजवर्द्धक, (३) ओजको चालनकर्ता, (४) शरीरको बृंहणकर्ता, (५) यदि ताजे दूधकेसाथ खीरकी तरह पकाकर और बूरा मिलाकर खावे तो प्रकृतिको मृदु करनेवाला है,(६)यदि किसी रोगमें दूधका निषेध होवे तो सिर्फ जलके साथही सेवन करनाचाहिये, (७) लघु (हलका) होनेसे रोगीकी प्रकृतिको अत्यन्त अनुकूल है, (निर्विषैल)

(८५२) सातर

फारसी, ईशन और ओशन, **अरबी**, सअ्तिर, **स्वरूप**, पत्ते हरे और फूल नीला होताहै, **स्वाद**, तीखी सुगन्धियुक्त तीखा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध ओषधि है, कितनीही तरहकी होतीहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, सिर्का, **प्रतिनिधि**, पर्वती पोदीना **मात्रा**, ९माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) कफ और वायुको छांटने वाली और लय करनेवाली, (२) रोधको खोलनेवाली, (३) कफज वृथा मलको दूर करनेवाली, (४) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (५) रूक्षताप्रद, (६) ओजको बढ़ानेवाली, (७) भूख लखानेवाली, (८) आमाशयकी ऊपरी तरीको शुद्ध (साफ़) करतीहै, (९) मस्तिष्कपर मरिमाणुओं (भाप) को नहीं चढ़ने देती, (१०) प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८५३) सांपकी कांचली

संस्कृत, सर्पनिर्मोक, **फारसी**, पोस्तमार, **अरबी**, सलखुल्हय्यतो, **स्वरूप**, जालीदार सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, इसको सांप हरसाल गेरताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आंखोंमें अंधेरी लानेवाली और त्वचामें लेखनता (छीलन) करनेवाली है, **दर्पनाशक**, धनियां और घी, **प्रतिनिधि**, भिलावा, **मात्रा**, २माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) चने और घीकेसाथ खानेसे कुष्ठको गुणकारक है, (२) प्रसवकालमें इसकी धूनी देनेसे बालक बहुतही सहज पैदा होजाताहै, (३) इसकी धूनी बवासीरके मस्सोंको गिरादेती है (४) कपड़े और किताबोंमें रखनेसे कीड़ाओंके लगनेको दूर करतीहै, (५) सांप जहां कांचली गेरताहै वहां फिर नहींआता, (उपविष)

(८५४) साबुन

फारसी, साबून, **अरबी**, साबून,

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वरूप, सफ़ेद और पीला, **स्वाद**, खारी, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध वस्तु है, जिसको सज्जी, चूना, तेल और चरबी इत्यादिसे बनातेहैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, घातक है, **दर्पनाशक**, चिकने यूष और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, चूना और अश्नान, **मात्रा**, अभक्ष्य है, सिर्फ लेपकरनेमें ६ माशे लेना चाहिये, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) सूजनको नरम करताहै, (२) सूजको पकानेवाला, (३) मांस इत्यादिको खानेवाला, (४) कांतिप्रद, (५) मरोड़ाको दूर करनेवाला, (६) गर्मस्थितिका नाशक, (७) जरायु (झिल्ली) से गर्भको गिरानेवाला, (८) इसकी बत्तीको योनीमें रक्खे तो आर्त्तवप्रवर्त्तक है, (९) इसकी शलाका (सलाई) गुल्म, कदूदाना और पेटके कीड़ोंको गुणकारक है, (१०) मेंहदीके साथ इसका लेपघोंटू और जांघकी पीड़ा, चेहरेकी स्याही और झाईको दूर करताहै, (११) दाद, जोड़ोंकी पीड़ा और गठियाको गुणकारकहै, (१२) त्वचा और चहरेके दागोंको मिटाता है, (घातक विष)

(८५५) सालबमिश्री

संस्कृत, सुधामूली, **फारसी**, खायये-रोबाह, **अरबी**, खसियतुस्सलब, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, लसयुक्त एक प्रसिद्ध कंद है, इसकी गंधि वीर्यकी गंधिजैसी होतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **हानिकर्ता**, आमाशयके मुखको, **दर्पनाशक**, खांड और आंवला, **दर्पनाशक**, गाजरके बीज और सतावर, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजवर्द्धक, (२) शुक्रको उत्पन्नकर्ता, (३) ओजको अत्यंत चालनकर्ता, (४) स्नायुओंको बलप्रद, (५) पक्षवध, अर्दित, ग्रीवास्तम्भ और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको लाभकर्ता, (६) केशों (बालों) को उत्पन्नकर्ता, (७) केशोंको नहीं गिरनेदेती, (निर्विषैल)

(८५६) सामाक (समा)

संस्कृत, श्यामाक, **स्वरूप**, भूरा और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध नाज है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, अधोवायु और रूक्षताको पैदा करनेवाला, **दर्पनाशक**, घी, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ और वायुके विकारोंको दूर करताहै, (२) सम्पूर्ण धातुओंको सुखानेवाला है, (निर्विषैल एक नाज है)

(८५७) सिनोह (सहजना)

संस्कृत, शोभांजन, **फारसी**, सर्वकोही, **इंग्रेज़ी**, होर्सरेडीसट्री, **स्वरूप**, हरा, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, जिसकी फली लंबी होतीहै एक प्रसिद्ध वृक्ष है, **प्रकृति** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, पित्त प्रकृतिवालोंको, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) जल्दी असर करनेवाला, (२) कफको

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दूर करनेवाला, (३) शोथको लयकरनेवाला, (४) ओजको बलप्रद, (५) अधिक भूख लगानेवाला, (६) वायु और रुधिरके विकारको दूर करनेवाला, (७) मूत्रप्रवर्तक, (८) वस्तिकी पथरीको तोड़नेवाला, (९) गठिया और पेटके दर्दको गुण करनेवाला, (१०) इसके फूल गरिष्ठ और वद्धक हैं तथा कफके विकारके दूर करनेवाले हैं, (निर्विषैल)

(८५८) सिरदेई (सहदेई)

फारसी, सहदेवी, **स्वरूप**, हरी, **स्वाद**, कड़वी, **पहिचान**, जिसके पत्ते तुलसीके समान होतेहैं एक प्रसिद्ध ओषधि है, **प्रकृति**, ठंडी और तर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मूत्रकृच्छ्र को गुणकर्ता, (२) कालीमिरचकेसाथ अंतःस्थ जीर्णज्वरको लाभकर्ता, (३) हाथ और पैरमें मलनेसे हाथ, पैर लाल और सफ़ेद होजाते हैं, (४) यदि इसकी जड़को पीसकर लेप करे तो वाजीकरण करनेवाली है, (५) इससे पारदकी भस्मि उत्तम बनतीहै, (निर्विषैल)

(८५९) सिंघाड़ा

संस्कृत, शृंगाटक, **इंग्रेज़ी**, वॉटरलेल्ट्रप, **स्वरूप**, बाहर हरा और भीतर सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ मीठा और फीका, **पहिचान**, इसकी बेल जलमें बोईजातीहै एक प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति**, ताजा ठंडा और तर तथा सूखाहुआ ठंडा और रूक्ष होता है, **हानिकर्ता**, रोधप्रद, गरिष्ठ और दीर्घपाकी, **दर्पनाशक**, नमक और गरम वस्तु, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) उष्णप्रकृतिवालोंके ओजको बलप्रद, (२) ज्वर और वृक्ककी खांसीको लाभप्रद, (३) रुधिर और हृदयके दाहको गुणकर्ता, (४) दांतोंको स्वच्छकर्ता, (५) दन्तमूल (मसूड़ों) को दृढ़कर्ता, (६) दहीकेसाथ अतिसारका वद्धक, (७) मुखसे रुधिर आनेको लाभकारक है, (निर्विषैल)

(८६०) सिरंची

स्वरूप, हरा, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ और खट्टा, **पहिचान**, जिसके पत्ते कुल्फाके समान होतेहैं और डालियां गांठ २ जैसी होतीहैं एक ओषधि है, **प्रकृति**, गरम और तर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग** (१) इसके पत्तोंका खाना कमर, जोड़ और सब शरीरकी पीड़ाको गुणकारक हैं, (२) पीपलामूलकेसाथ इसकी जड़ हरएक दोषवाले गरमीके ज्वरको लाभप्रद है, (३) कत्था और सोंठके साथ इसके पत्ते असाध्य व्रणोंके अनुभूत पूरक हैं, (निर्विषैल)

(८६१) सिर्का

फारसी, सिर्का, **अरबी**, खल, **स्वरूप**, लाल और सफ़ेद, **स्वाद**, अत्यंत खट्टा, **पहिचान**, अंगूर, खिजूर और पौंड़ा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इत्यादिके स्वरसको धूपमें पकाकर बनातेहैं, **प्रकृति**, कुछ गरमीलिये ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, ओज स्नायु और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मिठाई और लेह्यपदार्थ **प्रतिनिधि**, कागजी नीबूका स्वरस, **मात्रा**, २ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वद्धक, (२) स्निग्धताका शोषक, (३) नस और छिद्रोंमें शीघ्रही प्रवेश होनेवाला, (४) प्रकृतिको मृदुताप्रद, (५) गाढ़े-दोषोंको छांटनेवाला, (६) पेटके कीड़ेको मारकर निकालनेवाला, (७) पाचक, (८) अत्यंत क्षुधाप्रद, (९) रोधका उद्घाटक, (१०) जामन और ताड़का सिर्का प्लीहकी शोथ और आध्मान(अफरा) को बहुत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८६२) सिरस

संस्कृत, शिरीष, **फारसी**, दरख़्तजकरिया, **अरबी**, सुल्तानुल्अशजार, **स्वरूप**, पत्ते हरे फूल लाल और बीज काले होतेहैं, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, हिंदुस्तानमें होनेवाला एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष है, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **दर्पनाशक**, बंशलोचन और सौंफ, **प्रतिनिधि**, बिस्म और सरफोका, **मात्रा**, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसकी छालकी कुल्ली दांत और मसूड़ोंको दृढ़कारक है, (२) इसका स्वरस और अर्क त्वचाके रोग जैसे कोढ़ दाद इत्यादिको गुणकारक है, (३) पेटके कीड़ोंको मारनेवाला, (४) इसके फूलोंकी नस्य आधासीसीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(८६३) सिरसके बीज

संस्कृत, शिरीष बीज, **फारसी**, तुख़्मदरख़्त जकरिया, **अरबी**, हब्बुस्सुल्तानुल्अशजार, **स्वरूप**, ललाईलिये भूरे, **स्वाद**, कड़वे और कसेले, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, गरम, **गुण, कर्म, प्रयोग** (१) इन्होंका नेत्रांजन(सुरमा) आंखोंके जालेको गुणकारक है, (२) ओजको बलप्रद, (३) वीर्यको गाढ़ा करनेवाले, (४) यदि इन्होंको जलमें ओटाकर नाकमें चढ़ावे तो श्लेष्माको लाभकारक हैं (५) इन्होंका तेल सफेद दागोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८६४) सिरआरी

संस्कृत, चतुःपत्रीशाक, **फारसी**, बरतानीकी, **स्वरूप**, फूल लाल और पत्ती हरी, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, एकगजके बराबर ऊंचा एक झाड़ है कि जिसकी डाली और फूल लाल होतेहैं तथा पत्ती चूकाकी पत्तीके समान खट्टी होतीहै, **प्रकृति**, कुछ बद्धक शक्तिलिये नसोंको जोड़नेवाली है, **हानिकर्ता**, उवाकी और व्याकुलताप्रद, **दर्पनाशक**, उन्नाव, **प्रतिनिधि**, तोदरी, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका लेप शोथको लयकारक है, (२) इसके पत्तोंका पीना ज्वरको लाभप्रद है, (३)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओजको बलप्रद, (४) वीर्यवर्द्धक, (५) इसको जलाकर खावे तो रक्तप्रदरकी रुद्धक है, (निर्विषैल)

(८६५) सिरआरीके बीज

संस्कृत, श्रीवारकवीज, **फारसी**, बजरबरतानीकी, **स्वरूप**, काला और चमकीला, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, बहुत छोटे होतेहैं, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, नसोंको जोड़नेवाले, **मात्रा**, ५माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) वीर्यको सांद्रकर्ता, (३) प्रमेह और उपदंशको लाभकर्ता, (४) रुधिरविकारको हरणकर्ता, (५) शुक्रमेहको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८६६) सिवार (सिवाल)

फारसी, जगराना, **स्वरूप**, घासजैसा हरा, **स्वाद**, कड़ुआ और तीखा, **पहिचान**, बहतेहुए जलके भीतर लम्बे २ तार जैसे पैदा होतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें ठंडी, २ कक्षामें तर, **हानिकर्ता**, शीतप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, तुलसीका स्वरस, **प्रतिनिधि**, कलगा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मलको लयकर्ता, (२) शोथको लयकर्ता, (३) प्रमेहकेलिये अनुभूत गुणकारक है, (४) इसका लेप रुधिरस्रावका रुद्धक है, (५) ताजीको पेटपर रक्खे तो प्यासको शांतिप्रद है, (निर्विषैल)

(८६७) सिहोड़

स्वरूप, हरा, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके पत्ते छोटे और फल चनेके बराबर होताहै एक वृक्ष है, हिन्दूलोग इसकी दांतोन बनातेहैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म** **प्रयोग**, (१) रुधिर, वायु और कफके विकारोंको हरणकर्ता, (२) रक्तातिसारका बद्धक, (३) इसकी दांतोन दांत और मसूड़ोंको दृढ़ करनेवाली है, (४) इसके पत्ते कालीमिरचकेसाथ कुत्तेके काटेको लाभकारक हैं, (निर्विषैल)

(८६८) सींग

संस्कृत, शृंग, **फारसी**, सरून और शाख, **अरबी**, करन और आज, **स्वरूप**, सफेद, काला और पीला, **स्वाद**, फीका और कड़ुआ **पहिचान**, प्रायःहर एक पशुके सिरपर होतेहैं प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **दर्पनाशक**, सुदाब, **प्रतिनिधि**, खुर, **मात्रा**, १ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) जलाहुआ रक्तस्रावका रुद्धक है, (३) औषधोंमें प्रायः बारहसिंघाका सींगही प्रचलित है, (४) पार्श्वशूलमें लगानेसे और कालीमिरचकेसाथ खानेसे गुणकारक है, (५) जलाहुआ श्वासको अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८६९) सिंदूर

संस्कृत, सिंदूर, **अरबी**, असरंज, **स्वरूप**, लाल, **स्वाद**, दुर्गंधियुक्त, बेस्वाद,

पहिचान, एक प्रसिद्ध द्रव्य है जिसको रांग, सफ़ेदा और शिंगरफसे बनातेहैं, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष, हानिकर्ता, घातक है, दर्पनाशक, बहुत चिकने यूष, प्रतिनिधि, मुर्दारसंग, मात्रा, अभक्ष्य है, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) शोथ और फोड़ोंको लयकर्ता, (२) व्रणको स्वच्छकर्ता, (३) व्रणोंको शीघ्र भरनेवाला, (४) व्रणोंकी दुर्गंधिको हरणकर्ता, (५) दाद और तर खुजलीके लिये धुलेहुए घीकेसाथ अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८७०) सीप

संस्कृत, शुक्ति, फारसी, गोशमाही, अरबी, सदफ, स्वरूप, सफ़ेद और चमकीली, स्वाद, फीकी, पहिचान, प्रसिद्ध है (यहां मोतीकी सीपसे अभिप्राय है,) प्रकृति, १ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष, हानिकर्ता, यकृत् और वक्षस्थलको, दर्पनाशक, उन्नाव और शहद, प्रतिनिधि, खुरागायके सींघ और कहरुब्बा शमई, मात्रा, ३ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) प्राणोंको स्वच्छकर्ता, (२) अतिसार, रुधिरस्राव और नक्सीरको रोकनेवाला, (३) जलीहुई सीप कांतिप्रद है, (४) हृदयके शूलको हरणकर्ता, (५) विशेषतः मसूढ़ोंको दृढ़कारक है, (६) दांतोंको स्वच्छकर्ता, (७) घुटीहुई सीप प्रायः बहुतसे रोगोंको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(८७१) सीसक (शीशा)

संस्कृत, सीसक, फारसी, सुरब, अरबी, रसासुल् अस्वद, इंग्रेज़ी, लेड, स्वरूप, काला, स्वाद, रूखा और कसेला, पहिचान, एक प्रसिद्ध धातु है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और तर, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) मलको पक्वकर्ता, (३) इसको गुलरोग़नमें घोटकर मले तो दाहको शांतिप्रद है, (४) इसकी भस्मका नेत्रांजन (सुरमा) जस्तेकी भस्मके समान जाला, मांड़ा और नेत्ररोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८७२) सुपाड़ी

संस्कृत, पूग, फारसी, पोपिल, अरबी, फोफिल, इंग्रेज़ी, बिटलनट, स्वरूप, भूरी, स्वाद, कसेली, पहिचान, कितनीही जातिकी होतीहै, प्रसिद्ध है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, हानिकर्ता, वायुगोला और वस्तिको तथा छातीको खुरदरा करतीहै, दर्पनाशक, कतीरा, प्रतिनिधि, लाल चन्दन और धनियां, मात्रा, ४ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) बद्धक, (२) मलको पक्वकर्ता, (३) मस्तिष्कपर परिमाणुओं (अवख़रे) को नहीं चढ़नेदेती, (४) मुखकी स्निग्धता और दांतोंकी शिथिलताको हरणकर्ता, (५) हृदय, ओज और ढीले अवयवोंको बलप्रद, (६) मूत्रप्रवर्तक, (७) वीर्यको सांद्रकर्ता, (८) अतिसार-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बद्धक,(९)गरमीकी पीड़ाको गुणकर्ता, (१०) इसके उबालका जल बलवान् रेचक है, (११) इसका फूल बालकोंके दस्त बन्द करनेमें अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८७३) सुरंजानमीठी

फारसी, सुरंजानशीरीं, **अरबी**, सुरंजानहल्व, **स्वरूप**, ललोंईलिये पीला, **स्वाद**, गंधियुक्त मीठा, **पहिचान**, जंगली-लहसनकी तरह एक प्रसिद्ध कंद है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशय और यकृत्को, **दर्पनाशक**, कतीरा और केसर, **प्रतिनिधि**, सोंठ और निसोथ, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आन्तरिक शरीरसे सब जातिके कफको अतिसारद्वारा निकालनेवाला, (२) रोधको खोलनेवाला, (३) लसयुक्त स्निग्धताको शरीरके भीतरसे खींचनेवाला, (४) ओजको बलप्रद, (५) जांघकीपीड़ा, पांवकी और अंगुलीकीपीड़ा तथा गठियाको गुणकारक है, (निर्विषैल और कुछ जातिकी उपविष होतीहै)

(८७४) सुरंजान कड़वी

फारसी, सुरंजानतलख़, **अरबी**, सुरंजानमुर, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, कड़ुआ, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **प्रतिनिधि**, कड़ुआ कूठ, **मात्रा**, ३ माशे, परन्तु खाया नहीं जाता, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (३) कांतिप्रद, (४) गुल-रोग़नकेसाथ इसका मर्दन (मालिश) जोड़ोंकी पीड़ा और गठियाको गुणकारक है, (५) गायके घीकेसाथ इसके स्वरसमें कपड़ेको तर करके बवासीरपर बांधे तो बवासीरके मस्सोंको गिरादेताहै, (६) इसका खाना किसी प्रकार उचित नहींहै, (७) मस्तगीके साथ नसोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८७५) सुहागा

संस्कृत, टंकण, **फारसी**, तन्कार, **इंग्रेज़ी**, बोराक्ष, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, खारी और तीखा, **पहिचान**, खानमें होनेवाला एक द्रव्य है, यह चौकिया और सुनहरी दो जातिका होताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उत्तमांगको, **दर्पनाशक**, बबूलका गोंद और सिर्का, **प्रतिनिधि**, बूरा अरमनी, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) वायु और शोथको लयकर्ता, (३) कांतिप्रद, (४) बवासीरके मस्सोंको काटकर गिरानेवाला, (५) दुष्ट मांसको काटनेवाला, (६) भुनाहुआ आमाशयकी पीड़ा और उदरकी बद्धकताको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(८७६) सूरजमुखी

फारसी, गुलआफ्ताबपरस्त, **अरबी**, अर्दियून, **स्वरूप**, पत्ते हरे और फूल अत्यन्त पीला होताहै, **स्वाद**, कुछ क-

हुआ, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध गुल्म है कि जिसका फूल बड़ा चौड़ा तथा सुनहरी होताहै, यह सूर्यके सन्मुखही रहताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको और तिल्ली-वालेको, **दर्पनाशक**, सिकंजवीन और शहद, **प्रतिनिधि**, तज और केशर, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) शोथको लयकर्ता, (२) कांतिप्रद, (३) मस्तिष्क और हृदयके रोधको खोलनेवाला, (४) मस्तिष्कको शोधनकर्ता, (५) आमाशय, यकृत् और ओजको बलप्रद, (६) बवासीर, पीलिया, जलोदर और वायुगोलाको गुणकर्ता, (७) पथरी तोड़नेवाला, (८) इसका लेप पैरकी अंगुलीकी पीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८७७) सेंठा

फारसी, अजजिन्सनय, **अरबी**, कसब, **स्वरूप**, सुनहरी और पीला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक जातिकी नरकुलहै, भीतरसे ठोस होताहै, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसकी जड़ स्वच्छताप्रदहै, (२) शोथको लयकर्ता, (३) सिरका गंजापन और पीड़ाको गुणकर्ता, (४) जलेहुएका मंजन दांतोंको कांतिप्रद और दृढ़कारक है, (५) मसूढ़ोंसे रुधिरके बहनेको बन्द करनेवाला, (६) जलेहुएका लेप सूखी और तर खुजली तथा पीवयुक्त व्रणको गुणकारक है, (७) नमकके साथ इसकी भस्मकी बुर्की खांसीको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८७८) सेहुंड़ (थूहरका भेद)

संस्कृत, स्नुही, **अरबी**, जकूमशाम, **स्वरूप**, काटेदार हरा और दूध सफेद होताहै, **स्वाद**, अत्यन्त कड़ुआ, **पहिचान**, कांटेवाला दण्डा जैसा एक प्रसिद्धझाड़है, बंगालमें अधिक होताहै, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, जिस अंगपर लगायाजावे उसही अंगको आगकीतरह फूंकदेता है, **दर्पनाशक**, ताजा दूध, **प्रतिनिधि**, थूहर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रेचक, (२) कफ और वायुके विकारको हरणकर्ता, (३) क्षुधाप्रद, (४) जलोदर, कुष्ठ और पांडुको हरणकर्ता, (५) वस्ति (मसाने) की पथरीको तोड़कर निकालनेवाला है, (निर्विषैल)

(८७९) सेब

सिविका फल, **फारसी**, सेब, **अरबी**, तफाह, **इंग्रेज़ी**, आपल, **स्वरूप**, पीला और लाल, **स्वाद**, मीठा और खट्टा, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध विलायती फल है, **प्रकृति**, मीठा २ कक्षामें गरम और खट्टा २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष है, **हानिकर्ता**, छातीको और अधोवायुको पैदा करनेवाला, **दर्पनाशक**, दालचीनी, शहद और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुलकन्द, प्रतिनिधि, बिही, मात्रा, २ तोला, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) मनको प्रसन्नताप्रद, (२) हृदय, मस्तिष्क, यकृत्, आमाशय और आमाशयके मुखको बलप्रद, (३) शिरःस्थ प्राणोंको स्वच्छकर्ता, (४) गरमीको शांतिप्रद, (५) हृदयकी व्याकुलता और हांपनेको गुणकर्ता, (६) क्षुधावर्द्धक, (७) रुधिरको शीघ्रही उत्पन्नकर्ता, (८) मुखके स्वरूपका शोधक, (९) इसका मुरब्बा अत्यन्त मृदु, स्वादिष्ट, बलप्रद और प्रकृतिको प्रसन्नताप्रद है, (निर्विषैल)

(८८०) सेंम्हरका मूसरा

संस्कृत, शाल्मलिकन्द, **इंग्रेजी**, बोम्बेवसमलेवारीकम्, **स्वरूप**, सफ़ेद और भूरा, **स्वाद**, लसयुक्त, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके फलोंसे चिकनी रुई निकलतीहै, एक प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी वृक्षकी जड़ है, **प्रकृति**, मलको चिकना करनेवाला, गरम और तर है, **हानिकर्ता**, अधोवायुको पैदा करनेवाला, **प्रतिनिधि**, सतावर, **मात्रा**, १ तोला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) ओजवर्द्धक, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) रुधिरविकार और कुष्ठको हरणकर्ता, (४) ओजको बलप्रद, (५) आमाशयको बलप्रद, (६) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (७) वास्तविक उष्णताका वर्द्धक है, (निर्विषैल)

(८८१) सेंम

संस्कृत, शिंबि, **अरबी**, गिलाफ़ुल्गोल, **स्वरूप**, हरी और सफ़ेद, **स्वाद**, कुछ कसेली, **पहिचान**, जिसकी तरकारी होतीहै एक प्रसिद्ध बेलकी फली है, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडी और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दीर्घपाकी और अफरा करनेवाली, **दर्पनाशक**, मांस और गरम मसाला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ और वायुके विकारको हरणकर्ता, (२) पित्तके विकारको हरणकर्ता, (३) इसको मांसकेसाथ पकावे तो मांसको स्वादिष्ट करदेतीहै, (४) प्रायः त्वचा और महामारीके रोगोंको लाभप्रद, (५) इसके पत्तोंका स्वरस दादमें लगावे तो अनुभूत गुणकारक है, (६) इसके पत्तोंको कड़ुए तेलमें जलाकर लोहेके बरतनमें घोटे और उपचार करे तो गंजापन और नासूरको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८८२) सेंमके बीज

संस्कृत, शिंबिबीज, **अरबी**, गोल, **स्वरूप**, हरा, सफ़ेद और लाल, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति**, ठंडे और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) कफ और पित्तके विकारको हरणकर्ता, (२) आमाशय और ओजको बलप्रद, (३) इन्होंकी मैदाका हलुआ ओजवर्द्धक है, (४) इन्होंके चूर्णकी बुर्की रक्तस्राव और नक्सीरको बन्द करनेवाली है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection

(८८३) सेवती

संस्कृत, शतपत्री, **फारसी**, गुलमुश्कीं, **अरबी**, दर्वसीनी और नसरीं, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध फूल है, **प्रकृति**, १ कक्षामें रूक्ष और २ कक्षामें गरम, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको, **दर्पनाशक**, कपूर, **प्रतिनिधि**, चंवेली, **मात्रा**, ३ माशेसे ९ माशेतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) वायु और शोथको लयकर्ता, (३) वक्षःस्थलको शोधनकर्ता, (४) छातीकी सूजन, कंठकी पीड़ा और शोथको गुणकर्ता, (५) हृदय, मस्तिष्क और यकृत्को बलप्रद, (६) सिरको गरम करनेवाला, (७) आर्तवप्रवर्तक, (८) कफ और वातको अतिसारद्वारा निकालनेवाला, (९) इसकी नस्य उत्तमांगको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(८८४) सोंठ

संस्कृत, शुंठी, **अरबी**, जंजबील, **स्वरूप**, धूलिया रंगकी, **स्वाद**, तीक्ष्ण गन्धियुक्त तीखी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें रूक्ष और २ कक्षामें गरम, **हानिकर्ता**, कण्ठको, **दर्पनाशक**, शहद और बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, काली मिरच, **मात्रा**, ७ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) धारणाशक्ति, पाचनशक्ति, आमाशय और यकृत्को बलप्रद, (२) यकृत्के रोधको खोलनेवाली, (३) ओजवर्द्धक, (४) वायुको लयकर्ता, (५) कफको छांटनेवाली, (६) सांद्र दोषोंको निकालनेवाली, (७) प्रकृतिको नरम करनेवाली, (८) पक्षवध और शीतकी सम्पूर्ण पीड़ाओं (दर्द) को अत्यन्त गुणकारक है, (९) पेटके कीड़ोंको मारनेवाली, (१०) कफज तृषाको शांतिप्रद, (११) बालछड़ और पिस्ताकेसाथ ओजको अत्यन्त अनुभूत गुणकारक है, (१२) मछलीके ऊपर सेवन करनेसे तृषाको दूर करनेवाली है, (निर्विषैल)

(८८५) सोंना

संस्कृत, **स्वर्ण**, **फारसी**, जर्दतिला, **अरबी**, जहब, **इंग्रेज़ी** गोल्ड, **स्वरूप**, चमकीला और पीला, **स्वाद**, फीका और कसेला, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, समान गुणवाला और कुछ गरम, **हानिकर्ता**, वस्ति और मूत्रप्रवर्तक अवयवोंको, **दर्पनाशक**, शहद और कस्तूरी, **प्रतिनिधि**, हीरा, पन्ना इत्यादि रत्न, **मात्रा**, १ रत्तीसे २ रत्तीतक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) प्राणोंको स्वच्छताप्रद, (२) प्रकृतिको प्रसन्नताप्रद, (३)हृदय, मस्तिष्क और वास्तविक उष्णताको बलप्रद, (४) चिन्ता, सन्ताप, दुःख और हृदयकी व्याकुलताको दूर करनेवाला, (५) सब प्रकारकी बवासीर और वृक्कके मांद्यको लाभप्रद, (६) ओजको बलप्रद, (७) इसका नेत्रांजन (सुरमा) दृष्टिको बलप्रद है, (निर्विषैल)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(८८६) सोनामक्खी

संस्कृत, स्वर्णमाक्षिक, **फारसी**, चर्कतिला, **अरबी**, खबसुज्जहब और अक्लीमियाउल्ज़हब, **इंग्रेज़ी**, आयर्नपाईराईटीस्, **स्वरूप**, पीला, **स्वाद**, कसेला, **पहिचान**, सोंनेका मैल है, खानोंसे लातेहैं, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनशक**, बादामरोग़न, **प्रतिनिधि**, तूतिया, **मात्रा**, १ जौके बराबर, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) नेत्रोंकी व्यर्थ स्निग्धताको शोषणकर्ता, (२) दृष्टिको बलप्रद, (३) आंखोंका जाला, मांड़ा, नख और शिरके रोगोंकी नाशक, (४) हृदयको बलप्रद, (५) हृदयकी व्याकुलताको लाभप्रद, (६) प्लीहका शोथ और कठोरताको लयकारक है, (निर्विषैल)

(८८७) सोंफ़

संस्कृत, शतपुष्पा, **फारसी**, बादियान और राज़ियानह, **अरबी**, राज़ियांज, **इंग्रेज़ी**, पीम्पेनेल्अनीसम्, **स्वरूप**, हरियालीलिये, पीली, **स्वाद**, तीक्ष्णगन्धियुक्त, तीखी और कुछ मीठी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, १ कक्षामें रूक्ष और २ कक्षामें गरम, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, चन्दन, कपूर और सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, करफसके बीज, **मात्रा**, ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) वक्षस्थल, यकृत्, प्लीह, वृक्क और वस्तिके रोधको खोलनेवाली, (२) पेटकी पीड़ाको शांतिप्रद, (३) दृष्टि और आमाशयको बलप्रद, (४) वायुको लयकर्ता, (५) कफको छांटनेवाली, (६) परिमाणुओं (भाप) के चढ़नेकी उष्णताको लाभप्रद, (७) मूत्रल, (८) सिकंजबीनकेसाथ जीर्णज्वरको लाभप्रद है, (९) मलको पक्ककर्ता, (१०) दुग्धको उत्पन्नकर्ता, (११) गुल्म, अतिसार और खांसीको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८८८) सोंफ़की जड़

संस्कृत, शतपुष्पामूल, **फारसी**, बेख़बादियान, **अरबी**, असलुल्राजियांज, **स्वरूप**, पीली, **स्वाद**, तीखी और मीठी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, उष्णप्रकृतिवालोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा, धनियां और चन्दन, **प्रतिनिधि**, करफसकी जड़, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) शोथ और वायुको लयकर्ता, (२) अपानवायुकी निस्सारक, (३) पाचक, (४) रोधको खोलनेवाली, (५) मूत्रल, (६) आर्तवप्रवर्तक, (७) पीड़ाको शांतिप्रद, (८) मलको समपक्ककर्ता, (९) गुल्म और पसलीकी पीड़ाको लाभप्रद, (१०) शहदकेसाथ इसका लेप बावले कुत्तेके काटे-हुएको अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८८९) सोया

फारसी, शोत, **अरबी**, शब्त, **स्वरूप**,

CC0. Gurukul Kangri Collection

हरा, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त, तीखा और कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, जिसके पत्ते छोटे और बारीक तथा फूल छत्तादार होताहै, एक प्रसिद्ध शाक है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, कोई १ कक्षामें रूक्ष कहते हैं, **हानिकर्ता**, मस्तिष्कको दुबला करनेवाला और मदकारक है, **दर्पनाशक**, खटाई और सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, सोयाके बीज, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) मलको समपक्ककर्ता, (३) रोधको खोलनेवाला, (४) पाचक, (५) मरोड़ाको शांतिप्रद, (६) शीतकी पीड़ा और सूखी खांसीको गुणकर्ता, (७) वृक्क और वस्तिकी पथरीको तोड़नेवाला, (८) गुल्मको लाभप्रद, (९) आमाशयसे गाढ़े और लसयुक्त दोषोंको छांटकर निकालनेवाला है, (निर्विषैल)

(८९०) सोयाके बीज

फारसी, तुख़्मशोत, **अरबी**, बजरुल्शब्त, **स्वरूप**, हरियालीलिये, पीले, **स्वाद**, कुछ कड़वे और तीखे, **पहिचान**, सोंफ़जैसे, परन्तु सोंफ़से कुछ छोटे होतेहैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दृष्टिको और उष्णप्रकृतिवालोंको तथा वीर्यको बिगाड़नेवाले, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वायुको लयकर्ता, (२) मूत्र, आर्तव और दुग्धके अत्यन्त प्रवर्तक, (३) प्रायः गर्भाशयके रोगोंको गुणकर्ता, (४) वस्ति और वृषणोंके रोगोंको लाभप्रद, (५) कफज हिक्का (हिचकी) कमर और तिल्लीकी पीड़ाको गुणकारक हैं, (निर्विषैल)

(८९१) सोसन

फारसी, सोसनअस्मांगून, **अरबी**, सोसनअस्मांजून, **स्वरूप**, पत्ते हरे और फूल नीला, **पहिचान**, बगीचोंमें और जंगलमें होनेवाला एक वृक्ष है, यह कितनीही जातिका होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, कोई समान गुणवाला कहतेहैं, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, शहद और नीलोफर, **प्रतिनिधि**, माज़रयून, **मात्रा**, ६माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) आमाशयको बलप्रद, (२) आंत, यकृत् और वृक्कको बलप्रद, (३) गरमी करनेवाला, (४) शोथ और वायुको लयकर्ता, (५) सब प्रकारके कफको छांटनेवाला, (६) यदि इसके पत्तोंको चबाकर स्वरसको निगलजावे तो नक्तांध्य (रतोंधी) नेत्रोंके क्षत (ज़ख़म) आंखकी ललाई और नख तथा शिरके रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८९२) सोसनकी जड़

फारसी, बेख़सोसन, **अरबी**, अस्लुस्सोसन, **स्वरूप**, भूरी, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त, कुछ कड़वी, **पहिचान**, जिससे बनफ्साजैसी सुगन्धि आतीहै, टेढ़ी, गठीली और बांकी होतीहै, इसको मनुष्य बनफ्साकी जड़ बतातेहैं, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, कोई समान गुणवाली कहतेहैं,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हानिकर्ता, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक,** शहद, **प्रतिनिधि,** मुलहटीका सत्त, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) गरमीको उत्पन्नकर्ता, (३) मलको समपक्ककर्ता, (४) कांतिप्रद, (५) मलको शोधनकर्ता, (६) पित्तज, वातज और कफज मलको अतिसारद्वारा निकालनेवाली, (७) कफज आक्षेप, पक्षवध, सन्यास और बालकोंके निद्रामें चोंकनेको गुणकर्ता, (८) इसका लेप पुरानी शिरःपीड़ाको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(८९३) सोसन आजाद

अरबी, जम्बक, **स्वरूप,** फूल सफ़ेद, **स्वाद,** कुछ कडुआ, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** पीलिया करनेवाला, **दर्पनाशक,** मूली, **प्रतिनिधि,** ईरसा और नरगिस, **मात्रा,** १ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) मस्तिष्कको बलप्रद, (३) मूत्रल, (४) इसका तैल अवयवोंको बलप्रद है, (५) पित्तको अतिसारद्वारा निकालताहै, (निर्विषैल)

(८९४) संखिया

संस्कृत, विष, **फारसी,** मर्गमूश, **अरबी,** सम्बुलफार और करूनुस्सम्बुल, **स्वरूप,** सफ़ेद, लाल, पीला और काला, **स्वाद,** बेस्वाद, **पहिचान,** प्रसिद्ध विष है, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) दोषोंको लयकर्ता, (२) सर्दीके व्रणों (जख़मों) को भरनेवाला, (३) इसको तैलके साथ मर्दन (मलना) करनेसे तर और सूखी खुजली तथा सर्दीकी सूजनको गुणकारक है, (४) जलोदरको लाभदायक है, (घातक विष है)

(८९५) संगतरह

स्वरूप लाल, **स्वाद,** चाश्नीयुक्त, **पहिचान,** नारंगीजैसा एक हिन्दुस्तानी प्रसिद्ध फल है, **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें तर, **हानिकर्ता,** स्नायु और नरखरेको, **दर्पनाशक,** कंद और शहद, **प्रतिनिधि,** नारंगी, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) हृदय और मस्तिष्कको बलप्रद, (२) प्रसन्नताप्रद, (३) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (४). गरमी और प्यासको शांतिप्रद, (५) महामारी पवनके विषको हरणकर्ता, (६) पित्तको छांटनेवाला, (७) पित्तप्रकृतिवालोंको बहुत अनुकूल है, (८) हृदयकी व्याकुलता और बेहशतको गुणकर्ता, (९) इसका उबटना मुखकी श्यामता (स्याही) व्यंग, (झाई) और मैलको हरणकर्ता है, (निर्विषैल)

(८९६) संगजराहत

अरबी, हजरुल्ऐराबी, **स्वरूप,** सफ़ेद, **स्वाद,** नरम और फीका, **पहिचान,** एक जातिका प्रसिद्ध पत्थर है, **प्रकृति,** २ कक्षामें ठंडा और रूक्ष, **हानिकर्ता,** बस्तिको **दर्पनाशक,**

CC0. Gurukul Kangri Collection

मक्खन और खांड़, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) सब अवयवोंसे रुधिरके बहनेको बन्द करनेवाला, (२) छातीका दर्द और रक्तातिसार (खूनी दस्त) को बन्द करनेवाला, (३) व्रणों (जख़्मों) से रुधिरके बहनेको बन्द करनेवाला, (४) दांतोंको स्वच्छ करनेवाला, (५) मसूढ़ोंको दृढ़ (मज़बूत) करनेवाला, (६) दहीकेसाथ अतिसार (दस्तों) को बन्द करनेवाला, (७) मुखसे रुधिरके आनेको अनुभूत गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८९७) संग चुम्बक

फारसी, संगचकमाक और संगआतिश, **अरबी**, हजरुल्नार, **स्वरूप**, भूरा और काला, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक प्रसिद्ध पत्थर है जोकि लोहेको खींचताहै, और पोलादकेसाथ रगड़नेसे जिससे आग निकलतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें ठंडा और २ कक्षामें रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसकी बुर्की कण्ठमालाको लाभप्रद है, (२) व्रणों (जख़्मों) के ऊपर लगानेसे व्रणोंको भरलाताहै, (३) यदि जख़्म किसी प्रकारसे खुश्क न होवें तो इससे खुश्क होजातेहैं, (निर्विषैल)

(८९८) संग सरमाही

अरबी, हजरुस्समक और हजरुल्हूत, **स्वरूप**, सफ़ेद और भूरा, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, एक जातिका तिकौना पत्थर है, जोकि मछलीके शिरसे निकलताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) वृक्क और वस्तिकी पथरीके तोड़नेमें बलवान् प्रभावशाली है, (२) बालकोंके पार्श्वरोगको लाभप्रद है, (३) बालकोंकी तृषाधिक्यको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(८९९) संग यहूदां

अरबी, हजरुल्यहूद, **स्वरूप**, सफ़ेद, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, बेरजैसा गोलाकार १ पत्थर है, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, यकृत्को, **दर्पनाशक**, गोंद और करफस, **प्रतिनिधि**, करफस, **मात्रा**, २ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यन्त मूत्रल, (२) वृक्क और वस्तिकी पथरीको तोड़कर निकालनेवाला, (३) पथरीको नहीं होनेदेता, (४) यदि वस्तिमें रुधिर जमजावे तो कड़वा बादाम और जलकें साथ पिलानेसे रुधिरको पिघलाकर मूत्रद्वारा निकालदेताहै, (निर्विषैल)

(९००) सम्हालू

संस्कृत, सिन्दुवार, **फारसी**, फंजिकिश्त, **अरबी**, असलक, **स्वरूप**, हर और पीला, **स्वाद**, कडुआ और कसेला, **पहिचान**, जिसके पत्ते जवासेके समान होतेहैं, तीन चार गजका लंबा एक झाड़ होताहै, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्क और ओजको, **दर्पनाशक**, करफसके बीज, **प्रतिनिधि**, गुलनार, **मात्रा**,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) बद्धक, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (४) प्लीहके रोधका उद्घाटक, (५) गर्भाशयका शोथ, आर्त्तवका रोध और हृदयके रोगोंको गुणकर्ता, (६) कुत्तेके काटेहुऐको गुणकर्ता, (७) इसका बीज सन्तानको नहीं होनेदेता, (८) अरबवाले इसको हब्बुलनसल कहतेहैं, (निर्विषैल)

(६०१) सम्हालूके बीज

संस्कृत, सिन्दुवारबीज, **फारसी,** तुख़्मफंजिकिश्त, **अरबी,** बजरुल्असलक, हब्बुल्फिक्द और हब्बुल्नसल, **स्वरूप,** काले और सफ़ेद, **स्वाद,** तीखे और कड़वे, **पहिचान,** प्रसिद्ध हैं, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** वृक्क और ओजको, **दर्पनाशक,** बबूलका गोंद और बकरीका दूध, **प्रतिनिधि,** शाहदाना, **मात्रा,** ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) यकृत्के रोधका उद्घाटक, (२) मस्तिष्क सम्बन्धी रोधका उद्घाटक, (३) कफज सन्निपातको लाभप्रद, (४) सन्तानको नहीं होनेदेता, (निर्विषैल)

(६०२) हरड़ काबिली

फारसी, हलेलहकाबिली, **अरबी,** हलेलजकाबिली, **स्वरूप,** पीली और भूरी, **स्वाद,** कसेली, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** समानगुणवाली, **हानिकर्ता,** मस्तिष्कको, **दर्पनाशक,** शहद, **प्रतिनिधि,** काली और पीली हरड़, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) वातज, कफज और पित्तज मलको अतिसारद्वारा निकालनेवाली, (२) मूत्रल, (३) इन्द्रियोंको बलप्रद, (४) अपस्मार, अर्दित, हृदयकी व्याकुलता और मालीख़ोलियाको गुणकर्ता, (५) इसका स्वरस रेचक है, (निर्विषैल)

(६०३) हड़जोड़

(हड़जुरी–हड़संकरी)

संस्कृत, अस्थिसंहारी, **स्वरूप,** भूरी, **स्वाद,** कुछ कड़वी और कसेली, **पहिचान,** एक वृक्षकी शाखा है जोकि गिलोयजैसी होतीहै, **प्रकृति,** गरम और रूक्ष, **मात्रा,** २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) विशेषतः टूटीहुई हड्डीको जोड़नेवाली है, (२) इसके गुण बिलकुल गिलोयजैसे हैं, (३) यह नवीन ओषधियोंमेंसे है, (निर्विषैल)

(६०४) हरड़ जर्द

संस्कृत, हरीतकी, **फारसी,** हलेलहजर्द, **अरबी,** हलेलज अस्फर, **इंग्रेज़ी,** टरमिनेलियाकेबुला, **स्वरूप,** पीली, **स्वाद,** कसेली, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता,** आंतोंमें लेखनता करनेवाली और गुल्मप्रद, **दर्पनाशक,** बादामरोग़न, उन्नाव और लिहसोड़ा, **प्रतिनिधि,** काबिली हरड़ और माजू, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मस्तिष्क और आमाशयको बलप्रद, (२) बुद्धिको बलप्रद,

CC0. Gurukul Kangri Collection

(३) रेचक, (४) रोधकी उद्घाटक, (५) मालीख़ोलिया, बिस्वासा और उन्माद-को लाभप्रद, (६) हृदयकी व्याकुलता, कुष्ठ, संनिपातज्वर, जलोदर और अर्शज वायुको गुणकर्ता,(७) कफ और स्निग्धता-को शोषणकर्ता, (८) इसकेभी अगणित गुण हैं, (निर्विषैल)

(९०५)हरड़ स्याह (छोटी हरड़)

फारसी, हलेलहस्याह, **अरबी,** हले-लज अस्वद, **स्वरूप,** काली, **स्वाद,** क-सेली, **पहिचान,** प्रसिद्ध है, **प्रकृति,** १ कक्षामें ठंडी और २ कक्षामें रूक्ष, **हा-निकर्ता,** यकृत्‌को, **दर्पनाशक,** शहद और घी, **प्रतिनिधि,** काबिली हरड़, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) लिंग और उदरके अवयवोंको बलप्रद, (२) रक्तशोधक, (३) वातज मलको अति-सारद्वारा निकालनेवाली, (४) कुष्ठ, अर्श और प्लीहकी पीड़ाको गुणकर्ता, (५) रेचक,(६) इसकी मैदा अतिसारकी बद्धक है, (निर्विषैल)

(९०६) हत्ताजोड़ी

फारसी, कफेमरियम और कफेआयशह, **अरबी,** असवेअ्उल्सफर, **स्वरूप,** पिलोंई-लिये, धूलिया, **स्वाद,** कुछ कड़वी, **पहि-चान,** जिसके पत्ते गंदनाके पत्तेजैसे होते-हैं, छोटा पंजाजैसी एक ओषधि है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता,** हृदय और मूत्राशयको, **दर्प-नाशक,** बलूत और बबूलका गोंद, **प्रति-निधि,** नागरमोथा, **मात्रा,** ४ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,**(१) दोषोंको स्वच्छताप्रद,(२) सांद्रमलको लयकर्ता, (३) प्रायः अवयवोंके मलको और व्यर्थ मलको शोधनकर्ता,(४) कीड़े, मकोड़ोंके विषका दर्पनाशक, (५) उन्माद और वातज रोगोंको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(९०७) हन्कूट

स्वरूप, पिलोंई लिये, **स्वाद,** कड़ुआ और कसेला, **पहिचान,** हरड़जैसा एक फल है, **प्रकृति,** गरम, **हानिकर्ता,** आंतों-को, **दर्पनाशक,** मिश्री, **प्रतिनिधि,** नि-र्मली, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) फोड़े, फुन्सी, मस्सा और दानोंको दूर करनेवाला, (२) पेटके कीड़ोंको मारनेवाला, (३) इसके वृक्षकी छाल रक्तप्रकोप, कोढ़ और खुजलीको लाभकारक है, (४) वातज-मलको अतिसारद्वारा निकालताहै, (निर्विषैल)

(९०८) हफ्तबर्ग

अरबी, माज़र्यून, **स्वरूप,** पिलोंईलिये, **स्वाद,** कड़ुआ, **पहिचान,** जिसके पत्ते समाक-केपत्तेजैसे और दुधारे होतेहैं, एक वृक्ष है, यह कितनीही तरहका होताहै, **प्रकृति,** ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** यकृत्‌को और व्याकुलताप्रद, **दर्पनाशक,** इसका शोधन करना है, **प्रतिनिधि,** गूगल और ईरसा, **मात्रा,** १।।। माशे, **गुण, कर्म,**

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रयोग, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) मलको शोधनकर्ता, (३) पित्तको दस्तोंकेद्वारा निकालनेवाला, (४) पेटके कीड़ोंको मारनेवाला, (५) जलोदर, पांडु, वृक्क और वस्तिका दौर्बल्य प्लीह और शोथको गुणकारक है, (६) इसका दूध घातक विष है और अत्यन्त वमनप्रद है, (७) इसका दर्पनाशक नहींहै, (निर्विषैल)

(६०६) हब्बुल्सनोवर

स्वरूप, पिलोईलिये, **स्वाद,** स्वादिष्ट और चिकना, **पहिचान,** वादामके समान एक बीज है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर, **हानिकर्ता,** उष्ण प्रकृतिवालोंको तथा शिरःपीड़ा और मूर्च्छाप्रद है, **दर्पनाशक,** सिकंजवीन और खट्टे फल, **प्रतिनिधि,** सतावर, **मात्रा,** ७ माशे **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) ओजको अधिक उत्पन्नकर्ता, (२) क्षुधावर्द्धक, (३) स्नायुओंको बलप्रद, (४) प्रायः अवयवोंको बलप्रद, (५) रोधका उद्घाटक, (६) अधोवायु निस्सारक, (७) पक्षवध, अर्दित, पादहर्ष, ग्रीवास्तम्भ, कम्प और शीतकी गठियाको गुणकर्ता, (८) यकृत्के रोग, पाण्डु और जलोदरको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६१०) हब्बुल्ज़ियम्

स्वरूप, बाहर पीला और भीतरसे सफ़ेद होताहै, **स्वाद,** स्वादिष्ट, मीठा और चिकना, **पहिचान,** चनेसे बड़ा और चौड़ा तथा चपटा एक बीज है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और १ कक्षामें तर, **हानिकर्ता,** कण्ठको बैठारनेवाला, **दर्पनाशक,** बनफ्सा और गुलकन्द, **प्रतिनिधि,** सतावर और पोस्तके बीज, **मात्रा** ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) ओजको चालनकर्ता, (२) शरीरको बृंहणकर्ता, (३) यकृत्को बलप्रद, (४) वातज रोगोंको गुणकर्ता, (५) वक्षःस्थलकी खुरखुराहट और खांसीको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६११) हमाया

स्वरूप, हरे पत्ते तथा डाली और फूल लाल होतेहैं, **स्वाद,** सुगन्धियुक्त, फीका, **पहिचान,** एक जातिकी ओषधि है, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** आमाशयको, **दर्पनाशक,** करफ्स, **प्रतिनिधि,** असारून, **मात्रा,** ५ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मलको पक्वकर्ता, (२) रोधकी उद्घाटक, (३) यकृत्को बलप्रद, (४) यकृत् और गर्भाशयकी शोथ तथा पादांगुलिपीड़ाको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६१२) हमेशहबहार

अरबी, अवरून और हय्युल्आलम, **स्वरूप,** पत्ते हरे और सफ़ेद तथा फूल पीले होतेहैं, **स्वाद,** कुछ कड़ुआ, **पहिचान,** खुब्बाजीकेसमान बीज होतेहैं, इसका झाड़ तुलसीकेसमान एक गज़, डेढ़ गज़ लम्बा होताहै, इसकी पींढ़में एक प्रकारकी ल्हस होती-

है, प्रकृति, २ कक्षामें ठंडा और १ कक्षामें रूक्ष, हानिकर्ता, प्लीहको, दर्पनाशक, अरमनी मिट्टी, प्रतिनिधि, काहू और अंबुस्सलव, मात्रा, ६ माशे, गुण, कर्म, प्रयोग, (१) यकृत् और प्लीहके रोधका उद्घाटक, (२) पीड़ित अवयवोंपर मलको नहीं गिरनेदेता, (३) शिरःपीड़ा, नेत्रविकार और कर्णपीड़ाको गुणकर्ता, (४) आमाशयको बलप्रद, (५) पेटके कीड़ोंको मारकर निकालताहै, (६) रुधिरस्राव आंतोंकी लेखनता और गठियाको गुणकर्ता, (७) गरमीकी वायुको लयकारक है, (निर्विषैल)

(६१३) हरताल

संस्कृत, हरिताल, **अरबी**, जर्नीखअस्फर, **स्वरूप**, पीली, **स्वाद**, फीकी, **पहिचान**, पीली मिट्टीके समान खानसे निकलनेवाली एक वस्तु है, **प्रकृति**, गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, दोषोंको दुष्ट करनेवाली और मरोड़ाको उत्पन्न करनेवाली, है, **दर्पनाशक**, पीली हरड़ और घी, **प्रतिनिधि**, मैनफल, **मात्रा**, १॥ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दुष्ट और अधिक मांसवाले मस्सोंको छेदन करनेवाली, (२) खुजलीके चिह्नोंको प्रकटकर्ता, (३) बालोंके गिरजानेको और जूंआओंके पड़जानेको गुणकर्ता, (४) अत्यन्त तृषाप्रद, (५) दुष्टदोष और त्वचाको जलानेवाली, (६) पेटके कीड़ोंको मारकर निकालतीहै, (७) आंतोंमें लेखनता करनेवाली, (८) चूनाके साथ बालोंको मूंड़नेवाली हैं, (निर्विषैल)

(६१४) हराममगज

अरबी, नखाअ्, **स्वरूप**, सफेद, **स्वाद**, फीका और चिकना, **पहिचान**, शरीरके अवयवोंमेंसे एक वस्तु है जोकि पीठकी मज्जाके भीतर रहतीहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और तर, **प्रतिनिधि**, मोम और पिंढ़लीकी मज्जा, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) इसका तैल कठोरताको लयकारक है, (२) इसका लेप व्रणों (ज़ख़म) को शुद्ध करके भरलाताहै, (३) इसकी चिकनाई होठोंके फटनेको गुणकारक है, (४) सूखे अवयवोंको चिकने करनेवाला है, (५) इसके स्वरसमें आटेको गूंधकर रोटी बनाकर खावे तो अवयवोंको बलप्रद है, (निर्विषैल)

(६१५) हुस्नयूसिफ

अरबी, हाशीश, **स्वरूप**, सफ़ेद और कठोर, **स्वाद**, फीका, तीखा और बेज़ायका है, **पहिचान**, पोस्तके बीजोंसे कुछ छोटा एक बीज है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, व्याकुलताप्रद और वमनप्रद है, **दर्पनाशक**, ताज़ा दूध, **प्रतिनिधि**, अस्पगोलकी भुसी, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) मुखके स्वरूपका शोधक, (३) खुजली और

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चेचक इत्यादिके चिन्होंका नाशक है, (४) इसका खाना घातक है, केवल लेप करनाही उचित है, (निर्विषैल)

(६१६) हिरनखुरी रांग

संस्कृत, रंग, **इंग्रेज़ी**, टीन, **स्वरूप**, स्वच्छ और सफ़ेद, **स्वाद**, फीका और कसेला, **पहिचान**, हिरनके खुरकेसमान अत्यन्त स्वच्छ एक जातिका रांगा है, **प्रकृति**, गरम और तर, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) खुजली और कुष्ठको लाभप्रद, (२) सात काली मिरचकेसाथ पीसकर अढ़ाई रत्तीकी मात्रासे नित्यप्रति पीवे तो ओजको बलप्रद है, (३) वीर्यको अधिक उत्पन्नकर्ता, (४) नेत्रके रोगोंको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६१७) हरफ़ाखेड़ी

स्वरूप, पीला, **स्वाद**, खट्टा, **पहिचान**, गोल बेरके बराबर एक हिन्दी फल है, **प्रकृति**, २कक्षामें ठंडा और तर, **हानिकर्ता**, कफ और वातको उत्पन्नकर्ता, **दर्पनाशक**, शहद, **प्रतिनिधि**, कच्चा आंवला, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) पित्तको अत्यन्त छांटनेवाला, (२) रक्तप्रकोपको शांतिप्रद, (३) गरमी और जलनको दूर करनेवाला, (४) रुधिरस्रावका रुद्धक, (५) आमाशयको बलप्रद, (६) इसके पत्तोंका स्वरस रुधिरशोधक है, (७) कुष्ठको लाभप्रद है, (निर्विषैल)

(६१८) हरहड़ा

स्वरूप, हरा और फूल सफ़ेद होताहै, **स्वाद**, कसेला और दुर्गंधियुक्त, **पहिचान**, दुर्गंधियुक्त एक प्रसिद्ध हिंदी ओषधि है, **प्रकृति**, ठंडी और तर तथा किसीके मतमें गरम और तर है, **हानिकर्ता**, स्नायुओंको, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अत्यन्त मूत्रल, (२) वृक्क और वस्तिकी पथरीको तोड़कर निकालनेवाली, (३) मूत्रकृच्छ्रको गुणकर्ता, (४) प्रतिश्याय (जुक़ाम) प्रद, (५) पेटके कीड़ोंको मारकर निकालता है, (निर्विषैल)

(६१९) हलदिया

स्वरूप, पीला, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, हलदीकेसमान एक जड़ है, **प्रकृति**, ४ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वक्षःस्थल और फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, वमन कराना और घी, **प्रतिनिधि**, संखिया, **मात्रा**, इसको खाते नहींहैं, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) मांसको खानेवाला, (२) व्रणकारक, (३) इसका सेवन किसीप्रकार उचित नहींहै, (घातक विष है)

(६२०) हलदी

संस्कृत, हरिद्रा, **फ़ारसी**, जर्दचोब, **अरबी**, उरूकुस्सफर, **इंग्रेज़ी**, टरमेरीक, **स्वरूप**, पीली, **स्वाद**, तीक्ष्ण गंधियुक्त, कड़वी, **पहिचान**, प्रसिद्ध है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, हृदयको, **दर्पनाशक**, नीबू और बिजौरेका स्वरस, **प्रतिनिधि**, ममीरा, **मात्रा**, ५ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) दृष्टिको बलप्रद,

CC0. Gurukul K...

(२) यकृत्की उद्घाटक, (३) जलोदर और पांडुको गुणकर्ता, (४) इसका चबाना दांतोंकी पीड़ाको लाभप्रद है, (५) शोथ-को लयकर्ता, (६) दोषोंको शांतिप्रद, (७) नेत्ररोगोंको लाभप्रद, (८) नेत्रों-को बलप्रद, (९) इसका धूआं और सेक चोटको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६२१) हाऊबेर

संस्कृत, हबुषा, **फारसी**, तुख़्मदुहल, **अरबी**, अवहल और समरतुल्अरअर, **इंग्रेज़ी**, थेवेटियनेरिफोलिया, **स्वरूप**, भूरा, **स्वाद**, कडुआ, **पहिचान**, बाकला से बड़ा और बेरसे छोटा एक फल है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, आमाशय और यकृत्को, **दर्पनाशक**, शहद, और घी, **प्रतिनिधि**, सलीखा और दाल-चीनी, **मात्रा**, ६ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) अत्यंत मृदु, (२) दोषोंको लय-कर्ता, (३) रूक्षताप्रद, (४) बद्धक, (५) लेखनताप्रद, (६) हांपना, जलोदर और बवासीरको गुणकर्ता, (७) आर्तव-प्रवर्तक, (८) गर्भको गिरानेवाला है, (निर्विषैल)

(६२२) हारसिंगार

संस्कृत, पारिजात, **स्वरूप**, पत्ते हरे, फूल सफ़ेद और पीले कि जिन्होंकी दंडी लाल होतीहै, **स्वाद**, फीका, **पहिचान**, जिसके फल चपटे और गोल होतेहैं तथा फूल सुगंधियुक्त दिखनोट होताहै एक प्रसिद्ध झाड़ है, **प्रकृति**, ठंडा और रूक्ष, कोई गरम और रूक्ष कहतेहैं, **हानिकर्ता**, खांसीवालोंको, **दर्पनाशक**, कतीरा, **प्रति-निधि**, कुटकी, **मात्रा**, ३ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) ओजको बलप्रद, (२) इसके पत्ते संनिपातज्वरको गुण-कारक हैं, (३) दाद, झाई और सीप-को दूर करनेवाला, (४) इसके फूल शीत-प्रकृतिवालोंके हृदयको बलप्रद हैं, (५) गरमीको दूर करनेवाला, (६) ओजको चालनकर्ता, (७) इसका गोंद और जड़ ओजको बलप्रद हैं, (८) इसके फूलोंकी दंडी वस्त्रोंके रंगनेमें बहुत काम आतीहै, (निर्विषैल)

(६२३) हिन्दी जन्दनी

फारसी, बादियान रूमी, **अरबी**, अनीसून, **स्वरूप**, सफ़ेदी लिये, हरा, **स्वाद**, कडुआ और तीखा, **पहिचान**, सौंफसे छोटा एक बीज है, **प्रकृति**, २ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, आंतोंको और गरम प्रकृति-वालोंको तथा शिरःपीड़ाप्रद है, **दर्पनाशक**, सौंफ और सिकंजबीन, **प्रतिनिधि**, सोया और सौंफ, **मात्रा**, ७ माशेसे ९ माशे-तक, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छताप्रद, (२) वायुको लयकर्ता, (३) कांतिप्रद, (४) पीड़ाको शांति-प्रद, (५) रोधका उद्घाटक, (६) पक्षवधको लाभप्रद, (७) अर्दित, जलो-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दर, कफज्वर, प्रदर, आमवात (गठिया) और पांडु (पीलिया) को हरणकर्ता, (८) मूत्र, दुग्ध और प्रस्वेदप्रवर्तक, (९) ओजको चालनकर्ता, (१०) इसके स्वरसमें भिगोयाहुआ वस्त्र ऋतुस्नानके पीछे स्त्रीकी योनिमें रक्खे तो गर्भप्रद है, (निर्विषैल)

(६२४) हिन्दी मुलहटी

फारसी, बाबूनागाव, **अरबी,** अकहवां, **स्वरूप,** पत्ती हरी और फूल लाल तथा पीले होतेहैं, **स्वाद,** फीका और सुगंधियुक्त, कडुआ, **पहिचान,** बाबूनाजैसी एक बूंटी है इसीसे इसको बाबूनामें मिलादेतेहैं, **प्रकृति,** २ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता,** व्याकुलता और शिरःपीड़ाप्रद, **दर्पनाशक,** नीलोफ़र, बनफ्सा और अनीसून, **प्रतिनिधि,** शीह, **मात्रा,** ९ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) इसके सब प्रभाव बाबूनाजैसे हैं, (२) वायुको लयकर्ता, (३) प्रकृतिको मृदुकर्ता, (४) रोधकी उद्घाटक, (५) पथरी तोड़नेवाली, (६) वातज और कफज मलको अतिसारद्वारा निकालनेवाली है, (निर्विषैल)

(६२५) हींग

संस्कृत, हिंगु, **फारसी,** अंगज और अंगूजह, **अरबी,** हिल्तीत, **इंग्रेज़ी,** आस्साफोएटी, **स्वरूप,** सफ़ेद और धूलिया, **स्वाद,** सुगन्धियुक्त, कडुआ, **पहिचान,** अंजदाके वृक्षका प्रसिद्ध सुगन्धियुक्त और दुर्गंधियुक्त गोंद है, **प्रकृति,** ४ कक्षामें गरम और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता,** गरम प्रकृतिवालोंके यकृत्को और मस्तिष्कको, **दर्पनाशक,** कतीरा, बनफ्सा और दोनों अनार, **प्रतिनिधि,** जाउशीर और बेकंन, **मात्रा,** २। माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग,** (१) मस्तिष्क सम्बन्धी रोगोंको और स्नायुके रोगोंको जैसे कि अपस्मार (मिरगी) पक्षवध, अर्द्दित, कम्प और पादहर्ष(सुन्नबहरी)इत्यादि को गुणकर्ता, (२) नेत्ररोगोंको लाभकर्ता, (३) शोथ और वायुको लयकर्ता, (४) अत्यन्त पाचक, (५) क्षुधावर्द्धक, (६) यकृत्, आमाशय और प्लीहके रोगोंको लाभप्रद, (७) गरमीको उत्पन्न करनेवाली, (८) स्वरशोधक, (९) घीकेसाथ इसका लेप चोट और बादीको गुणकारक है, (१०) इसको कानमें डाले तो कानोंके बजनेको और बहरेपनको गुणकर्ता, (११) प्रायः विषोंकी दर्पनाशक है, (१२) इसको घरमें रक्खे तो महामारीकी वायुसे रक्षा करनेवाली है, (उपविष)

(६२६) हीरा

संस्कृत, वज्र, **अरबी,** अल्मास, **इंग्रेज़ी,** डायमंड, **स्वरूप,** सफ़ेद और चमकीला, **स्वाद,** फीका, **पहिचान,** बहुमूल्य एक प्रसिद्ध रत्न और पत्थर है, **प्रकृति,** ४ कक्षामें ठण्डा और रूक्ष, **हानिकर्ता,** घा-

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तक है, **दर्पनाशक**, ताज़ा दूध, घी और वमन कराना, **प्रतिनिधि**, सर्पका विष, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) इसको पास रक्खे और कण्ठमें धारण करे तो हृदयको बलप्रद है, (२) भय और झिजकीको दूर करनेवाला, (३) शीघ्रही प्रसव करानेवाला, (४) शत्रुको पराजय करनेवाला, (५) इसका षट्कोण नगीना अपस्मारको दूर करनेवाला है, (६) इसका मंजन दांतोंको स्वच्छकारक है, (घातक विष)

(६२७) हीराकसीस

फारसी, जाकसब्ज, **अरबी**, जाजअखजर, **स्वरूप**, हरियालीलिये, पीला, **स्वाद**, सुगन्धियुक्त, कसेला, **पहिचान**, अत्यन्त वज़नदार एक प्रसिद्ध कृत्रिम वस्तु है, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम, कोई २ कक्षामें गरम कहतेहैं, **हानिकर्ता**, फेंफड़ेको, **दर्पनाशक**, मठा, **मात्रा**, अभक्ष्य है, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) अंगोंको जलानेवाला, (२) मांसको गलानेवाला, (३) ज़ख़म करनेवाला, (४) आमाशय और आंतोंके कीड़ोंको मारनेवाला, (५) प्रायः विषोंका दर्पनाशक है, (६) ओजको बलप्रद, (७) वीर्यको गाढ़ा करनेवाला है, (उपविष)

(६२८) हीरादुखी

फारसी, खूनस्याऊशां, **अरबी**, दम्मुलअखवेन और कातिरुद्दम, **स्वरूप**, चमकीला और लाल, **स्वाद**, कुछ कडुआ, **पहिचान**, एक वृक्षका प्रसिद्ध गोंद है, परन्तु इसकी परीक्षामें कुछ हकीमोंके अनेक मतभेद हैं, **प्रकृति**, २ कक्षामें ठंडा और ३ कक्षामें रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्पनाशक**, कतीरा और बबूलका गोंद, **प्रतिनिधि**, शाजनज और काहूका स्वरस, **मात्रा**, ४ माशे, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) रुधिरका रुद्धक और बद्धक, (२) दृष्टि और आमाशयको बलप्रद, (३) दुःखित अवयवोंपर मलको नहीं गिरनेदेता, (४) आंतोंकी लेखता और अतिसारको गुणकर्ता, (५) इसका नेत्रांजन (सुरमा) नेत्रोंको बलप्रद है, (६) इसका मंजन मसूढ़ोंको और दांतोंको दृढ़ और स्वच्छ करनेवाला है, (७) आमाशय और यकृत्की गरमीको दूर करनेवाला है, (निर्विषैल)

(६२९) हुलहुल

संस्कृत, हिलमोचिका, **स्वरूप**, पत्ते हरे और बीज काले, **स्वाद**, कुछ कड़वी, **पहिचान**, एक गज लम्बी एक ओषधि है, जिसके पत्ते छोटे होतेहैं और दाना पोस्तजैसा होताहै, **प्रकृति**, गरम, **गुण**, **कर्म**, **प्रयोग**, (१) गुल्म और जलोदरको गुणकर्ता, (२) इसके पत्तोंका स्वरस कानकी पीड़ाको लाभप्रद है, (३) इसके बीज बवासीरको लाभकारक हैं, (४) स्तम्भनकर्ता, (५) शुक्रप्रमेहको हरणकर्ता, (६) इसके पत्तोंके काथसे लिंग और गुदाको प्रक्षालन करे तो बवासीरके रुधिरको बन्द करनेवाली है, (निर्विषैल)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

(६३०) हफारीकून

स्वरूप, लाल और धूलिया, **स्वाद**, कुछ कड़वी और तीखी, **पहिचान**, तितलीजैसी एक ओषधि है और फल जौ-जैसे तीन प्रकारके होतेहैं, **प्रकृति**, ३ कक्षामें गरम और रूक्ष, **हानिकर्ता**, वृक्कको, **दर्पनाशक**, सिकंजबीन और मस्तगी, **प्रतिनिधि**, सोयाके बीज, किब्रकी जड़, शीतरज और अज़खर, **मात्रा**, २ माशे, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) रूक्षताप्रद, (२) शोथ और वायुको लयकर्ता, (३) दोषोंको लघु और स्वच्छकर्ता, (४) रोधकी उद्घाटक, (५) लसयुक्त दोषोंको पिघलानेवाली, (६) कफको छांटनेवाली, (७) कफज रोगोंको गुणकारक है, (निर्विषैल)

(६३१) हंसराज

फ़ारसी, परसाउशां, **अरबी**, शेअरुज्जिन, शेअरुल्अर्ज और शेअरुज्जबाल, **स्वरूप**, हरा और भूरा, **स्वाद**, कुछ कड़ुआ, **पहिचान**, धनियाके पत्तेजैसी एक ओषधि है, यह तर ज़मीनमें होताहै, **प्रकृति**, १ कक्षामें गरम और रूक्ष, कोई समान गुणवाला कहतेहैं, **हानिकर्ता**, प्लीहको, **दर्पनाशक**, कतीरा, बनफ्सा और मस्तगी, **प्रतिनिधि**, मुलहटी और गुल्बनफ्सा, **मात्रा**, १ तोला, **गुण, कर्म, प्रयोग**, (१) दोषोंको स्वच्छकर्ता, (२) रोधका उद्घाटक, (३) मलको पक्व और समपक्वकर्ता, (४) शोथ और वायुको लयकर्ता, (५) रूक्षताप्रद, (६) कफको छांटनेवाला, (७) कफज और वातज मलको अतिसारद्वारा निकालनेवाला, (८) पित्तज मलको निकालनेवाला, (९) वक्षःस्थलको साफ करनेवाला, (१०) हांपनी, वक्षःस्थलकी पीड़ा, श्वास और खांसीको गुणप्रद, (११) पांडुको लाभप्रद, (१२) मूत्ररोध, आर्तव और प्रसवकालमें होनेवाले रुधिरस्रावके रोधको लाभकारक है, (निर्विषैल)

॥ योगवाही ओषधियोंका वर्णन ॥

६३२-अफीम को गुलरोगन अथवा सिरकेमें घोलकर लेप करनेसे सिरका दर्द दूर होताहै ।

६३३-अफीम और केसरको गुलाब जलमें घिसकर लेप करनेसे आंखोंकी सुर्खी दूर होतीहै ।

६३४-अफीम और केसरको जलमें घिसकर लेप करनेसे आंखोंके घाव दूर होतेहैं ।

६३५-अजवायन और गेरूको सिरकेमें घिसकर, पीसकर लगानेसे पित्ती दूर होतीहै ।

६३६-अरहर के पत्ते और धनियांको जलमें औटाकर कुल्ली करे तो मुखके छाले दूर होवें ।

६३७-आदमी के जलेहुए **बालोंको** गुलरोगनमें मिलाकर नाकमें टपकानेसे उन्माद रोग दूर होताहै

६३८-आम की छालको सिरकामें पीसकर नाभिपर लेप करनेसे अतिसार दूर होताहै ।

६३९-आमला एक भाग, हलदी दो भागको पानीमें घिसकर लेप करनेसे कर्णशोथ दूर होताहै

६४०-इन्द्रायन की हरी जड़को पीसकर लेप करनेसे अंडकोशोंकी सूजन और दर्द दूर होताहै ।

६४१-ईसबगोल को पीसकर बांधनेसे बिसारा दूर होताहै ।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

६४२-**पलुआ** को खानेसे और लगानेसे नहरुआ दूर होताहै ।

६४३-**अंगूर** की लकड़ीके कोयलाको पानीमें घिसकर पीनेसे पथरी दूर होतीहै ।

६४४-**अंडीके तेल** को गायके दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्ररोध दूर होताहै ।

६४५-**अंडीकीजड़** की छाल और सोंठको पीसकर लगानेसे अंडकोशोंका फटजाना दूर होताहै ।

६४६-**अंडीके बीजों** की मिंगीको पीसकर लगानेसे बिवाई दूर होतीहैं ।

६४७-**कड़वे बादाम** की मिंगी और जायफलको मिलाकर चबानेसे दांतोंका रहजाना दूर होताहै

६४८-**कत्था सफ़ेद** और छोटी हरड़को पानीमें पीसकर और आगपर गरम करके लेप करनेसे नाककी सूजन और नाकका पक जाना दूर होताहै

६४९-**कपूर** और नमक दोनोंको पीसकर मले तो दांतोंकी पीड़ा दूर होतीहै ।

६५०-**कबीला** १ भाग, भुना सुहागा २ भाग दोनोंको कड़वे तेलमें पीसकर लेप करनेसे गंजापन दूर होताहै ।

६५१-**कबूतर** की बीट और गुड़ दोनोंको मिलाकर लगानेसे नहरुआ दूर होजाताहै ।

६५२-**करोंदा** के पत्ते और मकोयके पत्तोंको सेवन करनेसे जलोदर दूर होताहै ।

६५३-**क़लमी शोरे** को जलमें पीसकर नाभिपर लेप करनेसे मूत्ररोध दूर होताहै ।

६५४-**काग़ज़ी नीबू** को तराशे और उसके ऊपर नमककी बुर्की देकर आगके ऊपर गुनगुना करके उसके रसकी दो चार बूंदें टपकानेसे कानकी पीड़ा बन्द होजातीहै

६५५-**काहू** को सिरकामें पीसकर लगानेसे स्तनोंकी सूजन दूर होतीहै ।

६५६-**कुदरू गोंद** को गुलाबजलमें पीसकर लेप करनेसे आंखकी सुर्खी जोकि आंखोंके कोनोंमें जहांसे कि कीचड़ निकलताहै जालासा मालूम होती है दूर होजातीहै, इस रोगको फारसीमें नाखुनह कहतेहैं

६५७-**कुलथी** के बीजोंका अर्क़ और काशनी दोनोंको दूधके साथ पीनेसे पथरी और रेत दूर होजातेहैं

६५८-**खपरिया** और बड़ी हरड़का बकल दोनोंको कांसीकी थालीमें कांसीकी कटोरीसे महीन रगड़कर लगानेसे आंखोंका ढलका दूर होताहै ।

६५९-**खसखस** के सफ़ेद दानोंको भैंसके दूधमें अथवा पानीमें पीसकर लगानेसे छाजन दूर होतीहै

६६०-**गायकाघी** और मुर्दासंग दोनोंको नीमकी लकड़ीसे घोटकर लगावेतो अंडकोश और उपस्थकी खुजली तथा फुंसी दूर होवें ।

६६१-**गावज़वां** की जड़ और कालीमिरच दोनोंको पीसकर नस्य लेवे तो छींकोंके आनेसे लक़वाको फ़ायदा होताहै ।

६६२-**चमेली** की जड़को पीसकर उसमें शहत मिलावे और लेप करे तो टूटी हड्डी जुड़जातीहै ।

६६३-**चिरौंजी** और गेरूको कड़वे तेलमें पीसकर लगानेसे पित्ती दूर होतीहै ।

६६४-**चूना** को घीमें मिलाकर मलनेसे गरमीसे पैदाहुए सिरके दर्दको फायदा होता है ।

६६५-**चूना** और नोसादर दोनोंको मिलाकर सूंघनेसे जुक़ाम नष्ट होता है ।

६६६-**चन्दन** सफ़ेद और कपूर दोनोंको पीसकर नाभिपर पतला लेप करनेसे पेचिश और संग्रहणी दूर होतीहैं ।

६६७-**छुहारे** की गुठलीको सिरकामें पीसकर लगानेसे मुंहासे दूर होतेहैं ।

६६८-**छोटी हरड़** और सफ़ेद मिश्री दोनोंको औरतके दूधमें घिसकर लगावे तो नजलेसे पैदाहुई दृष्टिकी कमजोरीको लाभ होताहै ।

६६९-**ज़बासे** को पानीमें औटाकर मुख धोनेसे मुंहासे दूर होतेहैं ।

६७०-**ज़ीरा सफ़ेद** अथवा **सांठी चांवल** को दूधमें पकाकर खानेसे औरतोंके स्तनोंकी सूजन दूर होती है ।

६७१-**जैत** के पत्तेको गरम करके बांधे तो अंडकोशोंकी सूजन और दर्दको फ़ायदा होताहै ।

...Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

९७३-जंगली प्याज और शहद दोनोंको सिरकेमें मिलाकर लगावे तो बनरफ अर्थात् भुसीसीके उड़नेको दूर करताहै

९७४-टेसूके फूलोंको पानीमें औटाकर तरड़ा देनेसे और फूलोंको बांधनेसे अण्डकोशोंकी सूजन और दर्दको फ़ायदा होताहै।

९७५-ढाकके बीजोंको पानीमें पीसकर नाकमें टपकानेसे अपस्मार (मिरगी) को फ़ायदा होताहै

९७६-तमाकूके पत्तोंको पीसकर लेपकरे तो हृच्छूल (गुर्देका दर्द) दूर होताहै।

९७७-तुख़्मरेहांके चूर्णको गुड़में मिलाकर सेवन करनेसे वीर्य स्तम्भन होताहै।

९७८-तंतरीक और स्याहजीरा दोनोंको पानी में पीसकर और मिश्री मिलाकर चाटनेसे उल्टी (वमन) दूर होतीहै।

९७९-धनियां और सफ़ेद चंदन दोनोंको सिरकेमें पीसकर मस्तकपर लेप करनेसे आंखोंके सामने अँधेरी आना दूर होताहै।

९८०-नमक को पानीमें मिलाकर कुल्ली करनेसे मुखका आना (छाला) दूर होताहै।

९८१-नमक को बारीक पीसकर गुलरोगनमें मिलाकर लगानेसे बनरफ (सिरमें भुसीसी उड़ना) दूर होतीहै।

९८२-नागकेसर १ भाग, कालीमिरच २ भाग दोनोंको पीसकर और अदरखके स्वरसमें गोली बनाकर सेवन करनेसे प्रसूतरोग दूर होताहै।

९८३-नीमके पत्ते और मकोयके पत्ते दोनोंका स्वरस निकालकर आंखोंपर लगावे तो आंखों की सुर्खी दूर होवे।

९८४-नौसादर को मूलीके स्वरसमें मिलाकर पीनेसे तापतिल्ली दूर होतीहै।

९८५-फिटकिरी को गुलाबजलमें घिसकर नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रोंके जालेको और फुलीको दूर करतीहै।

९८६-फिटकरी को महीनकर नस्य (सूंघना) लेवे तो नकसीरसे खूनके जानेको बंद करतीहै।

९८७-फिटकरी और कहरवा दोनोंको सिरकेमें मिलाकर लगानेसे झांई दूर होती है।

९८८-फिटकरी भुनी हुई और सफ़ेद मिश्री दोनोंको महीन पीसकर २ माशेतककी मात्रासे सेवन करे तो तिजारी और चौथय्याज्वर दूर होवे।

९८९-बच और सरसों को पीसकर गुनगुना करके लेप करे तो अंडकोशोंके फटजानेको दूर करतीहै।

९९०-बरगद(बड़) के पत्तोंको जलाकर सरसोंके तेलमें मिलाकर उबटना करे तो खाज दूर होवे।

९९१-बबूलकी पत्ती और सफ़ेद बूरा दोनोंको मिलाकर सेवन करनेसे रक्तविकार और जिरियानरोग दूर होताहै।

९९२-बायविडंग को पानीमें औटाकर पीनेसे स्त्रियोंका बंद आर्तव जारीहोताहै।

९९३-बिजौरेका छीलका और नरकचूर दोनोंको पानीमें पीसकर लगानेसे झांई दूर होतीहै।

९९४-बेर के गोंदको दहीमें पीसकर नाभिपर लेप करनेसे अतिसार दूर होताहै।

९९५-मक्खन और मिश्रीके खानेसे सूखी खांसी दूर होतीहै।

९९६-माजूफल और कुलफ़ाके बीजोंको पानीमें घोलकर कुल्ली करे तो मसूढ़ोंसे खूनका जाना दूर होताहै

९९७-मूली के स्वरस में सफ़ेद बूरा मिलाकर सेवन करनेसे पथरी और रेत दूर होतेहैं।

९९८-मैनफल को पानीमें पीसकर लगानेसे अंडकोशोंकी सूजन और दर्द दूर होताहै।

९९९-मोमयाई को रोगनबनफ्सामें घोलकर नस्य (सूंघना) लेवे तो सर्दीसे पैदाहुआ मस्तकका दर्द दूर होवे।

१०००-मोमयाई को दोनामरुएके स्वरसमें घोलकर लगानेसे पक्षाघात दूर होताहै।

१००१-रसौत को पानीमें घिसकर लगावे तो पलकोंकी सूजन दूर होतीहै।

१००२-रीठा को पानी में पीसकर नाकमें दो चार बूंद टपकानेसे माथेके कीड़े मरजातेहैं।

१००३-शर्बत बनफ्शा १ तोला और मकोय-का अर्क आधपाव दोनोंको मिलाकर पीनेसे जुकाम झड़जाता है ।

१००४-सफतालू और पोदीनाके पत्तों-का अर्क दोनोंको मिलाकर कानमें डालनेसे कानके कीड़े दूर होजातेहैं ।

१००५-समुद्रफेन का चूर्ण कानमें फूंकनेसे कानके घाव दूर होजातेहैं ।

१००६-सरपते की जड़ का चूर्ण २ मासेको गरम दूधके साथ सेवन करनेसे हैजा दूर होताहै ।

१००७-सुपारी और सफ़ेद चंदन, दोनोंको जलमें पीसकर लगानेसे उपस्थ (लिंग) की सूजन दूर होतीहै ।

१००८-सुहागे को पीसकर लगानेसे टूटी हड्डीको फ़ायदा होताहै परन्तु सुहागेको भून-लेना चाहिये ।

१००९-सोंठ और कुदरू गोंद को महीन पीस-कर नाकमें फूंकनेसे दांतोंके रहजानेको फ़ायदा होताहै ।

१०१०-हरताल और नागरमोथा को घिसकर लगानेसे नहरुआ दूर होताहै ।

१०११-हरताल और कलौंजीके लगानेसे नखोंका फटजाना और सूखजाना दूर होताहै ।

१०१२-हलदी को जलाकर पानीमें बुझावे और उसको पीवेतो वमन दूर होतीहै ।

१०१३-हाथीदांतकी भस्मको भैंसके दूध मिलाकर लगानेसे बालोंका गिरना दूर होताहै

इतिश्री अभिनवनिघंटुका द्वितीयभाग संपूर्णम् ॥

(अभिनवनिघंटुका तृतीयभागभी शीघ्रही तैयार होनेवाला है)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri